मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग (भाषा अनुभाग)
भारत सरकार, नई दिल्ली के
आर्थिक सौजन्य से प्रकाशित

□

किसना आढ़ा कृत

भीम विलास

□

सम्पादक
डॉ. देव कोठारी

सहायक सम्पादक
भेरुलाल लोहार

□

□

प्रकाशक
साहित्य संस्थान
राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

□

प्रकाशन
मकर संक्रांति वि. सं. 2045
14 जनवरी,

मूल्य

□

मुद्रक
पालीवाल प्रिन्ट..
25, आर. एम. वी. कम्पाउण्ड
उदयपुर - 313 001

KISHANA ADHA'S

BHIM VILAS

(Historical and Biographical Epic on
Maharana Bhim Singh of Mewar)

EDITOR

DR. DEV KOTHARI

ASSTT. EDITOR

BHERU LAL LOHAR

SAHITYA SANSTHAN
RAJASTHAN VIDYAPEETH, UDAIPUR-313 001

With the financial aid of the Ministry of Human Resource Development, Department of Education (Language Division)
Govt. of India, New Delhi.

●

KISHANA ADHA'S
BHIM VILAS

●

Editor
Dr. DEV KOTHARI
Asstt. Editor
BHERU LAL LOHAR

●

●

Publisher
SAHITYA SANSTHAN
Rajasthan Vidyapeeth
UDAIPUR-313001

●

First Edition
MAKAR SAKRANTI, V. S. 2045
JANUARY 14, 1989

Price-

Printer
PALIWAL PRINTERS
25, R.M.V. Compound
UDAIPUR-313 001

प्रकाशकीय

प्रस्तुत 'भीम विलास' राजस्थानी भाषा का ऐतिहासिक व चरित काव्य ग्रंथ है। किसना आढ़ा ने मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह (1778-1828 ई.) के व्यक्तित्व व कृतित्व को आधार बनाकर इसका प्रणयन किया है। रचयिता महाराणा का समकालीन प्रसिद्ध कवि है। उस दृष्टि से 'भीम विलास' तत्कालीन इतिहास, समाज व संस्कृत की मूल्यवान व प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करता है।

संस्थान में 'भीम विलास' की स्वयं कवि के परिजनों से प्राप्त मूल हस्तलिखित प्रति उपलब्ध है, सम्पादन का आधार उसे ही बनाया है। इसकी तीन हस्त प्रतियां संस्थान संग्रहालय में और भी हैं। ग्रंथ के सम्पादित मूलपाठ के साथ-साथ विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में कवि का फुटकर साहित्य, ताम्रपत्र, ऐतिहासिक व्यक्ति संदर्भ, शब्दार्थ, सगाई-नारेल आदि दिये गये हैं।

'भीम विलास' का सम्पादन व प्रकाशन भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग (भाषा अनुभाग) की प्रकाशन सहायता योजना के अन्तर्गत हुआ है। इसके लिए संस्थान मन्त्रालय की विभिन्न अधिकृतियों विशेषकर श्री. टी. एस. सुन्दरराजन के प्रति कृतज्ञ है, जिनके सदाशयतापूर्ण हार्दिक सहयोग के कारण यह प्रकाशन संभव हो सका है।

'भीम विलास' की मूल प्रति भेंट स्वरूप प्रदान कर तथा किसना आढ़ा के व्यक्तित्व के सन्दर्भ में सामग्री उपलब्ध कराकर किसना आढ़ा के वर्तमान वंशज श्री केसरीसिंहजी आढ़ा ने हमारे काम को सरल बनाने में काफी सहयोग किया है, अतः संस्थान उनके प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता है।

संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के वाइस चांसलर मनीषी पं. जनार्दन रायजी नागर के प्रति भी नतमस्तक है, जिनके आत्मीय संरक्षण व मार्गदर्शन से हमें प्रेरणा व सम्बल प्राप्त हुआ।

संस्थान, विद्यापीठ के विद्यामहामात्र, पीठ पण्डित प्रो. के. के. वशिष्ठ तथा अर्थ अभियन्ता श्री मदनलाल लाहोटी के सामयिक सहयोग के प्रति भी आभारी है। डॉ. व्रजमोहन जावलिया प्रभारी, पोथीखाना, महाराजा सवाई मानसिंह संग्रहालय जयपुर, डॉ. के. एस. गुप्त, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं डॉ. हुकमसिह भाटी, निदेशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर ने 'भीम विलास' के सम्पादन के दौरान मूल्यवान सहयोग प्रदान किया है, एतदर्थ संस्थान उनका कृतज्ञ है। संस्थान के भूतपूर्व अध्यक्ष पं. उमाशंकर शुक्ल तथा डॉ. ललित पाण्डेय, डॉ. शक्तिकुमार शर्मा एवं श्री भेरूलाल लोहार का सहयोग भी सदा स्मरणीय रहेगा। संस्थान पालीवाल प्रिन्टर्स के मालिक श्री ख्यालीलालजी के सहयोग के प्रति आभार प्रकट करना भी अपना कर्तव्य समझता है।

मकर संक्रान्ति, संवत् 2045
14 जनवरी, 1989

डॉ. देव कोठारी
निदेशक

विषयानुक्रम

□

महाराणा भीमसिंह (1778–1828 ई.)

भूमिका

राजस्थान का दक्षिणी भूभाग वीरभूमि मेवाड़ की अभिधा से अलंकृत रहा है। यहां के कण-कण में साहस, शौर्य और पराक्रम की गाथाएं व्याप्त हैं। धर्म, संस्कृति और कला का त्रिवेणी संगम इस प्रदेश की थाती के रूप में ख्यात है। शक्ति और भक्ति तथा तलवार और कलम यहां की मौलिक विशेषताएं हैं। उसी क्रम में साहित्य सृजन की सुदीर्घ और विस्तृत परम्परा इस भूभाग की सबल सम्पदा है। यहां के शासक दुर्द्धर्ष योद्धा ही नहीं, स्वयं अच्छे साहित्यकार और साहित्यविदों के आश्रयदाता एवं संरक्षक भी रहे हैं। यही कारण है कि मेवाड़ अपनी आत्मरक्षा में युद्ध के लिये अग्रणी और तत्पर रहा तो साहित्य सम्पदा की श्रीवृद्धि में भी किसी अन्य प्रदेश से कभी भी पीछे नहीं रहा है। यहां के महाराणाओं में महाराणा कुंभा, प्रताप, अमरसिंह, राजसिंह, अरिसिंह, भीमसिंह आदि काव्य रसिक रहे हैं। यहां के चारण और जैन कवियों ने भी विपुल एवं विविध रूपात्मक तथा विषयात्मक साहित्य सृजन करके इस क्षेत्र के गौरव को बढ़ाया है।

मेवाड़ में महाराणा राजसिंह (द्वितीय) के निःसंतान निधन के बाद उसका चाचा अरिसिंह मेवाड़ का महाराणा बना। महाराणा अरिसिंह का शासनकाल वि.सं. 1817-29 (1761-73 ई.) काफी उथल-पुथल का रहा किन्तु इस अशान्ति के काल में भी इनका काव्य-प्रेम उल्लेखनीय रहा है। अरिसिंह स्वयं एक अच्छा कवि था। किशनगढ़ रियासत के महाराजा सावन्तसिंह (1748-56 ई.) जो 'नागरीदास' उपनाम से कविता करते थे, द्वारा रचित 'इश्क चमन' के उत्तर में महाराणा अरिसिंह ने 'रसिक चमन' की रचना करके अपनी अद्भुत काव्य प्रतिभा का परिचय दिया था। अरिसिंह के बाद उसका पुत्र हमीरसिंह शासनारूढ़ हुआ, किन्तु पांच वर्ष बाद ही वि सं. 1834 (1778 ई.) में उसका देहान्त हो गया। हमीरसिंह के कोई पुत्र नहीं होने पर महाराणा अरिसिंह का द्वितीय पुत्र और हमीरसिंह का भाई भीमसिंह वि. सं. 1834 (1778 ई.) में मेवाड़ के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। भीमसिंह भी अपने पिता के समान काव्य-प्रेमी था। यह स्वयं कवि और कवियों का आश्रयदाता था। वि. सं. 1873 (1816 ई.) के आसपास तत्कालीन प्रसिद्ध कवि पद्माकर जब उदयपुर आया तो महाराणा भीमसिंह ने उसकी अच्छी आवभगत की और बहुत सा द्रव्य देकर सम्मानित किया। भीमसिंह का शासनकाल वि. सं. 1834-85 (1778-1828 ई.) तक अर्थात् 50 वर्षों का लम्बा रहा। इस अवधि में मेवाड़ में साहित्य सर्जन का सुदीर्घ दौर चला। चारण कवियों पर भीमसिंह की विशेष कृपा थी। ऐसे

कवियों में दूल्हजी आढ़ा, किसना आढ़ा, जसजी आढ़ा, रामदान लालस, बखतराम-आसिया, तेजराम आसिया, फतहराम आसिया, तीरथराम आसिया, नन्दलाल भादा, अमरजी और सांवलजी आदि प्रमुख हैं।

इन कवियों में से अधिकांश ने फुटकर गीत लिखे हैं। महाराणा भीमसिंह से सम्बन्धित 60 से ज्यादा डिंगल गीत उपलब्ध होते हैं। इससे पता चलता है कि महाराणा भीमसिंह का व्यक्तित्व तत्कालीन कवियों को काफी प्रिय था। भीमसिंह की दान प्रवृत्ति ने भी कवियों को काफी आकर्षित किया। रामदान लालस ने 175 छंदों में महाराणा भीमसिंह के चरित्र को आधार बनाकर डिंगल में 'भीम प्रकाश' काव्य ग्रंथ लिखा। इन्हीं महाराणा भीमसिंह का दरबारी कवि किसना आढ़ा था। यह इस काल का प्रमुख, प्रभावी, महाराणा का प्रिय और चर्चित कवि था। इसने डिंगल और पिंगल दोनों में ग्रंथ और फुटकर गीत लिखे हैं। 'भीम विलास' काव्य ग्रंथ इसी कवि की रचना है।

किसना आढ़ा[1]

वंश-परम्परा

किसनाजी चारणों की आढ़ा गोत्र से सम्बन्धित और राजस्थान के प्रसिद्ध कवि दुरसा आढ़ा की वंश-परम्परा में पैदा हुए थे। दुरसा आढ़ा महाराणा प्रताप और मुगल बादशाह अकबर के समकालीन थे। उन्होंने दो विवाह किये, जिनसे चार पुत्र हुए। दुरसाजी इनमें से अपने चतुर्थ और सबसे छोटे पुत्र किसनजी के साथ राजस्थान के वर्तमान पाली जिले के गांव पांचेटिया[2] में रहते थे। यहीं पर दुरसाजी का वि. स. 1712 (1655 ई.) में देहान्त हुआ। दुरसाजी की वंश-परम्परा आगे चलकर तीन उपशाखाओं—दयालदासोत, नेनकमलोत और सायबखानोत में विभाजित हुई।

दुरसाजी की पांचवीं पीढ़ी में सायबखानजी हुए। इन्हीं सायबखानजी से सायबखानोत शाखा अलग हुई। सायबखानजी के लड़के पनजी आढ़ा थे पनजी अच्छे कवि और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। महाराणा अरिसिंह के शासनकाल (वि. स. 1817-29) में पनजी पांचेटिया से मेवाड़ में आ गये और अपनी प्रतिभा व क्षमता के बल पर ये शीघ्र ही महाराणा के विश्वासपात्र बन गये। वि. सं. 1826

---

1. किसनाजी आढ़ा और उनकी वंश-परम्परा से सम्बन्धित उपर्युक्त समस्त सामग्री व सूचनाएं उनके वर्तमान वंशज श्री केसरीसिंहजी आढ़ा से प्राप्त हुई हैं।
2. गांव पांचेटिया-मारवाड़ जंकशन से अहमदाबाद जाने वाली रेलवे लाईन पर स्थित सोमेश्वर-भीमालिया स्टेशन से लगभग तीन किलोमीटर दूर पाली जिले में है।

(1769ई.) में माधवराव सिंधिया ने जब उदयपुर का घेरा डाला और आक्रमण किया, तब पनजी आढ़ा महाराणा को हौंसला बंधाने वालों में प्रमुख थे।[1] इसी अवसर पर पनजी ने नावघाट पर पैंतीस हथनालों के साथ युद्ध का मोर्चा सम्हाला था।[2] इसके कुछ समय बाद महाराणा की सेना का महापुरुषों[3] की सेना के साथ टोपल मगरी[4] का युद्ध हुआ, उस समय भी पनजी आढ़ा महाराणा की सेना के साथ था।[5] पनजी की इस स्वामी-भक्ति और विश्वसनीयता से प्रभावित होकर महाराणा अरिसिंह ने वि. सं. 1828 (1771 ई.) में करणवास[6] गांव भेंट-स्वरूप दिया।[7] इसी तरह पनजी को तासोल, सायों का खेड़ा और धनजी का खेड़ा गांव भी भेंट-स्वरूप मिले थे,[8] ऐसा बताया जाता है।

महाराणा अरिसिंह और बूंदी के राव अजीतसिंह के मध्य अनबन थी। वि. सं. 1829 (1773 ई.) में महाराणा अरिसिंह अमरगढ़ गये हुए थे, उस समय बूंदी का राव अजीतसिंह महाराणा अरिसिंह को शिकार करने के बहाने जंगल में ले गया और धोखे से बर्छे का वार कर महाराणा की हत्या कर दी, उस समय आढ़ा पना भी साथ था।[9] अरिसिंह के निधन के बाद वि. सं. 1829 (1773 ई.) में हमीरसिंह महाराणा बने और हमीरसिंह के बाद भीमसिंह वि. सं. 1834(1778ई.) में शासनारूढ़ हुए। पनजी आढ़ा भीमसिंह के इस राज्यारोहण के समय उपस्थित थे।[10] इसके बाद पनजी का निधन कब हुआ, इसके बारे में कोई उल्लेख नहीं मिलता। इन्हीं पनजी का पुत्र दुलहजी आढ़ा थे। ये भी अच्छे कवि थे। महाराणा भीमसिंह वि. सं. 1850 (1793 ई.) में जब ईडर अपना द्वितीय विवाह करने गये, उस समय दुलहजी आढ़ा महाराणा भीमसिंह के साथ थे।[11]

---

1. भीम विलास, छंद सं. 88, पृ. 27
2. वही, छंद सं. 92, पृ. 30
3. ये दादूपंथी साधु थे। जयपुर की सेना में बड़ी संख्या में रहते थे। वहीं से ये मेवाड़ में महाराणा अरिसिंह की सेना के विरुद्ध लड़ने के लिये आये।
   (द्रष्टव्य-ओझा कृत उदयपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय जिल्द, पृ 657)
4. टोपल मगरी आमेट तहसील के अन्तर्गत आमेट से गंगापुर-भीलवाड़ा मार्ग पर पूर्व दिशा में लगभग 6-7 कि.मी. दूर है।
5. भीम विलास, छन्द सं. 157, पृ. 46
6. करणवास गांव वर्तमान भीलवाड़ा जिले में पुर के पास स्थित है।
7. भीम विलास, छन्द सं. 179, पृ. 54
8. ये तीनों गांव उदयपुर की नाथद्वारा तहसील में स्थित हैं।
9. ओझा-उदयपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय जिल्द, पृ. 664
10. भीम विलास, छंद सं. 239, पृ. 67
11. वही, छंद सं. 350, पृ. 104

इन्हीं दुलहजी आढ़ा के पुत्र और 'भीम विलास' के रचयिता किसनाजी आढ़ा थे। किसनाजी का जन्म पांचेटिया में दुरसा आढ़ा की आठवीं पीढ़ी[1]* में हुआ, जिसका वंश-वृक्ष वर्तमान समय तक का इस प्रकार है :—

- दुरसा आढ़ा
  - किसन
    - महेस
      - खुमांण
        - साहिबखांन
          - पना
            - दुलह
              - दानजी
              - जसजी
              - **किसनजी**
                - महेसदास[2]
                - रामलाल[3]
                  - रूपसिंह[4]
                  - जोरावरसिंह[5]
                    - लक्ष्मणसिंह[7]
                      - केसरीसिंह[8] (वर्तमान)
                        - महावीरसिंह
                        - वलवीरसिंह[9]
                          - अभिमन्यु
                      - वसुदेव
                      - अमरसिंह
                      - उग्रसिंह
                      - माधुसिंह
                      - तीन पुत्रियां
                  - दो पुत्रियां[6]
              - वुधाजी
              - सारूपजी
              - चिमनजी

---
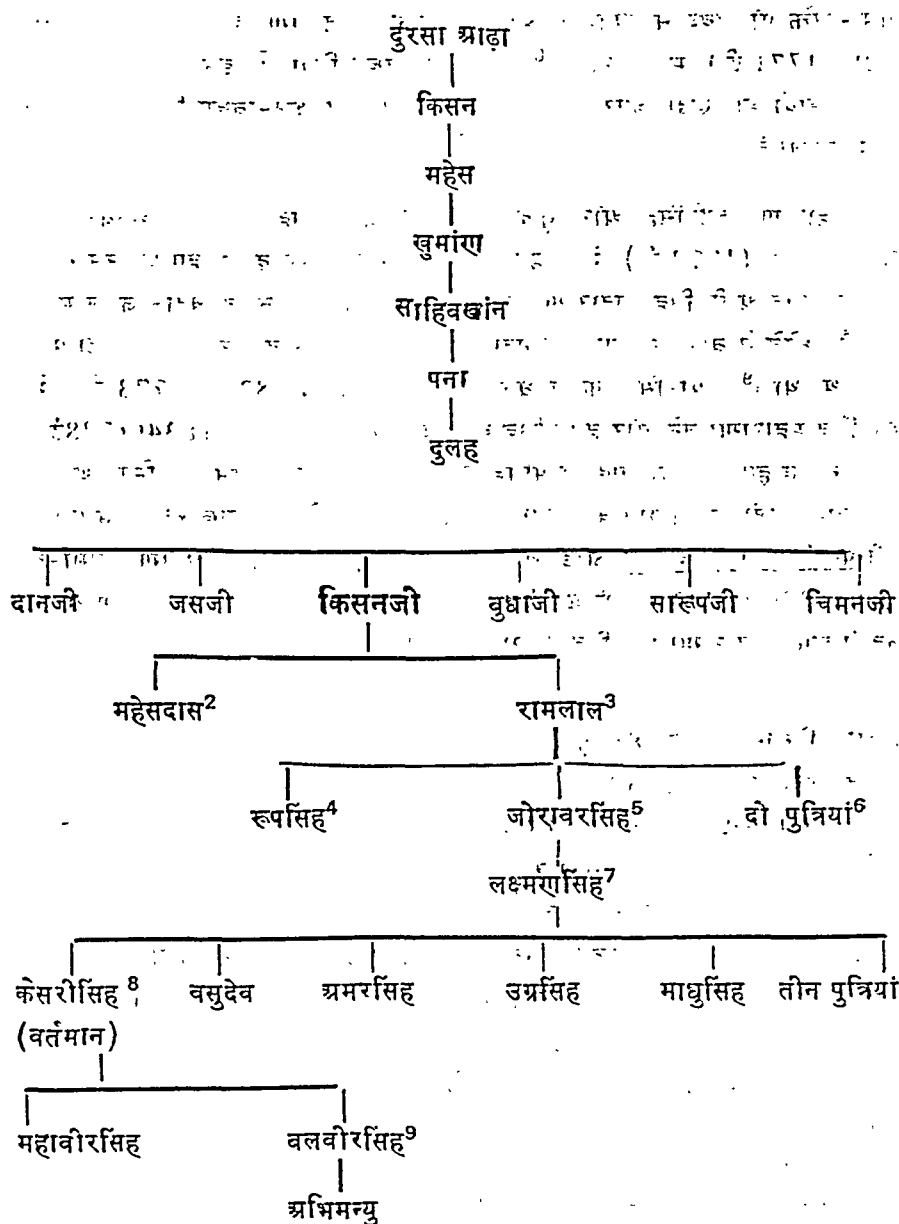
* पाद-टिप्पणियां अगले पृष्ठ पर दी गई है।

जन्म, बाल्यकाल और प्रतिष्ठा

किसनाजी का जन्म किस सन् में हुआ, इस बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती, लेकिन ये अपने पिता दुलहजी के छः पुत्रों में से तीसरे थे। इनका बचपन प्रायः मेवाड़ में व्यतीत हुआ, क्योंकि इनके दादाजी पनजी आढ़ा मेवाड़ में आ गये थे। इस कारण ये अपने दादा और पिता के साथ मेवाड़ में ही रहते थे। किसनाजी बचपन से प्रतिभाशाली थे। इनकी प्रतिभा को देखकर इनके लिए पारम्परिक चारणी शिक्षा का पूरा प्रबन्ध किया गया तथा ये बचपन से ही गीत लिखने लग गये थे। पनजी के निधन के बाद जब दुलहजी महाराणा के कृपापात्र बने तो अपने पिता के साथ किसनाजी का भी दरबार में आना-जाना होता रहता था। इसी क्रम में किसनाजी का भी महाराणा

---

1. दुरसा घर किसनेस, किसन घर सुकवि महेसुर।
   सुत महेस खुमांण, खांनसाहिब सुत जिण घर।।
   साहिब घर पनसाहै, पना सुत दुलह सुकव पुण।
   दुलह घर खट पुत्र दांन, जस, किसन, बुधो भण।।
   सारूप, चिमन, मुरधर उतन, परगट नगर पांचेटियो।
   चारण जात आढ़ा बिगत, किसन सुकवि पिंगल कियो।।
   (रघुवरजसप्रकास, पृ. 340)
2. महेसदास ने आसिया परिवार में शादी की, किन्तु युवावस्था में ही मृत्यु हो गई।
3. रामलाल, सांयों का खेड़ा से किसनाजी के छोटे भाई चिमनाजी के यहां से गोद आये। तीन शादियां मुंदियाड़, टेला (पुष्कर) और खेड़ी में की।
4. रूपसिंह, रामलालजी के लड़के थे, सगाई हुई, युवावस्था में मर गये। कविता करते थे।
5. जोरावरसिंहजी ने चार शादियां की-जोधपुर में कविराजा मुरारिदानजी के यहां, मोरटहुका, मेंगटिया में किसनसिंह आसिया के यहां, पाणेर में रामसिंहजी बारहठ की लड़की देऊ कुंवर से।
6. दो पुत्रियों में से एक भूरबाई की बनेड़िया शादी हुई, दूसरी की सरसिया में मेहडू परिवार में शादी हुई।
7. लक्ष्मणसिंहजी ने तीन शादियां की। पहली शादी सोढावास में की, किन्तु एक वर्ष बाद ही निधन हो गया। दूसरी शादी बासनी (सोजत) में गुलाबकुंवर से की और तीसरी भूरकिया (बड़ी सादड़ी) में तेजकुंवर से की। गुलाबकुंवर से दो लड़के-केसरीसिंह और उग्रसिंह तथा तीन बहनें। तेजकुंवर के तीन पुत्र-अमरसिंह, बसुदेव और माधुसिंह तथा दो बहनें।
8. केसरीसिंह जी ने मयाणियां शादी की, चन्द्रकुंवर से।
9. बलवीरसिंह ने रूपावास शादी की।

भीमसिंह से सम्पर्क बढ़ा। अपने पिता दुलहजी आढ़ा के देहावसान के पश्चात् किसनाजी अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर महाराणा भीमसिंह के दरबारी कवि के रूप में प्रतिष्ठित होते गये। महाराणा की प्रीति भी इनके प्रति बढ़ी। महाराणा ने वि. सं. 1876 (1819 ई.) में अपनी पुत्रियों–अजबकंवर, रूपकंवर और पौत्री कीकीबाई का विवाह किया, तब बधाई देने वालों और इनाम पाने वाले चारण कवियों में किसनाजी आढ़ा प्रमुख थे।[1]

भेंट-स्वरूप मिले गांव

किसनाजी को अपने पिता के उत्तराधिकार में तासोल गांव मिला। शेष पांच भाइयों में से दो भाइयों को सांयों का खेड़ा, दो को करणवास और एक को ढीकावाड़ा (सलूम्बर) गांव उत्तराधिकार के बंटवारे में प्राप्त हुए। लेकिन किसनाजी की काव्य प्रतिभा, इतिहास प्रेम, विद्वता आदि से महाराणा भीमसिंह बहुत प्रभावित थे। उस समय एक वर्ष के बारह महिनों में से नो माह की चाकरी महाराणा की सेवा में बराबर देनी पड़ती थी, इस चाकरी में भी किसनाजी कभी चूक नहीं करते थे। तत्कालीन राजनीतिक उठा-पटक में भी किसनाजी महाराणा के पूर्ण विश्वासपात्र व सलाहकार थे। इन्हीं सब गुणों के कारण महाराणा भीमसिंह ने किसनाजी को निम्न छः गांव जागीर[2] में भेंट-स्वरूप प्रदान किये —

1. नवा गांव (प्रगणा-चावण्ड) वि. सं. 1863, आसाढ़ सुदी 4, बुधवार
2. सारणां रो खेड़ो (प्रगणा-पुर) वि. सं. 1867 मृगसिर विद 12, शुक्रवार
3. सीसोदा (प्रगणा-पहलाव) वि.सं. 1875 चैत्र विद 5, मंगलवार
4. गोवला (प्रगणा-वेगूं) वि.सं. 1882 आसोज विद 7
5. बलदरखा (प्रगणा-चित्तौड़) वि.सं. 1883 पोस सुदी 3, रविवार। यह गांव महाराणा भीमसिंह के पाटवी पुत्र महाराजकुमार अमरसिंह[3] ने भेंट दिया था।
6. धनजी का खेड़ा[4] (नाथद्वारा के पास)

किसनाजी को उपर्युक्त छःगांव महाराणा की ओर से जागीर में भेंट-स्वरूप प्राप्त हुए, उनमें से सारणों का खेड़ा और सीसोदा गांव जागीर में कैसे मिले, इस संबंध में निम्न घटनाएं प्रसिद्ध हैं —

---

1. भीम विलास, छंद सं. 545-75, पृ. 151-60
2. गांवों के विवरण के लिये देखें-भीम विलास का परिशिष्ट-तीन, पृ. 267-70
3. महाराज कुमार अमरसिंह का निधन कंवरपदे में ही हो गया था।
4. धनजी का खेड़ा किसनाजी को जागीर में कब मिला, ताम्रपत्र उपलब्ध नहीं होता है। लेकिन यह गांव आढ़ाओं की जागीर में था।

1- तत्कालीन परगणा पुर में करणवास गांव महाराणा की ओर से किसनाजी के दादा पनजी आढ़ा को पहले ही भेंट में दिया हुआ था। पैतृक बंटवारे में यह गांव किसनाजी के दो भाइयो को प्राप्त हुआ था, लेकिन इस करणवास गांव की सीमा पास ही के सारणों के खेड़ा से इस तरह मिलती थी कि गांव की सीमा को लेकर करणवास में रह रहे किसनाजी के दो भाइयों के साथ सारणों के खेड़े के जाटों का आये दिन विवाद-झगड़ा होता ही रहता था। किसनाजी के महाराणा के साथ मधुर सम्बन्ध थे, अतः करणवास स्थित दोनों भाई चाहते थे कि किसनाजी सारणों का खेड़ा भी करणवास के साथ ही महाराणा से जागीर में दिलवा दें तो आये दिन का यह सीमा विवाद न हो।

एक वार महाराणा माण्डल जा रहे थे, किसनाजी भी साथ में थे। रास्ते में सारणों का खेड़ा और करणवास पड़ता था। ज्योंहि सारणों का खेड़ा गांव आया, वहां किसनाजी ने खेजड़ी के वृक्ष को देखा, इस वृक्ष को देखते ही किसनाजी उस खेजड़ी को बाथ में लेकर लिपट गये। महाराणा ने यह देखकर जिज्ञासावश पूछा कि किसनाजी यह क्या कर रहे हो तो किसनाजी ने कहा, हजूर! यह मेरे पिहर (पांचेटिया-मारवाड़) का वृक्ष है। इसे देखकर मुझे मेरी जन्मभूमि की याद आ गई। महाराणा ने यह सुन कर उस खेजड़ी वाला गांव सारणों का खेड़ा पीहर के गांव के रूप में भेंट में दे दिया और इस तरह किसनाजी ने अपने भाइयों की समस्या को हल किया।

2-इसी तरह सीसोदा गांव किसनाजी को जागीर में मिलने के बारे में प्रसिद्ध है कि एक वार किसनाजी अपने पैतृक गांव पांचेटिया से देसूरी के रास्ते से घोड़े पर बैठकर मेवाड़ में आ रहे थे। सर्दी का समय था। नाथद्वारा से 15 कि. मी. उत्तर-पश्चिम में गांव सीसोदा में कुछ लोग आग लगाकर ताप रहे थे। किसनाजी को हुक्का पीने की आदत थी। उन्होंने घोड़े पर बैठे-बैठे ही आग ताप रहे लोगों से कहा कि उनके हुक्के में आग भर दे। इस पर उन लोगों में से एक भाणा पटेल ने कहा कि कौन सी जागीर जीतकर आ रहे हो, इसलिये हम तुम्हारा हुक्का भर दें। इस पर किसनाजी ने कहा कि ठीक है, मैं जागीर जीतकर ही आऊंगा और हुक्का भरवाऊंगा।

संयोग से महाराणा भीमसिंह ने कुछ दिनों के वाद ही किसनाजी से प्रसन्न हो, उन्हें कुछ मांगने को कहा। किसनाजी ने सीसोदा गांव जागीर में मांगा। महाराणा तो देना चाहते थे लेकिन महाराणा के सलाहकारों ने कहा कि सीसोदा मेवाड़ के

महाराणाओं की पितृभूमि[1] है। उसकी अपनी प्रतिष्ठा है, अतः उसे चारणों की जागीर में देना ठीक नहीं रहेगा, उसे महाराणा के खालसे में ही रहना चाहिये। इस पर किसनाजी नाराज होकर पांचेटिया चले गये। इस पर महाराणा को बहुत दुःख हुआ और पत्र भेजकर उन्हें वापस मेवाड़ बुलवाया और सीसोदा गांव उन्हें जागीर में भेंट दिया। अपनी इच्छा पूरी होने पर किसनाजी ने यह गीत बनाकर महाराणा को सुनाया—

कीजै कुण-मीढ न पूजै कोई,
धरपत झूठी ठसक धरै।
तो जिम 'भीम' दिये तांबापतर,
कवां अजाची भलां करै ॥१॥

पटके अदत खजांना पेटां,
देतां बेटां पटा दियै।
सीसोदौ सांसण सीसोदा,
थारा हाथां मौज थियै ॥२॥

मन महरांणा धनो मेवाड़ा,
दाखै धाड़ा दसूं दिसा।
राजा अन वांधै रजवाड़ा,
तूं गढ़वाड़ा दिये तसा ॥३॥

अधपत तनै दियारौ अंजस,
लोभी अंजस लियारौ।
भांणै सांच जणायौ भीमा,
हाथां हेत हियारौ ॥४॥

---

1. अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण और पद्मिनी के जौहर के बाद चित्तौड़गढ़ पर जब गुहिलवंशी शासकों का अधिपत्य नहीं रहा, रावल रतनसिंह आदि सब मारे गये तो रतनसिंह के नजदीकी रिश्तेदार गुहिलवंशी और सीसोदे के स्वामी राणा हमीर ने अपने बाहुबल से चित्तौड़गढ़ पर पुनः गुहिलवंश का आधिपत्य जमाया, तब से ही हमीर सीसोदे का होने के कारण मेवाड़ के शासक सिसोदिया और महाराणा कहलाते हैं। इस तरह भीमसिंह सिसोदिया वंशी ही था और सीसोदा इसी कारण पैतृक गांव माना जाता था।

कर्नल टॉड से सम्पर्क

तत्कालीन ब्रिटिश सरकार की ओर से गवर्नर जनरल लार्ड हैस्टिग्ज द्वारा राजस्थान की परिस्थितियों से परिचित होने के कारण कर्नल जेम्स टॉड को वि. सं. 1875 (1818 ई.) में मेवाड़ का पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त किया गया। टॉड को राजपूतों के इतिहास से बहुत लगाव था। वह प्रतिदिन के अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त राजस्थान के राजपूतों की इतिहास विषयक सामग्री को भी संकलित करने लगा। किसना आढ़ा महाराणा भीमसिंह का कृपा-पात्र, इतिहासप्रेमी एवं कवि होने के कारण शीघ्र ही कर्नल जेम्स टॉड के सम्पर्क में आ गया और उसके साथ उसके मधुर सम्बन्ध हो गये। टॉड लगभग साढ़े चार वर्ष अर्थात् वि. सं. 1879 (जून, 1822 ई.) तक मेवाड़ में रहा और इस दौरान उसने अपनी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एण्टिक्विटिज ऑफ राजस्थान' के लिये सामग्री एकत्रित की, उसमें किसना आढ़ा ने टॉड का भरपूर सहयोग किया। सामग्री संग्रह के अतिरिक्त उसने एकत्रित सामग्री की व्याख्या करने, समझाने एवं नोट्स लेने में भी टॉड की काफी मदद की। संयोग से वि. सं. 1879 में ही किसना ने 'भीम विलास' काव्य ग्रंथ की रचना की। इसके निर्माण और विषय-वस्तु चयन में भी इस सामग्री संकलन कार्य से किसना को बहुत लाभ हुआ।

सिसोदा गांव महाराणा ने अपने सलाहकारों की सलाह के विरुद्ध किसना को भेंट में दिया था, अतः किसना को यह भय बना रहता था कि कहीं इस गांव को वापस नहीं ले लिया जाय, इस दृष्टि से टॉड से उसने सिसोदा का पक्का पट्टा करवा लिया। टॉड ने महाराणा को इस सन्दर्भ में यह भी कहा कि ऐसे विद्वान और प्रतिभाशाली व्यक्ति को तो सिसोदा से भी अधिक आय की जागीर देनी चाहिये।[1]

जवानसिंह का काव्य-गुरु

किसना आढ़ा इतिहासप्रेमी ही नहीं, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल और पिंगल भाषाओं का अच्छा ज्ञाता भी था। लक्षण ग्रंथों (छन्द शास्त्र) का भी वह पारंगत विद्वान था। उस समय के बुद्धिजीवियों में किसना की गणना होती थी। किसना की इस विद्वता को देखकर महाराणा भीमसिंह ने अपने पुत्र कुंवर जवानसिंह की शिक्षा-दीक्षा किसना के मार्ग-दर्शन में कराई और लक्षण काव्य का ज्ञान स्वयं किसना द्वारा कराने का आदेश दिया। इस समय किसना भी अपने पुत्र महेसदास

---

1. टॉड से सिसोदा का अलग से और पट्टा कब करवाया और वह पट्टा अब कहां है, इस बारे में जानकारी नहीं मिलती। इसकी प्रामाणिकता के बारे में शोध करने की आवश्यकता है। किसना के वंशजों का कहना है कि यह पट्टा मिला था और जागीरों के हस्तान्तरण के समय वह कहीं खो गया।

चारणी की परम्परा के अनुसार छन्द शास्त्र का अध्ययन करा रहा था और इसके लिये किसना ने 'रघुवरजसप्रकास' नामक लक्षण ग्रंथ की रचना भी की थी।

किसना ने वि. सं. 1883 वैशाख शुक्ला सप्तमी गुरुवार को शुभ मुहूर्त देखकर कुंवर जवानसिंह को पढ़ाना आरंभ किया। सबसे पहले किसना ने केशवदास कृत 'कविप्रिया' का अध्ययन कराया और इसे एक माह और दो दिन में ही अर्थ सहित पढ़ाकर समाप्त कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि कुंवर जवानसिंह[1] ने काव्य रचना की नब्ज पकड़ ली और इसी वर्ष ज्येष्ठ शुक्ला नवमी से जवानसिंह ने दोहा, कवित्त, छप्पय, सवैया आदि बनाने शुरु कर दिये। इन छन्दों को किसनाजी ने कुंवर जवानसिंह के आदेशानुसार एक पोथी में लिखना आरंभ कर दिया। इस बात की पुष्टि 'ब्रजराज पद्यावली' के प्रथम पृष्ठ के निम्न अंश[2] से होती है—

> ॐ नमः श्री गुरुगणपतत्रिष्ट देवताभ्यो नमः ।। अथ संमत १८८३ रवि वेसाष सुद ७ गुरे रै दिन महाराजकंवर श्री १०८ श्री जवांनस्यंघजी किसना आढ़ा तीरा सुं भणवा रो समौहरत कीधो सो प्रथम ग्रंथ कवि-प्रिया पढ्या नै कविता दुहा वणावा रो पण प्रारंभ कीधो सौ मास १ दन २ तो कविप्रिया हीज अरथ सहित पढ्या नै जेठ सुद ९ सौमे रा दिन सूं कवित दुहा वणावा लागा जी दन सूं ही वणाया सौ कसना तैं हुकम हुवौ कै किसना जी थैं दुहा कवित मांहरा वणाया लिष लिज्यौ श्री हजूर सूं पोथी त्यार कराय बगसी जीमै श्री हजूर का वणाया दुहा कवित सवैया छप्पै आद ख्याल और सरवत्र छंद सो लिखस्यां ।। प्रथम जेठ सुद ८ सोमे रै दिन महाराजकंवार श्री जवांनस्यंघजी दुहो कवित वणाया सो लिषां छां ।।

इस अंश से स्पष्ट होता है कि किसना आढ़ा जवानसिंह के काव्य गुरु थे। जवानसिंहजी को पढ़ाने के उपलक्ष में किसनाजी को उदयपुर नगर के उत्तर में (वर्तमान में जहां पर रेलवे ट्रेनिंग स्कूल है वह) साढ़े बारह बीघा जमीन बेड़च नदी (आयड़ नदी) के किनारे पर भेंट-स्वरुप प्रदान की गई। कहा जाता है कि यह जमीन महाराजकुमार जवानसिंह ने अपने कंवरपदे में ही दी। इसे 'जवान बाग' और

---

1. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, उदयपुर में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रंथ सं. 369 ब्रजराज पद्यावली, पत्र संख्या-1, प्रारम्भ का अंश।

2. महाराणा जवानसिंह ब्रजभाषा के अच्छे कवि थे। 'ब्रजराज' उपनाम से ये कविता करते थे। इनकी कविताओं का एक संग्रह 'ब्रजराज काव्य माधुरी' शीर्षक से साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर से सन् 1966 में प्रकाशित हो चुका है।

'सिसोदा की वाड़ी' के रूप में जाना जाता था। इस जमीन पर किसना आढ़ा के पौत्र जोरावरसिंह आढ़ा की एक छतरी [1] भी बनी हुई है।

विवाह एवं संतति

किसनाजी ने अपने जीवनकाल में एकाधिक विवाह किये थे। उनमें से एक विवाह गांगागुड़ा किया था। शेष विवाह कब और कहां पर किये, इसकी जानकारी नहीं मिलती, लेकिन इनके एक ही पुत्र-महेसदास था, जिसे वे बहुत प्यार करते थे। उसे चारणी परम्परानुसार शिक्षा भी दी थी। इसका विवाह गांव मेंगटिया के आशिया परिवार में बहुत धूम-धाम से किया था। इस शादी में महाराणा जवानसिंह भी सीसोदा आकर शरीक हुए थे,[2] इससे पता चलता है कि भीमसिंह के निधन (वि. सं. 1885) के बाद महाराणा जवानसिंह के साथ भी इनके सम्बन्ध मधुर थे। महाराणा जवानसिंह महेसदास की शादी में सिसोदा आये, इस सन्दर्भ का एक गीत भी मिलता है, जिसका प्रारंभिक अंश इस प्रकार है—

सिध श्रीमान उजालग सुं सनमाने,
जगदाता दीवांण जवांन।
पात घरे चावल ले पीला,
मात पिता आया मिजमांन ।।१।।

मैसा तणो विवाह मंडतां,
नव निध बगस चाडे कुल नीर।
किसना तणे झुंपड़े बिलकुल,
हुवो पांमणो बियो हमीर ।।२।।

---

1. जोरावरसिंह आढ़ा का देहान्त उदयपुर में ही हुआ था, दाह-संस्कार स्थानीय महासतियांजी में हुआ किन्तु देऊकुंवर (पाणेर गांव के बारहठ परिवार से संबंधित) की इच्छा से अपने पति की स्मृति में जवान बाग में एक छतरी बनवा कर उसमें शिवलिंग स्थापित किया। जब राज्य सरकार ने इस जमीन का अधिग्रहण कर यहां पर रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल बनाया तो इनके वंशजों की इच्छानुसार इस छतरी को कायम रखा गया। अब इसको नया रूप देकर शिवमंदिर के रूप में पूजा की जाती है।

2. महेसदास की शादी में महाराणा जवानसिंह जब सीसोदा आये तब उनके हाथी को किसनाजी के मकान (रावला) के सामने रावला चौक में कुंभाला गाड़ कर उससे बांधा गया था। यह कुंभाला आज भी विद्यमान है और सीसोदा के आढ़ा परिवार में जो भी बालक पैदा होता है, उसकी 'नाल' इस कुंभाले के पास ही जमीन में गाड़ी जाती है।

महेसदास के विवाह के बाद किसना को पुत्र सुख अधिक दिनों तक नहीं मिला और महेसदास का निःसन्तान ही निधन हो गया।[1] अपने प्रिय पुत्र के इस आकस्मिक निधन का किसना को गहरा मानसिक आघात लगा। कुछ समय बाद किसनाजी ने सायां का खेड़ा स्थित अपने छोटे भाई चिमनजी के पुत्र रामलाल को गोद लिया।[2]

निधम एवं स्मारक

किसनाजी के निधन के बारे में जानकारी नहीं मिलती, लेकिन महेसदास की मृत्यु के बाद लगे सदमे के कारण वे अधिक समय तक जीवित नहीं रहे और महाराणा जवानसिंह के शासनकाल वि. सं. 1885-95 (1828-38 ई.) के मध्य कभी उनका देहान्त गांव सीसोदा में हुआ। गांव के बाहर खारी नदी के किनारे रावला रहट के पास किसनाजी का दाह-संस्कार किया गया। जहां पर इनके स्मारक रूप में एक भव्य छतरी उनकी पुत्र वधु आसियाणीजी द्वारा बनवाई गई।

यह छतरी काले पत्थर के प्लेटफार्म पर बनी हुई है। जिस पर श्वेत संगमरमर के सोलह स्तंभ है। इन स्तंभों पर चार छोटी और बीच में एक बड़ी गुम्वज बनी हुई है। छतरी का स्थापत्य सामान्य कलात्मक है। छतरी पर जाने के लिए पूर्व से पश्चिम

1.(क) महेसदास का दाह-संस्कार सीसोदा में खारी नदी के किनारे रावला रहट के पास किया गया। जहां महेसदास की स्मृति में एक छतरी बनी हुई है। इस छतरी के पास ही महेसदास के गुरु की भी छतरी है।

(ख) महेसदास के निधन के बाद उसकी पत्नी आशियाणी जी ने अपना पूरा समय धर्म-ध्यान और पुण्य कार्यों में लगाया। किसनाजी द्वारा अर्जित सम्पति से इन्होंने 12 मन्दिर एवं 12 बावड़ियां क्रमशः तासोल, सिसोदा, मेंगटिया, पांचेटिया, पुष्कर, उदयपुर आदि स्थानों पर बनवाई। उदयपुर में रावजी के हाटे में नृसिंह-द्वारा के सामने सिसोदा का मन्दिर बनवाया जो आज भी विद्यमान है। जागीर के गांवों में से आधा तासोल चारभुजाजी को और सिसोदा के पास स्थित छोटा सीसोदा श्रीनाथजी को भेंट में दे दिया। किसनाजी ने जब रामलाल को गोद लिया तो आशियाणीजी द्वारा इस तरह किसनाजी को सम्पत्ति को पुण्य-कार्यों में लगा देने पर रामलाल ने कहा कि किसना ने बहुत धन कमाया, लेकिन पुण्य कार्यों में लगा देने से उसे तो केवल किसना का हुक्का ही हाथ लगा, यथा—

किसने धन कियो कित्तो, वसुधा जाहर वात।
अर लगायो पुनरथ, म्हारे हुक्को आयो हात॥

2. रामलाल आढ़ा के फुटकर गीत मिलते हैं। ये शरीर से मोटे, घोड़ों के शौकीन और भोजन में विशेष रुचि रखते थे। लगभग 60 वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ।
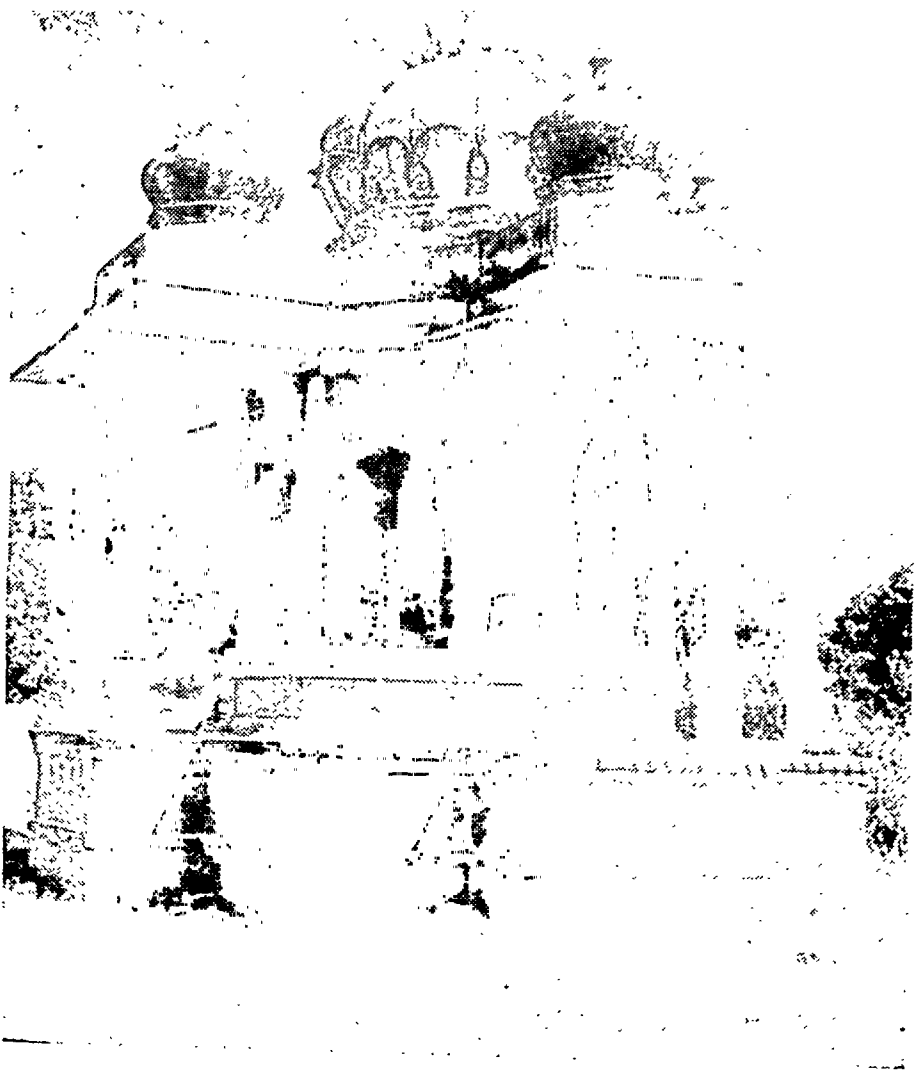
सिसोदा गांव स्थित किसना आढ़ा का स्मारक (छतरी)

दिशा की ओर छः सीढ़ियां बनी हुई हैं। छतरी के बीचोंबीच बड़ी गुम्बज के नीचे चतुर्मुखी शिवलिंग है। शिवलिंग के सामने दक्षिण दिशा की ओर नांदिया बैठा हुआ है, जिसका मुंह उत्तर की ओर तथा शिवलिंग के सामने है। नीचे सीढ़ियों के पास-ही एक श्वेत संगमरमर का स्तंभ भी जमीन में गड़ा हुआ है, जिस पर सूर्य व चन्द्रमा की आकृति बनी हुई है। वर्षा के कारण छतरी पर काई जम गई हैं। इस छतरी की भव्यता को देखकर ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि किसनाजी का व्यक्तित्व अपने समय में कितना प्रभावी रहा होगा। चारण कवियों में ऐसी बड़ी छतरियां बहुत कम दिखाई देती है।

निर्माण कार्य

किसना आढ़ा ने अपने जीवनकाल में उदयपुर नगर के रावजी का हाटा में पास-वानजी के मंदिर के पास एक बड़ा मकान बनाया, जिसे सिसोदा की हवेली कहा जाता है।[1] सिसोदा गांव में रहने का मकान 'रावला' बनाया, खेती को भी आबाद किया।

रचनाएं

किसनाजी द्वारा रचित निम्न साहित्य उपलब्ध होता है—

1. भीम विलास 2. तेहवार वर्णन 3. रघुवरजसप्रकास 4. फुटकर गीत

'भीम विलास' काव्य ग्रंथ है। महाराणा भीमसिंह की आज्ञा से वि. सं. 1879 में इसकी रचना की। इसमें कुल 775 छंद है। इस संदर्भ में विशेष जानकारी आगे प्रस्तुत की जा रही है।

'तेहवार वर्णन' काव्य ग्रंथ में मेवाड़ में प्रचलित तेहवारों एवं उसमें महाराणा भीमसिंह द्वारा भाग लेने का वर्णन हैं। इसका रचना काल वि. सं. 1880 श्रावण विद 1 है। इसमें श्रावण मास के त्यौहारों से लेकर माघ मास तक के अर्थात् सात महिनों के मेवाड़ में प्रचलित त्यौहारों का वर्णन हैं। ग्रन्थ अपूर्ण हैं। कुल छन्द संख्या 79 हैं। भीम विलास की 'क' प्रति के प्रारम्भ में 11 पत्रों में यह तेहवार वर्णन ग्रंथ लिपिबद्ध है।[2] इस रचना के प्रारम्भ में 'तेहवार वर्णन ग्रन्थ भीम विलास मध्ये' वाक्य आया है। इससे प्रतीत होता है कि कवि इस 'तेहवार वर्णन' अंश को 'भीम विलास' में ही जोड़ना चाहता था। इसका मूल पाठ 'भीम विलास' ग्रंथ के साथ परिशिष्ट में प्रकाशित किया गया है।

---

1. अब यह हवेली किसनाजी के वंशजों के पास नहीं है, यह बिक चुकी है।
2. साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रन्थ सं. 981 'भीम विलास' पत्र स. 1-11

'रघुवरजसप्रकास' एक लाक्षणिक ग्रंथ है तथा राजस्थानी भाषा की छंद रचना से सम्बन्धित है। राम गुणगान एवं भक्ति के माध्यम से कवि ने छन्दों की रचना व लक्षणों को समझाया है। पूरा ग्रंथ चार प्रकरणों में विभक्त है। इसका रचना काल वि. सं. 1881 आश्विन शुक्ला विजयादशमी शनिवार है। यह राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित है।

कवि के दान-पुण्य, भक्ति, प्रशंसा आदि से सम्बन्धित विविध फुटकर डिंगल गीत भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध होते हैं। महाराणा भीमसिंह से सम्बन्धित डिंगल गीतों को प्रस्तुत ग्रंथ के परिशिष्ट में दिया गया है।

व्यक्तित्व एवं संस्मरण

किसना आढ़ा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी था। प्रकृति से वह सहज, सरल, सात्विक एवं आध्यात्मिक था। उसके काव्य में शृंगारिकता हावी नहीं है, जहां पर भी शृंगार के दृश्य आये हैं वहां उसने अत्यन्त संयम से काम लिया है। मूलतः उसका स्वभाव धार्मिक, भक्ति प्रधान एवं आध्यात्मिक रहा है। भीम विलास में यत्र-तत्र देवी-देवताओं की स्तुतियां तथा रघुवरजसप्रकास में राम का गुणगान इसका उदाहरण हैं। पांचेटिया स्थित किसनाजी के पैतृक मकान में नृसिंहावतार का मंदिर बना हुआ है, किसनाजी इन नृसिंहावतार के परम भक्त थे। नृसिंह को वे इष्टदेव के रूप में स्वीकारते थे और उसी तरह उनकी उपासना भी करते थे। अपने इष्टदेव के प्रति इनका कितना विश्वास था, इस बारे में इनसे जुड़े कुछ संस्मरण आज भी इनके वंशजों में प्रचलित हैं।

एक बार महाराणा भीमसिंह पिछोला में नाव से सैर कर रहे थे, किसना जी उस समय उनके साथ थे। यकायक नाव पानी में डोलने लगी और नाव में पानी भर कर डूबने का भय पैदा हो गया। महाराणा के संकेत पर किसनाजी ने तत्काल अपने इष्टदेव का स्मरण किया और संकट टल गया।

इसी तरह एक बार वर्षा के मौसम की घटना है। एक व्यक्ति किसी काम से सिसोदा आया और अपने घोड़े को पास ही के वृक्ष से बांधने लगा, किसनाजी उस समय वही थे, उन्होंने उस व्यक्ति को अपने घोड़े को उस वृक्ष से बांधने के लिए मना किया, लेकिन उस व्यक्ति ने मना करने के बाद भी घोड़ा उस वृक्ष से बांध दिया। कुछ समय बाद बिजली वृक्ष पर गिरी और घोड़ा मर गया। इसी तरह की और भी घटनाएं प्रचलित है, इससे पता चलता है कि अपने इष्टदेव के प्रति किसनाजी का अटूट विश्वास था। कहा जाता है कि वे सिद्ध प्रवृत्ति के थे। पांचेटिया, सिसोदा आदि के आढ़ा परिवार में आज भी नृसिंह भगवान के प्रति काफी निष्ठा और भक्ति है। ये एक दूसरे से जब भी मिलते हैं या पत्र लिखते हैं तो आज भी ये 'जैनरसिंगजी' अभिवादन ही करते हैं।

अपने समय के मेवाड़ के चारण कवियों में किसनाजी सर्वाधिक प्रतिभा सम्पन्न और विद्वान थे, विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता, लाक्षणिक ग्रंथों व काव्य शास्त्र में पारंगत थे। काव्य के प्रति सहज रूझान था। हुक्का पीने की उन्हें आदत अवश्य थी, लेकिन और कोई व्यसन नहीं था। एक बार किसनाजी के सम्पर्क में जो आता, वह हमेशा के लिए किसनाजी का हो जाता। महाराणा भीमसिंह और उनके उत्तराधिकारी महाराणा जवानसिंह दोनों इन पर अटूट विश्वास करते थे। तत्कालीन राजनीति की उठा-पटक से ये भली-भांति परिचित थे, इस कारण ये उसमें उलझते नहीं थे, लेकिन अवसर आने पर ये मेवाड़ के हित का सदैव ध्यान रखते थे। मेवाड़ पर जब दिलेर खां ने चढ़ाई की तो उसे समझाने के लिए महाराणा ने किसनाजी को ही भेजा और दोनों के मध्य समझौता कराया।[1] इस पर किसनाजी को 'शेरकूंची' नाम की तलवार भेंट में दी गई। तलवार पर 'कलमा' खुदा हुआ था और वह कलात्मक थी। यह तलवार अभी भी किसनाजी के वंशजों के पास है, इस सन्दर्भ में निम्न दोहा भी प्रचलित है—

की राणा अंजस करो, दिल सूं कह्यो दलेल।
आढो किसनो न आवतो, फेर देखता फेल॥

अपने परिजनों के प्रति भी किसनाजी में काफी ममत्व था। करणवास स्थित अपने भाइयों व सारणों का खेड़ा के जाटों का मामला इन्होंने सारणों का खेड़ा करणवास के भाइयों को दिलाकर निपटाया। इसी प्रकार पांचेटिया के अपने भाई-बन्धु एक बार आर्थिक संकट में आ गये तो उस संकट को किसनाजी ने ही हल किया, तब से ही किसनाजी को श्री रावलाऊ और 'किसन बावसी' के सम्बोधन से पुकारा जाता था। ये सम्बोधन किसनाजी की परम्परा में पाटवी पुत्र के लिए आज भी प्रचलित है।

इस प्रकार किसनाजी एक उच्च कोटि के कवि, प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी, चारणी मर्यादा के पोषक, इतिहासविद् और तत्कालीन दरबारी कवियों में प्रतिष्ठित थे।

भीम विलास

रचनाकाल

'भीम विलास' किसना आढ़ा का प्रथम काव्य ग्रन्थ है। इसकी रचना से पूर्व कवि ने फुटकर डिंगल गीत अवश्य लिखें किन्तु किसी बड़ी रचना का निर्माण नहीं किया। महाराणा भीमसिंह ने स्वयं अपने श्रीमुख से इस ग्रन्थ की रचना का आदेश दिया। इस आदेश की पालना करते हुए कवि ने इसकी रचना वि. सं. 1879 की वसंत ऋतु में चैत्र शुक्ला द्वितीया को की थी—

---

1. यह घटना कब की है, इस बारे में निश्चित तिथि उपलब्ध नहीं होती, ऐतिहासिक विवरणों में भी कोई उल्लेख नहीं मिलता। वि. सं. 1873 में दिलेर खां मेवाड़ में आया, संभवतः यह घटना तब की हो।

अष्टादस संमतह, वरस गुनयासी जानहुं ।
रित वसंत अरु चैत सुधि, दुतिया तिथ मानहुं ।।
भीम रांन करि कृपा, हुकंम श्रीमुख फुरमाइय ।
दूलह सुतन कवि किसंन, तांम यह ग्रंथ वनाइय ।।

शीर्षक

'भीम विलास' को इसकी उपलब्ध विभिन्न हस्तलिखित प्रतियों में 'रूपग', 'प्रकास' और 'विलास' के रूप में सम्वोधित किया गया हैं। इसलिये इस ग्रंथ के नाम या शीर्षक को लेकर भ्रम उत्पन्न हो जाता है कि इसका वास्तविक नाम क्या है ? स्वयं कवि ने ग्रन्थारम्भ करते हुए इसे 'रूपग' कहा है—

'क' प्रति 1. "अथ रूपग श्री श्री १०८ श्री दीवांणजी श्री भीमसींघजी को आढ़ा किसना कृत"[1]

'ग' प्रति 2. "अथ रूपक श्री श्री १०८ श्री दिवांणजी श्री भीमसिंघजी को आढ़ा कृष्णा कृत"[2]

'घ' प्रति 3. "अथ रूपग श्री श्री १०८ श्री दीवांणजी श्री भीमसिंघजी को आढ़ा किसना कृत"[3]

लेकिन एक प्रति में इसे प्रारम्भ और अन्त की पुष्पिका में दोनों स्थानों पर 'प्रकास' के रूप में वताया है—

'ख' प्रति 1. "अथ भीम प्रकास ग्रंथ हजुर श्री १०८ श्री श्री भीमसींगजी को आढा कसनजी को वणायो"[4]

2. "ईती ग्रंथ श्री १०८ श्री श्री दीवांणजी श्री भीमसींघजी को ग्रंथ भीम प्रकास आढा कसनजी को वणायो ....।"[5]

---

1. साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर में संग्रहीत हस्तलिखित ग्रंथ सं. 981, पत्र सं. 31 (व) प्रारम्भ का अंश ।
2. वही, ग्रन्थ सं. 123, पत्र सं. 1 प्रारम्भ (अ)
3. वही, ग्रन्थ सं. 286, पत्र सं. 1 प्रारम्भ (अ)
4. वही, ग्रन्थ सं. 290, पत्र सं. 1 प्रारम्भ (अ)
5. वही, ग्रन्थ सं. 290, पत्र सं. 125 (अ) अन्त की पुष्पिका ।

इस प्रकार 'भीम विलास' की 'ख' प्रति में इसे 'भीम प्रकास' के रूप में सम्बोधित किया है, किन्तु 'भीम प्रकास' नाम की एक और कृति रामदान लालस द्वारा रचित प्राप्त होती है।[1] इससे रामदान लालस और किसना आढ़ा दोनों की कृतियों में भ्रम पैदा होने की संभावना बनी रहती है, जबकि दोनों कृतियां अलग-अलग है।

इसके विपरीत स्वयं कवि ने महाराणा भीमसिंह द्वारा इस ग्रंथ को सुनकर, रीझकर, अधिक कृपा प्रदान करते हुए प्रसन्न होकर इस ग्रंथ का नाम 'भीम विलास' प्रकासित करने का स्पष्ट उल्लेख किया है—

सुनि रीझ भीम अरसिंघ सुत, कुरब क्रपा दत अधिक दिय।
यह ग्रंथ नांम सहुलास चित, 'भीम विलास' प्रकास किय ।।७७०।।

इसके आगे कवि ने ग्रंथ के अंत में मूलपाठ के अन्तर्गत ग्रंथ का रचनाकाल, ग्रंथ रचना का उद्देश्य, ग्रंथ की महिमा का वर्णन करते हुए तथा महाराणा भीमसिंह के पुत्र जवानसिंह का सन्दर्भ देते हुए इसे बार-बार 'विलास' के रूप में सम्बोधित किया है—

प्राकास सभार सरीत धरि, वरनाश्रंम कुल धरम द्रढि।
कवि किसंन बतावहि इक्कथल, पावहि 'भीम विलास' पढि ।।७७१।।

× × ×

तिथ्थ जात उगति जुगतिह त्रिगुन, गिर प्रसाद सुभ सबद मढि।
कवि किसंन बतावहि इक्कथल, पावहि 'भीम विलास' पढि ।।७७२।।

× × ×

भट असल स्वांमिध्रम करन द्रिढ, कमसल तिंन दाहक हियो।
कवि किसंन 'भीम विलास' गुन, भीम हुकम वर्णन कियो ।।७७३।।

× × ×

महारांन भीम निज पुत्र जु, अमर होहु आसीस दिय।
गुन 'भीम विलास' किसंन कवि, कीरत पुत्र प्रकास किय ।।७७४।।

इससे स्पष्ट होता है कि इस ग्रंथ का नाम या शीर्षक 'भीम विलास' ही है।[2] मोटे रूप में राजस्थानी साहित्य में रूपग, प्रकास और विलास तीनों को एक ही अर्थ में

---

1. डॉ. मेनारिया-राजस्थानी भाषा और साहित्य, पृ. सं. 268-69 (सन् 1978)
2. 'भीम विलास' नाम से ही एक और राजस्थानी का ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ उपलब्ध होता है। यह शंकरराव कृत राजस्थान के नीमराना ठिकाना जिला अलवर के चौहानवंशीय राजा भीमसिंघ (1868-77 ई.) से सम्बन्धित है। इसमें कुल 197 छन्द है तथा डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा ने इसका सम्पादन कर लोकभाषा प्रकाशन, कोटपूतली से सन् 1983 में प्रकाशित कराया है।

ग्रहण किया जाता हैं तथा ये तीनों चरित काव्य के लिये ही प्रयुक्त होते हैं। संस्कृत साहित्य में रूपग (रूपक) अवश्य नाट्य साहित्य के लिए प्रयोग किया जाता है किन्तु राजस्थानी में यह चरित काव्य के लिये ही रूढ है। इस प्रकार विभिन्न प्रतियों में उपयुक्त तीनों नाम तीन अलग-अलग कृतियों के सूचक नहीं है तथा नहीं एक ही कृति के तीन भिन्न-भिन्न नाम है अपितु तीनों नाम केवल एक ही कृति 'भीम विलास' के लिये प्रयुक्त हुए हैं।

हस्तलिखित प्रतियां

'भीम विलास' की चार हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं और ये चारों साहित्य संस्थान के संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इनकी हस्तलिखित ग्रंथ संख्या क्रमश: 123, 286, 290 और 981 हैं। सम्पादन की सुविधा की दृष्टि से इन चारों प्रतियों को क, ख, ग, और घ प्रति से नामांकित किया गया है। इन चारों प्रतियों में प्रति सं. 981 अर्थात् 'क' प्रति सबसे प्राचीन है और इसे ही पाठ सम्पादन में आधार प्रति के रूप में स्वीकार किया गया है। चारों प्रतियों का परिचय इस प्रकार है :—

'क' प्रति

यह प्रति किसना आढ़ा के वर्तमान वंशज श्री केसरीसिंह आढ़ा के सौजन्य से प्राप्त हुई है। यह मूल और आधार प्रति है। संस्थान के हस्तलिखित संग्रहालय में ग्रंथ सं. 981 पर दर्ज है। इस सम्पूर्ण प्रति में कुल पत्र संख्या 216 है। प्रति का आकार 32×24 से. मी. है। प्रति पृष्ठ 17-23 पंक्तियां हैं तथा प्रति पंक्ति 17-20 अक्षर हैं। इस प्रति की विशेषताएं निम्न है—

1- यह प्रति कवि के जीवनकाल में ही तैयार की गई प्रतीत होती है और उपलब्ध प्रतियों में सबसे प्राचीन प्रति है।

2- प्रतिलिपि करने के बाद कवि ने इसमें और भी घटनाएं और सामग्री बढ़ाई है। बढ़ाई गई सामग्री या तो ग्रंथ के हाशिये में अथवा ग्रंथ के ऊपर या नीचे की खाली जगह में लिखी गई है तथा जहां पर इस सामग्री को जोड़ना है, वहां पर प्राय: काली स्याही से $\overset{V}{\Lambda}$ का निशान लगाया गया है।

3-मूल प्रति के अंत में छंद संख्या 717 अंकित है, किन्तु स्थान-स्थान पर सामग्री बढ़ाने तथा प्रारम्भ में छंदों की संख्या की गड़बड़ी के कारण सम्पूर्ण कृति की छंद सं. 775 हो गई है।

4- छंदों में कहीं-कहीं पहले प्रयुक्त शब्द को हटाकर उसके बजाय हाशिये में दूसरा शब्द भी लिखा है और हटाये गये शब्द को '=' के निशान से चिन्हित कर दिया है। कहीं-कहीं पर पूरी पंक्ति को काट कर दूसरी पंक्ति लिखी गई है और कहीं-कहीं पर तो पात्रों के नाम भी बदल दिये गये हैं।

5- युद्ध वर्णन अथवा विवाह आदि अन्य प्रसंगों पर कवि ने जहां तत्कालीन सामन्तों, जागीरदारों, ठाकुरों, वीरों आदि के नाम दिये हैं, वहां पर उन नामों को स्पष्ट करने के लिए नाम के लगभग ऊपर इस व्यक्ति के गांव का, वंश का अथवा उसके पिता के नाम का उल्लेख भी उसकी पहचान को बताने के लिए कवि ने कर दिया है। ऐसा करते समय कहीं पर लाल तो कहीं पर काली स्याही का प्रयोग किया गया है।

6- प्रति के आरम्भ में 'त्योहार वर्णन' काव्य पत्र सं. 1 [अ] से 11 [ब] तक लिपिबद्ध है, जो अपूर्ण है। इसके बाद 'भीम विलास' को पत्र सं. 28 से आरम्भ कर, उसको छंद स. 6 तक लिख कर छोड़ दिया गया है, तत्पश्चात दो पत्र खाली है, फिर पत्र सं. 31 [ब] से 'भीम विलास' आरम्भ किया गया है जो पत्र सं. 207 [अ] पर जाकर समाप्त हुआ है। अन्त में पत्र सं. 208 [अ] से 210 [अ] तक फिर तेहवार वर्णन अंश लिपिबद्ध किया है। ग्रंथ में पत्र सं. 184 से 187 तक, 189 से 98 तक तथा 200 से 206 तक मूलपाठ एक ओर ही लिखा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रंथ में बाद में और पत्ते जोड़े गये हैं। इस कारण प्रतिलिपि करने में यह गड़बड़ी हुई है।

7-इस कृति को स्थानीय घोसुण्डा के कागज पर लिखा गया है। इसकी जिल्द कच्ची है।

8-इस प्रति के पत्र सं. 184 पर स्याही गिर गई है, जिससे मूल पाठ को पढ़ने में असुविधा होती है।

9-लिपि सुपाठ्य है तथा पंक्ति खींचकर तत्कालीन देवनागरी लिपि में मूल पाठ लिखा गया है। छंद संख्या काली स्याही में अंकित है किन्तु छंद का नाम व शीर्षक लाल स्याही में अंकित है।

'ख' प्रति

संस्थान के हस्तलिखित संग्रहालय में ग्रंथ सं. 290 पर दर्ज है तथा यह कुल 125 पत्रों में समाप्त हुई है। इस प्रति का आकार 34×25 से. मी. है। प्रति पृष्ठ पंक्तियां 20-26 तक है एवं प्रति पंक्ति 16-25 तक अक्षर है। इस प्रति की निम्न विशेषताएं है—

1- यह प्रति 'क' प्रति से अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। ग्रंथ के अन्त में वि. सं. 1935 ज्येष्ठ सुदी 15 बुधवार की पुष्पिका सात पंक्तियों में लाल स्याही में दी गई है। अन्त में आशिया खेतसिंह के हस्ताक्षर है।

2- प्रति के प्रारम्भ और अन्त में 'भीम विलास' के स्थान पर 'भीम प्रकास' नाम अंकित है।

3- प्रति में कुल छंद सं. 731 है।

4- इस प्रति में सामन्तों, जागीरदारों व ठाकुरों के नाम कहीं-कहीं पर वंश, गांव की पहचान देकर 'क' प्रति की तरह ही लिखा गया है तथा कहीं-कहीं पर और सामग्री बढ़ाई भी गई है, किन्तु 'क' प्रति की तरह संशोधन इसमें नहीं है।

5- प्रति के प्रत्येक पत्र में दोनों ओर लाल स्याही से हाशिया छोड़कर मूल पाठ लिखा गया है।

6- लिपि लगभग सुपाठ्य है तथा लाईन खींच कर देवनागरी लिपि में लिखी गई है। छंद संख्या काली स्याही में दर्ज है। छंद नाम और शीर्षक काली व लाल स्याही में मिलाजुला कर लिखा गया है।

7- कागज घोसुण्डा निर्मित है। जिल्द कपड़े का है किन्तु जीर्ण-शीर्ण हो गया है।

'ग' प्रति

यह प्रति संस्थान के हस्तलिखित संग्रहालय में ग्रंथ सं. 123 पर अंकित है। प्रति में कुल पत्र संख्या 120 तथा पृष्ठ संख्या 240 है। प्रति का आकार 34×21 से. मी. है। प्रति पृष्ठ 23 पंक्तियां है तथा प्रतिपंक्ति 17-25 अक्षर हैं। इस प्रति की विशेषताएं निम्नानुसार है—

1- यह प्रति 'ख' प्रति से भी बाद की प्रति है। इसके अन्त में इस प्रति का लिपिकाल वि.सं. 1964 फालगुन कृष्णा 8 मंगलवार तदनुसार 25 फरवरी, 1908 ई. दिया गया है। अन्त में लाल व काली स्याही में पुष्पिका दी गई है।

2- प्रति के अन्त में कुल छंद सं. 728 दी गई।

3- प्रतिलिपि लाल स्याही में हाशिया छोड़कर की गई है। छंद संख्या काली स्याही में और छंद नाम लाल स्याही में अंकित है।

4- लिपि साफ, सुन्दर व सुस्पष्ट देवनागरी है। शब्दों को तोड़कर आधुनिक ढंग से लिखा गया है।

5- कागज घोसुण्डा निर्मित नहीं है, मेवाड़ से बाहर का आयातित है। प्रति पक्की जिल्द में रजिस्टरनुमा है। जिल्द लाल रंग का है।

6- प्रति के अन्त में वि. सं. 1986 की शिवरती कचहरी की छाप लगी हुई है।

'घ' प्रति

यह प्रति संस्थान के हस्तलिखित संग्रहालय में ग्रंथ संख्या 286 पर अंकित है। इसमें कुल 202 पत्र हैं। प्रति का आकार 27 X 18 से. मी. है। प्रति पृष्ठ 19-21 पंक्तियां हैं तथा प्रति पंक्ति 8-20 अक्षर हैं। इस प्रति की निम्न विशेषताएं हैं—

1- यह प्रति सबसे आधुनिक और 'ग' प्रति से भी बाद की प्रति है। इसके अन्त में प्रति का लिपिकाल नहीं दिया गया है, लेकिन स्याही और अक्षरों की बनावट, कागज आदि से यह सबसे अर्वाचीन प्रति प्रतीत होती है।

2- प्रति के अन्त में कुल छंद सं. 717 दी गई है।

3- प्रति के दोनों ओर लाल स्याही से हांशिया छोड़कर लिखा गया है। छंद संख्या काली स्याही में और छंद नाम लाल स्याही में अंकित है।

4- लिपि साफ, सुन्दर और आधुनिक देवनागरी है। शब्दों को तोड़ कर वर्तमान शब्दों के अनुसार लिखा गया है।

5- कागज घोसुण्डा का नहीं है, बाहर का है, जिल्द बंधी हुई नहीं है। समस्त कागज खुले हैं अर्थात् दो-दो पत्र या चार पृष्ठ एक साथ मुड़े हुए हैं।

इन चारों प्रतियों के उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट है कि 'क' प्रति ही सबसे प्राचीन है और कवि के वंशजों से प्राप्त मूल प्रति है, अतः इसे ही मूलपाठ के लिए आधार प्रति बनाया गया है। चूंकि शेष प्रतियां इसी प्रति की प्रतिलिपियां है, इस कारण मूलपाठ के साथ पाठान्तर नहीं दिया गया है।

ग्रंथ सार

ग्रंथ का आरम्भ करने से पूर्व सर्वप्रथम कवि गणपति, जानकीवल्लभ राम एवं गुरु को प्रणाम करते हुए दीवान श्री भीमसिंहजी पर रूपग लिखने का संकेत करता है तथा अपना नाम भी उद्धृत करता है, तत्पश्चात् कवि विभिन्न छन्दों में सरस्वती, रामचंद्र, कृष्ण, शिव एवं देवी की स्तुति करते हुए विष्णु की नाभि से ब्रह्मा के अवतरित होने तथा उसी से वंश चलने का संकेत करते हुए कवि महाराणा भीमसिंह के वंश को सूर्यवंशी और रघुवंशी बतलाता है। (छंद सं. 1 से 10)

इसके बाद कवि सूर्यवंश के शासकों का वर्णन नामोल्लेख के साथ करता है तथा उनका क्रम निम्नानुसार बताता है—

विष्णु, ब्रह्मा, मारीच, कश्यप, वइवस्तु, इक्ष्वाकु, विकुप, कुकुस्थ, अनेन, पृथु, विष्टगश्व, आर्द्र, जुवनाश्व, संभ्रम (श्रावस्त), वृहदश्व, धंधुमार, दृढाश्व, हर्यश्व,

निकुंभ, संहिताश्व, अकृशाश्व, जुवनाश्व (द्वितीय), मांधाता, पुरुकुत्स, संभूत, सुधन्वा, त्रिधन्वा, अय्यारूण, सत्यव्रत, हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, हूत, चंचमोह, सुदेव, विजय, रूरूक, व्रक, वाहुक, सगर, असमंजस, अंशुमान, दिलीप, भागीरथ, नाभंग, अम्बरीष, सिंधुदीप, अयुतायु, ऋतुपर्ण, सुदास, सौदास, अनेरण, अनमित्र, दिलीप, रघु, अज, दशरथ, राम, लव, अतिथ, निषध, नाभ, पुण्डरीक, क्षेमधन्वा, देवानीक, अनिक, पारिजात, वाल, वज्रनाभ, खटंग (शंरवण), वइध्रत, विश्वसह, हिरण्यनाभ, पुष्य, ध्रुव, सुदर्शन, अग्निवर्ण, सिंधिुराज, मरूत, सिंधिराज, अमर्ष, महस्वान, विश्वसा, प्रसेन, वलभद्र, वत्सवेद, प्रतिव्योम, भानु, सहदेव, व्रहदश्व, भानु, प्रतीकाश्व, सुप्रतीप, मरूदेव, सुनक्षत्र, पुष्कर, अंतरिक्ष, आतपत्र, अमित्रजित, व्रहदयोग, वहीं, कीर्तिजय, रंणजय, संजय, शाक्यराज, शुद्धोदन, लगल (राहुल), प्रसेनजित, क्षुद्रक, रिणक, सुरथ, सुमित्र, वज्रनाभ, महारथी, अंतरथ, अचलसेन, कनकसेन महासेन, विजयसेन, अजयसेन, अनंगसेन, मदनसेन, महिरथ और विजयभूप।

विजयभूप अयोध्या से दक्षिण में गया और जयंतपुर में राज्य किया, वहां निम्न शासक हुए—पद्मादित्य, शिवादित्य, हरदित्य, सुजसदित्य, शिवादित्य, शिलादित्य, शिलादित्य से आगे सात पीढी व्रह्मकुल में रही—केशवादित्य, नागादित्य, भोगादित्य, देवादित्य, आसादित्य, अमरादित्य और ग्रहादित्य। (11-29)

ग्रहादित्य के घर वापा अवतरित हुआ, इसने ऋषि को प्रसन्न कर वर पाया तथा मोर्य राजा को मारकर चित्तौड़गढ़ पर कब्जा किया। वापा रावल वड़ा वहादुर था, उसने चारों दिशाओं में अनेक क्षेत्रों को जीतकर दिग्विजय का झण्डा फहराया। वापा रावल का पुत्र खुमांण था। रावल खुमाण से लेकर महाराणा हमीर तक के शासकों का वर्णन कवि ने केवल संकेतात्मक किया है और इसमें नामों का क्रम भी सही नहीं है और पूरे नाम भी नहीं है। (30-39)

महाराणा हमीर के वाद क्रमशः क्षेत्रसिंह, लक्षसिंह, मोकल, कुंभा, रायमल, सांगा, उदयसिंह, प्रताप, अमरसिंह, कर्णसिंह, जगतसिंह, राजसिंह, जयसिंह, अमरसिंह द्वितीय, संग्रामसिंह द्वितीय, जगतसिंह द्वितीय, प्रतापसिंह द्वितीय, राजसिंह द्वितीय और अरिसिंह द्वितीय मेवाड़ के महाराणा पद पर आसीन हुए। (40-47)

महाराणा अरिसिंह के ज्येष्ठ कुंवर का नाम हमीर था। हमीर के दो बहनें, झाली रानी से चन्द्रकंवर और चावड़ी रानी से अनोपकंवर थी। झाली सिरदारकंवर पटरानी थी। इसके एक और पुत्र वि. सं. 1824 चैत्र वदि 7 गुरुवार को हुआ, उसका जन्म नाम जुगलसिंह था किन्तु माता-पिता ने उसे भीमसिंह नाम से पुकारा। भीमसिंह के जन्म पर खुशियां मनाई गई। कवि ने भीमसिंह की बाल सुलभ चेष्टाओं का विस्तार से वर्णन किया है। इसी क्रम में महाराणा अरिसिंह के शासन का वर्णन

है और अरिसिंह को ज्येष्ठ के सूर्य के समान तेज वाला वताया गया है। तत्पश्चात् देश-विदेश के अनेक प्रकार के घोड़ों तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन किया है। (48-64)

अरिसिंह के गद्दी पर बैठने के बाद फतूर रतनसिंह का विवाद खड़ा हुआ। बहुत से सामन्त अरिसिंह के विरोधी हो गये और फतूर रतनसिंह को कुंभलगढ़ में मिथ्या वासुदेव के रूप में खड़ा किया। अपना पक्ष प्रबल करने के लिए रतनसिंह के समर्थक दक्षिण के सूबेदार माधवराव सिंधिया से जा मिले। इस पर अरिसिंह ने भी वनेड़े के राजसिंह, घाणेराव के वीरमदेव राठौड़, सलूम्बर का रावत पहाड़सिंह, रावत मानसिंह लालसिंघोत, शाहपुरा के राजा उम्मेदसिंह भारतसिंघोत, बिजोलिया का पंवार शुभकर्ण, झाला जालिमसिंह, बंबोरे का रावत कल्याणसिंह, मेहता अगरचन्द, राघोराम, दोला मियां आदि को सेना के साथ उज्जैन की ओर माधवराव सिंधिया को समझाने के लिए रवाना किया। इन सामन्तों ने माधवराव से मिलकर वास्तविक स्थिति से अवगत कराया तथा रतनसिंह को मिथ्या होने की बात कही, लेकिन माधवराव सिंधिया नहीं माना। उज्जैन के पास क्षिप्रा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें मेवाड़ के स्वामीभक्त सामन्तों में से पहाड़सिंह, उम्मेदसिंह, रायसिंह आदि मारे गये। मानसिंह, कल्याणसिंह आदि घायल हुए। माधवराव की तीन लाख सेना के समक्ष मेवाड़ की बीस हजार सेना कैसे ठहर सकती थी। मेवाड़ की पराजय हुई। (65-86)

वि. सं. 1825 में माधवराव सिंधिया उदयपुर पर चढ़ आया, उसने उदयपुर नगर पर घेरा डाला। महाराणा अरिसिंह ने शहरकोट के दरवाजों, मरहलों आदि पर प्रमुख सामन्तों, राजपूत व सिंधी सैनिकों को मय तोपों के साथ नियुक्त किया तथा शहर की चारों ओर से सुदृढ़ मोर्चाबन्दी की। कुछ विश्वस्त लोगों को महाराणा ने अपने पास रखा। बहुत दिनों तक घेरा चला, ब्रह्मपोल व किसनपोल पर युद्ध भी हुआ किन्तु माधवराव सिंधिया उदयपुर पर कब्जा न कर सका। अन्त में माधवराव ने कहलाया कि फतूर रतनसिंह सच्चा नहीं है और मेवाड़ का महाराणा अरिसिंह ही है। महाराणा ने माधवराव को घोड़े, खिलअत आदि देकर उसे मेवाड़ से विदा किया और संकट टल गया। (87-130)

महाराणा को माधवराव सिंधिया के साथ उलझा हुआ देखकर फतूर रतनसिंह जोगियों को साथ ले स्थान-स्थान पर उपद्रव करने लगा तथा लोगों से दण्ड वसूलने लगा। महाराणा को जब यह समाचार मिला तो उसने एक बड़ी सेना लेकर उस पर चढ़ाई करने की ठानी। उदयपुर से रवाना होकर महाराणा ने देलवाड़ा मुकाम किया। वहां से महाराणा चित्तौड़गढ़ की ओर बढ़ा। वि. सं. 1826 में टोपल नामक स्थान पर युद्ध हुआ, युद्ध में फतूर रतनसिंह की पराजय हुई। महाराणा उसके बाद उदयपुर आ गये और अपने पुत्र कुंवर हमीर एवं भीम को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। (131-163)

वि. सं. 1827 के वैशाख मास में गुप्तचरों ने आकर महाराणा अरिसिंह को बताया कि फतूर रतनसिंह के पक्ष के शाहकुबेर, जोगी अमर व कुशाल तथा महता

सुरतसिंह ने दस हजार की सेना साथ लेकर गंगरार में मुकाम किया है और गांवों को लूट रहे हैं व उजाड़ रहे हैं। महाराणा उदयपुर की सुरक्षा का भार रावत भीम को सौंप, बाघसिंह को गोड़वाड़ की ओर रवाना करके स्वयं गंगरार रवाना हुए। दोनों सेनाओं में जबर्दस्त युद्ध हुआ। महाराणा के काका महाराज अर्जुनसिंह के शरीर पर पन्द्रह घाव हुए। फतूर रतनसिंह की सेना भाग खड़ी हुई और गंगरार दुर्ग में घुस गई। कुंवर देवीसिंह एक जती से यज्ञ करा रहा था, जती का सिर तोप के गोले से उड़ गया, देवीसिंह अरिसिंह के पैरों में गिर पड़ा। शाह कुवेर ने खंजर पेट में घोंपकर आत्महत्या कर ली। जोगियों ने फिर महाराणा के विरुद्ध युद्ध न करने की कसम खाई। महाराणा अटूण, ऊपरहेरा तथा कोंटूकोटा आदि को जीतते हुए, चित्तौड़ पर भी अपना अधिकार जमाया, वहां पर रावत भीम को मुकर्रर किया। इस समय महाराणा ने आढा पन्ना को करणवास गांव भेंट दिया, फिर महाराणा वापस उदयपुर आ गया (164-179)

वि. सं. 1828 के श्रावण मास में महाराणा माण्डलगढ़ तथा खेराड़ की ओर अपनी सेना के साथ रह रहा था, उस समय गुप्तचरों ने महाराणा को खबर दी कि जयपुर से जसवन्तसिंह चूण्डावत ने अपने पुत्र कुंवर सरूपसिंह के साथ समरू नाम के फिरंगी को बीस हजार की सेना के साथ मेवाड़ पर चढ़ाई करने भेजा है और तोपखाने के साथ उसने अजमेर में मुकाम किया। यह समाचार सुनते ही महाराणा ने खारी नदी पार कर के समरू की सेना पर अचानक आक्रमण किया। समरू की पराजय हुई, उसने क्षमा मांगी और वापस लौट गया। (180-188)

कुछ समय के बाद महाराणा अरिसिंह जहाजपुर के पास अपनी सेना सहित मुकाम कर आस पास में शिकार खेल रहा था, तब अजीतसिंह हाड़ा (बूंदी) ने धोखे से महाराणा पर तलवार से प्रहार कर उसकी हत्या कर दी। उस समय मनभावन नामक पासवान भी महाराणा के साथ सती हुई। अरिसिंह की इस प्रकार मृत्यु के बाद वि. सं 1829 चैत्र कृष्णा 3 को हमीरसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठा। कुछ समय बाद वेतन नहीं मिलने के कारण सिंधि सिपाहियों ने महलों पर धरना दे दिया, चालीस दिन तक यह धरना चला, तब बाइजीराज (स्व. महाराणा अरिसिंह की रानी) ने शाह लखमा को भेजकर कुरावड़ के रावत अर्जुनसिंह को उदयपुर बुलाया। सिंधि सिपाहियों से बात कर जब तक वेतन का चुकारा न हो तब तक किसी को ओल (गारंटी) पर रखना तय हुआ, किंतु ओल पर रहने के लिए कोई तैयार नहीं हुआ, यह देखकर बालक भीमसिंह ओल पर रहने के लिए तैयार हो गया। अर्जुन रावत को साथ देकर भीमसिंह को ओल के रूप में चित्तौड़ भेजा, साथ में दस हजार सिंधि सिपाही भी गये। उस समय माधवराव सिंधिया का प्रतिनिधि बहिर तापगीर दस हजार की मराठी सेना को साथ रखकर चित्तौड़ के आसपास जोर-जबर्दस्ती से कर वसूल कर रहा था, बालक भीम के आदेश पर सिंधि सिपाहियों ने मराठी सेना पर

आक्रमण कर उसे भगा दिया। तब किलेदार रावत भीम बालक भीम को सिंधी सिपाहियों के साथ चित्तौड़गढ़ के किले पर ले गया। वहां पर दो वर्ष तक बालक भीम ओल पर रहा, सिंधी सिपाहियों को पट्टा आदि देकर शान्त किया, दो वर्ष बाद बालक भीम उदयपुर आया, उसे देखकर माता व भाई महाराणा हमीरसिंह बहुत प्रसन्न हुए। (189-206)

वि. सं. 1833 माघ कृष्णा 12 को किसनगढ़ के महाराजा बहादुरसिंह की पुत्री के साथ महाराणा हमीरसिंह का विवाह हुआ। बारात उदयपुर से शाहपुरा होती हुई किशनगढ़ पहुंची। शाहपुरा में राजा भीमसिंह ने हमीरसिंह की बहुत आवभगत की। किशनगढ़ से बहुत से हाथी, घोड़े, द्रव्य आदि देकर बारात को वापस रवाना किया। बारात जब नांदवेल पहुंची तो रावत भीमसिंह ने अन्य सामन्तों सहित महाराणा के पैर छू कर नजराणा किया। महाराणा उदयपुर आकर नाथद्वारा गया, वहां उसे समाचार मिला कि फतूर रतनसिंह का सहयोगी राघवदेव चूण्डावत कुंभलगढ़ की ओर जा रहा है। महाराणा हमीर नाथद्वारा से रीछेड गांव आया, युद्ध हुआ और राघवदेव पराजित होकर भाग गया। वहां से महाराणा गढ़बोर (चारभुजा) आया। चारभुजा के दर्शन किये, स्तुति की, हाथी-घोड़े आदि भेंटकर महाराणा उदयपुर आया। वि. सं. 1834 के मृगसिर मास में महाराणा शिकार हेतु गया, हिरण को देखकर बंदूक चलाई किन्तु बंदूक के फट जाने से हाथ का मांस निकल आया और उससे पोष सुदी अष्टमी को महाराणा का देहान्त हो गया, दाहसंस्कार के समय तीन खवासनें भी सती हुई। (207-237)

वि. सं. 1834 पोष सुदी 9 को सात घटी रात गये शुभ मुहूर्त में भीमसिंह मेवाड़ के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। पुरोहित रामराय ने आकर तिलक किया, एकलिंगदास प्रधान ने झुककर प्रणाम किया तथा नजर-न्योछावर की। पन्ना आढ़ा आदि कवियों ने बधाई दी, और भी सामन्तों ने नजर अर्पित की। वि. सं. 1838 के चैत्र कृष्णा 13 को महाराणा देवगढ़ गये, वहां चित्तौड़गढ़ से रावत भीम आकर महाराणा से मिला, अन्य सामन्तों ने भी निजर-न्योछावर की। वहां से महाराणा नांदवेल पहुंचे किन्तु बोदरी माता (चेचक) निकल जाने के कारण महाराणा को तीन माह तक वहां विश्राम करना पड़ा, उसके बाद महाराणा भीमसिंह वापस उदयपुर आ गये। (238-255)

वि. सं. 1840 ज्येष्ठ कृष्णा 11 को महाराणा भीमसिंह का ईडर के राजा शिवसिंह की सुपुत्री के साथ विवाह होना निश्चित हुआ। चारों दिशाओं में निमंत्रण-पत्र भेजे गये। झाला जालिमसिंह ने माहेरा किया, माहेरा में जवाहरात, सिरपेच, मोतियों की माला, ढाल, तलवार, अंतहपुर की पहरावणी, बीस हजार रुपये रोकड़ आदि भेंट किये। महाराणा भीमसिंह विश्वस्त सामन्तों एवं एक हजार सैनिकों को

साथ लेकर ईडर के लिए रवाना हुए। पहला मुकाम तीतरड़ी किया। वहां से महाराणा डूंगरपुर होते हुए ईडर की ओर चले। महाराणा भीमसिंह की बारात बहुत आकर्षक एवं भव्य थी। राजा शिवसिंह ने ईडर से चार कोस दूर आकर महाराणा भीमसिंह की अगवानी की, नजर-न्योछावर की। दुल्हा भीमसिंह एवं दुल्हन का शृंगार किया गया। गीत गाये जाने लगे, वाद्य बजने लगे, दुल्हे ने तोरण मारा, फेरों में पहले तीन फेरों में दुल्हा आगे रहा, फिर चार फेरों में दुल्हन आगे रही। राजा शिवसिंह ने उसके बाद हाथ जोड़कर कन्यादान किया, सालाओं ने हथलेवा छुड़ाया। बड़ा भोज आयोजित हुआ, विविध व्यंजन बने, चारणों ने बधाई दी। दहेज में हाथी, घोड़े और बहुत सा द्रव्य देकर बारात रवाना की, इस तरह ईडर के राजा शिवसिंह राठोड़ ने अपनी कन्या अक्षयकुंवर का महाराणा भीमसिंह के साथ विवाह किया। बारात ईडर से चलकर देवगदाधर (सांमलाजी) आई, भीमसिंह ने देवगदाधर की स्तुति की। वहां से बारात डूंगरपुर आई। डूंगरपुर के रावल शिवसिंह ने भीमसिंह की बहुत आवभगत की। तत्पश्चात् बारात के उदयपुर आने पर उदयपुर में भव्य स्वागत किया गया, बधाइयां दी गई। (256-294)

वि. सं. 1842 में महाराणा भीमसिंह भींडर के लिए रवाना हुए, खेरोदा गांव के पास महाराणा ने शेर का शिकार किया। भीण्डर के मोहकमसिंह ने चार कोस आकर अगवानी की और नजर-न्योछावर किया। इसी समय कोटा का झाला जालमसिंह पांच हजार सैनिक लेकर महाराणा के पास आया। वि. सं. 1843 में भीमसिंह, अर्जुनसिंह, धीरतसिंह, पतो और सादल कृष्णविलास में आकर रहने लगे। राजकार्य सोमचंद गांधी सम्हाल रहा था। उस समय झाला जालमसिंह और भीण्डर के मोहकमसिंह का प्रभाव बढ़ता हुआ देखकर भीमसिंह चूण्डावत नाराज होकर गांव पलाना चला गया तब बाईराज (महाराणा अरिसिंह की रानी) पलाना गई और भीमसिंह चूण्डावत को समझाया। वहां से वे सब एकलिंगजी आये। यहां श्री एकलिंगजी, देवी विंध्यवासिनी और हारीतराशि की स्तुति की। रावत भीमसिंह एवं अर्जुनसिंह ने सलाह की कि सोमचंद गांधी के दिल में अभी भी कपट है अतः वे वहां से चित्तौड़ चले गये। (295-315)

वि. सं. 1844 के मार्गशीर्ष मास में मेहता मालदास को सादड़ी के राज सुल्तानसिंह, देलवाड़ा के राज कल्याणसिंह, रावत जालिमसिंह कानोड़, महाराज दौलतसिंह, राणावत कुशालसिंह तथा सिंधी जमादार सादक और पंजू के साथ और सेना देकर जावद के लिए रवाना किया तथा जावद को अपने अधिकार में कर लिया। मराठों ने जब यह सुना तो वे दस हजार की सेना लेकर चढ़ आये। घोर युद्ध हुआ और मेहता मालदास, कुशालसिंह, सादक एवं पंजू आदि योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। (316-321)

वि सं. 1848 में माधवराव सिंधिया और झाला जालिमसिंह दोनों साथ होकर उदयपुर आये तथा नाहरमगरा मुकाम किया। माधवराव ने जालमसिंह को उदयपुर भेजा।

उसने महाराणा से बात की। महाराणा भीमसिंह ने शिवदास व सतीदास को उदयपुर का भार सौंपा एवं अपने सामन्तों के साथ नाहरमगरा आये। वहां माधवराव ने महाराणा की दो कोस की अगवानी की और महाराणा के साथ अच्छा व्यवहार किया। इधर पठानों ने ड्योढ़ी पर धरना दे दिया। प्रधान शिवदास के प्रयास से पठानों को मार भगाया। नाहरमगरा से महाराणा भीमसिंह, माधवराव सिंधिया व झाला जालमसिंह को साथ लेकर चित्तौड़गढ़ पहुंचे तथा रावत भीमसिंह को चित्तौड़ खाली करने का कहलाया किन्तु उसने बात नहीं सुनी, चित्तौड़ का घेरा डाल दिया एवं दक्षिण की ओर मोर्चा खड़ा किया। रावत भीमसिंह ने बुद्धिमानी से काम लिया, अंबाजी इंगलिया के माध्यम से महाराणा से समझौता कर लिया। झाला जालिमसिंह व माधवराव को सीख देकर महाराणा उदयपुर आ गया। वि. सं. 1849 के वैशाख मास में महाराणा भीमसिंह ने ताणा के राज किशोरसिंह की पुत्री झाली से विवाह किया। (322-333)

माधवराव सिंधिया दक्षिण की ओर गया तब उसने अंबाजी इंगलिया को बीस हजार की सेना के साथ मेवाड़ में ही छोड़ दिया था। महाराणा ने प्रधान शिवदास व अंबाजी से सलाह कर कुंभलगढ़ से फतूर रतनसिंह को निकालने का निर्णय किया और शिवदास को रावत अर्जुनसिंह महता अगरचन्द, किशोरसिंह आदि के साथ सेना देकर कुंभलगढ़ रवाना किया एवं इन्होंने खमणोर में आकर मुकाम किया, वहां से घाणेराव के राठौड़ दुर्जनसिंह को पत्र द्वारा सूचित किया कि तुम घाणेराव की ओर से और हम खमणोर की ओर से बढ़कर कुंभलगढ़ पर आक्रमण करें। योजना के अनुसार मजेरा व केलवाड़ा होते हुए कुंभलगढ़ पर आक्रमण किया। फतूर रतनसिंह व उसके सहायक जोगी किला छोड़कर भाग खड़े हुए। कुंभलगढ़ पर महाराणा भीमसिंह का वि. सं. 1849 में अधिकार हो गया। (334-347)

वि. सं. 1850 में महाराणा भीमसिंह ने ईडर में दो विवाह एक साथ किये। प्रथम विवाह ईडर के राजा शिवसिंह की पुत्री गुलाबकुंवरी से तथा दूसरा भानसिंह की पुत्री उमाकुंवरी से किया। ईडर से महाराणा डूंगरपुर आया, यहां के महारावल से महाराणा ने तीन लाख रुपयों का दंड वसूल किया फिर माही नदी के तट पर आये, बांसवाड़ा के रावल विजयसिंह से भी तीन लाख रुपये लिए। प्रतापगढ़-देवलिया के सांवतराव से भी धरियावद का ठिकाना और तीन लाख रुपये वसूल किये। धरियावद को रघुनाथराव को पट्टे पर दे दिया। वि. सं. 1851 में राठौड़णजी गुलाबकुंवर से महाराणा भीमसिंह के कुंवर अमरसिंह का जन्म हुआ। (348-357)

फतूर रतनसिंह के सहयोगी जोगियों ने कुंभलगढ़ पर पुनः कब्जा करने का प्रयास किया। सात हजार की सेना के साथ आकर कटारगढ़ को घेर लिया। महाराणा ने यह समाचार सुना, उसने प्रधान शिवदास को हुक्म दिया। शिवदास कई

सामंतों को साथ लेकर कुंभलगढ़ गया और जोगियों के साथ युद्ध कर उन्हें भगा दिया। वि.सं. 1852 में गुमानभारती आठ हजार की सेना लेकर फिर कुंभलगढ़ पर आक्रमण करने चला, कोठारी नदी पर मुकाम किया। महाराणा को पता चला तो शिवदास को वापस कुंभलगढ़ भेजा। दोनों के बीच युद्ध हुआ और गुमानभारती मारा गया। इस घटना के बाद प्रधान शिवदास को अहंकार आ गया और स्वेच्छाचारी बर्ताव करने लगा। महाराणा ने शिवदास को कैद कर महता अगरचन्द को वि. सं. 1853 के मृगसिर मास में प्रधान पद पर नियुक्त किया। (358-369)

वि. सं. 1855 के ज्येष्ठ मास में महाराणा भीमसिंह ने ईडर में तीसरा विवाह ईडर के राजा गंभीरसिंह की बहन चंद्रकुंवरि के साथ किया। ईडर से लौटते हुए महाराणा ने डूंगरपुर, बांसवाड़ा से दण्ड लिया और देवलिया ने नजराना दिया। (370-372)

वि.सं. 1855 में ही अंबाजी इंगलिया के विरुद्ध प्रधान अगरचन्द को सेना देकर हम्मीरगढ़ पर आक्रमण हेतु भेजा। युद्ध हुआ, कुछ योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए। गणेश-पंत दुर्ग खाली छोड़ करके चल दिया। दूसरा युद्ध मूसमूसी में भी हुआ। अम्बाजी इंगलिया तथा गणेशपंत ने गाडरमाला, गुरलां, हमीरगढ़, बिजोलिया से अपने थाने उठाकर उन्हें खाली कर दिया। जहाजपुर पर भी अगरचन्द ने अधिकार कर लिया और वह लौटकर उदयपुर आ गया। (373-374)

वि. सं. 1856 में बीकानेर के महाराजा सुरतानसिंह की पुत्री पदमकुंवरि के साथ महाराणा भीमसिंह ने एकलिंगजी में विवाह किया। बारात उदयपुर से एकलिंगजी गई। दहेज में महाराजा सुरतानसिंह ने दास, दासी, हाथी, घोड़े, आभूषण, वस्त्र दिये और संग में प्रधान मोतीराम को किया। इसी वर्ष भीमसिंह ने गुजरात के राजा चावड़ा जगपतसिंह की पुत्री चावड़ी से भी विवाह किया। (375-389)

वि.सं. 1857 मृगसिर शुक्ला 3 को गुलाबकुंवरि के गर्भ से मूल नक्षत्र में कुंवर जवानसिंह का जन्म हुआ। इस अवसर पर महाराणा ने हाथी, घोड़े, वस्त्राभूषण, गांव आदि भेंट में दिये। (390-399)

वि. सं. 1858 के माघ मास में जसवन्तराव होल्कर सेना लेकर नाथद्वारा पर चढ़ आया। नाथद्वारा के गुसांई गिरधरजी ने महाराणा को पत्र लिखा। महाराणा ने एकलिंगदास बोल्या के साथ अन्य सुभटों को देकर श्रीनाथजी को उदयपुर लाने के लिए नाथद्वारा भेजा। श्रीनाथजी ने ऊनवास गांव में आकर मुकाम किया। कोठारिया का चौहान विजयसिंह ऊनवास से वापस लौट रहा था, उस समय होल्कर की सेना से उसकी मुठभेड़ हो गई और वह वहीं वीरगति को प्राप्त हुआ। वहां से श्रीनाथजी

घसार गांव आये। महाराणा ने घसार आकर श्रीनाथजी की अगवानी की। घसार से श्रीनाथजी उदयपुर आये और दस मास तक उदयपुर रहकर अन्नकूट उदयपुर का करके श्रीनाथजी घसार जाकर विराजे। महाराणा ने गांव, आभूषण आदि भेंट में दिये। वि. सं. 1964 में श्री नाथजी वापस नाथद्वारा पधारे। वि. सं. 1858 में बालेराव गिरफ्तार हुआ। महाराणा ने बहुतसा धन लेकर जीवदया करके छोड़ दिया। वि.सं. 1960 में जसवन्तराव होल्कर ने नाहरमगरा आकर मुकाम किया किन्तु महाराणा ने यत्नपूर्वक उसे वापस रवाना कर दिया। (400-413)

वि. सं. 1860 के वैशाख मास में मराठा हरनाथ मेवाड़ में आया। बांसी के निकट उसने जासूस भेजकर गुलाबसिंह को कपट से अपनी ओर मिलाना चाहा किन्तु वह सफल नहीं हुआ, उसके बाद हरनाथ ने अपने भाई रतनसिंह को गुलाबसिंह के पास भेजा, दोनों में भयंकर युद्ध हुआ, रतनसिंह मारा गया, फिर हरनाथ व गुलाबसिंह के बीच युद्ध हुआ किन्तु वि.सं. 1860 वैशाख सुद 4 रविवार को गुलाबसिंह मारा गया। (414–424)

वि.सं. 1863 में महाराणा भीमसिंह उदयपुर की सुरक्षा का भार रावत भेरुसिंह और हमीरसिंह के जिम्मे सौंपकर सलूम्बर रावत पदमसिंह को लेने गये। यह अच्छा अवसर देखकर सखाराम और मोहब्बतराव मराठा ने दो हजार की सेना के साथ उदयपुर के लिए प्रस्थान किया तथा मावली में आकर मुकाम किया। भेरुसिंह रावत और कुंवर हमीरसिंह रावत दोनों काका-भतीजा को जब यह समाचार मिला तो हमीरसिंह केवल साठ सैनिक लेकर मराठों से युद्ध करने रवाना हुआ। युद्ध हुआ तथा हमीरसिंह का भाई मोहब्बतसिंह युद्ध में मारा गया। हमीरसिंह की विजय हुई, महाराणा जब उदयपुर आये और मराठों से विजय की सुनी तो प्रसन्न होकर हमीरसिंह को उन्होंने पट्टा दिया। (425–433)

वि. सं. 1864 में दौलतराव टिड्डी दल के समान एक लाख की सेना लेकर आकोला से आक्रमण के लिये उदयपुर की ओर बढ़ा तथा उदयसागर के नाले के किनारे आकर मुकाम किया। इस अवसर पर रावत शार्दूलसिंह ने स्वामीभक्ति का परिचय देते हुए दौलतराव को महाराणा से मिलाया, दौलतराव ने उदयपुर आकर जगनिवास व जगमंदिर देखे। महाराणा ने हाथी, घोड़े, वस्त्राभूषण आदि देकर दौलतराव को वापस रवाना कर दिया। वि. सं. 1866 आषाढ़ शुक्ला 5 को मीरखां (अमीरखां) दल-बल सहित मेवाड़ पर चढ़ आया। महाराणा ने रावत अजीतसिंह को उसके पास भेजा, वह समझा-बुझाकर मीरखां को महाराणा के पास लाया। मीरखां ने अपनी गलती के लिये महाराणा से माफी मांगी, महाराणा ने बहुत से हाथी, घोड़े देकर उसे विदा किया। (434-444)

वि. सं. 1869 में मेवाड़ में घोर दुर्भिक्ष पड़ा। अन्न के विना स्त्री ने पुरुष को और पुरुष ने अपनी स्त्री को छोड़ दिया। लोग अपने शरीर, घर-बार और सगे-सम्बन्धियों को भूल गये। अनाज औषधिवत हो गया तथा चारों ओर हाहाकार मच गया। इतने लोग मरे कि उनके शवों को जलाना या दफनाना तो दूर रहा, घसीटकर लेजाने वाला कोई नहीं था। जमीन पर मानव-मुण्ड इस तरह से विखरे हुए दिखाई देते थे जैसे नदी के अन्दर टोले (बड़े पत्थर) पड़े हुए नजर आते थे। इन्द्र ने अपना धर्म छोड़ दिया किन्तु महाराणा भीम ने इस घोर समय में अपना धर्म नहीं छोड़ा और दयालु होकर लोगों को जीवित रखा। इन्द्र के बारह मेघ रूठ गये, एक बूंद भी जल नहीं वरसा किन्तु महाराणा भीम ने तेरहवां मेघ बनकर जग का पालन कर दिया। (445-450)

वि. सं. 1970 चैत्र वदि 11 को महाराणा भीमसिंह, नवाव जमशेरखां तथा अपने दोनों कुंवर अमरसिंह व जवानसिंह को साथ लेकर मुल्क की व्यवस्था हेतु उदयपुर से रवाना हुए। नाथद्वारा, कांकरोली, राजनगर होते हुए आंविलीय (आमली) गांव में आकर मुकाम किया, यहां से दण्ड वसूल कर महाराणा गाडरमाला आये, यहां गोपालसिंह ने नजराणा किया। वहां से महाराणा हमीरगढ़ आया, साथ में प्रधान सतीदास भी था। यहां वीरम, किसोर व शार्दूलसिंह आकर पाय लगे। यहां से महाराणा बस्सी होते हुए चित्तौड़गढ़ आये। धीरतसिंह महाराणा के पास आया तथा महाराणा को किले पर ले गया, जहां महाराणा ने बहुत भक्तिभाव पूर्वक अन्नपूर्णा, नीलकंठ, कालिकादेवी, तथा कुंभश्याम के दर्शन किये, स्तुति की। महलों में आकर राजकार्य किया, प्रधान से सलाह की। (451-486)

महाराणा ने धीरतसिंह से चित्तौड़ खाली करवा लिया तथा कुंवर अमरसिंह को गढ़ सिपुर्द कर दुर्ग की तलहटी में अपने मुकाम पर आकर सामन्तों से सलाह की। इस पर नवाव जमशेरखां नाराज हो गया एवं अपना हक मांगने लगा। उस समय समस्त सामन्तों ने जमशेरखां के पास ओल पर रहने से इन्कार कर दिया किन्तु कुंवर जवानसिंह हाथ जोड़कर ओल पर रहने के लिए तैयार हो गया। महाराणा ने प्रधान सतीदास व अन्य सैनिकों को जवानसिंह के साथ रखा एवं स्वयं उदयपुर के लिए रवाना हुआ।

महाराणा उदयपुर में शार्दूलसिंह व धीरतसिंह के साथ आनन्द से रह रहा था, राजकार्य जयचन्द चला रहा था, किंतु महाराणा के दुःखों का कोई पारवार नहीं था। वि. सं. 1871 शुरु हुआ। रूस्तमवेग और महमदखां ने महलों की ड्योढ़ी पर धरना दिया लेकिन शार्दूलसिंह ने अपना सिर देकर उस संकट को समाप्त किया। इसी वर्ष वापू (सखाराम), जमशेर, दलेल साहिवजादा तथा हिम्मत वहादुर इन चारों की सेनाओं ने उदयपुर को घेर लिया व आस-पास के गांवों की प्रजा को लूटने लगे किंतु महाराणा भीम दृढ़ रहे तथा इन चारों को सेना सहित भगा दिया। (487-497)

वि. सं. 1872 में महाराणा भीमसिंह तथा उसके दोनों पुत्रों कुंवर अमरसिंह व जवानसिंह का विवाह कोटा में होना निश्चित हुआ। बारात चित्तौड़ होती हुई भैंसरोड़गढ़ पहुंची। यहां रावत रुघपतसिंह बारात को किले में ले गया तथा हाथी, घोड़े, वस्त्राभूषण आदि का नजराणा किया। यहां से बारात गिरधरपुर आई, जहां माधवसिंह ने भी हाथी, घोड़े, वस्त्राभूषण आदि दिये व नारियल प्रदान किया। यहां से बारात जगपुरा आई। जगपुरा से कुंवर जवानसिंह की बारात इंद्रगढ़ के लिए और महाराणा भीमसिंह व कुंवर अमरसिंह की कोटा के लिए रवाना हुई। कोटा के महाराव उम्मेदसिंह ने दो कोस तक आकर अगवानी की, साथ में उसके तीनों पुत्र किसोरसिंह, पृथ्वीसिंह और विष्णुसिंह भी थे। भीमसिंह का विवाह उम्मेदसिंह की पुत्री से, अमरसिंह का विष्णुसिंह की पुत्री से तथा जवानसिंह का उसके समवयस्क राजकुमारी से सम्पन्न हुआ। पन्द्रह दिन तक बारात ठहरी और बहुत मान-मनुहार होती रही। उस समय झाला जालमसिंह ने वहां आकर महाराणा का बहुत आदर सत्कार किया। दहेज में हाथी, घोड़, वस्त्राभूषण आदि दिये गये। बारात ने चम्बल नदी को पार कर जालमसिंह के गांव में आकर मुकाम किया, यहां उसने दावत दी, घोड़ आदि नजर किये। यहां से बिजोलिया होते हुए बारात माण्डलगढ़ आई। यहां कुंवर अमरसिंह ने महाराणा से चित्तौड़गढ़ चलने का निवेदन किया। महाराणा तीन दिन तक चित्तौड़ रहा, फिर कुंवर जवानसिंह के साथ उदयपुर आ गया।(498-515)

एक दिन महाराणा भीमसिंह ने प्रसन्न होकर राजनीति, वर्णाश्रमधर्म तथा षटगुण आदि के बारे में पूछा। इस पर कवि किसना ने बताया कि राजा को साम, दाम, दण्ड एवं भेद नीति से काम लेना चाहिए। राजा की उपमा माली से करते हुए बताया है कि माली जिस तरह बगीचे की रक्षा करता है, उसी तरह राजा को प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। राजा के सात अंग होते है-स्वामी, प्रधान, दल, दुर्ग, देश, भंडार एवं मित्र। राजा में सबल शत्रु से संधि करना, विग्रह करना, युद्ध हेतु यात्रा करना, द्वैध कार्य-कहीं दोस्ती, कहीं घात करना, शत्रु के जोर को देखकर युद्ध नहीं करना, प्रबल शत्रु को आश्रय में लाने की क्षमता रखना आदि षट्गुण होने चाहिए। इससे भी बड़ा धर्म राजा द्वारा प्रजा का पालन करना है। राजा बिगड़ता है तो संसार बिगड़ता है और राजा सुधरता है तो संसार सुधरता है। इसके बाद ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र धर्म तथा चारों आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम का वर्णन किया गया है। (516-519)

वि. सं. 1873 में सिंधिया और बापू के धर्म विहीन होने पर रावत अजीतसिंह को अंग्रेजों से सहायता लेने के लिए कोटा से दिल्ली भेजा। दिल्ली से लाटसाह जरनेल(कर्नल टॉड)को सेना के साथ उदयपुर भेजा। इस सेना ने पिण्डारियों व मराठों को भगा दिया, उनके हाथी, घोड़े, तोपें आदि छीन ली। जसवंतराव भाऊ को जावद से भगा दिया। टॉड के साथ एक लाख की सेना थी, उसने हुरड़ा, रायपुर, राजनगर

कुंभलगढ़ आदि पर पुनः महाराणा का कब्जा करा दिया। झाला जालमसिंह से जहाजपुर छीन लिया। शिवलाल को प्रधान बनाया। मेरों का दमन करके भीमसिंह के नाम से भीमदुर्ग तथा टॉड के नाम से टाडगढ़ बसाया। लुटेरे, चोर, ठग सब समाप्त हो गये और बकरी व शेर एक घाट पानी पीने लगे। (520-523)

वि. सं. 1875 में महाराणा ने शिवलाल के स्थान पर रामसिंह को प्रधान बनाया। महाराणा रुग्ण हो गया, इस पर अफीम सेवन शुरु किया। इस समय महाराणा ने यह अनुभव किया कि माया जग ठगनी है, यही अच्छा-बुरा कराती है। उसने दान-पुन्य किया, कवियों को सिरोपाव दिये। महाराणा ने जगदीश मंदिर पर ध्वजादण्ड चढ़ाया। इस अवसर पर हाथी, घोड़े, मोती, दुशाला, कड़ा जोड़ी बीस, सौ पागें आदि भेंट दी। महाराणा ने तन्मय होकर जगन्नाथराय की स्तुति की। (524-544)

वि. सं. 1876 में महाराणा भीमसिंह ने ज्योतिषियों से पूछकर अपनी तीन पुत्रियों के विवाह का निश्चय किया। प्रधान रामसिंह को विवाह की तैयारियों व प्रबंध का आदेश दिया। बीकानेर के नरेश सूरतसिंह के पुत्र रतनसिंह के साथ अजबकंवर का, जैसलमेर के भाटी रावत रतनसिंह के साथ रूपकंवर का तथा किशनगढ़ के राजा कल्याणसिंह के पुत्र मोहकमसिंह के साथ राजकुमार अमरसिंह की पुत्री की बाई का सम्बन्ध किया गया। आसाढ़ वदि अष्टमी के लग्न निश्चित हुए। बीकानेर, जैसलमेर व किशनगढ़ अगवानी तथा बारात लेने के लिए महाराणा ने रावत जवानसिंह, मेहता गणेशनाथ और बारहठ कवि रामदान को भेजा गया। महाराणा ने कवियों को बुलाने के लिए निमंत्रण पत्र भेजे। चारण, भाट, ब्राह्मण, सायर, मोतीसर, रावल, बड़वा, शुक्ल, भोजग, लघा, ढाढी, मंगा, रानीमंगा, नट, भवाई, बहुरूपिया आदि बहुत से कवि व कलाकार उदयपुर आये। सिसोदिया, राठौड़, कछवाहा, चौहान, चावड़ा, तंवर, चालुक्य, बघेल, पंवार, ऊमट, चंदेल, गोहिल, देवड़ा, झाला, डोडिया, भाटी, परिहार, सोढ़ा आदि समस्त क्षत्रिय, मेवाड़ के सोलह उमराव एवं अन्य सामन्तगण विवाह में आकर शरीक हुए। सबसे पहले बीकानेर की बारात आई और उसे कृष्णविलास महल में ठहराई, उसके बाद किशनगढ़ से बारात आई एवं उसे हरसिद्धि के पास ठहराया। सबसे अन्त में जैसलमेर से बारात आई। विधिपूर्वक विवाह सम्पन्न हुआ। अनेक प्रकार के भोजन से युक्त जिमनार की गई। कवियों को दान दिया, तीनों बारातों को अनेक प्रकार का दहेज देकर विदा की। (545-581)

विवाह के इस अवसर पर आये कवियों ने डिंगल भाषा में गीत, कवित, निसांणी आदि छंदों के माध्यम से महाराणा भीमसिंह के यश का विस्तार से गुणगान किया, व्याह की प्रशंसा की तथा महाराणा के त्याग को सराहा। (582-615)

वि. सं 1877 में शिवलाल (गलूंडिया) को प्रधान के पद पर नियुक्त किया। रावत अजीतसिंह ने महाराणा भीमसिंह से अर्ज की कि उसने आजन्म महाराणा की

सेवा की है। अब अन्तिम समय नजदीक आ रहा है, काशीवास करने की इच्छा है। महाराणा ने अजीतसिंह की इच्छा का आदर कर उसे काशीवास की स्वीकृति दी। (616-620)

वि. सं. 1878 वैशाख वदि 13 को महाराजकुमार जवानसिंह का विवाह बांधूगढ़ (रीवां) के राजा जयसिंह बघेला की पुत्री के साथ होना निश्चित हुआ। जयसिंह के मंत्री ने आकर महाराणा को हाथी, घोड़े, वस्त्र, श्रीफल आदि इस अवसर पर भेंट किये। प्रमुख सामंतों को साथ लेकर जवानसिंह की बारात भीण्डर होती हुई चित्तौड़गढ़ पहुंची। यहां पर अन्नपूर्णादेवी, शिव, कालिका, कुंभश्याम आदि के दर्शन किये और स्तुति की। चित्तौड़ से चलकर बारात बांधूगढ़ के लिए रवाना हुई। रीवां दुर्ग के पास बारात पहुंची तो चार कोस आकर श्वसुर जयसिंह ने हाथी से उतर कर अपने जवांई का स्वागत किया। शुभ मुहूर्त पर विवाह सम्पन्न हुआ, भांति-भांति के भोजन हुए, कवियों ने यशगान किया। हाथी, घोड़े, दास, दासी, द्रव्य आदि दहेज में देकर गद्‌गद् कंठ और सजल नयनों से जयसिंह नरेश ने बारात को विदा की। जयसिंह के तीनों पुत्र-विश्वनाथसिंह, लिछमनसिंह, बलिभद्रसिंह बारात को तमसा नदी के तट पर पहुंचाने आये। यहां प्रथम मुकाम किया। वर्षा ऋतु आ गई, नदी में पानी आ गया। जवानसिंह ने नदी की पूजा-अर्चना की तब नदी का पानी कम हुआ। (621-655)

फिर बारात चित्रकूट आई और यहां दस दिन तक जवानसिंह दल-बल सहित ठहरे, गिरराज की यात्रा की, रघुराम के दर्शन किये। मंदाकिनी नदी में स्नान किया। रामलला के दर्शन किये। इसी क्रम में हनुमंतधार, अनसूया, कामतानाथ, कोट्यतीर्थ, रामशिला, फटिकशिला, जगदेवी आदि के दर्शन,-स्नान करते हुए प्रयागराज की ओर कूंच किया। रास्ते में राजपुरघाट पर आठ दिन का मुकाम किया, हनुमंत के दर्शन किये, कालिंदी में स्नान किया और तुलसीदास आश्रम में विश्राम किया। यहां से प्रयागराज आये और छः दिन का मुकाम किया, त्रिवेणी स्नान किया, गंगा-यमुना-सरस्वती की स्तुति की। वेणीमाधव के दर्शन कर द्रव्यादि भेंट चढ़ाया, भारद्वाज ऋषि के दर्शन किये। गंगा स्नान कर एक हाथी गुरुराज को भेंट किया एवं गंगा की स्तुति की। यहां से तीर्थराज काशी आये और विश्वनाथ के दर्शन किये। यहां पर अंग्रेज अधिकारी तथा रावत अजीतसिंह ने पांच कोस आकर कुंवर जवानसिंह की अगवानी की। राणपुरा में मुकाम किया, काशी विश्वनाथ की स्तुति की और एक हाथी भेंट किया। ज्ञान वापी, मनिकर्णिकाघाट, जगन्नाथश्याम के दर्शन करते हुए, रावत अजीतसिंह के साथ तेरह दिन तक रहकर चौदहवें दिन कौड़ियदेव के लिए रवाना हुए, तीन दिन मुकाम किया, विंध्यवासिनी देवी की स्तुति की। (656-682)

जवानसिंह फिर प्रयागराज होते हुए व्रज की यात्रा के लिए आये। यहां हरिराय, बलदेव, गोकल, महावन, तपोवन के दर्शन करते हुए मथुरा में आकर चार दिन तक

विश्राम किया। कालिंदी में स्नान किया, गुरु दयालदास चौबे को एक हाथी दान किया और विश्रामघाट पर विश्राम करके वृन्दावन में आकर दस दिन का मुकाम किया। जगन्नाथ, कालीद्रह, धीर-समीर (यमुना की धारा), बंशीवट, दयानिधि श्री राधा-वल्लभ, गोवर्धन पर्वत,राधाकुण्ड, बरसाना, नंदगांव आदि की यात्रा, दर्शन व परिक्रमा की।

व्रज से पुष्कर आये। स्नान कर ब्रह्मा व वाराहदेव मंदिर में जाकर दर्शन किये; द्रव्य-हाथी आदि भेंट किये। यहां से आसिंद, बदनोर, आमेट होते हुए गढ़बोर आये, दर्शन-स्तुति कर चारभुजाजी को भेंटादि दी, दूसरे दिन रूपनारायणजी के दर्शन किये और हाथी, घोड़े, द्रव्य आदि भेंट दिये। यहां से कुंभलगढ़, राजनगर, द्वारकाधीश कांकरोली, नाथद्वारा होते हुए मकर सक्रांति पर्व पर एकलिंगजी आये; हाथी, घोड़े, द्रव्य आदि भेंट किया और दर्शन-स्तुति की। रात्रि विश्राम कर प्रातः उठकर जवान-सिंह ने दुल्हा के वस्त्र धारण किये एवं दूत को उदयपुर भेजा। पुत्र के आने का सुनकर महाराणा भीम बहुत प्रसन्न हुए, अन्तःपुर में भी हर्ष उत्पन्न हो गया, नगर में भी उल्लास छा गया। महाराणा पुत्र को लेने और पुत्र पिता से मिलने चले। महलों में आकर दुल्हन ने सास, ससुर के पैर छुए, गुरुजन को प्रणाम किया। इस प्रकार कुंवर जवानसिंह वांधूगढ़ से विवाह कर उदयपुर आये, नगर में आनन्द छा गया। इस समय वसंत ऋतु भी आ गई। (683-697)

षट् ऋतुओं का वर्णन करते हुए कवि ने वंसत को ऋतुराज बताया है। वसंत ऋतु के आते ही वृक्ष पुष्पों के भार से झूम रहे है। भ्रमरों का समूह उड़ रहा है। हंस प्रसन्न हैं, हाथी मदमत्त हैं, कामदेव उद्दीप्त है, संयोग व भोग का वातावरण है। गुलाब व कदंब विकसित हो गये हैं, पुष्पों से मकरंद झर रहा है। नर-नारी 'हो-हो-होरी' शब्द का उच्चारण करते हुए फाग खेल रहे हैं, डफ, मृदंग, चंग घर-घर बज रहे हैं। ऋतुराज वसंत का जग पर शासन है। कुंवर जवानसिंह अन्तःपुर में फाग खेल रहे हैं। रानियों ने सोलह शृंगार किया हैं, उसका वर्णन करते हुए मन में संकोच होता है। ऐसा लग रहा है जैसे अप्सराएं धरती पर उतर आई हैं। हजार जिव्हाएं हो तो भी उनके नख-शिख का वर्णन कर पाना संभव नहीं है। एक ओर महा-राणा व कुंवर जवानसिंह दोनों है, उधर हजार नारियां व्रजमण्डल के व्रजराज तथा गोपियों की तरह हैं। अबीर, गुलाल व रंग भरी पिचकारियों से फाग खेली जा रही है। इस तरह रात-दिन सुख का वातावरण है। (698-706)

वसंत के बाद ग्रीष्म ऋतु आ गई। जल, थल, पवन, नभ सब अग्नि के समान बर्ताव कर रहे हैं। तालाबों में पानी सूख गया है। मछलियां, कछुए तड़फ रहे हैं। आकाश में चक्रवात से धुंध व्याप्त हो रही है। चारों ही तत्व तेज प्रकृति के बन गये

हैं। घर से बाहर कोई नहीं निकल रहा है। औरों की तो क्या बात स्वयं सूर्य भी वृक्ष की छाया के सहारे आ गया है। द्रोपदी के चीर की तरह दिन लम्बा हो गया है। ऐसे समय में महाराणा भीमसिंह ने जल विहार का मन किया। बगीचों के मध्य हौज भरने का हुक्म दिया। बगीचे बहुत है किंतु उनसे सहेली का बाग, नोलखा, सर्वऋतु विलास उनमें प्रमुख है। इंद्र का नंदन वन भी इनके सामने कुछ भी नहीं है। महलों के पश्चिम में पिछोला है। यहां अथाह जल है और उसका स्वभाव क्षीर समुद्र जैसा है। पिछोले में मछलियां, कछुए, बतक, हंस, सारस आदि विचर रहे हैं। इंद्र के विमान की तरह सुन्दर नावें है। घाटों पर नारियां पानी भर रही है। उनका शृंगार अत्यन्त सुन्दर है। इसी पिछोले के मध्य में महाराणा जगतसिंह द्वारा बनाया हुआ महल है। एक जगनिवास और दूसरा जगमंदिर है। ऊंचे गवाक्ष हैं, अन्दर फव्वारे हैं, सुन्दर बाग हैं, वे मानसरोवर के मध्य कैलाश पर्वत के सदृश हैं। स्थान-स्थान पर शीतल जल से नहरें व होज भर दिये हैं। महाराणा भीमसिंह उनमें जल विहार कर रहे हैं। वे अत्तर गुलाब का मर्दन कराते हैं, अंगूर के आसव का पान करते हैं। मोतियों की माला धारण कर रखी है, पीले व केसर रंग के वस्त्र धारण करते हैं, सारंग राग का श्रवण करते है। इसी क्रम में प्रतिदिन प्रातः उठकर योग क्रिया करके सूर्य-दर्शन करते हैं, स्नान करते हैं और हाथ जोड़, सिर झुकाकर बाणनाथ की अर्चना करते हैं। इस तरह आनन्द करते हुए वर्षा ऋतु आ जाती है। (707-723)

वर्षा ऋतु आते ही आपाढ़ में बादलों की घटायें आकाश में छा जाती है, गर्जना होती है। कृषि कर्म शुरु हो गया है, मोर नाचने लगते हैं, दसों दिशाओं में बिजली चमकती है। झरोखे में बैठ कर महाराणा भीमसिंह वर्षा ऋतु का आनन्द लेते है। श्रावण मनभावन है। श्रावण भाद्रपद की तीज का उत्सव होता है। महाराणा ब्रह्म ऋतु मुहूर्त में उठकर गाय के दर्शन करते हैं। यों पावस ऋतु समाप्त होती है और शरद आती है। (724-726)

शरद ऋतु सतयुग की तरह आती है। रात्रि में चन्द्रमा वृक्षों पर अमृत वर्षा करता है। कामदेव उद्दीप्त हो रहा है। दम्पतियों में स्नेह बढ़ रहा है। आश्विन मास के प्रथम पक्ष में पितरों का घर पर आगमन होता है। पुत्रादि पिण्डदान करते हैं। द्वितीय पक्ष में नवरात्रि आती है। खड़ग की स्थापना होती है। दुर्गा की अर्चना की जाती है। महाराणा भीमसिंह अपने पुत्र सहित अम्बामाताजी को झुककर प्रणाम करते हैं, स्तुति करते हैं। उदयपुर निवासिनी अम्बामाता की प्रदक्षिणा कर पांच भैंसे व दो बकरों की बलि चढ़ाते हैं। तीसरे तीन हरसिद्धि देवी के दर्शन करते हैं। दो बकरे व पांच भैंसे चढ़ाते हैं। (727-735)

हेमंत ऋतु के आते ही दिन छोटे और रात्रि बड़ी होने लगती है। सूर्य की किरणों का ताप मंद हो जाता है, चन्द्रमा की द्युति बढ़ जाती है। महाराणा महलों

में विश्राम करते हैं। अगर-धूप की सुगंध सुख देती है। आसव, दाख, लवंग, गजक आदि का सेवन करते हैं। इस तरह सुहावनी हेमंत ऋतु के आते ही महाराणा का शिकार पर जाने का मन होता है। महाराणा भीमसिंह और कुंवर जवानसिंह शिकार के लिए रवाना होते हैं। सूरजमल, दुल्लह रावत, मोहब्बतसिंह, गुलाबसिंह, एकलिंग-दास, मोतीराम आदि भी साथ में जाते हैं। विलायत के असली कुत्ते को भी साथ में लेते हैं। वाराह, वाघा आदि शिकार करते हैं। इस तरह महाराणा हेमंत ऋतु व्यतीत करते है। (736-741)

शिशिर ऋतु के आते ही सूर्य मकर से हटना शुरु हो जाता। दिन बड़े व रात्रि छोटी होने लगती है, दंपतियों में स्नेह बढ़ता है। महाराणा भीमसिंह शिशिर ऋतु में इन्द्र के समान सुख भोगते हैं। सर्दी कम हो जाती है। फिर फागुन मास आ जाता है। फाग खेलने की तैयारी होती है, तब तक पुनः बसंत ऋतु भी आ जाती है। इस तरह महाराणा भीमसिंह षट् ऋतुओं का आनन्द लेते हैं। (742-745)

इस तरह महाराणा भीमसिंह राज्य कर रहे हैं। प्रधान महाराणा के हुक्म के पालन में तत्पर रहते हैं। चतुरंगणी सेना शत्रुओं को दण्ड देकर पैरों में सिर झुकाने में समर्थ हैं। प्रजा में सुख व्याप्त है, देश आबाद है, भण्डार भरे हुए हैं। भीमसिंह के पुत्र कुंवर जवानसिंह धर्म के अंकुर व्याप्त है, वह भूमि रक्षा में सहायक है। पिता की आज्ञा का पालन करने में सदा तैयार रहता है। वह छत्तीस शास्त्र की विद्या में प्रवीण है। नौ रस, छः भाषा, अलंकार, पिंगल, प्रबंध, छंद, नायक-नायिका भेद आदि का ज्ञाता है। राजधर्म में निपुण है। भीमसिंह के ऐसे पुत्र जवानसिंह के दो बहने चंद्रकंवर और अनोपकंवर हैं। दोनों गंगाजल के समान पवित्र हैं। भीमसिंह की रानियां रूक्मणी, सीता और सत्यभामा के समान है। माता दया की खान है। राधा के समान पासवाने हैं। भाई लक्ष्मण के सदृश है (446)

महाराणा भीमसिंह ने कुल सत्रह विवाह किये, उन रानियों के नाम, वंश पिता और स्थान के नामों का वर्णन कवि इस प्रकार करता है—

क्र.सं.	रानियों का नाम	पिता का नाम	वंश	स्थान
1.	अक्षयकंवर	शिवसिंह	राठोड़	ईडर
2.	जैत कंवर	रावल जयसिंह	भाटी	जैसलमेर
3.	रतनकंवर	सुरतानसिंह	राठोड़	बीकानेर
4.	रूपकंवर	जसवंतसिंह	झाला	हलवद
5.	लालकंवर	—	भाटी	—

6.	कुसलकंवर	चांदसिंह	वाघेल	गांगरगढ़
7.	सौभाग्यकंवर	सरदारसिंह	झाला	ताणा
8.	गुलाबकंवर	जगतसिंह	चावड़ा	वरसोर, कुंवर जवानसिंह का जन्म
9.	गुलाबकंवर	शिवसिंह	राठौड़	ईडर, कुंवर अमरसिंह का जन्म
10.	उमाकंवर	भवानीसिंह	राठौड़	ईडर
11.	सरदारकंवर	राव वेरिसाल का भाई रतनसिंह	—	शिवपुरी
12.	चांदकंवर	भवानीसिंह	राठौड़	ईडर
13.	पदमकंवर	गजसिंह पुत्र सुरतानसिंह	राठौड़	बीकानेर
14.	व्रजकंवर	अरिसिंह	झाला	लगतर
15.	तखतकंवर	—	पंवार	सिरोही
16.	सूरजकंवर	राजा दानसिंह	भाटी	ईस (गांव) मांडू
17.	किसोरकंवर	महाराव उम्मेदसिंह	हाड़ा	कोटा

भीमसिंह की ये सत्रह रानियां पतिव्रता, शीलव्रता, रूपवती, स्वामी के हुक्म में रहने वाली, उदारचित, कवियों को दान देने वाली, माता के समान पालन-पोषण करने वाली और सावित्री व उमा के समान हैं। इन रानियों के अलावा महाराणा के चार पासवान क्रमशः लाडू, मग्नराय, रंगभीनी और मोती हैं। (747-748)

इसके बाद कवि ने हाथी, घोड़ों, राजमहल, चतुरवर्ण आदि का विस्तार से वर्णन किया है। महाराणा भीमसिंह के यहां जंजीरों से बंधे हुए मदमत्त हाथी हैं, वे इन्द्र के ऐरावत हाथी के सदृश है। रंग से काले हैं, बगुलों की पंक्ति के समान उनके उज्ज्वल-धवल दांत है। घुड़साल में अच्छी गति, लक्षण व जाति के हृष्ट-पुष्ट घोड़े हैं। ये घोड़े चीन, बलख्ख, बुखारा, काबुल, कंधार, कच्छ, मुलतान, बंग, काश्मीर, करनाटक आदि क्षेत्रों के हैं। ये विविध रंगों के हैं। दौड़ने में इतने तेज हैं कि वायु भी इनकी बराबरी नहीं कर सकती है। (749-753)

महाराणा भीमसिंह इसतरह छत्र धारण कर राज कर रहे हैं; हाथी, घोड़ों, रथ आदि का पार नहीं हैं। इसी समय अंग्रेज अफसर गाफसाहृ (कप्तान कॉब) आया। उसके शासन प्रबन्ध सम्हालने से उदयपुर के चारों ओर सुख व्याप्त हो गया।

महाराणा का निवास सात खण्ड का है, श्वेत आरास से पुता हुआ है, ऊंचे गवाक्ष है, कांचमहल की शोभा अनुपम है। गलिचे बीछे हुए हैं, उन पर पांच रंगों के बेलबूंटे हैं। नगर के ऊंचे-ऊंचे आवास हैं, चारों वर्ण नव निधियों से युक्त है। ब्राह्मण वेद पाठ करते हैं; ज्योतिष, कर्मकाण्ड, रामचरित महाभारत, पूजा-पाठ आदि के पठन-

पाठन में तल्लीन रहते हैं। छत्तीस वंशों के क्षत्रिय भी यहां निवास करते हैं। अपने कुलधर्म के अनुसार शस्त्रों का अभ्यास करते हैं। कुश्ती, कवायद, लेजम आदि में संलग्न है। तलवार, तीर, बंदूक चलाना, घुड़सवारी करना सीखते हैं, साथ ही वे विष्णु, शिव, भैरव, चंडी आदि की आराधना भी करते हैं। उदयपुर में लक्षणवान वैश्य भी हैं, उनका वैभव अनन्त हैं। वैश्यों की बाजार में दोनों ओर दुकाने हैं, द्रौपदी का चीर भी उन दुकानों का पार नहीं पा सकता। दुकानों के फर्श पर श्वेत गदेले लगे हैं, उन पर वे बैठकर व्यापार करते हैं। जवाहिरात की दुकाने हैं, सर्राफ व बजाज की दुकाने हैं। रंगरेज, चित्रकार, स्वर्णकार, लौहार, सिकलीघर, हलवाई, मालिन, अत्तर विक्रेता, तम्बोली आदि अपने-अपने काम में व्यस्त हैं। जैन धर्मानुभाई भी हैं। वे अपने धर्म में दृढ़ हैं, मंदिरों में जाकर दर्शन करते हैं, जतियों की वंदना करते हैं। नवकार मंत्र का और भक्ताभर का पाठ करते हैं। गुरुओं के मुख से व्याख्यान व कल्पसुत्र सुनते हैं। वे दयाधर्म में रत है। इसीतरह तीनों वर्णों की सेवा में चतुर्थ वर्ण शूद्र भी उदयपुर में निवास करते हैं।

नगर में कहीं हाथी घूम रहे हैं, कहीं घोड़ों को चाबुक मारते ही वे हरिन के समान दौड़ पड़ते हैं। कहीं पर नटों का खेल हो रहा हैं और आबाल-वृद्ध सभी देख रहे हैं। कहीं कवायद हो रहीं हैं तो कहीं पर मस्जिदों में नमाज पढ़ी जा रही है। कहीं पर स्त्रियां मधुर कंठ से इसतरह से गीत गा रही है मानो आम बृक्ष पर बैठी कोयल कुहुक रही हो। आकाश में अप्सराएं रास्ता भटक गई हो उसतरह नारियां पानी के मटके लेकर आ-जा रही हैं। कहीं पर वाटिकाओं में वृक्षों की डालियां फलों के भार से भूमि को छू रही है। मालती व चम्पा के गुच्छे दिखाई दे रहे हैं। कहीं पर डार पकी अनार दड़क गई है। दाख-अंगूर की बेल हैं। नारियल, बदाम, छुहारा, इलायची, लवंग, अंजीर, सेव, अखरोट, नाशपाती, सुपारी, केला, चारोली, आम्र, जामुन, अशोक, रायण, शहतूत, निवू, चिलगोजा, नारंगी, बिजोरा, चंदन, मोगरा, गुलाब, केतकी, केवड़ा आदि के वृक्ष व लताएं सुशोभित हैं, वातावरण को सुगंधित बना रही है। कुएं व बावड़ी पर रहट चल रहे हैं, नहरों में पानी बह रहा है। उदयपुर के चारों ओर के बागों की ऐसी छटा निराली है जो इन्द्र के नंदन वन के समकक्ष है। (754-757)

द्वारिका में गिरधारी (कृष्ण) और अयोध्या में राघव (राम) के समान उदयपुर में दीवान भीमसिंह राज्य कर रहे हैं। घर-घर में चारों वर्ण सुखपूर्वक एवं सूचितापूर्ण निवास कर रहे हैं। उनके यहां नवों निधियां और आठों सिद्धियों का अपार वैभव है। दशानन का नाश करने वाले उसी रघुवर के तख्त पर रावल बापा, समरसिंह, हमीरसिंह, क्षेत्रसिंह, मोकल, कुंभा, प्रतापसिंह, अमरसिंह, जगतसिंह आदि सुशोभित हुए और उसी तख्त पर अब हिंदूकुल सूर्य महाराणा भीमसिंह आरूढ़ होकर राज्य कर रहे हैं। (758-760)

वि. सं. 1879 में कप्तान कॉव मेवाड़ में आया, महाराणा से मिला, जवास ठिकाने के भीलों ने उपद्रव कर दिया, सेना भेजकर कप्तान कॉव ने जवास में पुनः शांति स्थापित की, भीलों को अपने अधीन किया, दण्ड वसूल किया और थाना स्थापित किया। मेहता रामसिंह को प्रधान के पद पर नियुक्त किया गया, सब ओर शासन प्रवन्ध व्यवस्थित कर एकलिंग का मेला आयोजित हुआ। साम, दाम, दण्ड और भेद से राजकाज चलाने लगा, मुल्क आवाद हुआ, देव मंदिरों में पूजा होने लगी, राहगिरों को रास्ते का भय समाप्त हो गया। तस्कर दण्ड पाने लगे। वावड़ी, कुएं तालाव वांधे गये। (761-766)

महाराणा भीमसिंह इसतरह राज्य कर रहे हैं। पत्थर भी पानी के मध्य तैर रहा है। तैंतीस करोड़ देवता प्रसन्न हैं। छत्तीस वंश सेवा कर रहे हैं। नामी लोगों ने भी सिर झुका दिये हैं। भीमसिंह छत्र धारण कर सिंहासन पर आरूढ़ हैं। कुंवर जवानसिंह भी पिता के दर्शन कर प्रसन्न होते हैं। दायें-वायें सोलह-वत्तीस उमराव शोभा पाते हैं। दूसरे मंत्री-योद्धा भी अपने-अपने स्थानों पर विराजमान हैं। कायस्थ, पासवान भी आकर अपने स्थान ग्रहण करते हैं। कविगण आकर आसीस देते हैं और महाराणा के वंश के विरुद गाते हैं। अरिसिंह जगतसिंघोत का पुत्र राणा भीमसिंह हिन्द का वादशाह है। कवि अनेक पूर्वजों की उपमा देते हुए कहता है कि भीमसिंह के समान और दूसरा कोई राजा नहीं है। अनेकों रंक को राव बना दिया है, जिनके भी सिर पर हाथ रखा है, उसके सिर को ऊंचा किया है। ऐसे भीमसिंह का यश शेपनाग भी नहीं गा सकता, फिर कवि की तो एक ही जिव्हा है, वह उसका वर्णन कैसे कर सकता है। ऐसे महाराणा भीमसिंह लाख करोड़ वर्ष तक अमर होकर राज करते रहें।

महाराणा भीमसिंह हमीर, भोज और कर्ण के समान दानी है। वे तलवार से म्लेच्छों को खंड-खंड करने वाले हैं। दातार सूर और उदारचित्त हैं। संसार भर में जिनका यश व्याप्त है। ऐसे महाराणा भीमसिंह के समान न तो कोई हुआ और न ही कोई होगा। वे दीर्घायु हों, पुत्र-पोते का सुख देखें, अपनी भूमि की रक्षा करते रहें। वहुत यश गाथाएं सुनाई दे, बहुत से कवि यश वर्णन करें, आय वढ़े, सुख वढ़े और महाराणा भीम वहुत वर्षों तक राज करें। (767-769)

वि. सं. 1879 की बसंत ऋतु और चैत्र शुक्ला द्वितीया को महाराणा भीम ने कृपा करके अपने श्रीमुख से हुक्म फरमाया तथा (आढ़ा) दूल्हा के पुत्र कवि किसना ने यह ग्रंथ वनाया। अरिसिंह के पुत्र महाराणा भीम ने ग्रन्थ सुनकर, प्रसन्न होकर पहले से अधिक कुरव-कृपा प्रदान करते हुए प्रसन्नचित्त से इस ग्रंथ का नाम 'भीमविलास' प्रकाशित किया।

इसके वाद 'भीम विलास' की महिमा का वर्णन करते हुए तथा विभिन्न प्राचीन ग्रंथों व ग्रंथकारों का उल्लेख करते हुए कवि कहता है कि इस

भीम विलास को पढ़ने से उन सब को ज्ञान इस एक ग्रंथ को पढ़ने से ही प्राप्त हो जाता है। कुकवि भी यदि इसे एक वर्ष तक पढ़े तो वह सुकवि बन जाता है। मूर्ख, कायर और कंजूसों का हृदय भी इसको पढ़ने से हर्षित हो जाता है। पति-पत्नी, पिता-पुत्र, राजा-प्रधान, ठाकर-चाकर, भ्राता-मित्र, पुरोहित-पासवान, कवि-ब्राह्मण, क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र आदि जो भी इस ग्रंथ को पढ़ेगा, उसे अपने-अपने धर्म का इसमें आभास मिलेगा। धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा जब तक सुदृढ़ होकर रहेंगे, राम नाम जब तक इस संसार में रहेगा, तब तक भीमसिंह और जवांनसिंह दोनों इस पृथ्वी पर अमर रहेंगे। (770-775)

वस्तु-वर्णन

'भीम विलास' का उपयुक्त कथासार वर्णनात्मक है। ऐसा होना स्वाभाविक भी है क्योंकि 'भीम विलास' एक ऐतिहासिक और चरित प्रधान काव्य है। कवि का मूल उद्देश्य अपने चरित नायक महाराणा भीमसिंह का चरित्र वर्णन करना है। इस वर्णन में उसे तत्कालीन घटनाओं पर ही आश्रित रहना पड़ता है, वह कल्पनाओं का सहारा नहीं ले सकता। कल्पना के मिश्रण से काव्य-गत सौन्दर्य तो बढ़ता है, लेकिन उससे चरितनायक का व्यक्तित्व काव्यमय ज्यादा हो जाता है और तथ्यात्मक कम, इससे नायक के व्यक्तित्व की मौलिकता समाप्त हो जाती है। इसलिए किशना आढ़ा ने कथावस्तु में वस्तु-वर्णन को ज्यादा प्रधानता दी है, ऐसा करने से कवि कथावस्तु में परिवर्तन करने में स्वतंत्र नहीं रहा है, वह परिवर्तन करना चाहता भी नहीं है, क्योंकि घटनाएं और प्रसंग तो जो हैं, वही रहेंगे, फिर ऐतिहासिक काव्य इतिहास प्रधान होता है। इतिहास तो इतिहास ही है उसमें रमणीयता का कोई स्थान नहीं है, फिर ऐसा नहीं है कि 'भीम विलास' विशुद्ध ऐतिहासिक ही है, अवसर मिलने पर कवि ने रमणीयता व कल्पना का सहारा भी लिया है, ऐसा उसने नख-सिख सौन्दर्य, षड् ऋतु वर्णन आदि प्रसगों में किया है। यहां भी वर्णनात्मकता हावी है। किन्तु इस तरह की रमणीयता का वर्णन करके भी कवि ने ऐतिहासिकता में आंच नहीं आने दी है, उसने ऐतिहासिक वर्णन के दौरान पाठकों में नीरसता पैदा न हो, इस कारण रमणीयता का यथा अवसर सहारा लिया है। इस प्रकार 'भीम विलास' की कथावस्तु वर्णन प्रधान अधिक है। इस वस्तु-वर्णन को निम्न शीर्षकों के अन्दर विभाजित किया जा सकता है—

1- जन्म एवं कुण्डली वर्णन 2- बाललीला वर्णन 3- बारात वर्णन 4- विवाह वर्णन 5- भोजन-व्यजन वर्णन 6- यात्रा वर्णन 7- बधाई वर्णन 8- युद्ध तैयारी वर्णन 9- सैन्य प्रयाण वर्णन 10- युद्ध वर्णन 11-श्रीनाथजी वर्णन 12-धरना वर्णन 13- ओल (बधक) वर्णन 14- सामंत वीर वर्णन 15- रानी नाम वर्णन 16- स्तुती (ईश महिमा) वणन 17- यश वर्णन 18- दान-पुण्य वर्णन 19- राज्य शासन वर्णन 20-नृप नीति, गुण वर्णन 21- धर्म नीति वर्णन 22-चतुर्वर्ण वर्णन 23- बिमारी वर्णन 24-नृत्य वर्णन

25-अकाल वर्णन 26-शृंगार वर्णन-रूप वर्णन 27-हय वर्णन 28-गज वर्णन 29-नगर वर्णन 30-व्यापार वर्णन 31-बाग वनस्पति वर्णन 32-षड् ऋतु वर्णन 33-नृप महल वर्णन 34-विविध वर्णन ।

ऐतिहासिकता

भीम विलास का कर्ता मूलत: कवि है, वह इतिहासज्ञ नहीं है । किन्तु वह महाराणा भीमसिंह का समकालीन है, उसने तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल को अपनी आंखों से देखा है, इसतरह वह उस काल की घटनाओं का चश्मदीद गवाह भी है। उसके पितामह पनजी आढ़ा और पिता दुलहजी आढ़ा महाराणा अरिसिंह और महाराणा हमीरसिंह (द्वितीय) के समकालीन व आश्रित थे, युद्धों में भाग भी लिया तथा उन्होंने जो कुछ देखा, वह भी किसना को अपनी विरासत में मिला, इस प्रकार किसना आढ़ा ने 'भीम विलास' काव्य ग्रन्थ में मेवाड़ के इतिहास विषयक जो सामग्री प्रस्तुत की है, वह स्वत: ही प्रामाणिक और इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो गई है एवं उसके द्वारा वर्णित घटनायें, सामन्तों व वीरों के नाम, संवत्-तिथि आदि के बारे में शंका करने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता है । कर्नल जेम्स टॉड किसना आढ़ा का समकालीन था, उसने भी 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटिज ऑव राजस्थान' पुस्तक लगभग उसी समय लिखी, उसने भी तत्कालीन मेवाड़ का जो विवरण अपनी उक्त पुस्तक में दिया है । 'भीम विलास' का वर्णन भी उससे मेल खाता है । 'वीर विनोद' के कर्ता कविराजा श्यामलदास तथा महामहोपाध्याय गौ. ही. ओझा और बाबू रामनारायण दूगड़ प्रभृति परवर्ती इतिहासकारों ने अपने-अपने ग्रंथों में महाराणा अरिसिंह, हमीरसिंह, (द्वि.) और भीमसिंह सम्बन्धी जो विवरण दिया है, वह भी 'भीम विलास' की सामग्री से प्राय: मेल खाता है, ऐसा लगता है, इन इतिहासकारों ने 'भीम विलास' का पर्याप्त उपयोग किया है । इस प्रकार 'भीम विलास' काव्य ग्रंथ होते हुए भी यह एक ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ अधिक है तथा तत्कालीन इतिहास लेखन की दृष्टि से इसका महत्वपूर्ण स्थान है ।

मेवाड़ के इतिहास विषयक अन्य संस्कृत व राजस्थानी के ग्रंथों व प्रशस्तियों की तरह किसना आढ़ा ने भीम विलास के प्रारम्भ में मेवाड़ के राजवंश की पौराणिक नामावली दी है, उक्त नामावली और उपर्युक्त ग्रंथों व प्रशस्तियों की नामावली में एकरूपता होते हुए भी नामों के क्रम में भिन्नता है, कुछ नाम कवि ने छोड़ भी दिये है । यही स्थिति बापा रावल के पूर्व और बाद के शासकों के सन्दर्भ में भी हैं । 'भीम विलास' में मूलत: तीन महाराणाओं यथा-महाराणा अरिसिंह, हमीरसिंह (द्वि.) और भीमसिंह का वर्णन विस्तार से मिलता है । किन्तु इन तीनों में भी ग्रंथ नायक महाराणा भीमसिंह का वर्णन अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से है, यह स्वाभाविक भी है क्योंकि कवि का ध्येय भी कृति के शीर्षक के अनुरूप महाराणा भीमसिंह का वर्णन करना ही है । ऐतिहासिक दृष्टि से यह वर्णन मुख्यत: दो प्रकार का है :—

प्रथम प्रकार का वर्णन वह है जो 'भीम विलास' में विस्तार के साथ मिलता है किन्तु अन्य इतिहास ग्रंथों में इतने विस्तार से नहीं मिलता है, ऐसा वर्णन निम्न प्रसंगों में आया हैं—

फतूर रतनसिंह सम्बन्धी प्रसंग, उज्जैन का युद्ध, माधवराव सिंधिया का उदयपुर घेरा, कुंवर भीम को ओल पर रखना, सिंधी सिपाहियों का उपद्रव, कुंभलगढ़ विजय, श्रीनाथजी का उदयपुर और घसियार विराजना, विभिन्न प्रसंगों पर उद्धृत सामन्तों एवं वीरों की नामावली आदि।

द्वितीय प्रकार का वर्णन वह है जो केवल 'भीम विलास' में ही उपलब्ध होता है और अन्यत्र वह नहीं मिलता है, ऐसा वर्णन निम्न प्रसंगों में उपलब्ध होता हैं—

ग्रंथ नायक भीमसिंह की जन्म कुण्डली, ग्रह दशाएं, बाललीला, महाराणा हमीरसिंह (द्वि.) का विवाह वर्णन, महाराणा भीमसिंह का ईडर का प्रथम विवाह एवं प्रजा द्वारा बधाई वर्णन, सलूम्बर रावत के यहां विवाह में महाराणा भीमसिंह का शरीक होना, वि. सं. 1860 में मराठा हरनाथ और गुलाबसिंह का बांसी युद्ध, माहोली का युद्ध, वि. सं. 1866 में अमीर खां का मेवाड़ में आना और अपनी गलती के लिये महाराणा से माफी मांगना, वि. सं. 1869 का अकाल, वि. सं. 1872 में महाराणा भीमसिंह तथा उसके दो पुत्रों-अमरसिंह और जवानसिंह का कोटा विवाह, वि. सं. 1875 में महाराणा की बिमारी और दान-पुण्य, वि. सं. 1876 में महाराणा द्वारा तीन पुत्रियों का विवाह, वि. सं. 1877 में रावत अर्जुनसिंह का काशीवास, कुंवर जवानसिंह का बांधूगढ़ रीवां नरेश के यहां पर विवाह और बाद की यात्रा का विस्तृत वर्णन, महाराणा भीमसिंह द्वारा किये गये 17 विवाहों की नामावली, तत्कालीन राज व्यस्वथा, समाज, संस्कृति और धर्म सम्बन्धी जानकारी आदि।

ऐतिहासिक दृष्टि से उपर्युक्त दोनों प्रकार के वर्णन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इनके अलावा भी कुछ छोटी-छोटी घटनाए और भी हैं। यह समग्र वर्णन नवीन एवं मौलिक जानकारी प्रस्तुत करता है, उपयोगी भी है और महत्वपूर्ण भी। किन्तु तत्कालीन घटनाओं को 'भीम विलास' में प्रस्तुत करने में कवि किसना ने पक्षपात भी किया है। कुछ महत्वपूर्ण घटना-प्रसंगों को कवि ने छुआ तक नहीं है और 'भीम विलास' में उनका संकेत तक नहीं किया है। ऐसा संभवत: उसने इसलिए किया है क्योंकि वह महाराणा का कृपापात्र और दरबारी कवि है, अपने आश्रयदाता की अयोग्यता व कमजोरी साबित न हो तथा मेवाड़ के गौरव पर आंच नहीं आये इस दृष्टि से उसने 'भीम विलास' में ऐसे प्रसंगों का स्थान देना उचित नहीं समझा है, ऐसे प्रसंग निम्न हैं—

चूण्डावतों और शक्तावतों के पारस्परिक संघर्ष के विविध प्रसंग, महाराणा अरिसिंह व माधवराव की संधि, अमरचन्द बड़वा की मृत्यु, कृष्णाकुमारी का वध, वि. सं.

1874 (1818 ई.) की मेवाड़-अंग्रेज संधि की शर्तें, अहिल्यावाई का मेवाड़ लेना, गोड़वाड़ का मेवाड़ से अलग होना, सेठ जोरावर वाफना का उदयपुर आना, सोमचन्द व सतीदास गांधी का मारा जाना, कुंवर अमरसिंह की मृत्यु, महाराणा द्वारा किये गये निर्माण आदि ।

इसी तरह कवि ने महाराणा भीमसिंह की सत्रह रानियों व पासवानों के नाम तो दिये हैं, लेकिन कुंवर अमरसिंह और जवानसिंह तथा दो पुत्रियों के अतिरिक्त अन्य पुत्रों, पुत्रियों के नाम, विवाह आदि के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। ग्रंथ का नायक महाराणा भीमसिंह हैं, भीमसिंह की मृत्यु वि. सं. 1885 चैत्र सुदी 1 (16 मार्च, 1828) को हुई और 'भीम विलास' की रचना 1879 में हुई, रचनाकाल के बाद लगभग छः वर्षो तक महाराणा भीमसिंह जीवित रहे, किन्तु कवि ने इन छः वर्ष की घटनाओं को भी इस ग्रंथ में शरीक नहीं किया है, क्योंकि ग्रंथ की रचना पहले ही हो चुकी है अतः कवि ने उसे आगे बढ़ाना आवश्यक नहीं समझा होगा, फिर भी 'भीम-विलास' एक काव्य ग्रंथ होते हुए भी तत्कालीन इतिहास की अनेक लुप्त कड़ियों को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करता है, अतः इतिहास लेखन की दृष्टि से इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

समाज एवं संस्कृति

समाज एवं संस्कृति दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों की स्थिति अन्योन्याश्रित व सापेक्षिक है। दोनों का विशद चित्रण 'भीम विलास' में उपलब्ध होता है, उस दृष्टि से यह तत्कालीन समाज एवं संस्कृति का एक प्रतिनिधि काव्य बन गया है, यद्यपि यह चित्रण राजकुल किंवा राजपूत जाति का ही अधिक प्रतिनिधित्व करता है, फिर भी इस चित्रण के आधार पर उस काल की प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत की जा सकती है। अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी के मेवाड़ के सांस्कृतिक इतिहास लेखन की दृष्टि से 'भीम विलास' आधारभूत स्रोत है। चूंकि किसना आढ़ा चारण जाति से सम्बन्धित है, इस कारण उसका संस्कृति प्रेम स्वाभाविक है, उसे जहां कहीं भी अवसर मिला है, वहां उसने समाज के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, मान्यताओं आदि के बारे में अत्यन्त खुलकर कलम चलाई है तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को भी उसने छुआ है तथा प्रकाश डालने की चेष्टा की है। यहां पर स्थानाभाव के कारण समाज व संस्कृति से सम्बन्धित सामग्री को सूत्रात्मक रूप से ही प्रस्तुत किया जा रहा है—

1-तत्कालीन समाज चतुर्वर्ण प्रधान था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब अपने-अपने दायित्वों का योग्यता-पूर्वक निर्वाह करते थे, वे सुखी व सम्पन्न थे।

2-गृहस्थ जीवन चार आश्रमों से युक्त था-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास।

3-धर्म के प्रति लोगों में विशेष आस्था थी, कवि ने ग्रंथारम्भ भी ईश वन्दना से किया है। महाराणा अरिसिंह जब संकटग्रस्त थे, तब उन्होंने शिव का ध्यान किया था, विभिन्न विवाहों, यात्राओं, युद्ध के पूर्व, पुत्र जन्म के अवसर पर, विजयोपलब्धि के बाद ईश वन्दना की जाती थी। भीम विलास में ऐसी ईश वन्दनायें अनेकों बार की गई है। ईश वन्दना में पंथ विशेष की कट्टरता नहीं थी। एकलिंगजी, चारभुजाजी, सामलाजी, कुंभश्याम, विंध्यवासिनी देवी, श्रीनाथजी, राम, कृष्ण, शिव, विश्वनाथ, गंगा-यमुना-सरस्वती आदि की स्तुति की जाती थी। महाराणा प्रातः उठकर ईश्वर का ध्यान करते थे, ब्राह्मण लोग रामायण, गीता आदि पढ़ते, पूजा-पाठ करते, क्षत्रिय अपने-अपने आराध्य का स्मरण करते, जैन लोग मंदिर में पूजा करते, जतियों की वन्दना करते, व्याख्यान सुनते थे। बीमारी के समय भी ईश्वराधना करते थे, महाराणा भीमसिंह अस्वस्थ हुए उस समय, उन्होंने जगदीश मंदिर में ध्वजादण्ड चढ़ाया था। रावत अजीतसिंह को वैराग्य होने पर काशीवास किया था।

4-दान-पुण्य करना उस समय अच्छा माना जाता था। विवाह के अवसर पर, बीमारी के अवसर पर एवं अन्य अवसरों पर दान-पुण्य किया जाता था। दान-पुण्य में हाथी, घोड़े, वस्त्रादि दिये जाते थे, गांव भी भेंट किये जाते थे। चारणों को भी दान दिया जाता था, भाढ़ा पन्ना को करणवास गांव दिया था।

5-दान-पुण्य के अलावा महाराणा को सामन्तों व विशिष्ट जनों द्वारा नजराणा भी दिया जाता था। महाराणा अपने यहां आने वाले अन्य शासकों को भेंट में बहुत सी सामग्री देकर बिदा करते थे। माधवराव को व अमीरखां को महाराणा ने हाथी, घोड़े आभूषण आदि भेंट किये थे।

6-उस समय दण्ड लेने की प्रथा भी थी। महाराणा भीमसिंह ईडर से विवाह करके लौटे तो डूंगरपुर, बांसवाड़ा आदि से दण्ड वसूल किया था।

7-राजकुमारों के शिक्षा की विशेष व्यवस्था थी, भीमसिंह को और जवानसिंह को तद्नुसार शिक्षा दी गई थी।

8-विवाह पारम्परिक ढंग से होते थे, बारात जाती थी, तोरण मारा जाता, फेरे होते, हथलेवा छुड़ाया जाता, दहेज दिया जाता, बड़े-बड़े भोज होते, गोठे होती, बारात को विदा करते समय दासियां व नौकर भी साथ में दिये जाते। हमीरसिंह, भीमसिंह, अमरसिंह और जवानसिंह के विवाहों के अवसर पर ऐसी परम्पराओं का विस्तार से वर्णन मिलता हैं।

9-विवाह के बाद देव यात्राओं की प्रथा प्रचलित थी। जवानसिंह के विवाह के बाद जवानसिंह ने प्रयाग, बनारस, मथुरा, पुष्कर आदि की यात्रायें की थी।

10-उस समय बहु विवाह की प्रथा थी, अनेक पत्नियां रखी जाती थी, महाराणा भीमसिंह ने कुल सत्रह विवाह किये। बाप-बेटे साथ-साथ विबाह करते थे। भीमसिंह ने अपने दो पुत्रों के साथ कोटा-इन्द्रगढ़ विवाह किया था। एक ही परिवार में एकाधिक बार विवाह करने की प्रथा थी, भीमसिंह ने ईडर में तीन बार विवाह किया था।

11-बहुविवाह, बहु-पत्नियों के अलावा उस काल में पासवानें भी रखी जाती थी, महाराणा अरिसिंह के छः पासवानें थी, हमीरसिंह (द्वि.) के तीन तथा भीमसिंह के चार पासवानें थी।

12-उस समय सती प्रथा प्रचलित थी। महाराणा के निधन के बाद रानियां व पासवानें दोनों सती होती थी। अरिसिंह के निधन के बाद भटियानी रानी अपने पीहर में ही सती हो गई थी तथा छः पासवाने सती हुई थी। हमीरसिंह (द्वि.) के निधन के बाद तीन पासवाने सती हुई थी। सती होने वाली स्त्री गंगाजल से स्नान करती, शृंगार करती और दान-पुण्य करती थी।

13-राजा का सबसे बड़ा पुत्र पाटवी माना जाता था, वही गद्दी पर बैठता था, यदि राजा निसंतान मरता तो गोद लेने से पूर्व रानी के गर्भ है या नहीं का पता लगाया जाता, यदि राजा आयु में छोटा होता था तो उसके काका-भतीजा सेवा में रहते थे।

14-राजकुमार के राजगद्दी पर आरूढ़ होने के बाद सामंत, प्रधान, अन्य नौकर आदि उसे नजराना प्रस्तुत करते, चारण यश-गान गाते थे।

15-प्रधान, महाराणा का प्रथम सहायक होता था। प्रधान किसे बनाना है, यह महाराणा की इच्छा पर निर्भर था, प्रधान को बार-बार बदला भी जाता था। भीमसिंह के काल में एकाधिक बार प्रधान बदले गये थे।

16-सामन्त अपने स्वामी महाराणा के लिए अपने प्राणों का न्योछावर कर देते थे और इसे अपना अहोभाग्य मानते थे। उज्जैन, उदयपुर, कुंभलगढ़, टोपल मगरी, बांसी, माहोली, गंगरार आदि युद्धों में अनेक वीर सामंत मारे गये थे। सामंतों का महाराणा से मतभेद होने पर वे महाराणा से बराबर टक्कर भी लेते थे। महाराणा अरिसिंह के समय में उसके बहुत से सामंत उसके विरोधी हो गये थे।

17-उस समय ओल (बन्धक) रखने की प्रथा थी, भीमसिंह को बाल्यावस्था में दो वर्ष तक चित्तौड़ दुर्ग पर महाराणा हमीरसिंह ने सिंधी सिपाहियों के पास ओल पर रखा था।

18-राजा यदि अल्पायु होता तो राजमाताएं राज्य प्रवन्ध में हाथ बंटाती और महलों से वाहर आकर सामंतों आदि से मिलती थी। महाराणा हमीरसिंह (द्वि.) एवं भीमसिंह जब अल्पायु शासक बने तो उनकी माता ने राज-काज में हाथ बंटाया।

19-शिकार खेलना उस समय अच्छा माना जाता था, हेमंत ऋतु इसके लिए अच्छी मानी जाती थी। महाराणा अरिसिंह की मृत्यु शिकार के दौरान ही हुई। हमीरसिंह (द्वि.) का हाथ शिकार करते समय ही फट गया था, वाद में इसी से उसकी भी मृत्यु हुई।

20-अकाल के दौरान महाराणा जनता की पूरी सेवा करते थे, वि. सं. 1869 में मेवाड़ में जब अकाल पड़ा, उस समय महाराणा भीमसिंह ने अपना धर्म नहीं छोड़ा और जनता को जीवित रखा।

21-राजकुमार का जन्म होने पर विशेष वधाइयां दी जाती, याचकों को वखशीस भेंट की जाती। उत्सवादि आयोजित होते।

22-विशेष अवसरों पर नृत्यों का आयोजन करने की भी उस समय प्रथा थी।

23-फागुन मास में फाग खेली जाती थी, विविध रंगों का उस समय प्रयोग किया जाता था।

24-जब राजदरबार होता उस समय प्रधान, सामन्त, परिजन, धायभाई, पासवान, पुरोहित, कविगण आदि अपने निश्चित स्थान पर ही वैठते थे।

25-शत्रु के आक्रमण के दौरान पूरा मोर्चा लगाकर उसका मुकावला किया जाता था, महादजी सिंधिया ने जब उदयपुर का घेरा डाला उस समय नगर के परकोटे, महल, वुर्ज, दरवाजे, मह्ले आदि पर विशेष मोर्चे सम्हाले गये थे।

26-युद्ध में तलवार, तीर-कमान, ढाल, बर्च्छे, तोप, गोले, बारूद आदि का प्रयोग किया जाता था।

27-एक शासक जब दूसरे शासक के यहां पर जाता अथवा विवाह के लिए वारात जाती तो उस समय आगन्तुक राजा व वारात की अगवानी सम्बन्धित राजा दो-चार मील सामने आकर करता व सम्मान देता था।

28-अफीम का नशा करने का उस समय प्रचलन था। महाराणा भीमसिंह जब विमार हो गया तो उसने अफीम खाना शुरू किया था।

29-बिमारों व घायलों का इलाज करने की उस समय उचित व्यवस्था थी। महाराणा हमीरसिंह (द्वि.) का शिकार करते समय हाथ का मांस निकल आया तो उस समय चिकित्सक आकर उनके पट्टा बांधता था।

30-विविध प्रकार का व्यापार होता था, जोहरी सोने-चाँदी व मुद्राओं का व्यापार करते, वस्त्र व्यापारी, रंगरेज, सिकलीगर, लोहार, हलवाई, माली, स्वर्णकार आदि अपना-अपना व्यवसाय करते थे।

31-शूद्र वर्ग उस समय तीनों वर्गों की सेवा करता था।

इस प्रकार 'भीम विलास' में समाज व संस्कृति विषयक प्रभूत सामग्री उपलब्ध होती हैं।

रस-निष्पत्ति

किसी भी काव्य के भावपक्ष से उसकी साहित्यिक प्रौढ़ता का पता चलता है। जिस काव्य का भावपक्ष जितना पुष्ट होगा, वह काव्य उतना ही उत्कृष्ट माना जायेगा, इस दृष्टि से काव्य में भाव उस काव्य की आत्मा माना जाता है। ये भाव काव्य में रस की निष्पत्ति करते हैं, अर्थात् जो भाव किसी के मन में बहुत समय तक रहकर उसे तन्मय कर देते हैं, उन्हें ही रस कहा जाता है। काव्य शास्त्र में रस नौ तरह के माने गये हैं, यथा-शृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त।

'भीम विलास' काव्य ग्रंथ में इन नो रसों में से मुख्य रूप से वीर रस की निष्पत्ति हुई है। ऐतिहासिक काव्य होने तथा बार-बार युद्ध वर्णन प्रसंगों के कारण यह स्वभाविक भी है। वीर रस के साथ-साथ उसके अंगिक रसों में वीभत्स, भयानक, अद्भुत और शृंगार रस की भी निष्पत्ति हुई है, लेकिन ये अंगिकरस स्वतंत्र रूप से प्राय: नहीं आये हैं, एक-दो स्थानों पर अपवाद अवश्य मिल जायेंगे किन्तु ये अंगिकरस के रूप में ही प्रयुक्त हुए हैं। इसी प्रकार करुण व शांत रसों की निष्पत्ति भी 'भीम-विलास' में मिलती है, लेकिन अत्यल्प रूप में।

'भीम विलास' में प्रधानता वीर रस की है। युद्ध वर्णन वीर रस से प्रारंभ होता है। इस युद्ध वर्णन में आलम्बन, उद्दीपन और आश्रय की संयोजना से वीर रस का परिपाक होता है। आश्रय की विविध रूपात्मक चेष्टाओं से भय उद्दीप्त होता है, जिससे भयानक रस की निष्पत्ति होती है। युद्ध भूमि में भीषण मारकाट वीभत्स रस का संचार करता है, इस मारकाट को देखने जब देवता आते हैं तो अद्भुत रस और वीरों का वरण करने जब अप्सरायें आती है, तब शृंगार रस का योग बनता है, इस प्रकार वीर रस के साथ-साथ अंगिक रसों के रूप में भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शृंगार रस का भीम विलास में सुन्दर संयोजन हुआ है। वीर एवं उसके अंगिक रसों के कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं—

वीर रस

चढि सैंन दुहुं हय जुध्ध कजं । गजराज गजैं सिर उड्डि धजं ।।
रज उठ्ठीय पाय तुरंगन की । कर मुद्दीय भांन निहंगन की ।।
दुव सैंन भयंकर नद्द बजं । सु मनौं व्रज बीरन मेघ गजं ।।
रज बीज चमंकत सेल फलं । मनु भद्द घटा निकसी चपलं ।।
दुव फौज दिठाल भये सुभटं । सुल नेज मजेज अभंग घटं ।।77।।

वीभत्स रस

नदि बहत रुधिर भयकार भेख । मनु वैतरनी जमपुर विसेख ।।
तिन मध्य म्रतक तन तरि अमांन । क्रीडंत सरित मनु मगर मांन ।।
गज सुंड तिरत खग खंड अच्छ । मनु सरित मांझ फवि दध्ध मच्छ ।।
रत बीच तिरत आनन उवास । मनु सरित सुभग वारिज विकास ।।
अध ऊड कपाल दरसंत अेह । मनु तिरत कछ्छ विच सरित तेह ।।97।।

भयानक रस

वजंत बीर हक्कयं । सु भूत प्रेत हक्कयं ।।
.... । .... ।।
अरिंद भग्गि कंपयं । म्रगं कि सिंघ चंपयं ।।
चपेट बाज लीतरं । भगे कि डार तीतरं ।।
पटेत हथ्थ रोलयं । भगे गयंद टोलयं ।।159।।

अद्भुत रस

वज्जिय नाक सतेज व्रहासन । वंस वजी हरि कि मनु रासन ।।
पत्र खरखर जुगिन धाइय । नचत नारद वजि त्रिघाइय ।।
चौसठ बावन अठ्ठ इयारह । भूत पिसाच अनंद अपारह ।।171।।

शृंगार रस का वर्णन युद्ध प्रसंग के अन्तर्गत उतनी कुशलता के साथ नहीं हुआ है, जितना विवाह के विविध वर्णनों में हुआ है। ऐसा ही एक प्रसंग प्रस्तुत है—

करयो कुमार मंजनं । सुरेह नैन अंजनं ।
तिलक्क भाल सोहयं । कि चंद भौम मोहयं ।।

सुरंग पट्ट आवरी । गिरा कि मेर उत्तरी ॥
गुंथे सुबेनि कुंतलं । कि नाग चंद संमिलं ॥
छुटी अलक्क रागिनी । कि पूजि सिभ नागिनी ॥
तटंक सौभ कांन द्वै । कि चंद घेरि भांन द्वै ॥
धनंष कांम भौंहयं । सु नैंन बांन सौंहयं ॥
सुभंत नाक दीपकं । सपत्त चित्त जीपकं ॥
प्रवाल बिंब छद्दनं । सुब्रज लच्छि रद्दनं ॥
सुकंबु कंठ राजई । सु स्यांम पोत छाजयी ॥
.... । ....॥273॥

'भीम विलास' में करुण और शांत रस के प्रसंग बहुत कम आये हैं, उदाहरण इस प्रकार हैं—

करुण रस

आय सबैं भट निकट, रांन हम्मीर उठाइय ।
बैठि तांम सुखपाल, महल इंदर पधराइय ।।
बोलि तांम जरराह, घाय पाटा बंधांनह ।
कितक दिवस अंतरह, घाय फटि लेख प्रमांनह ।
अत पाय रांन हमीर तब, पोस सुदि अठम दिनह ।
खवास तीन सत कीन सथ्थ, दाग दीन संमिल तिनह ॥237॥

शांत रस

दुजराज करत धुंनि कहुक वेद । अठ दस पुरांन कहुं वचत भेद ॥
सारस्वत कहुक कहूं पांनिनीय । कहूं कासि कृष्ण अभ्यास कीय ॥
पिस्पलिस कटायन इंद्र चंद्र । अभ्यास अमर कहुं कहुं जिनंद्र ॥
सासत्र सु पट्ट अरु पंच काव । दुजराज करत कहुं सम्रति जाव ॥
जोतिष पढंत कहुं भ्रह्म ग्यांन । वेदग निघंट नारी निदांन ॥
कहुं कर्मकांड अभ्यासकार । कहु रामचरित भारथ विचार॥756॥

उपर्युक्त रसों के अतिरिक्त 'भीम विलास' में एक ही छन्द में नो रसों का एक साथ परिपाक भी मिलता है । कवि के इस कौशल का वर्णन निम्न साटक छन्द में मिलता है—

बांमंगे हर का सिंगार[1] नगनं हास्यं[2] भयं[3] भोगिनां।
कामं दाह विलोक नैन करुणा[4] सारोस[5] गगातया ॥
नाना भेष महेस दिख्खि विसमं[6] संग्राम[7] सानंदया।
नो रस श्रीसिव[8] विक्त कुत्स[9] पुरुषास्ते सानमः कालिका ॥478॥

अलंकार योजना

काव्य सौन्दर्य की वृद्धि के लिए काव्य में अलंकारों का प्रयोग कवि प्रायः करता है। इससे काव्य में भावों के उत्कर्ष की छटा दर्शनीय हो जाती है। इस दृष्टि से किसना आढ़ा ने भी 'भीम विलास' में अलंकारों का प्रयोग किया हैं, उसके ये प्रयोग प्रसंगानुसार बहुत ही सरस व सजीव बन पड़े हैं। कहीं-कहीं तो अलंकारों का प्रयोग इतना स्वाभाविक ढंग से हुआ है कि उसकी काव्य-कुशलता की प्रशंसा करनी पड़ती है। 'भीम विलास' में शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों तरह के अलंकार पाये जाते हैं। राजस्थानी का एक प्रमुख अलंकार वयणसगाई का भी इसमें प्रयोग हुआ है। शब्दालंकारों के उदाहरण द्रष्टव्य है—

1.लाटानुप्रास— जय जय नथ्थ अनथ्थ, जयति उनथ्थ नथ्थवर।
जय धनु भंज प्रमथ्थ नथ्थ, करि बांन भथ्थधर ॥4॥

2.वृत्यानुप्रास— मुख मुरली मुखरंद, मुकुट सिर चंद मयोरिय।
जय राधा मुखचंद, नयन आनन्द चकोरिय ॥5॥

3.छेकानुप्रास— कहि मात पित सुत भाय, लगि सासु ससुर पाय।
गुरुजनहिं नम्मिय सीस, चिरंजीव पाय आसीस ॥695॥

4.यमक— आरत हरत हैं बरन की बरन कीत,
प्रीत हैं बरन की न प्रीत सुबरन की।
सातहू सरन की सरन तैं बढ़त दांन,
सरन सधार काहू भूपति सरन की।
गज के तरन की तरन के न लोभ्यो देव,
तरन समांन वंस अंजस तरन की ॥609॥

---

1. शृंगार 2. हास्य 3. भयानक 4. करुण 5. रौद्र 6. अद्भुत 7. वीर 8. शांत 9. विभत्स

अर्थालंकारों में सर्वाधिक प्रयोग उत्प्रेक्षा, उपमा और रूपक अलंकारों का हुआ है, इसमें भी उत्प्रेक्षा का स्थान पहला है। इसका कारण यह है कि 'भीम विलास' एक ऐतिहासिक चरित काव्य है और कवि चरितनायक का आश्रित है। अपने आश्रय-दाता के चरित्र को वढ़ा चढ़ा कर वताने के लिए इन तीनों अलंकारों की वहुलता स्वाभाविक है। अर्थालंकार के अन्य भेदों का प्रयोग भी प्रायः मिलता है। कतिपय प्रमुख अर्थालंकारों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

1. उत्प्रेक्षा—

बजि बंब दहुं दल दुब्भरयं। सजि सार दुहुं दल सुब्भरयं॥
भट साजत अंग बगत्तरयं। मनु गौरख के उर कंथ्थरयं॥
कसि आयुध अंगन जंग कजै। जमदूत किधौं रजपूत सजै॥
मुख बीरन लालोय यों बिथुरे। मनु फाटिक जावक रंग भरे॥
मुख मुछ्छ उठि मिलि भौहनयं। ससि दोंज ग्रसौ मनु सोभनयं॥
भट दीठ सुरंगीय कोप जगे। सु मनौं सत्तपत्र मजीठ रगे॥77॥

2. उपमा— सुक्कि नीर तरफत सफर, अरु बरखाश्रित भांन।
ग्रीषम जल थल पवन नभ, बरतत अग्गिन समांन॥707॥

3. मालोपमा— पुहुकर सौ पय सौ पयोधि सौ पनंग सौ,
पारद सौ नारद सौ सारद अमंद सौ।
हंस सौ हरी सौ हिय हुलसनि हास जैसो,
हिम हलधारक हीरा सौ हयंद सौ॥610॥

4. रूपक— ससि वाहन गय हस गति, अग गति हय दिन पीव।
भई प्रवछ्छित भर्तिका, चकई रहत सदीव॥737॥

5. सहोक्ति— धर करदम सरिता सुजल, नभ घन जूथ समाथ।
नीर गुडल छिनदा तिमिर, समिटे एकहुं साथ॥728॥

6. दृष्टान्त— होतव होय सु नां मिटे, कहि स्रुति स्म्रित रिखेस।
लोभ पगे म्रग कनक सथ, लगे सु राम नरेस॥71॥

7. संदेह — कै रंक नव निधि पाय । मिलि जोगसिद्धि सिधराय ।।
कै पाय सुमनि फुनिंद । कै संत पाय गुविंद ।।
कै मंत्र सिद्धि दुजराज । कै अर्थ सिद्धि कविराज ।।
दाता कि जाचक पाय । कै मोह घनहर आय ।।695।।

8. निदर्शना— जत्र कत्र दल डेरन आये । घर घर घायल घाव बंधाये ।।
रमि पति प्रोढ नवोढा नारी । अैसैं भइ माध दल ख्वारी ।।112।।

9. अतिशयोक्ति—

गरजंत तोप नद्दह अताल । आघात मेघ मनु प्रलयकाल ।।
इत उडत भुरज कंगुर सफील । सिंदन तुरंग उडि उतहिं फील ।।97।।

10. यथा संख्य—सेस इंदु म्रग दीप, जांन कोकिल म्रगपति गज ।
वेनि वदन चख नाक, वोल कटि जंघ चाल सज ।।353।।

11. वीप्सा—

नर नार धन्य व्रजवास पाय । पसु पंछी धन्य जे व्रज रहाय ।।
धन्य मच्छ कच्छ जमुना विहार । कीटी पतंग धन्य सु व्रजचार ।।683।।

इस प्रकार किसना आढ़ा काव्य में अलंकारों के प्रयोग की दृष्टि से सिद्धहस्त है। ऐसे भी छन्द 'भीम विलास' में मिलते हैं, जिनमें एक ही छंद में एकाधिक और बहुसंख्य अलंकारों का प्रयोग कवि ने किया है। ऐसा ही एक(छंद सं 271) है, जिसमें उत्प्रेक्षा, संदेह और उपमा अलंकारों का प्रयोग कवि ने एक से अधिक बार किया है। इसी तरह छंद सं. 59 में कवि ने उत्प्रेक्षा, संदेह, उपमा, रूपक आदि का एक साथ प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए लाटानुप्रास, उपमा और रूपक इन तीन अलकारों का प्रयोग एक ही छंद में द्रष्टव्य है—

वाहन चंद समान चख, सझि सिंगार कलचंद ।
चंद सहोदरि लच्छि सम, चंद कुंवरि मुखचंद ।।371।।

वयणसगाई—

राजस्थानी में वयणसगाई अलंकार एक महत्वपूर्ण अलंकार के रूप में मान्य है। यह एक तरह से शब्दालकार के अन्तर्गत अनुप्रास अलंकार का एक भेद है, किन्तु राज-

स्थानी में इसका प्रभाव और महत्व अनुप्रस से भी ज्यादा है। राजस्थानी के कवियों के लिये काव्य में वयणसगाई अलंकार का प्रयोग प्रायः अनिवार्य माना जाता है। जो कवि इस अलंकार का प्रयोग करता है, उसे सिद्धहस्त कवि माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि काव्य में वयणसगाई अलंकार का प्रयोग करने पर काव्य सम्बन्धी सारे दोष समाप्त हो जाते हैं और इससे काव्य में रस-पोषण होता है। वयणसगाई में दो शब्द है—वयण+सगाई अर्थात् वर्ण+सम्बन्ध, वर्णों का पारस्परिक सम्बन्ध वैवाहिक सम्बन्धों जैसा ही होता है।

'भीम विलास' में यह वयणसगाई अलंकार प्रयुक्त हुआ है, किन्तु अन्य राजस्थानी काव्यों की तरह कवि ने इसमें वयणसगाई का पालन अनिवार्यतः नहीं किया है। वयणसगाई वह अच्छी मानी जाती है जो प्रथम व अन्तिम शब्दों के प्रथम अक्षर में पाई जाती है। भीम विलास में इस वयणसगाई के प्रयोग मिलते है, यथा—

आयो जसवंत राव सझि, हुलकर फौज अमांन ॥400॥
सींचि धरित बर बाग मनु, सौर आग संजोग ॥135॥

वयणसगाई का प्रयोग कभी-कभी एक ही पद के प्रथम व अन्तिम शब्द के प्रथम अक्षर में भी पाई जाती है, जैसे—

भयो हुकंम दल सज्जि भर। (139)
मरद कसोटी मांमला। (84)

कभी-कभी वयणसगाई पद के मध्य में भी लगाई जाती है—

गढ़ जेतै सिर रख्खियै, सिर तुटै गढ़ जाय ॥86॥
परि उत रावत पंच सै, इत सैंतीस जवांन ॥20॥

कहीं-कहीं वयणसगाई प्रथम शब्द और उपात्य शब्द में, कहीं-कहीं द्वितीय और अन्तिम शब्द में मिलती है, ऐसी वयणसगाई असाधारण वयणसगाई कहलाती है यथाः-

जीत अरस जुत रांन। (130)
मुलक मांझ विचरत रयत। (133)

ऐसे भी छंद है जिनमें वयणसगाई के नियम का कवि ने पालन नहीं किया है। सबसे ज्यादा वयणसगाई दोहा छन्द में पाई जाती है। मरु भाषा के छन्दों में वयण-सगाई का प्रयोग कवि ने अनिवार्यतः किया है।

छंद विधान

छंद विधान एवं छंद विविधता की दृष्टि से 'भीम विलास' एक उत्तम कोटि का काव्य है। इसमें मात्रिक और वार्णिक दोनों प्रकार के छंद पाये जाते हैं। छंदों का जिस कुशलता के साथ किसना ने 'भीम विलास' में प्रयोग किया है, उससे पता चलता है कि वह अपने समय का प्रसिद्ध छन्द ज्ञाता था। 'भीम विलास' के बाद उसके द्वारा रचित छन्दशास्त्र सम्बन्धी लक्षण ग्रन्थ 'रघुवरजसप्रकास' इसका पुष्ट प्रमाण है। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं से सम्बन्धित छंद भी 'भीम विलास' में प्रयुक्त हुए हैं, लेकिन किसना ने राजस्थानी भाषा के छन्दों का सर्वाधिक प्रयोग किया है। ऐसा करना राजस्थानी भाषा की कृति होने के कारण स्वाभाविक था।

कवि ने छन्दों का प्रयोग विषय-वस्तु के अनुसार एवं प्रसंगानुकूल करके काव्य-सौंदर्य की अभिवृद्धि की है। कवि को जिस प्रसंग में जो बात कहनी है, उसी के अनुसार छंद चयन कर जिस स्वाभाविकता एवं दक्षता के साथ बात कही है, उससे भाषा शैली की अलंकारिता बढ़ी है तथा रस परिपाक भी सहज रूप से ही हो गया है। छंदों में शब्दों का चयन व प्रस्तुती भी आकर्षक है। कवि ने कभी-कभी मात्राओं के क्रम को व्यवस्थित रखने के लिये दो लघु वर्णों का एक दीर्घ वर्ण तथा एक गुरु वर्ण के दो लघु वर्ण भी प्रयोग कर लिये हैं। इसी प्रकार कवि ने कुछ छन्दों के लक्षण व परिभाषा भी उन छन्दों में ही घटना प्रसंग के साथ ही दे दी है किन्तु ऐसा करके भी कवि ने कथा प्रवाह में बाधा नहीं आने दी है। छन्द वृद्धनराज (छन्द सं. 286), छन्द त्रिभंगी (309), छन्द सारसी (475), छन्द गीतमालती तथा बेताल (544), (704) आदि ऐसे ही छन्द है।

सामान्यतः छन्द चार चरण के होते है, लेकिन 'भीम विलास' में ऐसे भी छंद है, जिनमें चार से ज्यादा चरण भी हैं। ऐसे अधिक चरणों वाले छन्द को भी 'भीम विलास' में एक ही छंद माना गया है।

'भीम विलास' काव्य ग्रंथ है और विभिन्न छंदों में निबद्ध है लेकिन इसमें राजस्थानी के गद्य रूप 'वारता' और 'दवावेत' का भी प्रयोग कवि ने किया है। राजस्थानी का यह गद्य तुकान्त गद्य की श्रेणी में आता है, तुकान्त होने के कारण यह गद्य भी पद्य का ही आनंद देता है। वारता और दवावेत सहित कवि ने 'भीम विलास' में 36 प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है; लेकिन कवि का सबसे प्रिय छंद दोहा रहा है, जिसका उसने पूरी कृति में 326 बार प्रयोग किया है। दूसरे स्थान पर कवित्त छप्पे छंद हैं, जिसका प्रयोग कवि ने 136 बार किया है, इसके बाद पद्धरी का 80 बार, तथा अरिल का 40 बार प्रयोग किया है। कवि को ये चार छंद ही विशेष प्रिय रहे है, इन 775 छंदों का विभाजन, प्रयोग की दृष्टि से निम्न तालिका में द्रष्टव्य है—

क्र. सं	छंद का नाम	प्रयुक्त सं.	क्र. सं.	छंद का नाम	प्रयुक्त सं.
1.	साटक	13	19.	पद्धरी	80
2.	गाथा	6	20.	वेग्रख्खरी	6
3.	छप्पै	10	21.	वेताल	10
4.	कवित	10	22.	उद्धोर	11
5.	कवित छप्पै	136	23.	त्रोटक	14
6.	कवित इकतीसा	14	24.	भुजंगी	10
7.	कवित जमक	3	25.	अरिल	40
8.	दुहा	326	26.	मोतीदाम	3
9.	सोरठा	5	27.	विराज	6
10.	श्लोक-अनुष्टुप	9	28.	अर्द्ध नराज	6
11.	वारता	3	29.	वद्ध नराज	18
12.	दवावेत	4	30.	लघुनराज	3
13.	निसांणी	2	31.	मालिनी	3
14.	निसांणी (मरु भाषा)	7	32.	गीत-मालती	2
15.	चंद्रायणा	1	33.	गीत सुपंख रो	2
16.	सालिनी	1	34.	गीत-छोटो सांणोर	5
17.	सारसी	1	35.	गीत-वेलियो सांणोर	1
18.	त्रिभंगी	3	36.	अन्य सवैया	1
		554			221

योग-554+221=775 छंद

कवि ने विषय-वस्तु के कथन की दृष्टि से भी छंदों का सार्थक प्रयोग किया है। दोहा का प्रयोग प्रायः सामान्य कथन की दृष्टि से किया गया है, लेकिन कवि ने वंश वर्णन, हय वर्णन, युद्ध वर्णन, सैन्य वर्णन, विवाह, वारात वर्णन, भोज वर्णन, वीर वर्णन आदि के लिए पद्धरी, अर्द्ध नराज, त्रोटक, व्रद्धनराज, उद्धोर, अरिल आदि छंदों का प्रयोग किया है। स्तुति वर्णन के लिए साटक, गाथा, छप्पै, कवित्त छप्पै, भुजंगी, अनुष्टुप, सारसी, त्रिभंगी, मालिनी, लघुनराज, मोतीदाम, आदि छंदों का प्रयोग किया है। यश, महिमा, दान, आदि के वर्णन के लिए गीत, निसांणी, सोरठा, चंद्रा-यणा, कवित्त आदि का सहारा लिया है। इस प्रकार छंद प्रयोग की दृष्टि से भीम विलास एक उत्कृष्ट काव्य है।

भाषा

'भीम विलास' राजस्थानी भाषा का ग्रंथ है। कुछ विद्वान इसे पिंगल की रचना मानते हैं और पिंगल को राजस्थानी से अलग करते हैं, किंतु पिंगल राजस्थानी भाषा

की एक शैली है। राजस्थानी साहित्य में जैसे जैन शैली, चारण शैली, संत शैली आदि की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य का वर्गीकरण करते है, उसी क्रम में पिंगल भी एक शैली है और पिंगल शैली में लिखा गया साहित्य भी उसी तरह राजस्थानी का साहित्य है, जैसे उपर्युक्त शैलियों में लिखा गया साहित्य है। मध्यकालीन राजस्थानी 'डिंगल' के रूप में अभिहित की जाती थी। इस डिंगल के समानान्तर पिंगल शब्द प्रचलित हुआ। डिंगल उस काल की एक परिनिष्ठित भाषा थी, जिसका प्राचीनता के प्रति मोह ज्यादा था और उसमें क्लिष्टता भी थी किंतु भाषा की प्रवृत्ति कठिनता से सरलता की ओर होती है। डिंगल की तुलना में पिंगल अपेक्षाकृत सरल है और इसमें प्राचीनता का मोह भी नहीं है, वस्तुत: पिंगल राजस्थानी भाषा का वह स्वरूप है जिस पर ब्रज भाषा का आंशिक प्रभाव है। इस प्रभाव के कारण पिंगल को राजस्थानी में शरीक नहीं करना, उसके साथ ज्यादती होगी। उसे राजस्थानी की एक शैली के रूप में ही मान्यता देनी होगी और उस दृष्टि से 'भीम विलास' को राजस्थानी की ही एक कृति के रूप में मानना होगा। डिंगल एवं पिंगल में निम्न समानताएं पाई जाती है, उस दृष्टि से भी इसे राजस्थानी से अलग नहीं कर सकते—

1- डिंगल की तरह पिंगल में भी शब्दों को संक्षिप्त करने की प्रवृति पाई जाती है।

2- पिंगल में डिंगल के अनुस्वारों की प्रवृत्ति पाई जाती है।

3- पिंगल में भी डिंगल की तरह मूर्धन्य रेफ का अक्षर के पूर्व में आगमन होता है। जैसे कर्म = क्रम।

4- पिंगल में डिंगल की तरह शब्द के साथ 'ह' का प्रयोग देखने को मिलताहै— अंतर = अंतरह।

5- पिंगल और डिंगल दोनों में वर्ण द्वितता का प्रयोग समान रूप से पाया जाता है।

6- दोनों में ही विसर्ग के स्थान पर 'ह' का आगम होता हैं।

डिंगल व पिंगल में समानता के और भी उदाहरण दिये जा सकते हैं, ढूंढने पर वे मिल भी सकते हैं। इन और इसी तरह की समानताओं के कारण दोनों को राजस्थानी भाषा के अन्तर्गत ही मानना पड़ेगा। 'भीम विलास' के लिए भी यही बात लागू होगी। वैसे 'भीम विलास' में डिंगल के छंदों का प्रयोग जिस रूप में हुआ है, वयणसगाई के जो उदाहरण उसमें मिलते है, राजस्थानी या डिंगल की ही तरह की वर्णन शैली इसमें पाई जाती है, वर्णनों के अनुसार शब्द चयन भी डिंगल की ही तरह है. डिंगल की तरह ओजपूर्ण वर्णन भी इसमें आया है, इन आधारों पर भी उसे राजस्थानी की रचना कह सकते हैं।

'भीम विलास' की भाषा के शब्द भण्डार को देखें तो पायेंगे कि इसमें तत्सम, तद्भव, देशज और अरबी-फारसी के शब्दों को कवि ने अपने काव्य में जगह-जगह प्रयुक्त किया है। ऐसे कुछ शब्द द्रष्टव्य है—

तत्सम शब्द

लम्बोदर, सुभग, विद्या, बुद्धि, विवेक, धवल, वेद, सरल, गिरा, नीर, नयन, वय, भूप, आरोग्य, अभय, रवि, नरेश, दिवस, अंग, अक्ष, सचिव, वातायन, सरिता, निधि, कर, नुपूर, तन, दुकूल, अरि, लघु, जल, गज, हय, दिनेश, मन, नदी, कथा, रंग, संतान आदि।

तद्भव शब्द

सिर, घर, धोती, नाक, कमर, जनमपत्री, पटरानी, गढ़, हम, भाल, पहाड़, थाली, कटोरा, झूठ, चोर, रोटी, बुआ, भतीजी, सीस, दुल्हा, खग्ग, पथ्थ, जोत, खेत्र, पारथ, ईस, भीषम, रिन, खाग आदि।

देशज शब्द

रजवट, पातसाह, दाता, सिरपेच, सुखपाल, पातुर, दीवांण, ठाकर, वाईराज, काका, व्याह, कमंध, कमधज, हथनार, ईला, रहट, आरास, गोठ, नूंत, रावरह, जांन, हथलेव, डीकरी, भांवरी, मेह, परूसाह, जीमन, चौंरी, बींद, अरोगी, जनवासा, गठजोड़ा, झूमर, सगारथ आदि।

अरबी-फारसी

खजाना, मुलक, तखत, मुकाम, बादशाह, आफताफ, मर्दानगी, दातार, करतार, जिहांन, जाहर, परवरदिगार, हरामी, मुरजी, सूवेदार, फतूर, उमराव, जंग, फरजिंद, फौज, कमसल, मुसाहव, फजर, किताव, नूर, हद, सिलह, दरमियान, कवायद, तावदान, तफसील, परगना, खालसा आदि।

कवि ने शब्दों को छंदों की मात्राओं को नियमबद्ध रखने के लिए तोड़ा व मरोड़ा भी है। भावों के अनुसार भाषा को बदलने का भी कवि ने पूरा ध्यान रखा है। युद्ध वर्णन की भाषा में जहां ओज है, वहीं शृंगार वर्णन में कोमलकान्त पदावली का ध्यान रखा गया है। भाषा के लालित्य का भी पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है और

प्रवाह का भी। 'भीम विलास' की भाषा मूलतः राजस्थानी है किन्तु कवि ने प्रसंगानुकूल स्थितियों का ध्यान रखते हुए संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, पंजाबी, नागभाषा, चूलिका पैशाची, पंजाबी, ब्रज, मरुभाषा-डिंगल आदि भाषाओं का विभिन्न छंदों में प्रयोग करके कवि ने बहुभाषाविद होने का प्रमाण दिया है। इस तरह भाषा परिवर्तन से कथा प्रवाह में कोई बाधा पैदा नहीं हुई, बल्कि इससे काव्य की सरसता में वृद्धि हुई है। कवि ने एक छंद (साटक) ऐसा भी दिया है, जिसमें षट्भाषाओं का प्रयोग कवि ने एक साथ करके अपने काव्य-कौशल का परिचय दिया है, उदाहरण द्रष्टव्य है—

> त्वं त्रिदशारि निघाय खड्ग विस्मेछित्वासि रासीपदं।[1]
> काली लोयण लोल मीण अलके आलोल आलि अलि ॥[2-3]
> कंदो चंदो अविंदो सुहयं बंधौ बाग कुंदौ सुहिंदौ।[4]
> विव्वूहोण रणायणम्मि पैणा जै-जै उमा कालिका।[5-6]

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि 'भीम विलास' राजस्थानी का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक चरित काव्य है। किसना आढ़ा प्रत्यक्षदर्शी होने के कारण इसकी कथावस्तु तत्कालीन इतिहास, समाज, संस्कृति व साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करती है। यह न केवल एक उत्कृष्ट काव्य ग्रंथ है बल्कि यह इसके रचयिता के बहुमुखी व प्रभावी व्यक्तित्व को भी स्पष्ट करता है।

मकर संक्रांति, वि. सं. 2045

डॉ. देव कोठारी

---

1. संस्कृत 2. नागापिसाची 3. पिसाची 4. शूरसेनी 5. मागधी 6. प्राकृत

किसना आढ़ा कृत

भीम विलास

□

मूलपाठ

॥ श्रीरामजी ॥

॥ श्री गुरुगणपतीष्टदेवताभ्यो नमः ॥ श्री जानकीवल्लभाय नमः ॥ श्री गुरुदेवाय नमः ॥ अथ रूपग[1] श्री श्री १०८ श्री दीवांण जी श्री भीमसींघ जी को आढ़ा किसना कृत ॥

स्तुति

छंद साटक

श्रीलंबोदरसिंधुरास्यसुभगं गोरीअनंदायनं ।
सींधूरार्चितसुंडडंडप्रथुलं मद्गल्लछत्रालनं ॥
पाणीमोदकयंकुठारदधतं विघ्नालखंडायनं ।
विद्याबुद्धिविवेकविश्ववरदं जै जै गणाधीश्वरं ॥१॥

गाथा (नागभाषा)

श्री सरस्वती स्तुति

णाओ णरो सुरांणो, सरसई पयण मय करयण यसेयं ।
णव णव पंच बुहाणं, कणं पासाय अविलंबणं ॥२॥

छप्पै

ध्वज मराल अति धवल, वास गिर धवल विराजत ।
तन धवलित तप तेज, समुख ससि धवल समाजत ॥
दीपत धवल दुकूल, धवल भूषन धन धारत ।
सरल धवल स्वाभाव, वेद रुघ धवल विचारत ॥
सिर चहर स्यांम ऊजल सरल, अपर अंग ऊजल अवस ।
जस भीम धवल आरंभ कज, गिरा धवल आखर वगस ॥३॥

---

१. ग्रन्थ के अन्त में कवि ने इस कृति को 'भीम विलास' के रूप में सम्बोधित किया है, द्रष्टव्य- 'भीम विलास' छंद सं. ७७० पृ. २३९

कवित्त छप्पै

श्रीरामचंद्र स्तुति (लाटानुप्रास)

जय जय नथ्थ अनथ्थ, जयति उनथ्थ नथ्थ वर।
जय धनु भंज प्रमथ्थ नथ्थ, कटि बांन भथ्थ धर ।।
जय जन अपन अथ्थ, कथ्थ जग जाहर जांनीय।
जनक सुता हित पथ्थ सीस, तिर जुथ्थ परवांनीय ।।
आजांन हथ्थ समरथ्थ इल, न्रपं रखन जिस गथ्थ निज।
दसमथ्थ भंज दसरथ्थ तनु, जय रघुनथ्थ समथ्थ भुज ।।४।।

श्रीकृष्ण स्तुति (जुगन छेकानुप्रास)

मुख मुरली मुखरंद, मुकुट सिर चंद मयोरिय।
जय राधा मुखचंद, नयन आनन्द चकोरिय ।।
जय तनया कालिंद, नीर रूचि जिंद अनुपम।
जय जसुदा सुखकंद, नांम सुरयंद निरूपम ।।
मद अंध कंस मरदन महा, खल विभंज दुख-द्वंद खय।
श्रीनंद नंद आनन्दघन, जय जय जय व्रजचन्द जय ।।५।।

छप्पै

श्रीशिव स्तुति (माधुर्यगुण छेकोनुप्रास)

थट्टीय पांन त्रिसूल, सेस हिडुल गल वट्टीय।
घट्टीय दघ दमीयंन, नयन पावक झल पट्टीय ।।
अधअंग रट्टीय उमा, गंग अट्टीय जट तट्टीय।
चवलिल वट्टीय चंद, नीलकंठीय विष घुट्टीय ।।
किव किसन भीम पठ्ठीय सु कित, भव दट्टीय अक्रम भयत।
कट्टीय कलंक थट्टीय सु क्रम, जट्टीय अघ मट्टीय जयत ।।६।।

श्रीदेवी स्तुति (छेकानुप्रास)

मुख सुम्मीय दुति महत, राह दुति चिहर सिरम्मीय।
नथथ्थह रम्मीय नाक, कांन झूमर झंम झम्मीय ।।

पांन ललम्मीय अधर, चीर हिमतार सु चम्मीय ।
डंम-डम्मीय कर डाक, पाय नूंपुर घंम घम्मीय ।।
भम्मीय त्रिलोक जन अभय कर, मात डीठ अम्मीय मयत ।
कर जोरि सीस नम्मीय किसंन, जगदम्मीय अम्मीय जयत ।।७।।

दुहा

भूत भविष्यत वरतमन, सुकवि जिते मति साध ।
सुकवि किष्ण विनती करत, खिमा करहु अपराध ।।८।।
निराकार निरलेप हरि, रचन चह्यौ आकार ।
नाभि कंज भ्रह्मा भयौ, तातैं वंस प्रचार ।।९।।
रविवंसी कहि रांन कौं, रांन रांम रघुवंस ।।
यह कुल आद अनाद तैं, सुध अवनि अवतंस ।।१०।।

सूरज वंस वर्णन

छंद पद्धरी

कहि प्रथंम निरन्जन निराकार । तिहि नाभि कंज भ्रह्मावतार ।।
सुत भ्रह्म त दिन मारीच सोह । मारीच नन्द कस्यप विमोह ।।११।।
सुत कस्यप प्रगटे सुतयसूर । वइवस्तु सूर अंगज सनूर ।।
सम्भव इक्ष्वाक विकुष सपूत । अष श्रकुनीस्व स्वादज अभूत ।।१२।।
कुकुस्थ अनेन प्रथु अधिक कंत । रट विष्टरास आरद्र रजंत ।।
जुवनासव संभ्रम अभय जांन । व्रहदस्व धुंधमारह वखांन ।।१३।।
तत्र जय ग्रढासु भूपति सतोल । हरिजस प्रकास जुधनी हरोल ।।
निकुम्भ संहितासुह नरेस । अक्रसासू जुवनासुह अरेस ।।१४।।
न्रप मांनधातपुर कुस नरिंद्र । सम्भूत सुतन सुधना सुरिंद्र ।।
त्रिधना अरु त्रिध्यारुण सतोर । सुत ताहि न्रपत सतव्रत सजोर ।।१५।।
सतव्रत तनय हरिचन्द सोह । मह रोहितास ह्लत चंचमोह ।।
औपत सुदेव अरु विजय अेह । रु रुक व्रक वाहक त्रिहुं अरेह ।।१६।।
न्रप सगर असमंजस निसंक । अंसुमान दिलीपह सुत असंक ।।
भागीरथ नाभंग अनट भूप । रट अम्बरीष हरि भगत रूप ।।१७।।

सिंधुदीपह अयुतायुत सराह। रित प्रन सुदास सउदास राह ।।
स्रव करंम अनेरन[1] न्रिधन साज। अनमित्र दुलेदुह जस उपाज ।।१८।।

दिलीप रघु अज न्रपत दूठ। रिम खाग भंज दसरथ सरूठ ।।
रट दसरथ सुत श्री रामचन्द्र। अवतार विसम्भर देव इन्द्र ।।१९।।

भुजबल प्रताप दसमाथ भांन। दीनी सु भभीषण लंक दांन ।।
रघुनाथ पाट रजि लव नरेस। लव सुत अतिथ विनपाप लेस ।।२०।।

निषाध नाभ पुण्डरीक नन्द। कहि षेमधनव समर नि उकन्द ।।
देवानिक न्रपत अनिक दूठ। पारिजात वाल संथल अपूठ ।।२१।।

वज्रनाभ खटंग वइध्रत विसेख। अरु हिरण्यनाभ पुष तप असेख ।।
ध्रुव सिद्धि सुदरसन अगनिरंग[2]। सिंधुराज मरुत सिंधिराज अंग ।।२२।।

मरखरन महीमांन रु विस्वसाक। प्रसेन खुनक वलव्रहद भाक ।।
भनि विस्ववंद प्रति व्योम भांनु। देवाक भूप सहदेव दांनु ।।२३।।

व्रहदस्व भूप कहि भानु मांन। प्रतिकास सु प्रतीकह प्रमांन ।।
मुरुदेव भूप कहि सु नखित्र। पुस्कर सुत या धरि आतपत्र ।।२४।।

भूपति अमित्रजित व्रहदभोज। महवह निक्रत जय किर्त्ति मौज ।।
रिन जय श्रजय कहि साक्यराज। सुधोदय लंगल प्रसेनसाज ।।२५।।

षुद्रवक रिणक सुरथ अखंड। पहुसुमित्र व्रजनाभह प्रचंड ।।
महारथी अंतरथ अचलसेन। हिम[3] महासेन, दिगविजयसेन ।।२६।।

सुख अजैसेन आनंगसेन। सुभ मदनसेन महिरथ सुभेन ।।
भनि अवधिराज क्रत विजय भूप। रटवगै अगंदत दछिन रूप ।।२७।।

[अठां आगे दीतवागा दक्खिण देस में जयन्तपुर राज कीधो]

दख पदमदीत फिर सिवादीत। हरदीत सु जसदीतह कहीत ।।
तव सिवादीत कहि सिलादीत[4]। दख केसवदत नागासुदीत ।।२८।।
भोगादत देवादत सुभंत। आसादत अमरादत अखंत ।।
भनि ग्रहादीत रवि वंस भांन। वठौ सु अग्र रावल वखांन ।।२९।।

---

१. अनरण २. अगनीवरण नांम छै, तुकंत तावै अगनिरंग कह्यो छै
३. कनकसेन नांम ४. अठा आगे सात पीढ़ी ब्रह्म कुल में रहै दीतवागा

अठा आगै रावल बापा

दुहा

मद गंधन हनि खेत मझ, वंधन सत्र अवंध ।
ग्रहादीत घर अवतरित, सुत बापौ सकबंध ॥३०॥
रिष रिझाय वर पाय जिहि, सु वर पाय जट धार ।
वरजौरी चित्तौर लिय, मौरी खग्गन मार ॥३१॥

वारता

ग्रहादीत के घर रावल बापा सकवंध भया। जिसके तांई हारीत रिष और एकलिंग महादेव नै वर दया। रिष के प्रताप दस हाथ की देह वज्रमई भई। असी कौड़ मौहर खजांने कौं दई। पच्चीस गज धोती कमर के परवेष रखै। पचास गज पिछोरा तातें तंन ढंकै। च्यार वकर फजर के वख्त पाकदार भोजन संजै। दौनु हथु के दरमीयांन दौय तेग साथ चल्लै तातें दुतरफा दोय आरणु के सिर भंजै। बत्तीस मरण का खड़ग रावल के हाथ बीच झलकै। पचास मन का तोडर पाय में खलकै। असा सकवंधी रावल सीसोद वंस में करतार नै पैदा कीया। जिसनै गुंणतीस लाख आदमी तेगूं सौ मार मोरी के पास चित्रकोट छीन लीया। चित्रकोट मेदपाट कूं जमाय दिगविजे कूं निसांण खड़ा कर नगारा दीया। च्यारु दिस जीतणे कौं कूच कीया। प्रथम पूरब दिसा के राजेस्वर पाय नांमैं होय दंड नजर कीया। जिसके तांई अपनी नोकरी में रख पीछा सत्र चंमर देसराज दिया। कोई अनी के जौर सैं सनमुख आय जंग कीया। जिन्हुं के तांई तेगु सै मार टुक कर राज छीन लीया। सो पूरब के कौंण कौंण देस में अमल हुवा सो कवेस्वर कहि दिखाता है। पूरब, गौड़, कान्यकुब्ज, कांमरु, कलिंग। गोल, कुरु, वंगाल, कुरंग, अंग, बंग। अराख, वेरंद्र, अंतरवेध, गंगापार। बांमन, मगध, मध्य, डाहल, ऊचार। वंबु, पुरु, चौंड, सांग्नि, माल्लव, पंचाल। लोहित पद, सूरसेन, जालंधर, ठाल ।

पुरब कुं जीत पछिम दिसा कौं सेन चल्लै। थांना अस्ताचल लौं लंका थर सल्लैं। पछिम की दिसा अमल कर अपना थाना जमाया। जिस मुलकूं का कवेस्वर नें नांम गाया। पछिम, काछेल, अरब्रुद, मरुदेस। वालंभ, सौरठ, कुलाहर. अवंतेस। पारियात्र, मालव, कांबोज, मेदपाट। तांमलिप्त, नागष्ट-

गनित, सोसुघाट । किरात, सकुर, वड़देस, सौरवीर । कीनै जेर भूपत, वौकांणन, कास्मीर । पछिम कूं जीत दछिन कूं सैंन का मुकांम भया । लंका लौं आतंक भभीछन का सेल गया । फिर भभीषन अपने चित कूं धीरज देता है । अपनैं पुरखूं का दिया दांन बापा नहीं लेता है । रांमचन्द्र का दीना दांन तातैं लंका का धरम रह्या । दुजा देसुं के तांई मार समसेरुं सें छीन ल्हया । अमल कीया और दंड का लीया पैसा । सौ दछिन का देस कैसा कैसा । मलय, सिंधव, अंध्य, वंध्य, कारणाट । कौसिल, पाहल, श्रीपर्वत, विराट । डाविट, श्रीपंचाल अरु धारापुर भौज । वैदरभ, तापीतट, आभीर, हनौज । माराष्ट्र, नर्मदातट, पापांतक मांन । कामाख्यांक, चौंड, दीपांतर पहिचांन ।

दछिन कौ जीत उत्तर दिगविजै कौ भण्डा फहरे । धन के आसं का कुबेर अलंकापुर थहरे । सोना खौसवे की ताप सें सुमैंर आधा जम्मीं में धंस गया । सोच सें मुह पीला परि सुरखी का रंग नसि गया । वापा सकवंध हिमाचल कूं पमंगू के पायतें धुंद कै उडाय देता सही । पैं पारवती का पिता और सिव का ससुर,ईस वात सैं हुरमत अजांद रही। उत्तर दिसा कूं जीत सव देसू तें दंड लीये । भुजदंडूं के पांन छ खंड खुरासांन कूं सरद कीयै । मुसलूं के तेगूं की लोहे की मूंठ डलवाय काठ की मूंठ करवाई । सिर पै टोपी धरवाय पाघूं उतरवाई । छ खंड खुरसांन सें डंड डोला लीया । उत्तर दिसा भी अपना अमल कीया । अमल जमाय थांन थप्पै ठांम ठांम । अखैं कवि उत्तर के देसुं के नांम । गूजर, तुरक, सिंधु, वरजर, नैपाल । लाट, टांक, वायक, हिमालय, सुढाल । वरधर, वूजर, खर कास्मीर जांन । नौहस्ती,लौहपुर, श्रीकासट मांन । श्रीराज्य सहेत दिस उत्तरआखंड । जीती जुध वापै वल आपै भुज डंड । संमत एके एकांनवैं रावल वापा चक्रवरती भया । च्यारु दिस जीत रावल खुमांण सींघ कूं राजतिलक देकर सदेह केलास गया । सीसौद वंस की कहां लग वडाई करीयै । जिसका दीदार कीयें तें पैंतीस वंस राजवंस और सव आलम का पाप हरीयै ॥३२॥

वेअखरी

वापा पाट खुमांन विमोहत । सुत गोव्यिद तास घर सौहत ॥
फिरमा हिंद तखत तिंहि फव्विय । ग्रह तिहि अलूअवीह गरव्विय ॥३३॥

सीहरु, सनतकुमार नरेस्वर । सालिवाहु, नरवाहन सघर ॥
उतिम, भैरव, तेज अखंडित । अखे कंन, भाऊसीह अडंडित ॥३४॥

गात्र सींघ, हंसराज गहभर । जौगराज, वैरड़ दुस हांजर ॥
वैरसीह, तेजसी वखांनीय । जैसुत समरसीह जग जांनीय ॥३५॥

दुहा

तीन वेर अप पंग सौं, समर गही समसेर ।
सीर दीनौ प्रथीराज कौं, नीर पंथ जुध वेर ॥३६॥

रतंन भयौ सुत समर, ता घर करन अभंग ।
रांना पद पायो सुजिहि, जितिय खल दल जंग ॥३७॥

वेताल

राहप्प नरपत रांन अविखव दिन करंन जग छज्जयं ।
जस करन नरवर नागपालहि पूर्नपाल विरज्जयं ॥
पीथल्ल त्रय सुत पिता पौत्र रू गया गाय नकार नैं ।
खग धार कर तन खंड खंड रू ईला नाम ऊवार नैं ॥३८॥

भुनंग भीम रू रांन जैसी गढ़ लखमसी जांनीयै ।
दस पुत्र त्रेदस वंधुकटि गढ़ चित्रकोट प्रमानीयै ॥
ता सुत अजैसी फैर अरसी तास नंद हमीरयं ।
सुत नयन रांनी वाज गज त्रवि विरद रखिख सधीरयं ॥३९॥

सिर गंग खलकीय तास घर सुत खेतसी जग जांनयौ ।
जगाह तेग अवाह खेतल साह अहमंद भांनयौ ॥
तिहि पुत्र लाखौ तास मौकल ग्रेह प्रगट कुमारयं ।
विन सीस कठ्ठी जंम्म दट्ठी दुसह कट्टी पारयं ॥४०॥

सुत तास कुंभो जग अचंभो रायमल तस नंदनं ।
पीथल्ल ता सुत भंजि टोडौ ललौ मेछ निकंदनं ॥
तिहि पाट सांगौ दुसह भांगौ जरे साह जंजीरयं ।
तिहि पाट उदल खित्रवट भल निपट चढ़ कुल नीरयं ॥४१॥

परताप ताखो जगत साखौ तास ग्रेह अभूतयं ।
करि खाग भट्ट मेछ थट्ट खित्रवट्ट कूतयं ॥
चेटक्क नख्खीय बाज हक्कीय मांन लख्खीय रौसरं ।
वहलौल वढ्ढीय तेग कढ्ढीय भौंह चढ्ढीय मौसरं ॥४२॥

गायत्रि वछ्छीय गौ तुलछ्छीय विप्र वेद अनन्दवं ।
ससि सूर सख्खीय भूमि भख्खीय ध्रम रख्खीय हिंदवं ॥
नारी कुमारी न दी डौलहिं अस्व अग आदा गयं ।
सेवा न क्रंम्मीय धू अनंम्मीय समुख क्रम्मीय खागयं ॥४३॥

तिहि पाट अम्मर धार गुम्मर करन ता सुत रांनयं ।
तिहि पाट जगपत हेल दधहथ वंट वित जस वांनयं ॥
हजार छप्पन वाज सांसन दये अेक पचासयं ।
सात सै सिंधुरमत्त मदझर दये धर जस वासयं ॥४४॥

राजेस ता घर राजसर कर मालपुर तिहि मारयौ ।
गढ किसंन मंग दिलेस औरंग तास परनि पधारयौ ॥
तिहि पाट जैसी अमर ता सुत सांग अमर सु जांवयं ।
जगतेस ता सुत सुत पतौ तिहि न्रप सुमति ध्रमं नावयं ॥४५॥

राजसी ता सुत बाल वय म्रत पाय लेख अलेखयं ।
तिह तखत अरसी रांन जाहर भूप नाहर भेखयं ॥४६॥

कवित्त छप्पै

बैठि तखत अरसिंघ, सिंघ बिध मौसर खंचीय ।
परीय सत्रु धर भंग, डरीयह हरीय मन संचीय ॥
छुट्टि हरख्ख मन मिछ, धरक संचरीग धर धर ।
मन हूं सिंघ वघवाह, हौत सारंग घर घर ॥
ओझकत तकत झुझकत चकत, सुक्कत खल अहनिसं सबल ।
ऊदयापुर थाहर तपत इम, अरसी नाहर अप्प बल ॥४७॥

महारांना भीम को जनम

दवावैत

दिवांन अरसींघ तप ताले का जोर सैं चित्रकोट का तखत मेदपाट का राज पाया। जिसके हिम्मत मर्दानगी का औसाफ सुनि के दिल्ली के वादसाह दहसत खाया। आफताफ का सा तेज देख दावागर अुलुक कुमुद त्रासे। चक्रवाक सज्जन कोकनद विकासे। जिस अरसिंघ कै वड़ा रायजादा हमीर। हाथ का उदार मुकालवु' का सा धीर। जिस हमीर कै दो बहन झाली के चंद्रकंवर चावड़ी कै अंनोप कंवर। सील सुलछन की समुद्र गंगा के उनहार। दिवांन अरसिंघ के पटरांनी झाली सिरदारकंवर नांम। पतिव्रत की निधांन पाल आलंम तमांम। जिस महारांनी झाली के कूंख तीसरा आधांन नींमा। अरसिंह पटेत का वीरज एकादसमा रुद्र का अंस खित्रवाट की सींमा। अष्टादस संमत चोईसा वरस। चेत मास साते तिथ गुरवार सरस। वधाई दिवांन सैं मालूंम भई जिसी बख्त सैंलखूं का ताला[1] खुल्ले। लखु' गज सांसनू की मौज षटव्रंन का अघ पल्ले। जाचगूं के लीयें छत्तीस कारखांनू का कपाट खुल्ला। साज वाजू सैं झलूस होय खंभूं तैं गजराज पायग तैं वाजराज छुट्टा। जोइ आया जिसी नैं अपनैं ताले मुजव दांन पाया। पैं राज सैं उत्तर पाय अपनै घर कूं कोई ठालै हाथ न आया ॥ ४८ ॥

दुहा

अैसे मंगल समय मैं, आय गनिक दुजराज ।
जनंमपत्रि महारांन तैं, मालंम करत सकाज ॥ ४९ ॥

पद्धरी

दुजराज आय न्रपराज जत्र। वांनी उदार पढ़ि जनंम पत्र ॥
स्वस्त श्री संवत कहि अठार। सुभ चौवीसा कहि गनि वर्ष सार ॥
सोरसैं नवासी वर्न साक। निज सूर ऊतर गत पंथ नाक ॥
महारतु वसंत कहि चैत्र मास। पख कृष्ण सप्तमी तिथि प्रकास ॥

---

1 नसीब

गुरुवार घटी तव साठ गांन । अनुराध नछित्र घटि वीस आंन ॥
पल पंच परं जेष्टा नछित्र । ता मध्य जन्म बालक विचित्र ॥
वरी यांन जोग घटि तीस च्यार । पल दस परंत्त परिघा[1] ऊचार ॥
ववनां कर्ण सक्रांति मींन । घट्टि यक पचास पुन ग्यार कीन ॥
पुरन गतांस पर मकर लग्न । दस घटीय जांन आनंद मग्न ॥
नव घटीय सेष रहि रात्रि सींम । तिहिं समय जन्म महारांन भींम ॥

जन्म लग्न ९/०/१०/४

जेष्टा नछित्र तिंहि चतुर पाय । अछ्छिरज कारउ स्वर वताय ॥
निज जुगल सिंघधरि जन्म नांम । उलाप मात पित भीम तांम ॥
कहि पंच अंग सुध जन्म अेह । अवतार भींम जगपत अछेह ॥
अब सुनहु बत्त अखखत कवेस । कुंडलीय जंन्म ग्रह फलादेस ॥
निसि जन्म उग्र तप लग्न मक्र । तन भवन मध्य बलवांन सुक्र ॥
वलवांन सुक्र तिहि राज जोग । तन कांम ब्रद्धि वहु नारि भोग ॥
आजांनबाहु वहु वीर्य वांन । अेक सौ अष्ट त्रीय विलसि जांन ॥
संतांन ब्रद्धि तनया कुमार । नवि भूंम लैंहि सिर छत्र धार ॥
वुध रूपवांन अत दिघ्घ आव । सामंत जोर गज अडिग पाव ॥

१ परिघ नांम जोग में जन्म

प्राकर्म वंधु कहि त्रतिय ग्रेह। रवि बुध वेठि तिहि फल ग्रछेह ॥
फल सूर अेह वड भ्रात हांन। मन कांम सिधि तन तेजवांन ॥
छत्तीस सस्त्र विद्या प्रवींन। ग्ररु राज जोग बुध उदध मींन ॥
बुध्र मींन नीच कृत काज भंग। दातार सूर जितवांन जंग ॥
कहि छट्ठो भवन ग्ररि रोग नांम। सनि केत बैठि तिहिं ग्रचल ठांम ॥
कृत रोग सत्रु खय मंद केत। ग्रारोग्य ग्रभय सुख तनहि देत ॥
कहि भाग्य भवन यह दसम ताहि। सुर गुरु ग्रांनि तिहि वैठि ठाह ॥
कृत राज जोग सुख देत राज। नाना विधांन सुभ करत काज ॥
ग्यारहो भौंन तिहिं लाभ नांम। तिहि बेठि चंद्र कृत[1] लाभ तांम ॥
द्वै लाख देत लख लाभ लैंहि। ईक कौट लाभ छै[2] कोट देहि ॥
हय हथ्थि भूम नग दैंहि दांन। तिहिं दिन हुलास मन ग्रधिक मांन ॥
दत देत नांहि तव चित उदास। यह चंद्र रूद्र ग्रह फल प्रकास ॥
वहु करहि अंस ग्रहनिस हगांम। कर सहंस ईस तिहिं दैंहि दांम ॥
ससि नीच तास यह फल जताय। नर नीच ऊंच तैं ग्रधिक पाय ॥
व्यय भवन नांम द्वादस कहंत। तिहिं भोम राहु सांमिल रहत ॥
फल तास पुत्र वहु नारि हौय। त्रिय रस ग्रधप्प नर रहत सौय ॥
जोतषीय वचि ग्रह फलु कुमार। सिर नंमि ग्ररसि दत दीय ग्रपार ॥
दधि दूव वंदि सिर तिलक कीन। पितु भीमसिंघ यह नांम दीन ॥
कीय जात कर्म प्रोहित ऊदार। दिन ऊछह गह महराज द्वार ॥५०॥

कवित्त छप्पै

भीम जनम हुव जदिन, तदिन पतसाह घर घर।
भीम जनम हुव जदिन, तदिन गढ दुसह खरख्खर ॥
भीम जनम हुव जदिन, तदिन रघुवंस गरव्वीय।
भीम जनम हुव जदिन, तदिन सीमारह दव्वीय ॥
जनमंत भीम रजवट जनंम, ऊदयापुर उछह सरव।
दालद्र ऊव्वर फट्टीत तदिन, जनम भीम महारांन जव ॥५१॥

---

१ वहू
२ हुँ

प्रथुल भाल रवि तप रसाल, घुघरा रचि हर सिर ।
वंक भ्रूह चख क्रमंल, भुजा आजांन सिंघ वर ।।
उर बिसाल मनु सिल कपाट, गढ भंज रखिख गढ़ ।
उर समुद्र गंभीर नाभि, कटि सिंघ चित्त द्रढ़ ।।
करतल सुमुख पयतल कमल, सद्‌मेघ मृगराज गन ।
स्वाभाव दसन ऊज्जल करज, भीम अेह लच्छिछन सुतन ।।५२।।

यह लच्छिछन रवि भयो, ग्रेह कसिप अवतारीय ।
यह लच्छिछन दिल्लीप ग्रेह, रघुराज उचारीय ।।
यह लच्छिछन सतव्रत ग्रेह, हरिचंद्र जनंम्मीय ।
दसरथ्थ ग्रह यह लच्छिछन, भये रघुनाथ अनंम्मीय ।।
यह लच्छिछन कृष्ण वसुदेव ग्रह. अजन पंड इह लच्छिछ कह ।
अरसींघ ग्रेह अवतार लीय, भींमसिंघ लच्छिछन सु यह ।।५३।।

यह लच्छिछन कहि करंन. सिवर लच्छिछन यह जांनीय ।
यह लच्छिछन दधीच, लच्छिछ वल अेह प्रमांनीय ।।
यह लच्छिछन विक्रम रू भौज, जगदेव अगंज्जीय ।
यह लच्छिछन जगपत हमीर, दाता जस रंज्जीय ।।
जेहो सुमांन सत्र सल गजन, रायसींघ पीथल सुकहि ।
अरसिंघ ग्रेह अवतार लीय, भीमसींघ लच्छिछन सु यह ।।५४।।

उद्धौर

न्रप ग्रेह जन्म कुमार । आनंद राजदवार ।।
वहु दीह दुंदभि वज्जि । आषाढ मनु घन गज्जि ।।
सहनाय सुरन उचार । वधाय गावत अपार ।।
कठ चर्म तंत्रीय घात । अनमय सु पंचि सुहात ।।
तंबूर वीन सतार । सारंगि जंत्र सुचार ।।
रुचि करत गंद्रफ राग । लय रिज्जि नारद लाग ।।
अनगनित द्रव्य असेस । निज रीझ देत नरेस ।।५५।।

दुहा

सज्जि चातुर पातुर तहां, नच्चि दिखावत भाव ।
गवत्त वजत्त सुर ताल संम, रीझि सुनत अपराव ।।५६।।

छंद अर्द्धनराज

करंत अत्त पातुरं । दिखाय पाव[1] चातुरं ॥
धरंत पाय भूपरं । धमंक झंक नूपरं ॥
कटाछ नेन वंकनं । खनंक हथ्थ कंकनं ॥
जुरंत हथ्थ भावही । वचन्न प्रेम चावही ॥
निहारि वांम दच्छिनं । चलंत वांन यिच्छनं ॥
सुगत्त लेत सुच्छरी । निहारि लज्जि अच्छिरी ॥
नमाव भ्रूंह वांमकी । मनौं कमांन कांम की ॥
भ्रमंत ग्रीव कंचनी । सुछेल चित खंचनी ॥
लचाय लंक सिंघसी । मनौं तुजी अनंग सी ॥
न्रतत्त तत्त थेय कैं । सुतांन ताल लेय कैं ॥
अलाप राग संमिलं । मनौं कुहूक कौकिलं ॥
खचाय अग्र घूंघटं । कि अस्व काय जंथटं ॥
चलैं चखं अपंगयं । दुसार अंग अंगयं ॥
ऊठाव सीग्र पावकं । मनौं कुरंग सावकं ॥
त्रिगांम सुद्ध ऊचरं । सपत साजते सुरं ॥
अनूप ताल अट्ठयं । लसंत सोभितं लयं ॥
उमंग ते अलापयं । कि कोकिला कलापयं ॥
उरध्धते उरप्पयं । तिरीछनं तिरप्पयं ॥
चलाय भ्रौंह त्रेवटं । अडाल थंभयं रटं ॥
लगाव दाव तांनयं । सुलाग दाट जांनयं ॥
पलटि तेऊ लथ्थयं । उठाव ठेक कथ्थयं ॥
हुरम जासु उच्चरं । करीत हुंग हुव्वरं ॥
ऊचार राग सोहनं । मुनेस चित्त मोहनं ॥
अनेक हाव भावयं । सुन्रत्य तांन गावयं ॥
झमंक होत झंजरं । सुनंत कांम मंझरं ॥
कटाच्छ सीग्र अच्छकी । मनो सनीर मच्छकी ॥

---

१ भाव

असीन धार ऊपरं। सुनृत्य वज्जि नूपुरं ॥
वजैं म्रदंग रंग कै। कि दुंदुभी अनंग कै ॥
अनेक भंत पातुरं। दिखाय नृत्य चातुरं ॥
दिवांन रीझ चौजयं। खुलख्ख द्रव्य मोजयं ॥५७॥

दुहा

कीनिय जस अहनिस श्रवन, दीनिय लख दन दीह।
यौं कड्ढीय दिन अनंदमय, महारांन अरसीह ॥५८॥

महारांना भीम की वाल लीला

छंद पद्धरी

अन पल वधय दिन वधय अैह। अनमास वधय पख्खवधि अछैह ॥
सीसोद वंस दिनकर सधीर। हुव जनम भीम निश्चय हमीर ॥
धरि धरक हृदय अरि छत्र धार। दिन दस वधत अरसींघ द्वार ॥
कुच पान करत मुख कमल जांम। मन हरखि जननि मुख चूमि तांम ॥
तन पुष्ट मास षट तेजवंत। कटि उतरि तांम घुटरन चलंत ॥
पय चलीय वांनि तुतलीय धार। मुख सप्ट प्रथ्थ दै दै उचार ॥
सिसु साथ करय जव वालकेल। गज अस्व करभ दत देत हेल ॥
अरसींघ ग्रेह रमि भीम अेम। दसरथ सदन रघुनाथ जेम ॥
के पंड ग्रेह अरजुन सधीर। न्रप सोम ग्रेह के पिथ्थ वीर ॥
विक्रम नरिंद ग्रह भोज जांन। सतव्रत्त ग्रेह हरिचंद मांन ॥
वसुदेव सदन गिरधरन रूप। घर उदयसिघ परताप भूप ॥
कर वाल केल हय चढन रंग। धनु वांन धरत आजांनु अंग ॥
समसेर वंध कर तुपक धार। वाराह सिंघ खेलत सिकार ॥
रचि तखत वेठि वनि भूप आप। उमराव रचत वालक अमाप ॥
कवि करत वाल इक पढत छंद। करि मोज ताहि वगसत गयंद ॥
द्वै वाल लरत निज पगनि आय। कर वीच ताहि पूछत नियाय ॥
गढ रचत कवहु धरि वीच वाल। करि सेन ताहि तोरत मुढाल ॥
रचि सैन कवहु तन सिलह संजि। चढि अस्व तेग गहि देत भंजि ॥
नित करत गोठ सिसु भ्रात संग। पौपंत सवन रुचि रुचि सुढंग ॥

न्रप लच्छि बाललीला करंत। नहि देन सद्द चित्त नहि धरंत।।
पित मात दरस कृत मोद पाय। यह चहन भीम सिसुता बताय।।
निज भ्रात नांम अग्रज हमीर। तिनि पाय नंमि संग रमत वीर।।
मन मोद करत मिल उभय भ्रात। आनंद निरखि पित मात गात।।५९।।

कवित छप्पै

कहुं जुध करि गज भंज, कबहु गज मोज समप्पत।
किनहु डंड लख लेत, किनहु लखन दत अप्पत।।
इक सिसु पिट्टत खूंनि, अेक सिसु सरन उबारत।
दे दे दे मुख कहत, अेक मुख नान उचारत।।
कहुं सिंघ सूर आखेट कृत, धरत तुपक खग चाप सर।
इहि भांत बाललीला करत, भींमसींघ अरसिंघ घर।।६०।।

दुहा

तखत उदयपुर जगत सिर, राजत अरसी रांन।
समर मेट अरि हर तिमिर, जेठ भांन उनमांन।।६१।।

छंद विराज

अरीसिंघ रांनं। मनौ जेठ भांनं।।
उदैनैर रज्जं। जस सिंधु पज्जं।।
कलावांन भूपं। मनौ रूद्र रूपं।।
अरीसेन गाहं। सु आजांन बाहं।।
प्रजा पालवांनं। कुलं ध्रंम जांनं।।
सुलतांन सालं। दलं हिंदु ढालं।।
मुखं वीर तेजं। खलं मथ्थि नेजं।।
करं वीक भौजं। कृतं लख्ख मौजं।।
गुनं जांन वांनं। किवं रख्खि मांनं।।
चितं सुध्र वीरं। मनौ गंग नीरं।।
पयं जुध्र दढ्ढं। मनौ मेर दढ्ढ[1]।।
अनां मंत्त कंध्रं। खित्री नेत बंध्रं।।
जसं सिंधु पाजं। भुजं हिंदु लाजं।।६२।।

---

१. गढ्ढं

छंद पद्धरी

ऋत मेदपाट अरसिंघ राज । दल देस कौस वल बुध्धि साज ।।
रघु रांम जेम धरि आत पत्र । समसेर झेर किय जेर सत्र ।।
लखि दुसह अलुक थहरत करेज । मनु जेठ भांन मध्यांन तेज ।।
इक जरत लोह इक तेग खंड । इक करत सेव इक भरत डंड ।।
इक धरत पेस थहरत समथ्थ । नमि पाय मथ्थ इक जुरत हथ्थ ।।
घर घर उछाय प्रज वर्न च्यार । लख कोटिधज व्यापार कार ।।
छहरत्त मत्त घूमत्त गयंद । मनु विंध नंद अय राय इंद ।।
सभ निगड जंत्र चरि लौह पाय । तल डांन झरत मदगंध ताय ।।
रंजित्त कपोल मधुकरन छत्र । गन राज रार मनु आतपत्त ।।
सिंदुर जंगाल सिर रेख थाप । आषाढ मनहुं सुरराज चाप ।।
गडा धनासि जंगल अनूप । चव जात भात गिर असित रूप ।।
सिकलात झूल जरदोज कांम । निस अंध मनहुं तारक सु भांम ।।
तन स्यांम दंत सित वर्न लोभ । धन अग्र मनहुं बुगपंत सोभ ।।
रद जरिय पीत वंगरीय हेम । मनु चमकि वीज बुगपंत तेम ।।
गिर गात वेग पायन समीर । मद झरि कपोल मनु अद्रि नीर ।।
प्रति थांन थांन घूमत मयंद । अय राम वंस मनु द्वार इंद ।।६३।।

अथ हय वर्णन

छंद पद्धरी

वहु वाज साल बंधि वाजराज । सुभ पेत पेत संभव समाज ।।
पहु घाट कच्छ संभव पंचाल । हालार राड ध्रह छल अपाल ।।
नदि पार भीव रा वाज जात । तिहि खेत भीव रा थल कहात ।।
तन गौल जंत्र सम सुघटि साज । सतकोस धाव नहि थकत वाज ।।
तुर राज कितक द्रावरि तिलंग । पाहर खेत दिढ वज्र अंग ।।
हय सूरसेंन सिंधव अपार । कावुल चिनाह आरव तुखार ।।
खुरसांन वुलख कावुल [1] खंधार । अस चींन रौम जल पंथ्थ चार ।।
चंचल सतेज तुरक्की [2] चिनाह । अयराक स्यांम देसी अथाह ।।

---

१. तुरकी
२. हवसो

सिख-दीप श्रोन मुख दोज चंद । रजि प्रथुल भाल चख गिलक नंद ॥
सुभ ग्रीव श्रोप श्राकृत सिहुंड । लंकी धनंष मनु ताम्रतुंड[1] ॥
श्रति सरल म्रदुल लंवित श्रयाल । मखतूल स्यांम मनु छोंन व्याल ॥
खरगोस मध्य उर सफर उप । सुभ वाजु नली कढि जंत्र नूप[2] ॥
मुट्ठी पहूंच श्रति नख कठोर । मनु कीन उलट श्रय के कटोर ॥
रजि चमर पुंछ डंडीस छोट । दरसंत पुठ्ठ मनु चाक जोट ॥
विनु सुंड दुतीय गजराज देह । ढाहत सफील उर फेट जेह ॥
तन पसम मृदु तल मुखमल सरीस । झलकंत श्राव मांनहु श्ररीस ॥
दुरकेव ऊच्च तन रंग रंग । नीले कुमैत श्रवलख सुरंग ॥
लखी कनूह कुलहे ललित । सुरखे समंद नृप हरत चित ॥
जंगम सुहंस कहि स्याह जांन । गुलदार हंस फुलवार मांन ॥
नुकरे संजाव किस मिस गिनाय । सुभ चक्रवाक महुवे सुभाय ॥
हारीत केय चव धरहु वास । कहि स्यांम कर्न जरदे श्रकास ॥
पचमंगल मंगल—श्रष्ट पेखिं । सिंदली गरूर सोभित विसेखि ॥
पटसूत केहरीय पवन पाय । वहु रंग वाज को कहि वताय ॥
जिन व्रहम छत्रि कहि उंच्च जात । विन सुंड देह गजराज भात ॥
मुखमल वनात साखत झलूस । गजगाह लूंव रजि नेक रूस ॥
सोभत सुढार हिम तार साज । नग जटित नेक भूषन विराज ॥
धारक चढंत तिन पिठ्ठ श्रांन । वावन सरूप धर मप्पवांन ॥
हकंत धाय पय वल श्रछेह । श्रग कंठ चाप डारंत तेह ॥
मुखलीन खंचि कायज सभंत । सुकुलीन मनहुं घुंघट रजंत ॥
गहि वाग राग चंपत सवार । कपि झंप मनहुं द्रुम टुट्टि डार ॥
संकटीय वग्ग करी श्राव जाव । कुलटा कटाच्छि मनु वीज भाव ॥
कहुं लग्गि राग धारक श्रचांन । लगि सौर गंज[3] पावक उडांन ॥
कपि पंख अंख पावक समीर । जल मच्छ वीज श्रग तें श्रधीर ॥
वरने सु वाज श्ररसी वनाय । मति इति कौन कविराज पाय ॥

---

१. कुरकुट्ट नांम
२. वाजु सुघट्टि नलि जंत्र नूप
३. मनहु

न्रप महल कहत कविराज लोभ । मनु रजत अद्रि कयलास सोभ ॥
परिषद जु रांन इत मांम होत । सुभ तखत रांन ग्रह राज जोत ॥
सोरह बत्तीस भट नंम्मि सीस । करि जथाजोग्य आदर महीस ॥
प्रोहित प्रधांन कवि पासवांन । धावर सुभंत सुभ थांन थांन ॥
सिर छत्र ढुरत चांमर उदार । हरद्वार मनहुं सित गंगधार ॥
महारांन मांन करि देत पांन । बहुरंत सुभट भट देव जांन ॥
सुभ सुख सुथांन बसि उदयनेर । सव विलसि लछि मांनहु कुमेर ॥
सुभ वर्न च्यार षट तीस वंस । सेवहि सुपाय करि करि प्रसंस ॥
उदघटत हाट पट्टन बजार । खुटे किम नहु धन राजद्वार ॥
रजि हट्ट हट्ट हिम हीर ढेर । लुट्टिय कि लंक हिमगिर कुमेर ॥
बहु वसन गंज हट्टन बजाज । जर बपत [1] सूत्र सन पाट साज ॥
बहु मूल रंग रंगह विभात । फुल्लिय कि संझ मनु साय प्रात ॥
मग वहत चतुर दिस भय विहीन । व्यापार वनिक लख कोट कीन ॥
आवाद भूमि न्रप धर्म नीत । दल प्रवल संजि जग प्रगट कीत ॥
घर घर अनंद सुख वसहि देस । मिटि चोर चाट आतप [2] नरेस ॥
भोगवत पटा भट लख्ख लख्ख । पद वंद सेव करि सख्ख सख्ख ॥
चित हर्न लोभ कर जतीय दंड । अनमिलत चित्र नव भूमि खंड ॥
आतंक अकृत विद्या विवाद । त्रिय रतन कार गज मत्त आद ॥
पीपाय ताहि पापी सुनांम । उच्छिष्ट झूठ पाखंड ग्रांम ॥
भय सर्ब अगन नहि दांन दुख । मारत सु पवंन पाहन सरुख ॥
बंधन सकूप वापी तड़ाग । बालकन त्रास गुर पठन लाग ॥
विपरीत अंक मुद्रा गिनाय । अरू मांन भंग वनिता मनाय ॥
अरसिंघ रांन इम करत राज । दरसंत जाहिं भुजहिंद लाज ॥
जल समिल पीत बकरीय सीह । लोपत न सवल कोउ नवल लीह ॥६४॥

फतूर रतनसिंघ को विवाद

दवावैत

महारांना अरसीह । नो हथ्था सीह । मजेज का दुरजोध तेज का दिनकर । खुरसांन कूं तेग हिंदुस्थांन कूं सफर । जिसका राज तेज जिहांन

---

१. रोम
२. रवि तप

में जाहर। जोर छांड पटेत बकरी नीर अंचै अेक ठाहर। जिस वख्त में परवरदिगार की मुरजी अैसी भई। कितनेक नोकरूं की हरांमीं पर निगह गई। आपस में गलवा ऊठाय फतूर खड़ा [1] कीया। कुंभमेर में दाखिल कर मिथ्या वासदेव जैसे रतनसिंघ नांम दीया। उस वख्त में पटेल माधोराव सैंधीया दच्छिन का सूबेदार। जिससैं जाय मिले फतूर की हमराह के सिरदार ॥६५॥

दुहा

निंदा स्वांम न संभरै, अैसे जे असलीक।
ते भट लेख दईव तें, ठई वात वेठीक ॥६६॥

समहर जग्गी आग सम, जे नग्गी समसेर।
जिन धर रख्खी जुद्ध कर, अकबर औरंग बेर ॥६७॥

दिन पलटै पलटै दुनी, पलटै सुत परवार।
जे न पलट्टै स्वांम तें, जो पलटै करतार ॥६८॥

अे लच्छिन खित्रवाट के, होत सु छत्रिन पास।
सिर पर रख्खै स्वांम कौं, जौं लौं पिंजर सांस ॥६९॥

म्रतक स्वांम काजें सती, तन हौमत मजवूत।
जीवत छंडै स्वांम कौ, जे न असल रजपूत ॥७०॥

होतब होय सु नां मिटै, कहि स्त्रुति स्म्रित रिखेस।
लौभ पगे म्रग कनक सथ, लगे सु राम नरेस ॥७१॥

दवावैत

अगली कहावत अेसी। दईव की रचना ब्रंम्हां न जांनै तो नरदेह केसी। होतव कूं जोतव न पूगै। जैसा वीज वाहै तैसा व्रच्छ ऊगै। फतूर की हमराह के सिरदारूं ने माधोराव कूं खंचा। दीवांन सें हलकारूं नै मालूम कीया अकवार संचा। अेसी वात सुन दीवांन अरसीह नें उजैन कुं लहसकर विदा कीया। माधोराव सें जंग करने कूं उमरावु के तांई पांन दीया। सो

---

१. पैदा

सिरदार कौन कौन। वनहेरे का स्वांम राजसिंघ नरेस। नरिंदूं का रूप अरिंदूं का वेस। घांणोरे का खवांईद वीरमदेव कमंध। स्वांमध्रम का अग्रकारी अवंधु का बंध। वीक्रम पंवार का वंसी सुभकरण राव। मन का मजवूत रन का वनराव। सलुंबर रावत पहाड़सींघ पीठ का अफेर। रावत मांनसींघ लालसींघौत नंगी समसेर। राजा उमेदसींघ भारतसींघौत साहिपुरे का भूप। पाव का अडोल वनराव का रूप। जुमामरद प्रथीसींघौत झाला जालम। जिसका सांमध्रंम मसहूर जिहांन में मालंम। वंभोरे का रावत चूंडा कलांन।[1] मेहता अगर स्वांमध्रंम का निसांन। राघोराम पायगा त्रै हजार सवार। पांच हजार पीयाद जंग के हुंसिय्यार। दो हजार सवार सैं दोला मिय्यां अेक। प्वोरस का पूरा उरस की तेक। दीवांन अरस्यंघ कुं वचन दीया। जिस पर माधोराव सैं छांड आया। उजैन कुं फोज विदा भई जिस बखत दोनूं वहादरूं नैं वीरा उठाया। ओर भीं उमराव विदा भये। कूंच दर कूंच उजिण कूं गये। पाहड़ उमेद जालंम अगर सलाह कर ऊकीलों के साथ पटेल के तांई अेसा जाव दीया। सूवेदार मेदपाट की तरफ किस वास्तैं कूंच कीया। रजवाड़ के वदस्तूर मेदपाट की नालवंधी हमसैं लीजियै। जिस पीछै दिली दच्छिन अथवा और देसूं की तरफ कूंच कीजियै। ओर जौ कुछ दिल में दूसरा मुदा हौय सौ फरमाइये। सुन वेवारा सनमुख हौय तव किस वात सैं छिपाइये।[2] तव माधोराव अेसा ज्वाव दीया कितनेक मेवार के उमराव ओर हमनैं रतनसींघ कूं रांना करा। जिसका नांम तूमनै फतूर धरा। इस वात का मायना कहौ। झूठ कुं छंडौ ओर सांच का रस्ता गहौ। तब च्यार ही सरदारूं ने फेर जाव दीया। सच्ची वात का निरधार कीया।

महारांना जगतसिंघ कै दौय फरजिंद। वड़ा प्रतापसिंघ छोटा अरसीह नंद। जगतसिंघ पीछे प्रतापसिंघ तखत पाये। प्रतापसिंघ के पीछै राजसिंघ गादी पर आये। रांमचंद्र की गादी का अे दस्तूर छोटी अवस्था होय तो भी पाटवी छत्र धरै। वड़ी अवस्था के काके वावे भाई भतीज होय सो नोकरी करै। राजसिंघ छोटी अवस्था तो भी राजतिलक दीया। अरसींह जगतसिंघ का फरजंद। राजसिंघ के काका दिनूं में बुजरूक तो भी सच्चे दिल सैं नौकरी का इरादा किया। कोई दिन पिछै दईजोग तैं राजसिंघ नैं अ्रत पाया।

१. कलांणसींघ चूंडा
२. दुराईये

जिसके दोय राजलोक एक राठोर दूसरी भाली जिस दोनूं के अगाडी सैं भी संतांन नहीं और जिस वख्त में मेवाड़ के सिरदार भाई बेटा मुसदीयुं नै गरब का निरधार करवाया। कहा राजसींघ की राजलोकुं कै गरब हौय तो नोकरूं के तांई सच कहलावै। सो लरकी [1] हौय तौ ब्याह देवैं और लरका [2] होय तो राज पावैं। तब श्री बाईराज राजसींघ की मां सब भाई बेटुं के जनांने राजसींघ की राजलोकुं और धाय बडारनूं नै सरदारू से अैसी कही। दईव कै करना था सौ हुवा राजसींघ की दोनूं रांनी कै गरब का लेस नहीं। तब सब सरदार मुसाहबुं नै जगतसींघ का फरजंद अरसींघ के तांई राज दीया। तखत पैं बैठाय राजतिलक किया। सोलै बत्तीसूं मुसाहबूं नै निजर नोछावर करी। छत्र चंमर धार हिंद की लाज भुजदंडुं पैं धरी। अरसींघ तख्त पैं बैठ किसी का बुरा कीया नही। लखुं का पटा और अपनी अपनी मुरजाद जैसे की तैसी रही। फिर कितैक सिरदारूं नै जबरदस्त ठाकर कुं देख चित-ग्रत थरहरी। मिथ्या वासुदेव जैसें कमसल फतूर पैदा कीया और हरांम-जिदी आदरी जिस बात सें आप दच्छिन का सूबेदार। सच और झूठ का कीजीयै निरधार। झूठ फतूर जिसका पला न गहीये। सचा रांना अरसींघ जिसकी तरफ पर कायम रहीये। इस बात कुं चित में न धरो तौ हमारे तांई मार कर कुंच करो। माधोराव ने फेर कहया सच्चा रांना अरसींघ इस बात में कुछ फरक नहीं पैं अेक वख्त मैं उदेपुर कूं देखूंगा सही। तब च्यांरू सरदारूं ने कहाया आप चितोर कुं कुंच करेहींगै। हम पांच रजपूत आडे फिरैंहींगे। अब किसका ज्वाब साल कूंच करीयै बेग। सफरा की तट फजर के दरमीयांन चलैगी तेग ॥७२॥

कवित्त छप्पै

सुनिय वत्त माधव अभंग, रिस अंग प्रगट्टिय।
दिख जिग फुट्टिय दाह, नेत घुट्टिय मनु जट्टिय॥
तत्त तेल जल बुंद, परिय झल्ल अभ विलग्गिय।
सुक कठ्ठ त्रन विपन, मनहुं दावानल लग्गिय॥
रिनधीर सुभट हमगीर रहि, वीर वीर चख अंकुरिय।
वस क्रोध रात कढ्ढिय सुनिठ्ठ, प्रात हौत हय पख्खरिय॥७३॥

---

१. कन्या
२. कुंवार

उज्जैन को जुद्ध

वारता

रावत पाहरसींघ राजा उमेद राज जालम मांन रावत राजा रायस्यंघ राठोड़ वीरमदेव राव सुभकरण कलांनसींघ मेहता अगर। अपने डेरू में पंच रजपूतू कूं कहता हैं सलाहकर। उजैन छेत्र सफरा तट धार तीरथ स्वांम कांम सहता हैं। अेसा अवसांन परव कोई पुंन्यवांन खित्री लहता हैं। इस जगु जो कांम आवै। सो सुरमंडल भेद वैकुंठ पावै। नंगी समसेर सचे दिल सैं हरीफु के सनमुख देवैं पग। जिसकुं होये सौ सौ अस्वमेध जिग। जिस बात सैं अरसींघ के निमख पर सच्चे दिल सैं मरना। नर-नार छोड़ि सुरनार सैं व्यांह करना। कोई दई के लेख सैं जंग कर उबरेगा। जिसके सर जगत स्वांम ध्रंम का किताव धरेगा। सिरदारों सनांन दांन कर ईष्ट का ध्यांन धरियै। तुरंगु के पख्खर अपने सिलह वगतर तयार करियै। मालकुं का हुकंम मांन सिरदारू नै जुध का उछव कीया। नगारची नै रिनजीत पर डंका दीया। दुतरफा सिंधु अेराक पांनु लग्गे। सूर धीरू के देह में ठांम ठांम बीर जग्गे ।।७४।।

दुहा

वीस सहंस दल रांन कै, त्रय लख[1] माधव सैंन।
महा कठिन छत्रीय धरम, विमुख पाय नहीं दैंन ।।७५।।

गज्जि गौम नभ नदतै, बंब वज्जि अकरार।
सिलह सिलह तन संचरिय, हय हय हय उच्चार ।।७६।।

छंद त्रौटक

वजि बंब दहुं दल दुब्भरयं। सजि सार दुहुं दल[2] सुब्भरयं ।।
भट साजत अंग वगत्तरयं। मनु गौरख के उर कंथरयं ।।

---

१. अगनित

२. महावल

कसि आयुध अंगन जंग कजै । जमदूत किधौं रजपूत सजै ॥
मुख वीरन लालिय यौं विथुरै । मनु फाटिक[1] जावक रंग भरै ॥
मुख मुछ्छ उठि मिलि भौहनयं । ससि दोज ग्रसौ मनु सौभनयं ॥
भट दीठ सुरंगीय कौप जगे । सुमनौं सत्तपत्र मजीठ रंगे ॥
त्रिय पुंड विभूत लिलाट जगं । मनु त्रै दुतिया सिस संग उगं ॥
उध रोम भये तन फुल्लि भरं । दिन पूंनम ज्यौं चढि नीर सरं ॥
सफरा जल मंजिय अंग सुछं । सु मनौंहर द्वार जुगिंद कछं ॥
गिलका सुत वंधीय कंधरयं[2] । सुधरे तुरछी सिर मंजरयं ॥
सिर पत्र विचं त्रय गीत रजे । जल गंग सुचंड तमंग छजे ॥
भट आयुध बंध सनंध थयं । मनु भारथ कारन पारथयं ॥
रजि पख्खर घुघ्घर वज्जि तुरं । मनु इंद्र छिदी गिर लग्गि परं ॥
अग एक मलंग चपेट नयं । गजराज गिरै उर फेट नयं ॥
फवि कंध छटा अहि जीपन की । कन वत्तीय वत्तीय दीपन की ॥
खचि अंग दुतंग मलंग भरैं । द्रुम अेंन मनो द्रुम पैं विचरैं ॥
चढि सैंन दुहुं हय जुध कजं । गजराज गजैं सिर उड्डि धजं ॥
रज उठ्ठीय पाय तुरंगन की । कर मुद्दीय भांन निहंगन की ॥
दुव सेन भयंकर नद्द वजं । सु मनौं व्रज बौरन मेघ गजं ॥
रज वीच चमंकत सेल फलं । मनु भद्द घटा निकसी चपलं ॥
दुव फोज दिठाल भये सुभटं । खुल नेज मजेज अभंग घटं ॥
दग तोपन धूंम निहंग छयो । सु मनौं कलपंत अकाल भयो ॥
दल दोय मिले उठ वागतुरं । सु मनौं जुध जुट्टिट सुरं असुरं ॥
लगि सेल उरं फुटि पिट्ठ रजं । दुलही मनु वारीय हथ्थ छजं ॥
यक घाय खगं दुव टूक हुवं । सु मनौं घर-वंधव वंट दुवं ॥
सिर खग लगी जुग भागथयं । मनु कासिय सुर करवत्तयं ॥
उडि खग्गन सीस कमंधन चै । मनु भग्गल नठ्ठ समठ्ठ रचै ॥
गजरौह गिरैं लगि सेल हीयैं । सु गिर्‌यौ नट मांनहु वंस लीयैं ॥
वजि सौक सरं भट जंदन पैं । मनु भौंर परैं अरविन्दन पैं ॥
सिर घाव गदान फटै गय कै । मनु वज्र परैं सिर पव्वय कै ॥

---

१. स्फाटिक
२. कंठरयं

उडि छिछ रक्‍त सुभंत तनं । मनु जावक छुट्टिट फुहार रनं ।।
गलवथ्थ भये जमदाढ जरैं । मनु द्वै मिल मित्र सनेह करैं ।।
गज सुंड भसुंड विखंड खगं । रत्त छिछ मनो गिर लग्गि अगं ।।
खग वीरमदेव कमंध लही । मनु कोपि गदा कर भींम गही ।।
रिन खंड विहंड किये दुसहं । मनु जुथ्थ गयंद मयंद दहं ।।
गहि तेग सुभं क्रन राव भुजं । मनु भारथ पथ्थ समथ्थ छजं ।।
हय हथ्थिय पयाद सिरं विहरं । मनु वज्र विभेदिय श्रंग गिरं ।।
रिन कथ्थ अकथ्थ पंवार कियं । विनु अत्त रिमं सुरलोक दियं ।।
तरवार तुटी चव मथ्थ खलं । रवि हथ्थ सराहि नभं अचलं ।।
रिन रावत पाहर तेग गही । मनु भारथ पारथ क्रंन सही ।।
अरि भीर निवारिय खाग जटं । खग खंड विहंड कीयो सुघटं ।।
वयकुंठ गयौ जग जाहरयं । अजवाल सलुम्बर ठाहरयं ।।
भुज दंडन तेग उमेद लयं । मनु वद्दर विज्ज सलाव दयं ।।
इक घायन सीस उडै तन तैं । मनु तुंबर तुट्टिट तरंवन तैं ।।
वजि ताल खगं गज वौहन की । उडि छिच्छि जित्त तित्त लोहन की ।।
दल खग्ग निवारत वार दुभं । सुत भारथ पारथ रूप सुभं ।।
थट कट्टिट सुघट्ट कुघट्ट थय । लट चट्ट अगुट्ट त्रिजट्ट लयं ।।
सुविरोल उमेद फवज्ज हरं । दनु देव मनो दधि मथ्थ फिरं ।।
कट्टि हथ्थ वग्गतर सुध्ध रिनं । मुख पंचस कंचुकि नाग मनं ।।
फटि घाव भटं तन चै रुधिरं । मनु माधव फूलि पलास तरं ।।
तरवारन नंद सु मारवयं । घरियार वजी मनु द्वार न्रप ।।
रिन माधव भूप उमेद रूठे । मनु भीषम पथ्थ समथ्थ जुट्टे ।।
खगवार उमेद अरिंद वढैं । मनु सव्वन तंत दुसार कढैं ।।
समझ्यौ जस स्वांमित स्वारथ मैं । न मुरयौ सुत भारथ भारथ मैं ।।
न कढयौ वप रख्खन आरन तैं । रज रज्ज वढयौ खग धारन तैं ।।
मह ईस अखंडित जोत मयौ । रविमंडल भेद उमेद गयौ ।।७७।।

कवित्त

मिल्यो परव संग्राम, मिल्यो सफरा जल मंजन ।
धारा तीरथ मिल्यो, खेत्र ऊजेन मिल्यो तन ।।

मिल्यो स्वांमि ध्रम तिलक, मिल्यो ग्रहपत उतरायन।
मिलि क्रम क्रम असमेध, मिल्यो कुल विरद सुभायन॥
सिर मिल्यो स्यंभरत जुग्गिनिय, मिल्यो सुजस सद दस दसी।
अरस्यंघ रांन कज लोह मिल, यौं मिल्यो जोद उमेदसी॥७८॥

दुहा

जस दत्ता मत्ता कपंन, विष्णु भगति विधि वेद।
धर जे तैं नहचल धरा, अे तैं नांम उमेद॥७९॥

छंद व्रद्धनराज

हक्यौ तुरंग रायसिंघ भूप रूप पथ्थयं। उनग्ग खग्ग हथ्थ संज भंज सत्रु जुथ्थयं।
विहार तेग धारतैं अरिंद धूम्र तूलयं। मनौं कि श्रौंन सिंधु मांज वीर कंज फूलयं।
निघाय घाय नेक सत्र घायघू म्मि घट्टयं। पर्यौ नरिंद रायसिंघ खेत त्यौं प्रगट्टयं[1]।
कढी न राज मांनसिंघ अंग साज कौपयं। मनौं अकाल गाज कै समुद्र पाज लोपयं।
झरंत अंग छंग घाय उत्तमंग झारयं। मनौं उडंत श्रीफलं हुतास पूज वारयं।
हमल्ल टल्ल हल्ल होत जूझ मल्ल जोधयं। विरुद्ध जुद्ध तेग ताल सिद्ध ताल वोधयं।
वयंड के भसुंड तैं उडंत सुंड खाग ते। मनौं परंत भुम्मि माग पंडु जाग नाग ते।
वजाय खग धाय मांन रोम रोम जज्जर्यौ। तुरंग अंग पूर लौह खेत में तवैं पर्यौ।
कलांनसिंघ सिंघ लौं लयौ दुधार म्यांन तैं। दु टूक अेक घाय तैं करै चमू परांन तैं।
समट्ट मार हट्ट थट्ट तेग झट्ट तौरयं। पर्यौ कलांन घायघुम्मि तेग श्रौंन वोरयं।
भरथ्थ मांझ खाग हथ्थ जाल में सलीनयं। ससत्र घाय सत्र सैंन जत्र कत्र कीनयं।
छुगाल छात वज्र हात पाटरेस रांनयं। करी अकथ्थ कथ्थ काज आरसी दिवांनयं।
प्रधांन श्री दिवांन कौ श्रवाहि तेग अग्गरं। अपुट्ठि पाय देत नां सुजुट्टि धांम जग्गरं।
सुवंधि ध्रंम स्वांमि नेत खेत खाग झारयं। प्रथीप आरसींघ की सरीत लौंन पारयं।
अगाध सिंधु माध सैंन मंथ खाग मंदरं। रत्तांन्न कित्ति वोल कढ्ढि दढ्ढि भू गिरंदरं॥८०॥

दुहा

इहि विधि पुरी अवंत को, भारथ वित्त भयांन।
पाहर भूप उमेद प्रत, सुनि कथ अरसी रांन॥८१॥

---

१. वणे‍ रांजा रायसींघ जी लोहां पड़्या छे खेत में सुं वेरजी ऊठाया

दवावैत

पटेल माधोराव नादांनगी सैं जंग किया। उमेद पाहर नैं निमख-हलाली पर सच्चे दिल सैं सिर दीया। उमेद पाहर कु ं दाग दीया। मांनसींघ कलांनसींघ के तांई घायल छंतु खेत सैं हरीफु नैं उठाय लीया। महता अगर स्वांम ध्रंम के तरफ कायंम रहा। अरसींघ कु ं तौ रांना और रतंनसींघ कू ं फतूर कहा। भांत भांत का कष्ट सहा अपने सत पर असमांन तोला। जिस मुख सैं रांम कहा उस मुख सैं रंहीम नहीं बोला। फिर सैंधिया नैं अपनैं लसकर कू ं समेट उदेपुर कू ं कू ंच कीया। दीवांन के तांई डाक में हलकारू ं नै समंचार दीया। जिस वख्त दीवांन अरसींघ जंग का ततवीर करे। मुछु ं हाथ घाल सांगा प्रताप का बिरद भुज दंडु ं पैं धरे। सलु ंवर रावत भींमसींघ कु ं वगस तेग वंधाई। मेदपाट की लाज कंध पैं धर कै कहा चु ंडा के विरद उजले करवे की वख्त आई। जिस वख्त रावत अरजनसींघ केसरीसींवौत मुछु ं हाथ धर अेसी अरज करी। जहां तक हमारे पिंजर में स्वास और कंध पैं सिर तहां तक अरसीह ख्वांवंद अे प्रतंग्या धरी। अे वात सुन दीवांन श्री हाथ सैं पीठ थापल हुकंम कीया। इस वात का क्या अचरिज हमारे वडु ं में जहां जहां कांम परा तहां तहां तुमारे बडु ं ने सिर दीया। उस वख्त में बौले काका बाघ अरजनसींघ। दीवांन खुस रखै आज के वख्त तो हमारे भुजु ं पर जंग। रांमचरित्र में श्री रांमचंद्र के जुध में लछमन की कथा आवै। भूतेस्वर करे तौ उस विरदु ं तांई सचे दिखलावैं ॥८२॥

दुहा

सत्र पवांन जा दिन वगैं, ता दिन यह विध थाय।
सच्चे कन ठहरैं धरा, कच्चै त्रन उड जाय ॥८३॥

मरद कसोटी मांमला, कथ यह आद कहाव।
पारष कसवट्टी परै, सुध्र असुध्र सुभाव ॥८४॥

सव त्रिय विलसै स्वांम कौं, साजि सुहाग सिंगार।
देह जरावै अंत कौं, जैसैं भट जुधवार ॥८५॥

कही रांन अरसींघ तव, यह हम मत्त सुभाय।
गढ जेतै सिर रखियैं, सिर तुट्टैं गढ जाय ॥८६॥

माधोराव का उदीयापुर घेरा

कवित्त छप्पै

माधसेंन दर कूंच आय, उदीयापुर घेरीय।
मांनहुं राका चंद, परी कुंडल चिहुं फेरीय॥
कै मिल देव दयांत, सेस विट्यो गिर मंदर।
कै अथाघ बड़वाग, लसत जल वीच समंदर॥
विट्यौ कि रांम दुषर खरन, उदध किधौं बिट्यौ धरंग।
य्यौं आय सिंघ अरसिंघ सह, दुसह सेंन विंट्यौ दुरंग॥८७॥

दुहा

विरदावत पनराज तहां, धन अरसी द्रढ पाय।
माधसेंन गो माय गन, तूं वनराय सुभाय॥८८॥

गढ थाहर भुज वल रखन, जाहर जगपत नंद।
माधसेंन गजमत्त संम, तूं गज भंज मयंद॥८९॥

माधव दल वद्दल उत्तर; मिलत्त दंभ नर भौंन।
तेग झपट भंजन जितूं, अरसी दच्छिन पौंन॥९०॥

सिर सट्टै धर भौगवत, अरू बज्जत रजपूत।
सौ दिखहुं पनराज कवि, यह जुध खेल अभूत॥९१॥

छंद पद्धरी

संमतह जांन अष्टादसांन। मह वरस पचीसा त दिनमांन॥
माहारांन अरस जुध संज कींन। दुव भींम अजन भुज भार दींन॥
माहाराज वाघ अरजुन अभंग। जिन प्रांन अरपि पित काज जंग॥
चढि चरख तोप धज फरक तांम। अज महिष रकत वल दींन जांम॥
दुर्गा वचाय क्रत विजय होम। आहूत लग्गि जगि धूप धोम॥
सिंदूर चरचि मुख सुरख आव। सिंचीय सुराव धक धक कुराव॥
जुट्टि जुगल पांन महमाय अग्र। कीन्हीय सतूति पूजन समग्र॥

जय ज्वालमुखी महमाय चंड । मम प्रसन होहु खल सेंन खंड ।।
तैं देव रखिख माहिष सिघार । तैं चंड मुंड रत्त समर जार ।।
तैं जुद्ध धुंम्र लोचन अचाय । निसुंभ सुंभ तैं समर घाय ।।
तैं रांमायन राघव उवार । दससीस भंजि तैं समरवार ।।
तैं त्रिपुर भंज्जि सिव काज चंड । तैं रखिख पंड कुरसेंन खंड ।।
निज दास रखिख दल भंजि सत्र । रावरे चंड अगनित चरित्र ।।
सिर नंम्मि अरस तन मन अधींन । माहाराज बाघ अरदास कींन ।।
रचिअ भुरज भुरज अन तौप मंड । जंजाल जाल कंगुरन थंड ।।
सन सूत रिजक बारूद गंज । सीसा सु लोह गोले सपूंज ।।
संज्जीय सफील हथनाल धार । परिखाग्र गरत अरू द्वार द्वार ।।
मुर हलन तोप थट्टीय अमांन । सरजाल पथ्थ खंडीव जांन ।।
मोरचा बंध करे जुध सांम । रखखीय सुभट्ट थट ठांम ठांम ।।
रमना सुपोल भप्पिय दिवांन । हरीयंद कमंध काकौ गुमांन ।।
इन समिल रखिख सिंधी सिपाह । इम सज्जि द्वार दच्छिन सराह ।।
ताराबुरज सगतेस[1] रखख । बाबो अगंज अरि भंज लख्ख ।।
माहाराज बाघ गढ अेकलिंग । अरि थट्ट भंज काकौ अभंग ।।
प्रथिराज काज तन भंजि खेत । सिर धरें कंन्ह चहुवांन नेत ।।
संग्रांम नंद जुध जेतवार । भुज धरें विरद गंगेय भार ।।
कीको सु धायभाई अभंग । थपि अजुन समिल गढ अेकलिंग ।।
तिन पेस अरव बांनेत जोध । समहर कराल समकाल क्रोध ।।
अरि भंज तौप कीन्हीय तयार । धज फरकि महेष बल जजि दुवार ।।
कहि किसन पोल आरव अभंग । जिहि अमर नांम जितवांन जंग ।।
गढ इंद्र मुरहलै अरव सोह । अरि थट भंजते जुद्ध अमोह ।।
सिंधी सिपाह तिन संग और । गढ अग्र साजि सिरबंध मौर ।।
गढ क्रिष्न मुरहलै थप्प सूर । मोहवत्त रैंन सुत खित्र नूर ।।
नरसिंघ उपासिक सिंघ रूप । भुज भार दीन्ह अरसींघ भूप ।।
सिंधीयकोलितिन सामिल जांन । जुध सार भार भुज झेलवांन ।।
सिवबुरज रखिख काकौअजंन्न । मनु पथ्थं रूप जुद्ध उछह मंन्न ।।

---

१. ताराबुरज बाबो सगतसींघ जी

नरनाह स्वांमि ध्रंम वंधि नेत । तिन प्रांन अरपि अरसिंघ हेत ॥
दुजराज अमर रज्जि कमलद्वार । भुवपत्ति दीन सिर राज भार ॥
सामांन कीन जुध अनठ्ठ गंज । अन सोर सुत सन लोहपुंज ॥
बावो सुरत्त जिहि बुरज ठांम । दुसमन सु भंज रचि तौप तांम ॥
थपि सूरपोल रावत अजन्न । जुध सिंघ रूप केहर सुतन्न ॥
अंगदह पाय सम सद्रिढ जंग । अरिसेंन भंज मनु कपिअ पंग ॥
सुंदरहनाथ कायथ्थ अगज । रखि अजुन समिल अरि जूथ गंज ॥
बुधं तेग बहादर वीर खेत । संकलपि प्रांन महारांन हेत ॥
सूरगढ़ मुरहले रचि सधीर [1] । सगतो जवांन कुल चढ्ढि नीर [2] ॥
जग सेठ समिल सगता जवांन । सगतेस रूप समहर समांन ॥
घरण बुरज सींघ सिव अडिग सौह । बावो अभंग झलि लोह वौह ॥
ज्वालामुखीय इसांन थांन । तिहि बूरज तोप धरि सिभु वांन ॥
कायथ सुथप्प तहां सिभुनाथ । जुध सार कोट सद्रिढ समाथ ॥
रखि भींमसिंघ दिल्लीदवार । रावत अगंज अरि भंज सार ॥
सिर वंध नेत द्रिढ मरन नेम । गढ अड्ड भयौ गढ सार जेम ॥
बिजपाल संग रावत सधीर । चालूक पेम वीराधवीर ॥
मोजीयरांम संग रज्जि साह । सिंधी सु लराऊ हद सिपाह ॥
दिल्लीदवार यम जतन कीन । भुज भार सलुंबर स्वांमि दीन ॥
सुत पौत्र सहित पित अग्र कीन । त्रय पुस्त पंनरसह भट प्रवीन ॥
अखमाल सुतन कमधज गियांन । थपि डंडपोल द्वेसत जवांन [3] ॥
गढ चित्रकोट जेमल कमंध । जिम रहे उदयपुर कंठ वंध ॥
गढ सांडेसर मुरहलह मज्झि । सगतावत सूरजमाल सज्जि ॥
रखि समिल तेन सिंधी अनेक । भंजे सु देह जे तुट्टि तेक ॥
रखि हथ्थिपोलि सिवसिंघ जौध । रट्ठोर वंस जयचंद औध ॥
वैरीयसाल कमधज्ज वीर । मेरता छात समहर सधीर [4] ॥

---

१ रांणावत धीरतस्यंघजी
२ सगतो जवांन निज वंस धीर
३. डंडपोल राठोड़ ग्यांनस्यघ अखेसींघोत वंदुका २००
४. मनांणे ठाकुर रा भाई मेड़तीया वेरीसालजी दुरवार में जुदा चाकर घोड़ा १४० पाला ४०० सुं वंदगी में हाथीपोल डेरो सवसींघ जी सांमिल केह्या ।

सिवस्यंघ समिल हत्थीयदवार । सभि सुभट पंच सत कोट सार ॥
समसेर गढ्ढ मुरहलह सुढंग । गजसींघ थप्पि चूंडौ अभंग ॥
चीतोर पता जिम समर चाठ । लीय विरद तेह भुज लोह लाठ ॥
मुरहलै सु गढ अंबाव मांन । गहलोत जोर थपि पासवांन ॥
तिन संग रखि सिंधी अनंत । रूपि चरन लरन चित मरन मत ॥
चालुक गजन रखि ब्रहमद्वार । रखिय सिपाह जे वज्जि सार ॥
थपि चांदपोल रजवाट लखि । वावो अभंग सिंभू सुरखि ॥
सिंधीअ सधीर फिर सेरवेग । जादूंयं रखि ईर भंजि तेग ॥
सातावपोल दोलत अनोप । सुत स्यांमस्यंघ थप्पि वंस ओप [1] ॥
पनराज सु कवि धरि नावघाट । तिहिं तीस पंच हथनाल थाट ॥
जलबुरज सुभट ईसरहदास । द्रढ पाय सांगहर जुध हुलास ॥
यह भांत कीन गढ जतन भूप । कपि पाय मनहूं गिर मेर रूप ॥
निज पास सुभट रख्खे दिवांन । कवि कहत नांम जे सुनीय कांन ॥९२॥

दुहा

थपि चौकीयन भुजन गढ़, थप्पिय तवैं दिवांन ।
हाजर इते हजूर में, रखि सुभट महरांन ॥९३॥

धर गूजर जाहर दुरग, वरसोरो जग माथ ।
भूप चावरो तास पति, नेत बंध जुध नाथ ॥९४॥

कठिन समय अरि फोज लखि, उदयापुर गढ थांन ।
रह्यौ नाथ अरसिंघ ढिग, अंगद पाय समांन ॥९५॥

छंद भुजंगी

ढिगं संभरीनाथ रख्यौ दिवांन । रस वीरमत्तौ छत्तौ चाहुवांन ॥
रख्यौ रांन वंसी तियौ धीर तेसं । सिरद्दारसिंघ पंवारं सरेसं ॥
रखे पाटरी साहिवं सामत्तं वे । सु मामौ अरू भ्रात मांमा सुतं वे ॥
ढिगं रखि बाबो सगतेस तांम । सुतं भारथं पथ्थ भारथ्थ जांम ॥

---

१. महाराज दौलतसिंघ स्यांमसींघोत सतावपोल मोरचै

रह्यौ पाय रानं पनौ पात आढौ । सु दाखंत व्रदं जुध पाय गाढौ ॥
रह्यौ प्रोहितं नंदरामं अभंगं । रहयौ अग्गरौ साह स्वांमीत अंगं ॥
महंता रह्यौ लिखमी चंद सूरं । रह्यौ साह मोतीयरांम सनूरं ॥
रह्यौ अेकलिंग सुतं तास दढ्ढं । रह्यौ भट्ट देवेस्वरं द्रोन पढ्ढं ॥
रह्यौ धावरं नग्गराजं अमाई । रह्यौ रूप कीकौ उभै धायभाई ॥
रहे जोध हठ्ठु उदेरांम वीरं । रतनेस रख्खौ ऋतं पांन नीरं ॥
रह्यौ धावरं चुत्रभुजं सकाजं । कुसल्लेस हम्मीर धाऊ सलाज ॥
रहै गूजरं धावरं सिंघ रूपं । भयै आप अंगं तनं त्रांन भूपं ॥
पंचोली रह्यौ पातलौ दिढ पावं । गजं सत्र लीनैं तनं घुम्मि घावं ॥
जसुवंत रायं रह्यौ चार भुज्जं । वलीभद्र रायं किसनं सकज्जं ॥
मुसांनी[1] कुवेर रह्यौ स्वांमि पायं । रह्यौ सेज ओरी सितारांम तायं ॥
वगस्सी सिवंनाथं रांन हजूरं । रह्यौ सांमध्रम धरे मुख्ख नूरं ॥
गिरंधारलाल[2] सुगोप[3] प्रमांनं । सहीवार दोनों रहे पाय रांन ॥
खवास रह्यौ तेजसी सूर धीरं । सिरं स्वांमिध्रमं धरं नेत वीरं ॥
वनीरांम व्यास[4]रह्यौ सेझ ओरी । विसंनेस पांडे रह्यौ आभ तौरी ॥
भिखारांम औषध-ओरी रहांनं । भटं वेजनाथं कथा वंचिवांनं ॥
उभै डोढिवांनं रहे लाल नींकौ । रह्यौ दोलरांम महासूध जींकौ ॥
दखौं दास वैंनी गरीवं सु दासं । सुतं केवलंरांम चित्त हुलासं ॥
सिवंदास सीसं ध्रमं स्वांमि सज्जं । रह्यौ दार झारा किसंनेस रज्जं ॥
रहै औरहुं नौकरं जातं जातं । कहै व्यौम तारै कित्तेकं सुपातं ॥
वियं मारहट्टं अरस्सी विरुधं । जहां हौन लागे भयंकार जुध ॥
छुटे नाल गोला गजे गोम वोमं । परावार कंप्यौ धरा धुंध धोमं ॥
दुहूं ओर गैले चलैं मच्चि दंदं । वुठै ओंन रंगे मनौ सूर चंदं ॥
घनंधार लग्यौ कि अंगार अंवं । किधौं व्यौम तें ओत साजौत वंवं ॥
दुहूं ओर सावात की आग जग्गी । हनूमांन ज्वाला मनौ लंक लग्गी ॥
लसैं धूंम सावात में आग ज्वाला । कुहू रैंन मांनौं जगी दीपमाला ॥

---

१. किसनदासजी मुसांणी
२. गिरधरलाल
३. गोपजी
४. वेणीराम व्यास सेझरी ओरी रौ

उलाकै मुखां पावकं तौप जांनौं । फुकै पावकं सेस आसेस मांनौं ।।
वहैं यौं तुपक्कं गढं तीर वारं । मनौ मेघ छुट्टै गरं रत्त धारं ।।
कुहंकंत बांन चलैं सौर जोरं । अखं वीर मांनौं उडै अग्गि मौरं ।।
अरीसींघ मांधौ दुहूं खगा नग्गे । मनौ आग मेघं श्रवै वाद लग्गे ।।
इतैं कंगुरै उड्डि फुट्टैं सफीलं । उतैं जोध बाजं उडैं जूट फीलं ।।९६।।

छंद पद्धरी

जुध होत द्यौस प्रत च्यार और । जगि सौर घोर आतसन जौर ।।
बंधि गरट धूंम्र छावत अकास । वदल कि फेलि मनुं चत्रमास ।।
मुख तोप पलकि वारुद ज्वाल । कांठर कि वीच मनुं तड़ित झाल ।।
गरजंत तोप नद्दह अताल । आघात मेघ मनुं प्रलय काल ।।
इत उडत[1] भुरज कंगुर सफील । सिदन तुरंग उडि उतहिं फील ।।
इमि घेरि दुरग खल दल अथाह । श्रंगाल मनहुं म्रगराज ठाह ।।
उप्पम सु दुतीय दरसंत अेम । मनुं उदध व्रिटि वड़वाग जेम ।।
उप्पम सु त्रतीय इहि विधि लखाय । मनुं भांन विटि वद्दल दिखाय ।।
उप्पम सु चउथ अखखत कविंद । विंटिय कि मनहुं परवेख चंद ।।
उप्पम सु पंच अख्खीय सकज्ज । भूतेस कंठ मनुं सेस रज्ज ।।
वंदूक ऊक पग पग प्रचार । मनुं छीपमाल जग द्वार द्वार ।।
वजि हाक सब्द सुनिये न कांन । मनुं हौत उदध वहुस्यौं मथांन ।।
इत उत दुसेन नित जुध अहुट्टि । मनुं अगड उभय गजराज जुट्टि ।।
जुट्टे कि रांम दहकध जोध । कै त्रिपुर ईस जुट्टे सक्रोध ।।
समहर कि वजि व्रेत्ता सुरेस । कं अजनं जुट्टि भारथ कुरेस ।।
कै कर्न भींम जुट्टि क्रोधवंत । कै उभय सिंघ भख कजक हूंत ।।
इक खेत मज्ज कै उभय सूर । कै उभय नाग रन वज्जि तूर ।।
जुटे कि उदयगिर अस्त जेम । कै सूर रांह जुधकुपि[2] तेम ।।
नित झरत तेग भट जुरत जूथ । रत झरत घाव भखि ग्रीध वूथ ।।
नर सुतर बाजि तूटत वितुंड । खगधार झरत तन खंड खंड ।।

---

१. फूटत
२. रनरुपि

पय सद्द्रड गड्डि कर चलत वार । रुख सुरुख नेंन मुख मार मार ।।
अरू तोप वांन हथनाल साद । मावहिं न भुंम्मि भयकार नाद ।।
नदि वहृत रूधिर भयकार भेख । मनुं वैतरनी जमपुर विसेख ।
तिन मध्य अनक तन तरि अमांन । कीड़ंत सरित मनुं मगर मांन ।।
गज सुंड तिरत खग खंड अच्छ । मनुं सरित मांझ फवि दध्ध मच्छ ।।
रत बीच तिरत आंनन उवास । मनुं सरित सुभग वारिज विकास ।।
अध ऊड कपाल दरसंत अेह । मनुं तिरत कछ विच सरित तेह ।।
कटि छत्र खाग इंहिं छवि सझंत । मनुं कुमुद पत्र नदि विचि रजंत ।।
जल रूहिर देह गज उभय तट्ट । वुद वुद सु पत्र जुगिनि उलट्ट ।।
मुनि वीर मंज घट हंस गिद्धि । पनिहार अछर जल रुहिर किद्धि ।।
रिन सरित सूर कत मांन तेह । साजोत मुगत पावंत जेह ।।
अरसिंघ माध वनि इंद्र बीर । हल्लिय सस्त्र रत बूंठि नीर ।।९७।।

कवित्त छप्पै

इत अरसिंघ दिवांन, उतहिं माधव फतूर विय ।
इतहिं भींम अरजुन्न, उतहिं रावव मुख फविय ।।
इतहिं सच्च साहाय, उतहिं छल झूठ सिहाइय ।
इत सझि ईस जुगिंद, उतहिं जोगी सझि धाइय ।।
मरहट्ट कटक साजित उतैं, इत सिंधी वंधीय कमर ।
घमचाक होत यह विध सुनित, वज्जि हाक उदयानयर ।।९८।।

अेक दिवस गढ सीस, हला कहुं माधव सज्जीय ।
गजन पिठ्ठ फरहरि निसांन, त्रंवाल सु गज्जीय ।।
कीय सुभट संनांन दांन, कसि आयुध कंमर ।
तिलक भाल जल गंग अंचि, सिर तुलछी मंजर ।।
सज्जीय फतूर निज सुभट सम, माध सज्जि अहमति धरीय ।
रवि दरस होत हल्लीय सयन, मार मार मुख उच्चरीय ।।९९।।

छंद त्रिभंगी

अरिसेन हलक्कं आयुध जक्कं हरि हरि वक्कं जे सुभरं ।
गज पीठ्ठ सकज्जं सोभित धज्जं वहु रंग रजं ते फहरं ।।

खचि तोप अगन्नं जुटि धवलानं गज टल्लानं पीठ लगं ।
भरि सकट समाजं गोलंदाजं मूंछ उछाजं सूत जगं ।।
ठठरी आनेकं अग्र रचेकं जोध सछेकं वंधि थटं ।
खग सेल चमंकं वीज वनंकं पावक झंकं सोभ रटं ।।
मुख सद्द उचारं मारं मारं खंचि दुधारं सेन[1] हलं ।
विन उगत भानं जुध जुरानं सेन परानं वींटिकलं ।।१००।।

दुहा

सुनीय वत्त अरसिंघ यह, हलौ कम्पौ अरिसैंन ।
वारह रव उगीय वदन, अरू सिर लग्गीय गैंन ।।१०१।।

न्हाय गंग जल उजल तव, किय उमयापति ध्यांन ।
मुंछ उलसि सज्जीय सिलह, चित्तिय मरन अथांन ।।१०२।।

शिव-स्तुति

छंद भुजंगी

जटं गंगधारी नमौ चंद्र भालं । नमस्ते त्रिनेत्रं घृतं अग्गि ज्वालं ।।
नमौ कालकूटं कृतं भखख जेनं । नमौ नागहारं विहारं उरेनं ।।
नमस्ते करालं ध्रतं मुंडमालं । नमस्ते कृतं अंवरं नागपालं ।।
नमौ अंग-रागं विलेपं विभूतं । नमस्ते दिगं अंवरं नाथ भूतं ।।
नमौ बांम अंगं उमा धार वांनं । नमौ तेज पुंजं तपं पार वांन ।।
सवारं नमौ नंद औधूत राजं । नमौ सिंगि नादं अनादं समाजं ।।
नमस्ते नमौ अंधक भंजि जंगं । नमौ त्रेपुरं गंजनं वज्र-अंगं ।।
नमौ भस्मरागं भसंमाक जेता । नमौ कांम क्रौधानलं दाह केता ।।
नमौ सिधराजं जितं विष्णु माया । नमौ खेद हीनं गुनं वेद गाया ।।
नमौ नीलकंठं नमस्ते सिवायं । नमौ सेतकंठं नमौ संभवायं ।।
नमौ भृंगयं आक धत्तूर भोगी । नमौ कांम जेता नमौ आज जोगी ।।
नमौ सूल कापाल सारंग धारी । नमौ रूद्र रूपं नमौ अद्रिचारी ।।

---
१. वीर

नमौ नील पीतं नमौ स्वेत स्यामं । नमौ लोहितं संकरं भीम नामं ।।
नमौ विस्व माता पिता विस्वपालं । नमौ रूद्र रूपं ऋतं सत्रु कालं ।।
नमौ अद्रि जाया मुखं कंज भानं । नमौ अेक नारीव्रतं जांन वांनं ।।
नमौ पंच माथं नमौ चार आसं । नमौ अेक मुख्खं अनेकं प्रकासं ।।
नमौ निर्गुनं सर्गुनं थाप वांनं । नमौ नर्मितं मंत्र जंत्राभिधांनं ।।
नमौ अेक रूपं अनेकं प्रकारं । नमौ सर्व सूली सिरं गंग धारं ।।
अराधंत सिंभं अरीसींघ रांनं । नमौ खडनं सेन खंगं खलांनं ।।
तुवं आश्रितं पाय तो अेक ध्यांनं । नमौ सिंभ मानं लजा रखिवांनं ।।
अहं तूं अराधूं चितं सूध सूं ही । सिवं अेक तूं अेक तू अेक तूंही ।।१०३।।

कवित्त छप्पै

गंग नीर सिर जेस, केस पिंगल जट रूचि धर।
त्रतीय नयन पावक असेस, नखतेस वाल सर ।।
असन गरल कृत तेस, सेस भूषन तन सज्जिय।
रूंड हार अद्भुत र वेस, गन पेस विरज्जिय ।।
जुध पेस सत्रु आसंख दल, दास देस रछ्या करन।
अरसी नरेस नमि उचरीय, जय महेस असरन सरन ।।१०४।।

दुहा

सिव रिझाय बर पाय अरू, आयुध वंधि अभंग।
कंध थप्पि रजवट मढ्यौ, अरसी चढ्यौ तुरंग ।।१०५।।

कवित्त छप्पै

चढि तुरंग महारांन, वाग लिंनिय जुध जा दिस,
मिलै सुभट सव आय, चरन रखै हाजर तस ।।
पूछि तांम न्रप सुभट, कहा अव करन ऊचारहु।
सुभट कहत सिर पेस, अवर न्रप चित विचारहु ।।
धर छत्रन भ्रमि वौ भाजि कर, ह्वै भिखार सम धर धरन।
अरसिंघ कहीय हम मत यह, यह गढ सिर जीवन मरन ।।१०६।।

दुहा

सिर तुट्टैं गढ तुट्ट हीं, सिर सज्जैं गढ सज्ज ।
अरसि कहैं सथ्थहिं रहैं, सिर गढ राज सलज्ज ।।१०७।।

जो लौं सिर तो लौं सुनहु, रजवट अेह प्रमांन ।
पांनी जांन न दीजीये, तन रत्त दीजै जांन ।।१०८।।

यह कहिं चंप्यौ सेल लै, सुंदर तिलक तुरंग ।
गढ गज वाहर चंपयौ, गरूर मनहुं श्रीरंग ।।१०९।।

छंद पद्धरी

महारांन तबै गढ निकट आय । हय छंडि वुरज चढि सद्रिढ पाय ।।
माहाराज अजुन सिर नमित कीन्ह । दे कुरव निकट अरि कटक चीन्ह ।।
रूंमाल झपट आतस प्रचार । मुख हुकंम कीन्ह अरि मार मार ।।
दगि तोप तांम गढ अेक सथ्थ । मनुं प्रलय मेघ गरजीय समथ्थ ।।
अरि सयंन सीस परि लौह मार । मनुं वुठ्ठि मेह अगार धार ।।
माधव सयंन दरिया अथाह । अरसी अगस्त अंगम यताह ।।
सीसे सुलोह परि वांन रिठ्ठ । मचकीय सुहल्ल तव निठ्ठ निठ्ठ ।।
यह बिध अनंत चलि दुर्ग तोप । किंधुं प्रलय दिवस चख रूद्र कोप ।।
अरि फिरीय पिठ्ठ रिन पाय छंडि । तजि दुर्ग आस चित सौच मंडि ।।
नहि मिटत धर कज उडेर आय । गज त्रास मनहुं अगराज धाय ।।
कै हिरन धुज्जि चित्रक चपेट । थरहरत आष मनुं नाग फेट ।।
गड्डर कि धुज्जि परि सिंघ पांन । तितर कि भेंट विचरत सिचांन[1] ।।
उतराध घटा घन छवि वनाय । कै लग्गि झपट मनुं दछिन वाय ।।
कोऊ विगत पाय कोऊ विगत हथ्थ । कोऊ विगत जांनुं कोऊ विगत मथ्थ ।।
असवार नहिन कहुं नहिन वाज । नहि फौजदार कहुं गजन साज ।।
तुटि चर्ख तोप उडि धवल जूंट । कहुं सुतर नाल फटि भंजि ऊंट ।।
ठठरीय रहीय कहुं परीय भूंम । दल जात मनहुं मतवार घूंम ।।
डौरीय सु इक्क इक्क सकट डार । भौरीय सु केक घींसत अपार ।।
हींदून दगि गडि मुसलमांन । परि खेत म्रतक परिखा अमांन ।।
दिख जिग विधूंम मनुं वीर भद्र । दल मांध भंजि अरसींघ रूद्र ।।११०।।

---

१. पर बाज जांन

यौं फिरि माधव सैंन, तजि चित्त गढ आस नास दल वहुलं।
चूकैं तीर धनुंषी, मनुं पछितात धृष्टि जुग हथ्थं ॥१११॥

अरिल

जत्र कत्र दल डेरन आये। घर घर घायल घाव बंधाये॥
रमि पति प्रोढ नवोढा नारी। अैसैं भइ माध दल ख्वारी॥११२॥

कितक दिवस अंतर मत किन्हिय। पच्छिम हला करन चित दिन्हिय॥
बज्जिय बंब वीर मुख बक्किय। उडि गज नेज फवज्ज हलक्किय॥११३॥

छंद विराज

चढी माध फौजं। मनौ इंद्र औजं॥
महावीर तामं। बके ठांम ठांमं॥
करैं खुंद कच्छी। मनौ नीर मच्छी॥
पयादं अपारं। हथन्नार धारं॥
विनं पार सैनं। मनौ टिड्ड गैनं॥
चले बंधि थट्टं। मनौ सिंधु फट्टं॥
अगं तोप हल्लं। गजं लागि टल्लं॥
वजे बंब नद्दं। गिरं गाजि सद्दं॥
भटं क्रोध जग्गं। मनौ ज्वाल जग्गं[1]॥
चले जोध अछ्छं। करं तांनि मुछ्छं॥
धरैं चाप तौन। मनौ पत्थ द्रौनं॥
चली फौज अेमं। घट्टा भद्द जेमं॥११४॥

दुहा

ब्रह्मपोल पच्छिम दिसा, हल्लो भयौ अरि सैंन।
सुनिय खवर अरसिंघ न्रप, तव सिर लग्गिय गैंन॥११५॥

तव अहंमद मुराद नैं, सीस नम्मि महारांन।
स्यांथ उतन बिल्लौच कुल, संग सैंतीस जवांन॥११६॥

---

१. सिंधु अग्गं

कवित्त छप्पै

तिंहि वैरां विल्लौच, आय सैंतीस जवांनह।
कर वंदूक सज्झी सिलह, सीस नंम्मिय महारांनह ॥
वरज्जिय तांम दिवांन, रहौ तुम कौट भुरज सिरि।
सैंन असंखित माध, केम पूगौ सु जुध किरि ॥
मन्नीयन हुकंम गज मत्त सांम, खौलि द्वार जुट्टीय समर।
जीवहि त वहुरि लैहैं निमख, मरहि त हूर विवाह कर ॥११॥

इत सैंतीस इयार, उतहिं पैंतीस हजारह।
इत सांजीय वंदूक, उतहिं सझि तोप अपारह ॥
इत खुट्टिय वारूद, उतहिं फुटि रावत खुट्टिय।
इन लीनी म्यांन तैं, वाग उन लीन सु जुट्टिय ॥
अरसीहं देखि दिखि माध उत, आसमांन दिखिय महर।
घरियाल प्रात न्रप द्वार सम, तेग ताल वज्जिय कहर ॥११८॥

जे आगैं क्रम दये, दये पिच्छे न तेह क्रंम।
किन्निय किरच्च किरच्च, टूक तंन काच सीस संम ॥
नूर पांन करि व्याहि, हूर घर भिस्त मझकीय।
रेख रखिख अरि भख्ख, दिखि दो दींन दाद दीय ॥
वे वाह सुभट अरसिंघ के, हनि अथाह अरि जुध हिच।
ले वाह-वाह द्वै राह मुख, वसि अल्लाह दरगाह विच ॥११९॥

दुहा

इन पर तैं दल ठठु करहि, अचरिज मांनि सवांन।
परि उत रावत पंच सै, इत सैंतीस जवांन ॥१२०॥

जजि वाघ महाराज वल, कीनी तोप तियार।
वीर रूप प्रौहत वुरज, छुट्टिय अरि खयकार ॥१२१॥

कवित्त छप्पै

छुट्टि सिंघ गिरधरनि, वाग रवि स्वारथि छुट्टिय।
गर्भ्भ निछुट्टिय गाभ, सिध संमाध विछुट्टिय ॥

अहि-वल छुट्टिय ग्रीव, नयन सिव छुट्टी तालिय।
छुट्टि दंड जमहथ्थ, खपर छुट्यौ कर कालिय।।
थरथरी छुट्टि धर देह तिन, पाय छुट्टि अरि दल हटिय।
अरु राज आस फतूर उर, वाघ तोप छूटत छुटिय।।१२२।।

दुहा

हार खाय माधव कही, सुनि अरसिंघ दिवांन।
इन हरांम नादांन मत, हम लग्गे नादांन।।१२३।।

तेरा घर तेरा तखत, रांन बिरद सच जीह।
है फतूर कच्चा सदा, सच्चा तूं अरसीह।।१२४।।

यह कथ माधव समुख तैं, राघव सुनी फतूर।
वसंतपाल[1] मौहकम सुनी, निज मुख झंखित नूर।।१२५।।

निस भागे लागे सुमग, जागे निज ग्रह जाय।
भये अद्रिष्ट न दिख्खियैं, मनहुं लुकें जन चाय।।१२६।।

फिर माधव अरसींघ पैं, कही वकील पठाय।
दल ख्वारी हम मत्त तैं, भई सु देखहुं आय।।१२७।।

मिल माधव अरजुन तवैं, करीय सिंध सुख भाय।
दिय दिवांन तव हय खिलत, कटक कूंच करवाय।।१२८।।

छंद पद्धरी

किय कूंच कटक माधव लजाय। मनुं सिंघ फेट अग डार खाय।।
अरु विजय पाय अरसिंघ रांन। नरसिंघ मनहुं अग कस्य भांन।।
करि फतय रांन सौभंत अेम। मनुं भंजि कंस गिरधरन जेम।।
ध्रम स्यांम तिलक सुभि भीम सीस। रावत अजन भुज नेत दीस।।
काको सुवाघ अरजुन अभंग। माहारांन दीन जस विजय जंग।।

---

१. वसंतपाल शब्द के ऊपर कवि ने साह मेघ भी लिखा है।

अन सुभट पिठ्ठ महरांन थप्पि। ध्रम स्वांम नेत घर कुरब अप्पि ।।
बधह नगार सुभटह सुहात। गज बंध कीन पनराज पात ।।
दीय मांन रजक दुज पासवांन। इम करीय जैत अरसी दिवांन ।।
सुभ उदयनैर राजस समाज। सुर राज सोभ दल ओज साज ।।१२९।।

दुहा

भग्यो माध फजीत ह्वै, जीत अरस जुध रांन।
भंजत जूथ गयंद बन, ज्यों मयंद भुज पांन ।।१३०।।

सोवत नाहर भंजि गज, थाहर भुजन प्रताप।
जंबुक तबैं निसंक ह्वै, भुख कहुं डोलत आप ।।१३१।।

सोवत लखि घर स्वांमि कौ, लुट्यौ द्वार निहार।
जैसैं सूने सदन में, करत स्वांन संचार ।।१३२।।

या बिधि सयन फतूर कौ, जौगी अवर हू सथ्थ।
मुलक मांझ बिचरत रयत, डंडत करत अकथ्थ ।।१३३।।

सुनिय वत्त अरिसिंघ यह, वीर सिंघ मुख नूर।
करत अकारज मुलक बिच, बिचरत सयन फतूर ।।१३४।।

सुनत बयन भुज फरक निज, अमरष प्रगटि अमोघ।
सींचि धरित बरबाग मनु, सोर आग संजोग ।।१३५।।

भयौ हुकंम दल सज्जि भर, वज्जि निसानन घाव।
चढ्यौ नंद जग राज मनु, लुप्पि पाज दरियाव ।।१३६।।

छंद वृद्धनराज

चढ्यौ दिवांन आरसींघ वाजि बीर नद्दयं।
उडी पताख बाज ह्रींस गाज द्वै दुरद्दयं ।।
कसे उमंग जंग अंग जोध स्यांम भूसनं।
मनो लपेटि धूम आभ ज्वाल की विदूसनं ।।

सिपाह अंग बीर जोस ओप टोप ऊजले।
मनौ इकत्र कंज भांन मित्र तानि पंमिले ॥
अथाह लाह लेत वाज पीठ सोभ पख्खरं।
मनौ कि कीन भृंम्ह[1] येंन वींन पंख भख्खरं ॥
उडें सजोर मोर लौं घमंकि घोर घुघरं।
मनौ कि ताल हद्द कींन सद्द भद्द दद्दुरं ॥
उठाव सिग्र घाव पाव यौं चमंक नाल की।
मनौ सिलाव बीज भाव पावसं सुढाल की ॥
वरूथ जूथ मंझ के चमंकि संगि रावतं।
मनौ कुहू निसीथ तार तेजसं सुहावतं ॥
चले गयंद मद्द गंध अंध स्यांम रंग के।
मनौ कलिंद नंद मंद बंध विंध अंग के ॥
पताख लाल पीठ ता उडंत यौं निह्वौरियं।
मनौ असेत कूट पैं प्रजाल सिघ्र होरियं ॥
रंगे भ्रसुंड स्यांम लाल नील पीत रंगयं।
मनौ खंचि सुरेस चाप पावसं निहंगयं ॥
वजंत राग सिंधवं सुबीर वाज वज्जहीं।
अवाज मेघ तानि रख्ख सिंधु गाज लज्जहीं ॥
परे भगांन त्रास मांन सत्रु[2] थांन थांनयं।
चढ्यौ कुरंग सत्रु सीस आरसींघ रांनयं ॥१३७॥

कवित्त छप्पै

आय रांन अरसिंघ, देलवारै मुकांम किय।
सुभ महलायत बीच, फरस सु कलायत सुभिय ॥
सुख उतरि सब सेन, रांन भौजन किय रंम्मिय।
दिन्नीय पांन कपूर, सुभट निज गूडर क्रंम्मिय ॥
खत लिखिय पांन दुअँ दिवस, क्रपा करय वड भागिनिय।
बुलाइय रांन अरसी त दिन, तिहि मुकांम निज[3] रागिनिय ॥१३८॥

---

१. भ्रह्म
२. धूजि
३. पट

दुहा

झाली सुभ लच्छिन जुगत, पतिव्रत सुभ मत पूर।
कीय सलांम अरसिंघ कौं, रांनी आय हजूर ॥१३९॥

भीम तदिन निज मात के, साथ गये पितु पाय।
तीन वरस वय सिंघ सम, करी सलांम बजाय ॥१४०॥

लीय उठाय पितु लाय उर, करि दुल्हार मुख चूंम।
धरिय सीस कर पुत्र कै, अमी ढुरिय प्रति रूंम ॥१४१॥

जैसें सिंघ रु सिंघिनी, तीजौ सिंघ कुमार।
अरसी झाली भीम त्रय, इह पावत अनुहार ॥१४२॥

अेक तखत पर तिहिं समय, बैठे रांनी भूप।
सखि जन लिखत तमांम छबि, मनहूं कांम रति रूप ॥१४३॥

अथ गाथा

झाली अरसि दिवानं, औपत सुत भीम सहित इक आसनं।
सचि सुरिंद्र सुभानं, मनु जयवंत कुमार सहितं ॥१४४॥

कवित्त छप्पै

तिहिं पुल मज्झह वाजराज, हयराज तेजधर।
मंगवायौ अरसिंघ रांन, अंतहपुर अंदर ॥
निरख भीम अरसींघ, हुकम हय चढि[1]फुरमाइय।
लै निज कटि मझ आप, भीम हय पीठ चढाइय ॥
पागरौ ग्रहिव निज हथ्थ पितु, अरु मुख कथ यह उचरिय।
हम लगै भीम तुव पागरैं, हम सु नेत तुम सर धरिय ॥१४५॥

फिर अखिखय महरांन, सुनहूं झाली हम जप्पिय।
हम राजस गौद रा, सीस यह भीमा थप्पिय ॥
हम राजस रछपाल, अवस यह भीमौ जांनहुं।
राजस लायक यहैं, परख हम सच्च प्रमांनहुं ॥

१. श्रीमुख

लिखि तेज भाल त्रय वरष वय, प्रथंम हि पिता परखयौ।
मुख चूंमि तात कर सीस धरि, मात अग्रलै रख्खयौ ।।१४६।।

छंद उद्धौर

कहि रांन लेख विरंच । सुनि वात झालिय संच ।।
सिव अंस भीम कुमार । यह उदर तव अवतार।
यह उग्र तप कृतवांन । अह जगाह मूंसमांन ।।
पाय हैं वेग ही राज । यह करहि वहु धर काज ।।
दुख प्रथंम सहि हैं अेह । सुख लहहिं फेर अछेह ।।
रद कर ही सैंन फतूर । कुंभमेर लैं हैं सूर ।।
रूठे सु सुभर नमाय । सव सीस नांमहि पाय ।।
नहि करहि सिर आसांन । धर लैहिं निज भुज पांन ।।
करि प्रथंम मुलक उजार । अरि प्रवल जोर करार ।।
फिर भाग जौंर अभंग । करि दच्छिन सहुं रिन जंग ।।
फिरंगांन आंनि अथाह । अंगरेज सहुं करि राह ।।
नव लाख दच्छिन वोरि । फिर लैहिं भूमि वहोरी ।।
अपनी जु भुम्मिय दाटि । फिर लैहिं खग वल पाटि ।।
यह बैर बाहर वीर । सुज हौहिं भीम सधीर ।।
जे सुभर बंक त्रिबंक । तै करहि सूध सनंक ।।
जोधांन जेपुर नाथ । इन पूछ करि हैं वात ।।
कन सिवर विक्रंम भौज । यन जोरि अप्पन मौज ।।
यह पच्छिले दिन वीर । वाजि हैं दुतीय हमीर ।।
लखि अनट पोल प्रवाहि । कोऊ कहहि जगपत आहि ।।
वहु होय पुत्रिय पुत्र । तिहि करहि व्याह विचित्र ।।
दै लख जाचग जात । जग अमर रखहि वात ।।
दोषीन तैं रिस रेह । के वाजु कढ्ढहि अेह ।।
सिर हाथ धर है जांहि । तै वडे होत लखांहि ।।
वहु व्याह करि हैं रंग । वलवांन अधिक अंग ।।
पीछले दिन सब चाहि । सकवंध कहिहैं आहि ।।
कपटी अतोल कृपाल । अति धूत मायक आल ।।

आछेह अघट्ट असंक । वहु सुध बंक त्रबंक ।।
अैसे जु लच्छ अपार । यह हौंहि भीम ऊदार ।।
वहु त्रधपन सुख लेंहि । दन लाख सांसन देंहि ।।
गढ गंजि यरदल भंजि । अह हौंहि भीम अगंजि ।।
दिघ्घ आयु हौंहि अनंत । वहु पुत्र सुख धनवंत ।।
हम कहत झालिय अेह । कथ गोप रखहुं देह ।।१४७।।

दुहा

परख भींम लघु पुत्र की, कींनीं अरसी रांन ।
सुनत श्रवन झाली सुचित, हरख सोच कतवांन ।।१४८।।

सीख लही महारांन तैं, पटरांनी ग्रह आय ।
कूंच कीयै महारांन तव, चित्रकोट दिस धाय[1] ।।१४९।।

सुनि अरजी तब टोप ले, कटक फतूर अवाज ।
चित्रक हकि कुरंग पर, मनुं कुलंग पर वाज ।।१५०।।

सुनीय खबर राघव कंवर, सुनि मौहकंम महाराज ।
सचिव मेघ केहर सुनी, सुनि जोगिंद्र समाज ।।१५१।।

छंद पद्धरी

सुन कटक वत्त राघव कुमार । तन कीय सनांन सुचि गंगवार ।।
मोहकंम सुमेघ केहर अन्हाय । कीय तिलक भाल हरि गुर मनाय ।।
करि दांन दुजन वंधीय सनाह । सिर तुलसिपत्र गीतय सराह ।।
कसि तंग परठ्ठि पक्खर तुरंग । मनुं लग्गि पंख परवतन अंग ।।
सभ्भि सिलह सैंन जोगी महंत । अदभूत वीर तन भेख संत ।।
कीय संज समर हथनाल बांन । रचि सुतरनाल मुख अग्र आंन ।।
जुध निपुन मल्लविद्या जटैत । पहु अग्र सज्जि रावत पटैत ।।
खुलि रंग रंग वहरख निसांन । सुर चाप मनहुं पावस प्रमांन ।।
सजि सिलह सैंन कर अनीय तीन । बजि राग सिंधु जुध उच्छह कीन ।।
यह चरित सैंन लखि बैग धायं । चर खबर दीन्ह अरसिंघ आय ।।१५२।।

---

१. कौसीथल दिस धाय

जुद्ध वर्णन

कवित्त छप्पै

सुनिय खबर अरसिंघ, रांन तन कौप उछज्जिय।
सुनि वन जुथ्थ गयंद, मनहुं म्रगराज सु गज्जिय॥
वजि नगार मगि गंगवार, किन्हिय सनांन तब।
पूज्जिय हर सज्जिय सनाह, जल गंग अंचि जब॥
गीता तुलछि सिर पर धरिय, कंठ वंधि गलका तनय।
चेटक तुरंग मंगिय चढन, चढिय जंपि मुख सिभ जय॥१५३॥

दुहा

तीन अनी सुनि अरि फौज, अनी तीन करि अप्प।
मध्य आप रहि पाय द्रढ, वांम दच्छ भट थप्प॥१५४॥

ठारहसो छाईस कहि, वरस मास कहि माह।
जुध निवंध्यो टोपले, प्रगट कत्थ दुवराह॥१५५॥

अथ गाथा

महतो अगर हरौलं, रख्खिय सत पंच सथ्थ रजपूतं।
अंगद पाय समानं, अरिसिंघ सौभियं जंगं॥१५६॥

छंद मोतीदांम

अनी सजि रांन जुधं कज जांम। कहैं कवि छंद सु मुत्तियदांम॥
जगं चव पायन पाय समाज। कह्यौ अहिराज सुन्यौ खगराज॥
अनी थपि दच्छिन अम्मर सूर। सुभैं तिहिं आरव जात सनूर॥
जुटै इक लाखन सौं यक जंग। रिनं पग पछ्छन देत अभंग॥
दुवौ सभि आरव कासमखांन। मनौ जुध टट्टिय लौ परमांन॥
उतन्न सु रुम्मिय रुम्मिय लेख। सुधं तिहिं जांनहु कुम्मीय सेख॥
निघात सुघात धरैं हथनार। हुलस्सिय जुट्टन पांच हजार॥
अनम्मिय जोध अपुठ्ठ सिपाह। थप्यो तिहिं ठांह मलंग निवाह॥
दुती रख नांम लराउव जोध। त्रयं अवदुल्ल रजा चय क्रोध॥
चवंगुल हालय काल कराल। चवं[1] वंध सिंधिय कोलिय चाल॥

---
१. पचं

हजार सु पंच[1] वहादुर कच्छ । महा मगरूर अभंगम मिच्छ ।।
रची निज मध्य अनी महरांन । तहां इतने भट सिंघ समांन ।।
सुभक्रन राव[2] पंवार सधीर । जगावत पातल[3] रावत बीर ।।
फत्तो चहुवांन[4] सु रावत वंक । कमंधज वीरभदेव[5] असंक ।।
सिवो[6] विसनेस[7] गयांन[8] सराह । उरजन[9] वाघ सु खत्र अथाह ।।
अनि राचे वांमिय बाघ अभंग । तिनं सथ सिंधीय भट सुढंग ।।
सभ्यौ जुध में महाराज गुमांन[10] । सिभू सगतेस पटेत समांन ।।
सुभै तहां सूरजमाल[11] रु सेर[12] । छतो परताप[13] सुतंन अफेर ।।
सजे सुरतेस[14] रु धीरतसिंघ[15] । छतो चहुवांन[16] रु नाथ[17] अभग ।।
महोबत[18] ईसरदास[19] अडोल । हुवै तहि नाथ[20] गजन्न[21] हरोल ।।
अभंगम सूर तखत्त[22] उमेद[23] । जवांन[24] रु सूरजमाल[25] अखेद ।।
निखंग सभ्यौ धऊवौ नगराज । चढ्यौ हय कीक उन गनराज ।।
अरु परधांन सभ्यौ अमरेस । जसो तहं साजि पंचोलीय जेस ।।
पनो कविराज सभ्यौ निज पास । पढै व्रद पातल रांन प्रकास ।।
अनं भट सज्जिय अग्र दिवांन । मनौ गन संनिध रूद्र रहांन ।।
वजे सुर बीर नगार ननद्द । मनौ घट मास गरज्जिय भद्द ।।
उडी धज लाल सुपीठ मतंग । मनौ लगि होरीय अद्रि उतंग ।।
उडी रज संघट पाय तुखार । मनौ मिल मावस घोर अंधार ।।
चमंकत सेल वरूथ दिखात । मनौ घट लंबित बीज बिभात ।।
बंदूकन तोर चमंकत आग । मनौ निस भद्दव झिगन जाग ।।
सपखखर सोभित वाज असंख । मनौ लगि इंद्र छिदी गिर पंख ।।
वजै जिन हल्लत घुघ्घर घोर । मनौ तट ताल कि दद्दुर सोर ।।

---

१. आठ २. वीझोली ३. आमेट ४. कोठार्‌यो ५. घाणेराव
६. रूपाहेली ७. चाणोद ८ ग्यानसिंघ अखैसींघोत री छोटो वेटो ९. अजो माहाराज (महाराज काकार)
१०. काका गुमांन ११. नाडोलाई १२. खोडरोठाकुर १३. सनवाड़; गाम बूसी कुंपावत १४. मुहवै १५. हमीरगढ़ १६. वणेड्यो
१७. थांवले १८. गाडरमाल १९. दोलतगढ़ २०. जीलोला २१. लसांणी
२२. पीथास २३. कोसीथल २४.रू द २५. सियाड़ ❀ मेडतीया अखेसींघजी वेरीसालजी साथ

हलक्किय सैंन झलक्किय संग । ढलक्किय ढाल सलक्किय नंग ॥
ऊतालिय चालिय ग्रीध गयंन । कपालिय तालिय षुट्टि नयंन ॥
करछिछ्य अछिछ्य सज्झि विमांन । सु मुछिछ्य चछिछ्य चढ्ढि भरांन ॥
डकड्डक वज्जिय ईसर डाक । धकध्धक कायर छत्तीय धाक ॥
खरख्खर जुग्गिन पत्र करार । लरख्खर कायर पाय परार ॥
छुटे तह तोप तुपक्क अमांन । छुटै सर सोक कुहक्कत वांन ॥
उडे नभ आतस धूम अंधार । मनौ निस मावस घोर अंधार ॥
दुहूं दल रीठ अरावन वाग । मनौ पथ खंडव जग्गिय आग ॥१५७॥

दुहा

ऐसे दुव दल रूपि रहे, नांहिन लीक भगांन ।
अरसी चंप्यौ प्रथम हय, सेल उछज्जि महरांन ॥१५८॥

छंद अर्द्धनराज

हक्यौ तुरंग रांनयं । उछज्जि सेल पांनयं ॥
त्रिजांम मैंन थट्टयं । मनौ कि तार तुट्टयं ॥
गिरं सिरं अघातयं । मनौ कि वज्र पातयं ॥
तुरंग रांन हक्कयं । अरव्व[1] नैंन दिख्खयं ॥
हकाल वाज ओरयं । रवी चखंनि होरयं ॥
सुवघ्घ तेग झार तैं । दुटूक अेक वार तैं ॥
नखे तुरंग अम्मरं । कि कंज पेखि भम्मरं ॥
हली अनी सुदच्छिनं । अरिंद तेग तच्छिनं ॥
इतै चलाय वांमयं । मलंग वाज तांमयं ॥
दुसैन यौं उलट्टयं । मनौ कि सिंधु फट्टयं ॥
वगी नराज लट्टयं । कि दांमिनी लपट्टयं ॥
घमंकि संग वारयं । फुटंत पूठ पारयं ॥
वहंत अंग श्रौंनयं । फुटे मजीठ द्रौंनयं ॥
तुटंत सीस खग्गयं । मनौ कि अंद सग्गयं ॥

---

१. सुवाघ

जुधाय जंघ टुट्यं । कि रंभ खंभ कट्टयं ।।
विभाग खाग यौं तनं । विबंध बंटि ज्यौं धनं ।।
सुझेल बीर कंठयं । महेस माल गंठयं ।।
दिनेस वाज खंचयं । रिखेस बीर नंचयं ।।
वहंत श्रौंन घावकं । मनौ कि नद्दि जावकं ।।
उडैं फटे कपालयं । वजांत तेग तालयं ।।
सुपत्त रत्त भोगिनी । रचंत रास जोगिनी ।।
सुमार तेग झट्टयं । गयंद कुंभ फट्टयं ।।
वहंत रत्त खालयं । कि जावकं प्रनालयं ।।
चुनंत मुत्तियं पलं । सु हंस गीध समिलं ।।
कटै सिरं हकारयं । कमंध तेग झारयं ।।
जुगीन सीस तुट्टयौं । मतीर खेत लुट्टयौं ।।
अपार मार खंडयं । विहंड तुंड मुंडयं ।।
बजंत बीर डक्कयं । सु भूत प्रेत हक्कयं ।।
विमांन रंभ थट्टयं । मनौ कि नट्ट वट्टयं ।।
अरिंद भग्गि कंपयं । म्रगं कि सिंघ चंपयं ।।
चपेट बाज लीतरं । भगे कि डार तीतरं ।।
पटेत हथ्थ रोलयं । भगे गयंद टोलयं ।।
भगे अरिंद रिंगयं । सु जैत आरसिंघयं ।।१५९।।

कवित्त छप्पै

भग्गी सैंन फतूर, भगे द्वादस महंत सब ।
राघव मोहक्कम मेघ, राज केहर निकर तव ।।
जुध जीत्यौ अरसिंघ, सिंघ सम खेत गरज्जिय ।
नोवत झंडे सुतरनाल, तंबू लुट्टिव तज्जिय ।।
पवसाक लाल रंगि सस्त्ररत, सिर नंम्मिय निज सुभट तिन ।
घायल उंचाय मुक्कांम किय, बज्जि नववत्ति जीति रिन ।।१६०।।

अरिल

फिर अरसिंघ उदयपुर आये । भीम अजन पित कौं सिर नाये ।।
कुंवर हमीर भीम पितु दिख्खिय । लगि पय उर सौं भरि हरख्खिय ।।१६१।।

निस विलास महलायत सज्जिय । न्रत्य गांन नववत्त गरज्जिय ।।
प्रात जग्गि निज तन करि सुच्चिय । नित कृत करि भूतेस अरच्चिय ।।१६२।।

चंद्रायण

अरसी उदयानैर तपै यौं नाहरं ।।
छाग पटैत दु आव पीयै यिक ठाहरं ।।
लखि तप जेठ दिनेस ऊलूक अरि मंद की ।।
सोभत जिंहि भुजदंड लाज सव हिंद की ।।१६३।।

दुहा

संमत अष्टादस सु भनि, समझि मास वैसाख ।
सत्ताईसा वरस सुभ, भल माधव रितु भाख ।।१६४।।

आय कही चर खबर तव, सझि दल साह कुवेर ।
जोगी अमर कुसाल अरु, महता सुरत अफेर ।।१६५।।

लुट्टि रु करत उजार घर, दस हजार सथ सेंन ।
कीय मुकांम गंधार दिस, सद्रिढ पाय करि तेंन ।।१६६।।

कीन्ह विदा गौढांन दिस, भुजन नेत धरि वाघ ।
चढि दिवांन गंधार दिस, वज्जिय सिंधू राग ।।१६७।।

उदयापुर गढ जतन कहूं, रक्खिय रावत भींम ।
जिन घर आद अनाद तैं, स्वांमि धरम द्रिढ नींम ।।१६८।।

छंद उद्धौर

चढि वाज न्रप अरिसिंघ । लखि विपन अग मनु सिंघ ।।
पय लाह लेत तुखार । कपि झंप मनु टुट्टि डार ।।
चढि अजन चूंड हरोल । भुज कठिन पुल नभ तोल ।।
फतमाल चढि चहुवांन । सुभकर्न चढि सहमांन ।।
चढि कुंवर गजन तुरंग । माहाराज अजन अभंग ।।
सिवसिंघ[1] अरु हरियंद[2] । जालंम[3] रांम[4] कमंध ।।

---

१. रूपाहेली २. नींवाडी ३. जालमसिहजी देवलि ४. रामदासजी इंटाली

अरिसाल[1] अखमल[2] कथ्थ । राठौर चढिय समथ्थ ।।
चढि सगतसिंघ रु धीर । चढि सुरत सिंभुव वीर ।।
चढि गजन ईसरदास । कुल चूंड जग जस वास ।।
छतरेस नाथ अभंग । चहुंवांन चढि जय जंग ।।
चढि बाज सुभट जवांन । सगतेस जिम खल भांन ।।
धऊवौ सु चढि हय जौध । कृत अंत अरि तन क्रौध ।।
चढि अगर तांम तुखार । सत पंच भट तिन लार ।।
चढि वाज कवि पनराज । जस पढत रांन सकाज ।।
अबदुल पिरोज मलंग । चढि सिंध्रि कौलिय जंग ।।
तुर चढि लडाउव तांम । गुल हाल चढिय सग्रांम ।।
चढि अमर तांम अरव्व । गजंन सु अरि हर गव्व ।।
चढि बाज कासमखांन । जिहिं उतन रूम्मीय जांन ।।
सब चढिय जौध तुरंग । उछाह रिन निज अंग ।।
धज सुरख उडि गज पीठ । निसि मनहुं अद्रि अंगीठ ।।
दर कूंच कूंच चलाय । गंधार न्रप दल आय ।।
अरि सेन सुक्कीय सांस । मनु सिंघ भय म्रग त्रास ।।१६९।।

दुहा

प्रात होत हय पक्खरिय, वज्जि दुहूं दल वंब ।
आभ तुट्टि धर भट्टि मनु, उलटि किधौं दध अंब ।।१७०।।

छंद वेअक्खरी

जब निसांन अरि सेन दरसीय । बांटि अनी तब रांन अरसीय ।।
दस्त चांप थप्पीय मलंग तव । अरु थप्पि दस्त रास सव आरव ।।
रावत अजन हरवल थप्पिय । तिहिं भुज भार चित्रगढ़ अप्पिय ।।
पीठ वहीर सुभग थट रक्खिय । मध्य रांन जुध काज हरक्खिय ।।
मुंछऊ छज्जि भ्रूंह दिस वंका । बज्जिय सिंधु गज्जि रिन डंका ।।
लाल पताख उडी गज ऊपर । जग्गिय ज्वाल किधौं निस भूधर ।।
कूदत वाज सकाज सपक्खर । कै लगि पंख उडे मनु भक्खर ।।

---

१. मनांणे मेड़ता २. मारवाड़ में वाजोली मेड़ता

सेल चमंकि विचें रज डम्मर । मांनहुं वीज सिलाव व्रखा कर ॥
वज्जिय नाक सतेज व्रहासन । वंस वजी हरि की मनु रासन ॥
पत्र खर खर जुगिन धाइय । नचत नारद वजि त्रिघाइय ॥
चौसठ वावन अठ्ठ इयारह । भूत पिसाच अनंद अपारह ॥
ग्रीध सिवारु श्रंगाल उमग्गह । सज्जिय रंभ विमांन सरग्गह ॥
खंचिय व्योम वाज ग्रह नायक । नंचिय तेग नगी भट पायक ॥
वजि दुहूं दल घोर त्रंवालह । मानहुं भौ कलपंत अकालह ॥
उत कुव्वेर सु हक्कि जटैतन । इत हक्के अरसिंघ पटैतन ॥१७१॥

दुहा

कही अजन महाराज तव । समुख खरे अरि जंग ।
ले सिलार तें सेल भुज । चंप्यौ रांन तुरंग ॥१७२॥

सुनत रांन अरसिंघ के । जै महेस यह वौल ।
दीखे रावत अजन चख । हक्के वाज हरौल ॥१७३॥

छंद व्रद्धनराज

हके अज्जन वाजराज रावतं हरौलयं ।
अजाग जाग पौरसं त्रंभाग पांन तौलयं ॥
उडे अंगार सार धार मार मार मुख्खयं ।
जुटे अपार ते जुंझार तेज धार लख्खयं ॥
उडंत सीस तेम ईस आचलेत अधरं ।
मनौ कि पुन्यकाल वाल खेल झेल यंदरं ॥
चचैह काल जोगितं वहांन खग पांनयं ।
अजै निघाय तेग तुट्टि सीस तुंव जांनयं ॥
वहंत संग फुट्टि अंग ते कढंत पच्छयं ।
मनौ कहार कंध जार मूह कढ्ढि मच्छयं ॥
वितुंड सुंड खंड द्वै वहात श्रौंन यंवुलं ।
मनौ कि किन्ह कौतकं वजात भंड भुंगलं ॥
वजंत खग्ग झट्ट तुट्ट वांह औप वीरयं ।

मनौ तरप्फि मच्छ अच्छ मांझ तुच्छ नीरयं ।।
उडंत जंघ तेग घाय पात भूमि पट्टयं ।
मनौ कि माल वग्ग डारि रंभ खंभ कट्टयं ।।
तुटंत तंग मज्झ तैं असी प्रहार सुब्भरं ।
मनौ समांन अथ्थ कै बिभ्रात वंटियं घरं ।।
लगंत सेल अस्व तैं सवार भुम्मि यौं परं ।
मनौ वरत्त बंस लैं सज्झंत नट्ट दोवरं ।।
ससत्र झट्ट रावतं वहंत श्रौंन घट्टयं ।
मनौ फुटे कुसुंभ मट्ट रंगरेज हट्टयं ।।
भई त्रपत्त रत्त चंडि यौं मुखं उबीकयं ।
मनौ नटी दिखात ख्याल जावकं उलाकयं ।।
चुनंत ईस सीस भूत प्रेत लीन साथयं ।
मनौ लुटैं मतीर खेत जुग्गि की जमातयं ।।
बजैं सु मार तेग झट्ट भट्ट टोप ऊपरं ।
मनौ अघात प्रात वज्जि देव द्वार झल्लरं ।।
चुवंत रत्त घाव तैं सुबाज साज लल्लयं ।
मनौ बसंत लाग जाग बीर फाग किल्लयं ।।
फटैं गयंद कुंभ तैं चलंत[1] श्रौंन धारयं ।
मनौ असेत अद्रि तैं वहैं मजीठ तारयं ।।
अरी पटेत रांन तेग भंज यौं गयंदयं ।
मनौ कि कौपि कूट पैं बहंत वज्र इंदयं ।।
सुभट्ट जुझ्झि लौंन पैं भिदंत भांन मंडलं ।
मनौ बनाय भगल्लं भिंदंत नट्ट कुंडलं ।।
गतागतं बरंत सूर अच्छरी बिमांनयं ।
मनौ रहट्ट घट वेग आत जात मांनयं ।।
जरैं कटार संनिधं किते जुंझार जुथ्थयं ।
मनौ मिलंत मित्र दोय घल्लि ग्रीव बथ्थयं ।।
भई बिखंड खंड सत्र सेंन यौं भगानयं ।
मनौ सिंघार रूद्र कोपि आरसिंघ रांनयं ।।

---

१. श्रौति मुति

भगी सयंन जोगराज पाय छुट्टि जंगयं ।
जित्यौ गंधार भारथं दिवांन आरसिंघयं ॥१७४॥

दुहा

लग्गि अजन महाराज कै, समर पंच दस घाय ।
कहुं तन रेखिय सिलह कटि, खित्रवट छाप सुभाय ॥१७५॥

कवित्त छप्पै

भग्गिय सेंन फतूर, जाय गंधार दुरग घुसि ।
फिर अरसी चो गिरद, हल्ला किय हुकम चिहुं दिसि ॥
देव कुंवर वुलीजती, होम जय काज अरंभीय ।
लगि गोरा अरसी प्रताप, उडीजती अछंभीय ॥
विगारिय होम थहरिय कुंवर, संधि उपायहि चित्त पगीय ।
संभरीय देव[1] अरिस्यंघ के, हथ्थ वंधि पायन लगीय ॥१७६॥

दुतिय दिवस गढ़ वीच, लोक महरांन पठाये ।
जे फतूर परधांन, तिनहि पकरन कहुं आये ॥
तव कुवेर थहराय, उदर विच खंजर मारिय ।
अमर सहित तव साठि ओल, कर वंध निकारिय ॥
कीनै सुपाय तिन दंड दै, जोगि जांन छंडिय महंत ।
तलाक घल्लि तिन जुद्ध की, पांन जोरि वांनिय कहंत ॥१७७॥

दुहा

सिव विच दै कढ्ढीय मत, सिर गोला धरि सौंस ।
अरसी तौं सौं जुद्ध की, हम न धरैं फिर हौंस ॥१७८॥

छप्पै

फिर अरसी करि जंग,[2] कटा आट्टौंन सु किन्हिय ।
ऊपरहेरा भंजि, कोद कोटा[3] गढ्ढ लिन्हिय ॥

---

१. चौहान २. लिय भीडर द्वै वार ३. कोदूकोटा

आय खबर चित्तौर, भीम रावत किय कायम ।
करनवास दिय उदिक, हरख पनराज सु कवि सम ॥
अरि हर भगांन आतंक परि, सुथर हौत निज पुर जानिय ।
अरसिंघ इंद्र सुर सुभट थट, विजय कटक धर संक्रमिय ॥१७९॥

दुहा

सांवन अष्टादस संमत, वरष जांन अठईस ।
मांडलगढ़ खयरार[1] दिस, कटक हल्लि न्रप ईस ॥१८०॥

छंद पद्धरी

जयनगर चूंड जसवंत वास । समरू [2] फिरंग खचि कटक जास ॥
पलटन असंख खचि तोप जाल । आतस चरित्र मनुं प्रलयकाल ॥
हज्जार वीस दल कूंच कींन । सारूप कुंवर तिन संग दीन ॥
दर कूंच कूंच अजमेर आय । दिस दिसन हक्क मनुं प्रलय लाय ॥
इह रूप देखि दल दुसह मांन । चर खवर दीन अरसिंव रांन ॥
सुनि खवर सत्र उर प्रगटि क्रोध । गो ग्रहन वार मनुं पत्थ जोध ॥
निस अर्ध कूंच वज्जिय निसांन । नद अकसमात भट किहिन जांन ॥
रावत अजन्न न्रप पास आय । कित कूंच हौत सुध नहिन पाय ॥
किय हुकम अरसि महरांन वुल्लि । समरू सयन्न हम सीस चल्लि ॥
नदि खारि लंघि अरि उतरि पार । नहि धर्म छत्रि लखि घर विगार ॥
तिहि पर नगार वजि कूंच होत । घेरहि सुतास रवि उदय जोत ॥
कहि अजन रात्रि न्रप चढन नांहि । तुम चढहू प्रात हम अग्र जांहि ॥
मन्निय दिवांन तत्र अजन जात्र । लै कटक चढहू रावत सितात्र ॥
चढि वाज हक्कि अजमाल अेम । हनमंत अग्र गढ लंक तेम ॥
चढि सथ उमेद [3] अनभंग जोध्र । जुध्र धीर जगायत बीर ओध ॥
चढि सथ तेन सिंधिय मलंग । पीरोज रजा अबदुल अभंग ॥
गुल हाल लडाउ उभय बीर । सिंधीय कोल जुम्मौ सधीर ॥

---

१. खेराड़ २. नाम विशेप (सभवतः फ्रेंच सेनापति)
३. कोसीथल ऊमेदसींघजी रावतजी लारे छा

भल सुभट वाज जित्तिवांन धाव। सत कोस अथक सामीर पाव ॥
अधरात वजि दल वंव घोर। मावस मसांन मनु प्रेत सोर ॥
जामकिय जग्गि तुपकन प्रभाव। मनु सरित भद्द झिगन सिलाव ॥
निस रहिय सेष इक पहर नांम। अरसिंघ अजक[1] चढि वाज जांम ॥१८१॥

दुहा

समरू दल सांनिध अजन, आय छंडि हयराज।
करि सनांन हर ध्यांन किय, लीन्हिय अमल सकाज ॥१८२॥

लै आफू वंधिय सिलह, फिर हयराज चढांन।
इतैं सेंन अरसिंघ कौ, सुन्यौ नद्द नीसांन ॥१८३॥

अथ गाथा

जैह विन कर कढ्ढे सूरं, सूरं कर कढ्ढि खग्ग परियारं।
जैं हर जंपय जीहं, सीहं अजन कहि धजराजं ॥१८४॥

कवित्त छप्पै

कहुं त खग्ग कहुं संग, वहिय समरू दल ऊपर।
कहुं फुट्टे गौरीन, फुट्टि कहूं सौक बज्जि सर ॥
वज्जि अचांनक हक्क, जग्गि समरू तव पुछ्छिय।
भई कहा दल कूह, अख्खि जे मुछ्छिरू गछ्छिय ॥
फुट्टेति सेल खग तुपक सर; दल वाहर जे निक्करीय।
अरसिघ रांन आयौ कहत, तिंहि हरवल ईंहि हालकीय ॥१८५॥

दुहा

सजि फौज समरू कहत,[2] कंवर रूप वुलाय।
यह मरदांन भूप तें, भले भिराये आय ॥१८६॥

यह गज वेल दिवाल तैं, भलो भिरायौ मोहि।
टकर लिवाई चाठ तैं, कहा कहूं अव तोहि ॥१८७॥

---

१. रांन २. सजि फौज सरूप सहूं

छंद त्रोटक

चिहुं ओर अराबन झाट वहे । अरसी समरू दल घेर रहे ॥
दल बीच फिरंगन त्रास घनौ । अग डारहि घेरिय सिंघ मनौ ॥
गढ़ केहर भूप वहाद्दरयं । सुनि बत्त तिहिं छिन निक्करयं ॥
महरांन हि आंन जुहार कीयं । न्रप रीत सनातन मांन दीयं ॥
रुकि सत्रु सयंन रसत जबैं । हिय कंप अरी अन त्रास तबैं ॥
त्रय रत्त त्रयं दिन घेरि खलं । भय मांन विहाल भये हहलं ॥
समरू पय लग्गिय नम्मि सिरं । कीय तेग तुपक्क हयं निजरं ॥
विन जांन अरस्स दिवांन गुनं । हम पाय धरे भरमाय तनं ॥
तुम हिंदु दिनेस नरेसुरयं । तुम जोरग जुध दिलेसरयं ॥
तगसीर छिमा करियै चितयं । हम सेवग पायन के नितयं ॥
हम या मग फेरन पाय धरैं । सिर लींन कुरांन कसंम करैं ॥
समरू दिस उत्तर कूंच कीयं । पितु पास सरूप[1] कुमार गीयं ॥
दिल कुंद चलै मन ह्वै दुमनं । मनुं हारि जुंहारिय खोय धनं ॥
जुध जीत अरस्सि दिवांन इमं । रिन द्रोपद जित्तीय पथ्थ जिमं ॥
हय जौंहर दै गय आदरयं । दिय सीख नरेस वहादरयं ॥
किय कूंच दिवांन सुदेस दिसं । रवि छद्दि हयं रज पैं उरसं ॥१८८॥

कवित्त छप्पै

कितक दिवस अंतरह, फिरत महरांन देस महि ।
नयर जाजपुर दिसहि, भये मुकांम चमूं कहि ॥
तुच्छ सत्थ बिनधरक, रमत म्रगया बन सज्झह ।
तव अजीत[2] ध्रंम हारि, कपट आदरि मन मज्झह ॥
तिहिं करि सलांम हय पिट्ठ रखि, सेल बाहि भग्गिय निलज्ज ।
अन सावधांन अरसिंघ कौं, या बिध जंबुक चूक सज्ज ॥१८९॥

दुहा

चूक चूक कथ श्रवन सुनि, भजत दुसह निहारि ।
हय हक्किय कीकै अडर, सिलह काटि खग झारि ॥१९०॥

---

१. सरूपस्पंघजी लार छा, गोपालदासजी समरू री लार नहीं २. हाड़ा

कवित्त

भई हक्क सुनि चूक, वाज दल राज दवट्टिय।
हक्कि वाज अनपाल, तेग सिभमाल उछट्टिय॥
अनौ घाय घट घुम्मि, जोत दलराज समाइय।
गयौ जौत सिंभमाल, वंस निज रक्खि वडाइय॥
उचाय सुभट महरांन जुत, चमु निसाह हंकार भय।
रचि डौल देह पवसाक सज्जि, प्रात दाग सब सत्थ गय॥१९१॥

मनभावन सत करीय, न्हाय जल गंग निरंमल।
पासवांन पित सथ्थ, सझि श्रृंगार भलाहल॥
दीन्ह दांन दुजह हथ्थ,[1] कथ्थ मुख रांम उचारिय।
सदा रहत पित सथ्थ, सथ्थ तिहिं सुरग विचारिय॥
कुल प्रेम नेम ऊजल करीय, जगत कहत धन धन वयन।
वड़ भाग सथ्थ निज कंत कै, आग सेज सज्जी सयन॥१९२॥

हम्मीर का महाराणा बनना

कवित्त

दीन दाग त्रय दिवस, रहै तहां फौज मुकांमह।
आय उदेपुर खवर, जरी भटियांनी त्रिय तांमह॥
कृत द्वादस अह करिय, मिटिय सूतक तिहिं वासुर।
वैठि तखत हम्मीर, रांन निज वंस दिवाकर॥
ठारसौ समंत गुनतीस को, वरस तांम अख्खहिं जगत।
गज्जिय निसांन सज्जिय चमर, तव दिवांन रज्जिय तखत*॥१९३॥

दुहा

ठारह सौ गुनतीस कहि, वरस चेत विद तीज।
वैठि तखत हम्मीर तव, वय किसोर मिस भीज॥१९४॥

---

१. तिन सथ्यह पट पासवांन

* इस कवित्त में निम्नलिखित दो लाईनें तीसरी व चौथी पंक्ति के रूप में कवि द्वारा बाद में जोड़ी गयी है :—

अवर जरी छह पासवांन, सत्त करि उदयापुर।
भटियांनी कय मुनि रु, जरी निज मोही पीहर॥

धरनो भौ सिंधीन कौं, दिन चालीस अखंड।
वाघ अजन गुमनो छतर, सुभर च्यार पग मंड ॥१९५॥

वाईराज सलाह करि, भेज्यौ लखमौ साह।
ल्यायो रावत अजन कहुं, वेग उदेपुर ठाह ॥१९६॥

करि सलाह सिंधीन कौं, देवौ ठहर्‌यौ ओल।
जाहि कहै तेऊ नटै, कोऊ कढै न वोल ॥१९७॥

भीम को ओल रखना

अरिल

कैसे कूंच सिपाहन होइ। ओल काज [1] नटगे सव कोइ॥
देख समय विकटी दिलगीरह। सौच भयौ महरांन हमीरह॥१९८॥

वंधव सौच लखौ निज जादिन। वय षट वरष भीम कहि ता दिन॥
मैं सिंधीन ओल महि जैंहूं। समाधांन करि हौं तव अैंहूं॥१९९॥

कवित्त छप्पै

थप्पिय पीठ हमीर, मात निज पिट्ठ सु थप्पिय।
भीम ओल करि त्यार, अजन रावत संग अप्पिय॥
झाली मात जि वार, पूत दै उर कर गढ्ढिय।
दस हजार सिंधीन, सहर वाहर तव कढ्ढिय॥
दर कूंच कूंच संग भीम लै, आय चित्तौर मुकांम किय।
तलहट्टिय रख्खि डेरा त दिन, भीम फौज सांमिल रहिय॥२००॥

कितक दिवस अंतरह, आय फिर वहर अमाइय।
तापगीर तिहि जात, माध पाटैल जमाइय॥
दस हजार संग सेन, डंड मंगिय वर जौरिय।
सुनत भीम यह वत्त, कोप करि सथ्थ निहौरिय॥
सिंधीन हुकम सिर पर धरिय, वंव वज्जि सज्जिय सिलह।
आयुध वंध भट उल्लसिय, तई कीन पख्खर तुरह॥२०१॥

---

१. जान

छंद पद्धरी

करि सिलह अंग पट वर्ष भींम । मनु किष्न कंस सिर कौप हींम ।।
मप रिप काज सिहाय कौसिक मुनिंद । धनुबांन सज्जि मनु रांमचंद ।।
इह भांत भीम लघु वय अभंग । दादो प्रताप पितु आरसिंघ ।।
सभ्भ सिलह सेन सिंधी सिपाह । मनु स्यांम घटा भद्दव सराह ।।
उत वहर सज्जि दल तो वखांन । मनु प्रलयकाल पावक समांन ।।
धज फरकि सेन दुव निकट आय । छुटि तोप धोम धर व्यौम छाय ।।
वजि घोर सौर छुट्टिट कुहुकबांन । सारंग मनहुं पावक उडांन ।।
चलि वाज वाज खग झाट सूर । अच्छे जवांन वर रंभ हूर ।।
फरहरत झंड मुख मार मार । झरहरत रत्त वहि तेग धार ।।
राचंत भूमि वहि श्रौंन खाल । नाचंत रिख्ख वजि तेग ताल ।।
पंखार झपट वजि गिद्ध पंख । करि सिवास सद्द जंबुक असंख ।।
जरि पाय अडिग मरहठ्ठ जोध । करि तेग वाह सिंधी सक्रोध ।।
इक वहत खग्ग हर हर उचार । इक अली अली कहि तेग झार ।।
अंकुरिय चख रस वीर मौह । वंकुरीय मुछ्छ चढि सुभट श्रौह ।।
आघात घात वजि तेग तार । मनु वज्रपात गिरवर विहार ।।
छुर मार करत गलवथ्थ लाग । मानहुं गंवार मदमत्त फाग ।।
रमि तेग झट्ट्ट रावत अजन्न । अरि अस्व होत दुव भाग तन्न ।।
पायाद वाज गजराज सुंड । वहि तेग धार हुव खंड खंड ।।
चलि रूहिर सरित भयकार भुम्मि । तर भट अपार मतवार घुम्मि ।।
हाकाल भीम परि खाग रीठ । पय चलीय सेन फिर वहर पीठ ।।
त्रय वार जुद्ध यह भंत कींन । जटाधर प्रताप रिन विजय लींन ।।२०२।।

दुहा

रावत भीम सु भीम कौं, गढ़ ऊपर पधराय ।
श्री दिवांन के महल विच, डेरे तवहिं कराय ।।२०३।।

पटा दीन्ह सिंधीन कूं, दोय वरस रहि भींम ।
चित्रकोट अरसिंघ सुत, भुज धरि विरुद कदींम ।।२०४।।

भीम सथ्थ मोहकंम कंवर, आय सलुंबर वीर।
भीम आय फिर उदयपुर, लग्गिय पाय हम्मीर ॥२०५॥

मात भ्रात मुख दरसि करि, भीम लगि जब पाय।
सीस हथ्थ धरि नैंन भरि, लीनै कंठ लगाय ॥२०६॥

हम्मीर का विवाह

अरिल

जब संमत अष्टादस जांनहू । अरु तेंतीसा वरस प्रमांनहू ॥
माह मास वदि बारस जप्पिय । लगन हमीर किसनगढ़ थप्पिय ॥२०७॥

रख्खि उदयपुर जतन काज इत । करतल सजो देलवारापत ॥
रख्खि माहाराज बाघ इहि ठाहर । करि गढ जतन बत्त जग जाहर ॥२०८॥

दुहा

बंधि मौर अरु दुल्लह बनि, चढि हमीर महारांन।
बंब बजि धज नेज खुलि, हलि केहरगढ जांन ॥२०९॥

छंद त्रोटक

उदयापुर थप्पि जतन्न गढं । बनि दुल्लह रांन हमीर चढं ॥
तिन सथ्थ चढै उमराव तुरं । कवि अख्खत नांम जिनं सुभरं ॥
चढि बंधव भीम जगाहरयं । अरसी सुत मांनहुं नाहरयं ॥
विजपाल चढे चहुवांन हयं । चढि राव सुभंक्रन जुध जयं ॥
चढि रावत मांन सु लाल सुतं । अरजुन्न[1] चढे जगतेस जुतं ॥
चढि सांग सुजाव अजन्न हयं । माहाराज अनोप चितं सुधयं ॥
विसनेस सुतं चढि भोपतयं । चढि सादल क्रीत स ओपतयं ॥
पदमेस चढे हय पीठ जबं । चहुवांन खुसाल अरोहि तबं ॥
चढि जेत पितं ध्रमयं दढयं । छतरेस गुमांन सुतं चढयं ॥
चढि प्रोहित नंद तुरंगमयं । परधांन किसोर अभंगमयं ॥

---

१. महाराजा अर्जनसींघजी राणा संग्रामसींघोत

अगरा सुत देवीयचंद सजे । तिन सथ्थ जमीत सु जोध रजे ॥
चढि धावर रूप सु कीक हयं । भुज दछ्छ नरछ्छ बिरद्द लयं ॥
पनराज चढे कविराज तुरं । जस जंपत जीह नरिंद वरं ॥
चढि सादक चंदर सिंधि दुवं । जुध भार तिनं भुज पाय धुवं ॥
अन सथ्थ चढे हय सज्ज थियं । महारांन वरात पयांन कीयं ॥
दर कूंच न कूंच कटक्क खरं । जव आय ढिगं गढ साहिपुरं ॥२१०॥

कवित्त छप्पै

सुनी खवर महाराज भीम, ऊदौत नंद जव ।
ढीकोरा[1] गढ समुख आय, पय लग्गि हमीर तव ॥
साहपुरै पधराय महल, अंदर महारांनह ।
सुमन हेम तारक उछारि, पग मंड मंडानह ॥
किय गौठ निजर हय गय वसन, रख्खि रांन आनंद दिल ।
सज्जिय वरात पायांन जव, भीमसींघ न्रप साथ चल ॥२११॥

केहर नगर नजीक, जांन पहुंची सुनि खव्वर ।
चतुर कौस सनमुख पधारि, मिलि भूप बहाद्दर ॥
कीय नोछावर निजर, भये डेरा केहरगढ़ ।
व्याह काज हमीर रांन, वंधिय मौर हथ्थि चढ़ ॥
तोरन सु वंदि गज उतरीय, नेग समप्पिय बारहट ।
आरति उतार वधाय त्रिय, रचि चौंरी गठजोर जुट ॥२१२॥

रांनी रहि वांमंग, रांन रचि आसन दच्छिन ।
जगि अगनि पढि वेद मंत्र, आहुति दिय विप्रन ॥
चव भांवरि फिरिन अग्र, भांवरि त्रि पुरष अग[2] ।
दिय न्रप कन्यादांन, सींचि हथलेव व्याह जग ॥
सुभ गीत गांन मंगल धवल, समधीपन गव गारि तव ।
रघुवंस रीत सुभ व्याह करि, परनि रांन हम्मीर जव ॥२१३॥

---

१. ढीकोला
२. कोई केछ फेरा चार फरे जन्रे स्त्री आगे रहे पछे फेरा तीन पुरुष आगे रहे ने फिरै

दुहा

आय कुंवर बिरदेस जब, मंगिय नेग कटार।
साल कटारी नेग तब, दिय हमीर छत्र धार ॥२१४॥

कवित्त छप्पै

जनवासै पधरांय, दुलह दुलहनि तिहि अवसर।
निस बित्तीय सुख मंझ, प्रात जग्गिय सु छत्रधर॥
आय कमंध प्रधांन, अरज करि गौठ तयारिय।
चढि हयराज हमीर, तांम ससुरार पधारिय॥
चोसर सु पंत न्रप तखत रचि, वांम दच्छि भट समुख तव।
हमीर भीम बाहादर न्रपत,[1] समिल बेठि जिम्मीय सु जव ॥२१५॥

छंद पद्धरी

भोजन करंत जब छत्रधार। चोकिय सु कनक मय अग्रचार॥
हिम मय सुथाल न्रप अग्र मंडि। पनवार सुभट थट अग्र छंडि॥
अत वेग फिरत जन परूसकार। अन त्रिविधि त्रिविधि पल रचि प्रकार॥
तरकार कींन विध पंच साक। रस षट सुजुक्त अ्रत मधुर पाक॥
अठ्ठार भंत भोजन अनंत। परूसार कींन अग पंत पंत॥
रोटी सु पूरिय सित भात पूंज। आचार दधि मिष्टांन गूंज॥
अरु खीर दुग्ध सीरक सुभंत। सूरे पुलाव पल नहिन अंत॥
रच्चिय अनंत भोजन प्रकार। पावहि गिनंत कवि कौन पार॥
किय जिनस बहादुर भूप सार। मांनहुं कुमेर खुट्टिय भंडार॥
अरु गारि गाय तिहि बार दास। समिधीन तर्क रस प्रगटि हास॥
महारांन रीझि सुनि गार गांन। दिय दासि नेग द्रब मोद मांन॥
न्रप सुभट कीन भोजन अघाय। मंगिय सु पछावर सुचित चाय॥
करि चलुव पांन कर्पूर लीन्ह। डेरन पधार सुख सयन कीन्ह॥
यह भंत गोठि दिन प्रत अछेह। हुव न्रपत वधत सगपन सनेह ॥२१६॥

---

१. विरद

दुहा

अेक समय बैठे सभा, वहादुर रांन हमीर।
वेठि अनुज अग्रज समुख, भीमसिंघ रिनधीर ॥२१७॥

करी वहादुर भूप तहां[1], पारख भीम अभंग।
ले लच्छिन सीसोद कुल, सुभत भीम अंग अंग ॥२१८॥

मठठ वंस सीसोद की, सव छत्रिन तें न्यार।
वहें मठठ यह भीम तन, सव देखहुं निरधार ॥२१९॥

यह भीम कोउ दिनन पच्छ, सवें सुनहुं हम कथ्थ।
सांगा जगा हमीर के, धरि हैं बिरद समथ्थ ॥२२०॥

भीमसिंघ की परख यह, करी वहादुर भूप।
सुभर अप्प पर दुहुं तरफ, देखि रहे मुख रूप ॥२२१॥

हय गय द्रव दायज दयो, यह विध भयो विवाह।
रांन हमीर विदा भये, चले उदयपुर राह ॥२२२॥

कंवर बिरद सथ्थह दये, द्वै हजार संग सेंन।
चढि पहुचावन रांन कौं, हय खुर रज छिद गेंन ॥२२३॥

अरिल

जांन कूंच दर कूंच चलाइय। नांदवेल सांनिध तव आइय।
रावत भीम खवर तव संभरि। आय समुख लगि पाय निजर करि ॥२२४॥

रावत जे उमराव मनाइय। तिनकहुं पाय हमीर लगाइय।
पाय लगे न्रप आदर अप्पिय। जिनके नांम सुकवि मुख जप्पिय ॥२२५॥

कवित्त छप्पै

लग्गि पाय सुरतांन[2] राज, अरु राव सु पातल[3]।
पय लग्गि रावत मेघ,[4] नम्मि जगपत रावत[5] भल ॥

1. तव 2. सादड़ी 3. वेदला 4. वेगूं 5. कानोड़

पतो चूंड[1] पय लग्गि, भीम बाबो[2] पय लग्गिय।
पय लगि न्रपत हमीर[3], सुरत बाबो[4] खग नग्गिय॥
पय लगि धीर[5] निजवंस नमि, साह नंदलालह[6] सुकहि।
मोजियरांम[7] एकौ[8] विजौ[9], इतै पाय लगि कुरब लहि॥२२६॥

दुहा

नाहरगिर तिहि निस रहिय. प्रात कूंच किय रांन[10]।
नगर प्रवेस अनंद हुव, दूधमेह वरखांन॥२२७॥

खुलि कंकन कुलदेव पय, लग्गिय रांन हमीर।
लग्गि चरन निज मात कै, रवि कुल रीत सुधीर॥२२८॥

कवित्त छप्पै

फिर हंमीर महारांन, चढिव गिर नाहर आइय।
नाथदवारह आय, तेग न्रप भीम बंधाइय॥
आय खवर तिहि समय, जात राघव गढ़ कुंभल।
चढि हमीर माहारांन, आय रींछेर जुट्टि दल॥
बग्गिय सुतेग गजबोह तब, छुटि राघव पय पिठ्ठ फरि।
हम्मीर पय जय आय फिर, दल मुकाम गढबोर करि॥२२९॥

दुहा

प्रात जगि हंमीर न्रप, करि सनांन सुचि अंग।
चुत्रवाह दरसन करिय, कर जुटि नमि उतमंग॥२३०॥

जय जुगाद रख्खन सुप्रभ, भारथ पारथ मांन।
च्यार भुजा धरि ध्यांन उर, अस्तुति करिय दिवांन॥२३१॥

---

१. आंवेट २. बागोर ३. वनैड़ा ४. महुवै
५. हमीरगढ़ राणावत ६. देवपुरा
७. बोल्या ८. बोल्या ९. साह वजैस्यंघजी नैणावटी
१०. बिरद सीख दिय रांन

श्री चतुर्भुज स्तुति

छंद भुजंगी

ॐ ऊंकार रूपं नमौ आदि ईसं । नमौ कारनं विस्वधातारमीसं ॥
निराकार निर्लेपयं तो नमस्तं । सु आकार क्रेता नमौ कंज हस्तं ॥
नमौ आदिवाराहयं चारवाहं । सनंकादिकं जग्य वेदं सराहं ॥
कपिल्लं नमौ दत्तत्रेयं सकामं । नमस्ते रिषभं ध्रुवं व्रंदनामं ॥
नमस्ते नरं नारयेनं प्रथूनं । नमौ मछ्छं कछ्छं कृतं रूप दूनं ॥
हयंग्रीव रूपं नमौ नारसिंघं । नमौ वामनं हंस वौधं प्रसंगं ॥
नमस्ते हरिसींधु तारवांनं । नमौ रूप मन्वंतरं इंद्र मांनं ॥
नमौ वैद धानंतरं रोग नासं । नमौ वेदव्यासं पुरानं प्रकासं ॥
दुजं घोर रूपं नमौ फर्सरांमं । नमौ रांमचंद्रं न्रपं नीत धांमं ॥
नमौ कृष्णराधा वरं वासुदेवं । नमौ बुद्ध रूपं दया जांन भेवं ॥
नमौ तूं कलंकं हरि हौनहारं । नमौ रूप चौवीस चौवाह धारं ॥
नकारं अकारं अपारं नपारं । नधारं अधारं विचारं प्रचारं ॥
न रंगं न अंगं न संगं न ढंगं । नवंगं न लंगं न भगं प्रसंगं ॥
न मुख्खं न चक्खं न भक्खं न भुख्खं । पुरख्खं न पख्खं न सुख्खं न दुख्खं ॥
न गेहं न देहं न रेहं न नेहं । प्रमेहं न लेहं अछेहं न छेहं ॥
सचूप न चूपं अभूपं न भूपं । सरूपं कुरूपं न रूपं अरूपं ॥
अधीरं न धीरं न नीरं समीरं । अमीरं फकीरं न भीरं अभीरं ॥
न घात न जात न मातं न तातं । चतुर्बाह सौ तूं सुयंभू स्वगातं ॥
भयौ रांम तूं रावनं लंक भानं । तूं ही नारसिंघं अगं कंस हानं ॥
भयौ तूं वराहं रदं भू उधारी । तूं ही मछ्छ कछ्छं समुद्रं विहारी ॥
भयौ वामन तूं वलं वंधि जंगं । दुजं रांम यो तूं कीन छत्री अभंगं ॥
हन्यौ कंस कृष्ण ह्वै च्यार वाहं । तूं ही बुद्धं रूपं दया ध्रंम चाहं ॥
किलकी तूं ही ईस भू हौनहारं । तूं ही आदि अंतं जगतं अधारं ॥
भुजा च्यार रूपं नमौ स्यांमरंगं । गदा पद्मयं संख चक्रं धरंगं ॥
सिरं सुंदरं पघ्घ सौहैं किलग्गी । जगा जोत छत्रं नगं सोभ जग्गी ॥
उठौ सुंदरं पीत फैंटौ विमौहैं । हजारं सुरंगं दुवं पाय सौहैं ॥
करं हस्त सोभं उरं मुक्तिहारं । मनो मेर जाह्नवी सोभधारं ॥

लसैं खग्ग बामंग दछ्छं कटारं । स फूलं भुजं सफ्फरं रंग चारं ।।
सुभै चिबुकं हीर की तेज अैसौ । गिरं अस्त मानूं उदैं सुक्र जैसौ ।।
छरी हस्त अग्रं धरी सौभ पायं । खलं दंड दंड़ सुदासं सिहायं ।।
करैं सेव पायं रमा गंग चेरी । महाराज रख्खौ जगं लाज मेरी ।।
बिनै की हमीरं सुमत्तं प्रकासौ । यहैं रूप मेरै ह्रदै कंज वासौ ।।२३२।।

दुहा

करि सतूति परदछ्छ फिरि, हय गय भेंट करांन ।
बिदा भये चत्रबाह तें, चलै उदयपुर रांन ।।२३३।।

कवित्त छप्पै

आय उदयपुर रांन, सीख दिन्हिय उमरावन ।
करत राज हंमीर, विलसि सुख समय सुभावन ।।
ठारह सौ चौंतीस, वरस मगसर कहि मासह ।
आखेटक हम्मीर. चढिय करि चित्त हुलासह ।।
सारंग देख हय तें उतरि, पीठ चल्लि लिय तुपक करि ।
उडि रजक बंदूक फुट्टिट, हथ्थ लग्गि माछह विखरि ।।२३४।।

दुहा

हौनहार नांहिन मिटत, कीनैं कौटि उपाय ।
हौनहार वलवांन बस, हरि विधहु म्रत पाय ।।२३५।।

कवित्त छप्पै

साठि सहंस सुत सगर, कपिल क्रौधानल दग्गिय ।
परिय कन्ह अघ उदर, संग लिछमन उर लग्गिय ।।
अभिमन पारथ जियत, पाय म्रत भारथ इंदर ।
न्रपत परीछत श्राप, सहंस भग भये[1] पुरंदर ।।
भीषंम सिखंडि कर पाय म्रत, कालकूट संकर घुटत ।
कीजै अनेक प्राकार तऊ, हौनहार नांहिन मिटत ।।२३६।।

---

१. देह

आय सवें भट निकट, रांन हम्मीर उठाइय ।
वैठि तांम सुखपाल, महल इंदर पधराइय ।।
वोलि तांम जरराह, घाय पाटा वंधांनह ।
कितक दिवस अंतरह, घाय फटि लेख प्रमांनह ।।
म्रत पाय रांन हम्मीर तव, पोस सुदि अठम दिनह ।
खवास तीन सत कीन सथ्थ; दाग दीन सांमिल तिनह[1] ।।२३७।।

भीम का महाराणा बनना

दुहा

चौंतीसा नम पोस सुद, सात घटी गय रत्त ।
सुभ मुहरत दिन्हिय गनिक, रज्जिय भीम तखत ।।२३८।।

छंद पद्धरी

सुभ घरीय अख्ख दुजराज जांम । वैठे सु तखत पर भीम तांम ।।
रज हेम दंड धरि सीस छत्र । ढुरि चमर सीस दौ पष विचित्र ।।
प्रोहित पधारि तव रांमराय । किय तिलक सीस मन मौद पाय ।।
इकलिंगदास परधांन जांम । सिर नम्मि आयकिय निजर तांम ।।
सजमाल राज करतल अभंग । रावत अजन जितवांन जंग ।।
वावो सुवाघ अर्जुन सधीर । वावो अनौप समरंग वीर ।।
वावो सु जेतसिंभू सुजाव । अभमाल नंद सादल गिनाव ।।
चहुवांन छतौ[2] संभरि नरिंद । अन सुभट वैठि निज थल मसंद ।।
धावर कविंद दुज पासवांन । पनराज[3] सुकवि तिह वेर आंन ।।
विरदात भीम कहि कवित्त तांम[4] । सभ मांझ सुभि सव ठांम ठांम ।।
खवास वंटि कर्पूर पांन । वाहुरिय सुभट दिय भीम मांन ।।
अंतहपुर अंदर न्रप पधार । पय मात नम्मि आसिष उचार ।।
फिर आय महल अंदर नरेस । विहरत सु इच्छ दस वर्ष वेस।।२३९।।

---

१. मात पित कुल धन तिनह
२. छत्रसिंह चौहान
३. आढा पनजी हाजर था सो केहणा
४. ये तुवां अठै नै ही सो नरसिंघदास मेल

दुहा

भीम ज दिन रज्जिय तखत, गज्जिय तदिन चित्तौर।
सांग हमूं जगतेस के, यह ब्रद ओप चहौर ॥२४०॥

अड़तीसा अरु चेत विद, तेरस सुतिथ प्रमांन।
राघव रावत लैंन कैं, चलै देवगढ़ रांन ॥२४१॥

त दिन दुरग चित्तौर तैं, आये रावत भींम।
पाय लगे निज़ सथ्थ लैं, अैते सुभट कदींम ॥२४२॥

कवित्त छप्पै

आय राज सुरतांन, राव परताप अगज्जिय।
रावत विजमल आय, भीम रावत ब्रद सज्जिय ॥
आये केसव राव, तदिन तरवार वंधाइय।
पातलपति आंमेट, जगो रावत व्रिरदाइय ॥
रावत खुमांन सुत लाल कहि, वाघ अजो अरु भीम त्रय।
हम्मीर भीम न्रपराज दुव, अजन लग्गि महारांन पय ॥२४३॥

चूंडावत सरदार, रूप कीकौ धाभाइय।
अरु परताप प्रधांन, अवर भट सजि बिरदाइय[1] ॥
अग्र जाय अरजुन्न, मिलिव राघव समझाइ।
चढि राघव हयराज, समुख चव कौसह आइय ॥
पय लगि भीम किन्हिय निजर, पधराये गढ़ मांझ तव।
उछारि कसुम पयमंड रचि, भीम महल मझ आय जव ॥२४४॥

करि नौछावर निजर, मज्झ रावर पधराइय।
राजलोक करि निजर, सवैं मन मौद बढाइय ॥
जैवन गौठ तय्यार भई, तव महल पधारिय।
भइ पंत सव सुभर बैठि, रूचि अन्न अहारिय ॥
हय गय सुबसन भूषन निजर, करि राघव सथ कूंच किय।
दर कूंच कूंच हलि कटक जब, नांदवेल मुकांम किय ॥२४५॥

---

१. आढा पनजी दुलजी लार हा

दुहा

भीमसींघ सब सुभट जुत, नांदवेल बसि ग्रांम।
निकसी माता बोदरी, रहि त्रय मास मुकांम ॥२४६॥

आय उदयपुर कुसल जुत, मात पाय लगि रांन।
रागगरं मंगल धवल, घर घर हरख सु भांन ॥२४७॥

कवित्त छप्पै

तदिन सलुंबर ब्याह, भीम रावत पुत्रीय रचि।
नूंत भीम दीवांन, काज पायांन तंबु खचि ॥
चढि तुरंग करि कूंच, सहर तैं निकट पधारिय।
रावत कौस चियार, रांन सनमुख पवधारिय ॥
पगमंड मंडि पधराय न्रप, निजर पुहप हिम उच्छरिय।
जांनहू तड़ाग पीछोर तिहि, बाग मांझ डेरा करिय ॥२४८॥

नित भोजन करि रांन, गौठ मुकांम पहूंचत।
सबन नूंध करि जतन, कितहू उंनत नहि दीसत ॥
आय बरात चियार, कुंवर राजर सु बीकपुर।
ईडर कंवर भवांन, कंवर परवत रतनागर ॥
कहि कलो कंवर चोथौ दुलह, वंदि तौरन चव जांन चढ़ि।
गठजोर दुलह त्रिय चौंरि थित, परनि वेद दुज मंत्र पढ़ि ॥२४९॥

लिय कन्यावल भीम, सींचि हथलेव दुलह उठि।
निज निज डेरन आय, बंधि मन जोर गंठ पुटि ॥
भइय गोठ महमांनि, गारि समधीन गवावत।
दासि हास रस भेद, तरक रचि सगन रिझावत ॥
पटव्रंन अपार चहुं चक्क जुरि, देस देस तैं सुकवि हलि।
कीय भीम हुकंम तिन दैंन रिध, मनहुं कुमेर भंडार खुलि ॥२५०॥

सोलह मुद्रा रूप, बंधि नांमौ तिहि बारह।
नदी सलुंबर तरफ, च्यार चलि रुपा धारह ॥

घट मिंडुक भरि भट्ट, त्याग मंगिय दिय ताकह ।
अेह वत्त अखियात, रही ससि सूरज साखह ।।
चारन अनेक कवि पाय द्रव, सुजस पढ़त घर मग्ग लग ।
इम ज्याग भीम रावत करिय, त्याग वंटि षटमास लग ।।२५१।।

दुहा

हय गय भूषन वसन धन, भीम निजर कीय भींम ।
भये बिदा माहारांन तव, आये तखत कदींम ।।२५२।।

दे दायज जांनै वहुरि, लै वर दुलहनि सथ्थ ।
सुधरि व्याह ध्रंम स्वांम तैं, रावत भीम समथ्थ ।।२५३।।

जिहि मंगे ताकौ दये, हय गय दरब अपार ।
भीम गह्यौ पन व्याह इक, नांहि दयो नाकार ।।२५४।।

रांन भीम उदयानयर, करत निकंटक राज ।
आव पीत ठाहर सु इक, सींह रु अज्य सकाज ।।२५५।।

ईडर का प्रथम विवाह

अथ गाथा

ठारहसै चालीसा,[1] ग्यारस थपि लगन जेठ पख असितं ।
ईडर न्रप सिवसिंघ, तिंहि तनया सगपन भीमं ।।२५६।।

छंद साटक

स्वस्त श्री उदयापुरं सुभ सुथांनेकोपमा ओपित् ।
भीमं हिंदु दिनेस जोग्यं सुहितं पत्रं सुभं ईडरात् ।।
कमधज्जं सिवसिंघ केन लिखतं जोग्यं जथा वंचनं ।
त्वां मां दीन धीया जमात थपितं सीग्रं पयं धार्यं ।।२५७।।

दुहा

करि सगाई तिहिं दिवस, अरु झल्ले नालेर ।
प्रोहित कढिय तिलक सिर, भीम तखत तिहिं वेर ।।२५८।।

---

१. गुनचाला (ईडर व्याह संमत १८३९)

लगन जेठ वदि ग्यारसह, थप्पि उठ्यो दुजराज।
नूतपत्र दिस दिसह लीय, रांन विवाह सकाज ॥२५९॥

नूतपत्र जालम पढिय, कीय माहेरा त्यार।
सथ महाराजा नाथ अरु, राज भवांन पधार ॥२६०॥

च्यार अस्व सिरपाव वहु, पन्ना[1] पांच सिरपेच।
मुत्तिय माला येक अरु, सुजरि[2] ढाल खग त्रेच ॥२६१॥

अंतहपुर पहरावनी, रुपिया वीस हजार।
उदयापुर जालंम पठीय, नतै नेह मोसार ॥२६२॥

कवित्त छप्पै

मोर वंधि माहारांन, भीम ईडरगढ़ चल्लिय।
भीम अजन राघव प्रताप, चूंडा सथ हल्लिय॥
वाबो अजन अभंग, अवर भट सथ्थ चढांनह।
वंब वजि गज पिठ्ठ, लाल झंडा फहरांनह॥
चली नाथ भांन हज्जार भट, अवर जांन निज घर रंजय।
माहारांन उतरि हयराज तें, तीतरली[3] मुकांम भय ॥२६३॥

रावत वौलि अजन्न, भीम वगसीस कीन जहं।
दिय वैठक अरु कुरव, पालसौली उपर तहं॥
सोलह सुभटन मज्ज, थप्पि उमराव दीन पद।
निज कर दीनें मथ्थ, अखिव मुख स्वांमि ध्रंम हद॥
रखि तदन भीम उदयापुरह, अजन संग संजुत जसह।
महारांन भीम उषा समय, जांन कूंच ईडर दिसह ॥२६४॥

---

१. हीरा
२. कटारी का नाम विशेष
३. तीतरडी

दुहा

किय वड़गांम मुकांम तत्र, रांन भीम की जांन ।
आय समुख तहां पय लगे, सुत सिवसिंघ भवांन ।।२६५।।

भयौ कूंच गिरपुर हुतैं, समुख आय सिवसाह ।
लगि भीम पय संग चलै, सथ्थ द्वै सहंस सिपाह ।।२६६।।

ईडरगढ मग जांन चलि, वंबि घोर घहरांन ।
सेस थरथ्थर अरि हहर, फहर फील नीसांन ।।२६७।।

छंद अर्द्धनराज

चढै तुरंग रानयं । मनौ उचास भांनयं ।।
नगार घोर वज्जयं । मनौ कि मेघ गज्जयं ।।
गिरं प्रसाद फुट्टयं । समां सिंभु खुट्टयं ।।
चढे भरं तुरंगयं । सनाह सज्जि अंगयं ।।
भुजं अजांन सिंभयं । डिगंत आभ थंभयं ।।
उडे तुरं सपख्खरं । कि लग्गि पंख भख्खरं ।।
भरंत पाय डांनयं । तुजी ग्रहै अगानयं ।।
करंत आव जावयं । सनीर मछ्छ भावयं ।।
फिरत काव कथ्थयं । अलात वाल हथ्थयं ।।
दिखाव धाव अक्करी । कि छेल हथ्थ चक्करी ।।
दिपै तनं उडंड के । मनौ करी विसुंड के ।।
सुसाज सोभ अछ्छयं । मनौ कि रंभ कछ्छयं ।।
सुहेम साज धारयं । सुहागिनं सिंगारयं ।।
लगाय गज्ज गाहयं । सुमेर गंग चाहयं ।।
वजंत पाय घुघ्घरं । कि रंभ नृत्यि नूपरं ।।
लगान राग तुछ्छयं । उडंत द्वै वरछ्छयं ।।
अगं पयं चपेटयं । उडैं सफील फेटयं ।।
सुजात गात तोलयं । तिलख्ख लख्ख मोलयं ।।
चले गयंद अग्गयं । गिरं कि चल्लि पग्गयं ।।
बरन स्यांम सुंदरं । सनीर भद्द बद्दरं ।।
रंगे भसुंड रंगयं । स इंद्र चाप ढंगयं ।।

उरद्ध पौगरं कतं । कि नाग लेत मारुतं ॥
जरीन भूल धारकं । निसा कि स्यांम तारकं ॥
सिरी रजत्त सीसयं । कि विंध भांन दीसयं ॥
भरें कपौल दांनयं । कि वारदं अखांनयं ॥
ठनंकि घंट घुघ्घरं । अखा कि सद्द दद्दुरं ॥
दु ओर ह्वै त रायलं । चलैं तवै खिजायलं ॥
करंत खू न मग्गयं । अरंत पग्गं पग्गयं ॥
सरोस ह्वै महावतं । कुलंत ते धता धतं ॥
चरखि कू त धारयं । खिजात साट मारयं ॥
तुरंग अग्र दिठ्ठयं । चलंत तांम निठ्ठयं ॥
गुसेल राह रूत्तयं । मनौ कि विंध पूतयं ॥
लगंत पाय लंगरं । अतांन वंधि संगरं ॥
सुने विरद कांनयं । तवै मंगल गांनयं ॥
कतार हल्लि सुत्तरं । अनेक भार उप्परं ॥
पहार अंग जोपयं । सलित्त पिठ्ठ ओपयं ॥
वजंत मुख नेसयं । चरस्स लाव भेसयं ॥
मदी अकास मौनयं । हटै न पंथ गौनयं ॥
सजोर मद्द लागयं । भरंत मुख भागयं ॥
वजंत कोह गाजयं । कि सुथ्थरी अवाजयं ॥
अनेक ऊंट चल्लयं । मनौ पहार हल्लयं ॥
हजार वैल हल्लयं । रसत्त पीठ घल्लयं ॥
हली मगं वहीरयं । मनौ कि नद्द नीरयं ॥
अमग्ग मग्ग क्रंमयं । नगेस सीस नंमयं ॥
उडी खुरं गिरद्दयं । दिनेस तेज मुद्दयं ॥
कहैं वहीर सावति । कविंद वुद्ध नाइति ॥
दिवांन भीम दुल्लहं । विवाह काज उल्लहं ॥
रुकंमिनी विवाहनं । चले मनौ कि मोहनं ॥
चले विवाह जांनकी । मनौ कि रांम धांनकी ॥
मगं जिनं निहारयं । ति प्रांन देह वारयं ॥
अहैं वरं रही अखी । वरस कोटि हे सखी ॥

कलस ग्रांम ग्रांमयं । ग्रवंत निध तांमयं ।।
मुखं वलाय लेतयं । प्रजं ग्रसीस देतयं ।।
सुजांन यौं नरेस्वरं । समीप ग्राय ईडरं ।।२६८।।

कवित्त छप्पै

ग्राय न्रपत सिवसिंघ, समुख चवकौस दिवांनह ।
मिलीय भीम सिवसिंघ, सिवौ मिल सुभट सवांनह ।।
करि नौछावर निजर, चढै हय उभय भूप जव ।
गये सदन सिवसिंघ, ग्राय मुक्कांम भीम तव ।।
सव सुभट ग्रप्प डेरन क्रमिय, गय लंगर हयवाल परि ।
कोठार खुट्टि पुग्गिय जिनस,[1] सार कमंध सिवसिंघ करि ।।२६९।।

दुहा

लगन समय ग्राइय जवह, सभ्भिय भीम श्रंगार ।
मनुं ग्रनंग रति व्याह कजि, धरिय अंग ग्रवतार ।।२७०।।

छंद पद्धरी

पवसाक सज्जि दुल्लह ग्रभंग । मनुं वीर रूप तन धरि ग्रनंग ।।
सज्जीय सुरंग तन वसन सोह । मनुं जगत चखन रचि वूंह मोह ।।
सिरपेच पाघ दुति धरि सुभंत । परिषद कि सूर ग्रठ ग्रह रजंत ।।
लर मुक्त पेच तर इम सुभाय । विच्च कंज भौम रिखपंत भाय ।।
सिर मौर वंधि न्रपवर ग्रतूल । रज गुन कि पिठ्ठ रिखपंत फूल ।।
खुल पच्छ रूप तुररेन तार । मनुं भौम उर्ध रवि कर प्रचार ।।
श्रुति सूक्ति नंद दु तरफ सुढार । चव सुक्र भौम जुग श्रवन द्वार ।।
रजि मुक्तमाल उर पर सुभाय[2] । मनुं मेर श्रंग सुरसरि सुभाय ।।
प्रतमाल दच्छि किरमाल वांम । मनुं समिल वीर श्रंगार कांम ।।
प्रथु पिठ्ठ सफर सिलहट सुभंत । मनुं वीरखंभ सींहक रजंत ।।
कर कमल पौंच पौंचन[3] ग्रनौप । मनुं कमल पिठ्ठ रवि विठ्ठ ग्रौप ।।

---

१. रसत २. वनाय ३. हीरन

टोडर पयांन हिममय अचंभ । लंगर कि लाज मनु जेत खंभ ।।
पवसाक सज्झि गज चढि दिवांन । अयराय मनहुं सुरराज मांन ।।
सत्र सुभट सज्जि सौरह वत्तीस । मनु देव वृंद त्रय कोटि तीस ।।
चढि चल्लि संग धावर प्रधांन । प्रोहित सुभट कवि पासवांन ।।
निसि ठांम ठांम जग्गिय हलाल । संजीव जरीय हिम गिर सुढाल ।।
छवि दुलह दिखन चख रूंम रूंम । मनु प्रगटि भ्रंम्ह दीपास्त्र भूंम ।।
छुटि मग्ग मग्ग आतस चरित्र । महताव कोठि तरूवांन तत्र ।।
गजराज वाज सिंदन पयाद । चलि सरित भद्द मनु अप्रमाद ।।
वाजार मग्ग जव आय जांन । छिव लिखत वाल चढि चढि अटांन ।।
रंध्रन लखात चख चपल तींन । मनु ऊछटि मच्छ जल गहर कींन ।।
जारीन वांम मुख दरस देत । मनु अेक नेक ससि लिखन हेत ।।
करतल समुख्ख धरि निरखि वांम । मनु कमल सेज हिमकर सुभांम ।।
लखि दुलह नगर[1] चख लाभ लैहि । जुग कोटि अमर आसीस दैहि ।।
त्रीय कलस वंदिग्रह ग्रहन द्वार । तिन देत द्रव्य न्रप वर अपार ।।
वरपंत भीम हिम रूप मेह । इम आय द्वार कमध्वज अछेह ।।
न्रप द्वार आय तोरन सु वंदि । वारहट्ठ नेग अप्पिय गयंद ।।
प्रोहित सु कीन आरति नरेस । फिर सासु कीन आरति सुदेस ।।
अंतहपुर प्रवेसिय अरसि नंद । फिर कलस वंदि ग्रहराज हिंद ।।
मंडप सुछाय तहां आद्र वंस । हिमतार कुंभ चंवरी प्रसंस ।।
अरनी अगन सुभ जिग्न काज । अरु अगर समिध आनीय सकाज ।।
घनसार घिरत आहूति देन । दुज वेद पाठि हाजर सवेन ।।
चख लग्न समय दुजराज चींन । आंनहु कुंवरि न्रप हुकम दींन ।।
सो सुनत श्रवन दासिय अपार । दोरी सु लैन दुलहनि सिंगार ।।२७१।।

दुहा

पुत्र मात वर्णन करत, लजित सुचित परकास ।
नारि अंग उपम इती, वर्नि दिखावत तास ।।२७२।।

---

१. प्रयोजनवती उपादांन लछना नगर के नैत्र नहीं संभवै नगरवासी देखते है अैसें अन्यार्थ संक्रमित लछना मूल ध्वनि

छंद अर्द्धनराज

करयो कुमार मंजनं । सुरेह नैंन अंजनं ।।
तिलक्क भाल सोहयं । कि चंद भौम मोहयं ।।
सुरंग पट आवरी । गिरा कि मेर ऊतरी ।।
गुंथे सुवेनि कुंतलं । कि नाग चंद संमिलं ।।
छुटी अलक्क रागिनी । कि पूजि सिभ नागिनी ।।
तटंक सौभ कांन द्वै । कि चंद्र घेरि भांन द्वै ।।
धनंष कांम भौंहयं । सु नैंन बांन सौंहयं ।।
सुभंत नाक दीपकं । सपत्त चित्त जीपकं ।।
प्रवाल विंव छद्दनं । सुबज्र लच्छि रद्दनं ।।
सुकंबु कंठ राजई । सु स्यांम पोत छाजयी ।।
कुचं सु कंच्युवं तनं । सभ्रूे कि सिभ जूसनं ।।
सुमुत्तिमाल औ दिखं । सुमेर पारसं रिखं ।।
उरं समुद्र साजयं । सिवाल रोम राजयं ।।
सुनाभि तुच्छ लंकयं । कि सिंघ आथ रंकयं ।।
सुभंत जंग पिंडयं । कि रंम्भ फील सूंडयं ।।
सु पांन पाय कंजनं । सु पीव भांन रंजनं ।।
नखं रतं सुढारकं । रजंत चंद तारकं ।।
सुमुख बेनयं बुलं । सुनंत लजि कौकिलं ।।
लीये सुलाज चित्तायं । जिहाज पात व्रत्तायं ।।
कि लच्छि कोवतारयं । गिरा कि देह धारयं ।।
इति उपम्म नार की । कवि तुच्छं उचार की ।।
सुगत पाय सज्जयं । गयंद हंस लज्जयं ।।
सवै तनं उचारयं । गिरा न पाय पारयं ।।
पदंम गंध डम्मरं । भ्रमंत सीस भम्मरं ।।
धरंत मंद पै अपं । पधारि वीच मंडपं ।।
सुजोर गंठ रंगयं । थिरप्पि बांम अंगयं ।।
उचार वेद साखयं । सुगोत्र चार भाखयं ।।
अहूति हौम जग्गयं । कपूर घ्रत लग्गयं ।।२७३।।

छंद भुजंगी

अनेकं सुनारी करैं गीत गांन । अनेकं सु त्रंगं[1] अनंद घुरांन ॥
भये उच्छवं मंगलं ठांम ठांम । गवै गार गीतां त्रियं धांम धांम ॥
पताका बंधे तोरनं द्वार द्वारं । लगो भीम इंद्रं झरं रूप धारं ॥
समं भीम दीवांन कामं सदेहं । न आयौ इसौ बींद कामंध ग्रेहं ॥
कीये दोय नैनं विघं सीस रीसै । तनं प्रांन वारै धनं दै असीसै ॥
पहलै त्रयं भांवरी बींद अग्गं । चवं भांवरी दुलहि अग मग्गं[2] ॥
सिवंसिघ आये न्रपं जोरि हथ्थं । कीयं कन्यका अर्पनं भीम हथ्थं ॥
सवै आय साला हथलेव वारी । दई नेग श्रीरांन साला कटारी ॥
तजी चोरियं हथलेगं छुडांन । नरं नार दोनं जनीवास आंन ॥
रती कांम जैसें रमे रंगरातं । महूरतं भ्रम्हं उठे सु प्रभातं ॥२७४॥

कवित्त छप्पै

उठ्ठि प्रात माहारांन भीम, सिव पूजन किन्हिय ।
कथा श्रवन किय रांमचंद्र, गो विप्रन दिन्हिय ॥
आये कंवर भवांन, बहन निज ग्रह पधराइय ।
जेंवन गोठ दिवांन, कमंध सिवसिंघ बुलाइय ॥
श्रंगार अंग दुल्लह सजिय, बाजराज मंगिय चढन[3] ॥
भृत सचिव सुकवि पसवांन सथ, कमंध ग्रेह आइय तदिन ॥२७५॥

गादिय भीम विराज, न्रपत सिवसाह बयठ्ठिय ।
ढिग रावर सिवसिंघ, अवर भृत पंगत थट्टिय ॥
कायथ सुकवि बयठ्ठि, वैठि धावर पसवांनह ।
भिन्न पंति परधांन विप्र, वैठीय जुत मांनह ॥
बाजोठ थाल न्रप अग्र धरि, बाज अग्र रज्जिय सवन ।
षटरस तयार बहु भंत जे, हुकंम कीन परूसार तिन ॥२७६॥

---

१. बंजं
२. प्रथम तो अगाड़ी बींद पाछैं बींदणी रहे अर तीन फेरा फिरै पछै च्यार फेरा फिरै जद बींदणी तो आगै रहै नै बींद पाछै रहै ऊं सात फेरा फिरै
३. जदिन

दुहा

रोटी प्रथम परूसि पुन, भात स्वेत मन रंज।
खाजा मोदक फिर धरे, जिनस अनेकत गंज ॥२७७॥

छंद साटक

अन्नं त्रेपलं त्रे घृतेक सुधठं साकं कथं पंचकं।
मिष्टं अम्लं कसाय तिक्त कटुकं लोनं छअेसं रसं॥
भख्खं भोज्यं सुलेह्य चोष्य सुभयं भुक्त प्रकारं चवं।
भोजनं भंत अठ्ठार कीन रुचिरं सार्दूल सिंभं न्रपं ॥२७८॥

छंद त्रौटक

विधनेक करे भख चातुरयं। परूसार जनं फिर आतुरयं॥
बहु भंत पुलाव रु सोहितयं। बहु मूलि मुसाल घ्रतं जुतयं॥
पल भंत अनेक सवाद किय। सकि सूल सिरं घ्रत भार दियं॥
करि मोकल छूटक मंस जहां। रंग जोस पलं चख ताल तहां॥
उडि मंस मुसालन डंबरयं। महमाय सुगंध न्रपत भयं॥
वहु मंस सुगंध सु फेलि घरं। छुटि जेन ध्रमं तिन धीर उरं॥
मिसटांन अनेक प्रकार बनं। घलि सक्कर ता बिच च्यार गुनं॥
रचि साक अनेक सु कंद जमी। भट जोम्हि सराहत स्वाद अमी॥
पय औढिय गौ महिषी रुचिरं। मनु देवन अम्रत आय घरं॥
दध अेक अनेक प्रकार करे। मिल जीरक लौंन सुघट्टि वरे॥
अनपार अचार परूस जहां। चरकास खटास अभूत तहां॥
गवि दासीय गार सगार थयं। रसहास भयं समिधी सथयं॥
अनखट जिनस्स पुरूस थटं। सुभ नौ जिखराज कपाट खुटं॥
भट भोजन कीन्ह त्रपत थयं। तव स्वच्छ सवाद सु छछ्छ लयं॥
लीय रांन तव कर आचवनं। कर ध्रौ दिय पांन कपूर जनं॥
भट सीख मुकाम सु आय सवै। महारांन प्रवेस महल्ल जवै॥
चव जांम विलस्सि अनंद करं। मनु रांम सिया मिथलेस घरं॥
घरियार वजै न्रप कै गजरं। जगि भीम दिवांन वडे फजरं॥
हयराज चढै ग्रहराज दुतं। कीय आय मुकांमसु नित्त क्रतं॥२७९॥

कवित्त छप्पै

मिल चारन भट थट्ट, तिनै द्रव त्याग समप्पिय।
जै कवि रुपग पढे, तिन्है गज बाज सु अप्पिय ।।
दे दे सबद उचार, कबहु मुख नाट न भख्खिय।
जस हाक जग भये, सूर ससिहर तिहि सख्खिय ।।
द्रव लख्ख बाज गज करभ दै, सुजस सब्द दिन प्रत लहिय।
चित धीर भीम दत हुलस लखि, यह हम्मीर आलंम कहिय ।।२८०।।

करि सिवसाह प्रसन्न, सीख मंगिय माहारांनह।
दै दायज हय गय सु द्रबि, पहराय सबांनह ।।
हाथ जोरि कमधज्ज, कही हम चाल बिलम्मिय।
तुम कुल हिंदु दिनेस, लज्ज रखन सब भुम्मिय ।।
तुम सम न कोय वल्लभ हमह, नित चित रखहुं अधिक हित।
वंदगी कुछ न हमतैं बनी, खिमा करहुं चित्तौर पति ।।२८१।।

दुहा

अरु दीन्ही अख कुंवरि हम, चरन वंदगी कज्ज।
वेटी दै वेटो लयो, ताकी तुम कहुं लज्ज ।।२८२।।

कही भीम कर जोरि तब, आदि सगे तुम भूप।
हम विलस्यो भुल्लें न कहूं, सुख तुम ग्रह अनुरूप ।।२८३।।

ईडरगढ़ तैं प्रसन ह्वै, कीनौ जांन पयांन।
किय मुकांम लगि भीम पय, देवगदाधर आंन ।।२८४।।

करग जोरि डंडोत करि, फिरि परदच्छ महीस।
किय अस्तुति मन वच करम, भीम नम्मि निज सीस ।।२८५।।

देवगदाधर स्तुति

छंद नराज

लघु गुरु प्रमांन पाय जांनि सोर अच्छरं।
नराज छंद नाग अख्खि पंखिराज अगरं ।।

नमो गदाधरं अनादि रख्खि लज्ज भीषमं।
नमो अराधि मौरधज्ज सज्जि नैम संजमं ।।
नमो नृसिंघ रूप नूप भंजि हेम कसिपं।
नमो धराऊ धार कज्जि सज्जि सूकरं बपं ।।
नमो वलं छलं विराट दो हथट्ट वावनं।
नखं प्रहार भ्रम्हइंड आंन गंग पावनं ।।
नमो नरेस रांमचंद दंद भंजि रावनं।
नमो द्विजेस कीन छत्रि अेक बीस आवनं ।।
नमो प्रसंस बोध हंस हंस तेज अंगयं।
नमो त्रिभंग कै विधंस जेन कंस जंगयं ।।
व्रजं सिंधार सूंड धार वारइंद्र आवनं।
नखं अधार अद्रि तार ग्वार गो वचावनं ।।
नमो गुपाल गौप ग्वाल रख्खि आगझाल तैं।
कर्‌यो अदोष नीर कढ्ढि नथ्थि नाग काल तैं ।।
नमो अघं वकं सकट्ट पूतना प्रहारकं।
हयं खरं व्रषभ व्योम भोम दैंत मारकं ।।
नमो दिखाय मात तैं त्रिलोक मुख मज्झयं।
नमो बंधाय ऊखलं उधार जख्ख कज्जयं ।।
नमो विलास रासकं प्रकास नंद नंदयं।
नमो सुप्रेम राधिका मुखं चकोर चंदयं ।।
नमो पयज्ज भीम पाल साल मांन गंजनं।
रूकमिनी प्रतंग रख्खि चैंदिसेन भंजनं ।।
नमो द्रुजोध खंडनं अखंड जोध भारथं।
नमो सिहाय पंड कीन्ह सज्झि पथ्थ स्वारथं ।।
नमो सुदाम अथ्थ देन मागधं विनासनं।
सहश्र वीस आठ से वंधे न्रपं निकासनं ।।
नमो दया विथार भूमि रूप धार वुद्धयं।
नमो कलंक हौन ईस आवतार सुद्धयं ।।
नमो अरूप रूप लछ्छि भूप रूप त्रैगुनं।
नमो अरेह लेह ग्रेह प्रेह देहयं बिनं ।।

नमौ मराल रूप रुद्र मानसं बिहारनं ।
नमौ गदा पदंम संख चक्र पांन धारनं ।।
नमौ अजात मात तात भ्रात गात हीनयं ।
नमौ अपख्ख मुख्ख चख्ख दिख्खनं नवीनयं ।।
नमौ उप्राज पाल भंजि तीन रूप रज्जय ।
नमौ रगत स्यांम सेत आतमान सज्जयं ।।
नमौ रटंत देव दैंत सिख्ख जख्ख रख्खयं ।
नमौ निगंम ते अगंम नेत नत भख्खयं ।।
दिवांन भीम पाय नम्मि यौं सतूति उच्चरं ।
नमौ लज्जा रहावनं सु देव तौं गदाधरं ।।२८६।।

कवित्त छप्पै

चतुर पांन नीरद समांन, तन सोभ प्रकासत ।
गदा पदंम अरु संख चक्र, आयुध अभ्यासत ।।
मुकट सीस सुभ सोभ दिस, कटि तट पीतंवर ।
उर विसाल भृगु लत सुढाल, मुख प्रफुल्लि कंजवर ।।
कटि सिंघ गंग पय खलहलत, देवगदाधर सुख करन ।
जामन मरंन अरि भंज भय, जय जय जय असरन सरन ।।२८७।।

आय दिवांन मुकाम, जीमि भोजन सुख किन्हिय ।
प्रात कुंच हय चढिय, सीख रावर कहुं दिन्हिय ।।
गिरपुर रावर जाय, समुख चवकोस सु आइय ।
करि नौछावर निजर, रांन गिरपुर पधराइय ।।
मुकाम तांम डुंगरपुरह, पधराये दीवांन जव ।
पग मंड परठि उछरि सुमन, कीय नौछावर निजर तव ।।२८८।।

गिरपुर भीम दिवांन, महल विच तखत विराजिय ।
रावर सिवो प्रसंन, रागरंग ऊछव साजिय ।।
फिर अंतहपुर वीच, रांन रावर पधराये ।
निजर लीन तहां करि जुहार, फिर बाहर आये ।।

सुभ भंत गोठ रावर करिय, सव उमराव बुलाय तहं।
जिम्हीय सुगोठ रुचि रुचि सबन, लीन्ह पांन कर्पूर जहं ।।२८९।।

भाव भगत सिवसाह कींन, दीय रांन मांन घन।
कीय रावर तव निजर, हथ्थि हय बसन रु भूषन ।।
भई बिदा हय चढि दिवांन, मुकांम सिधारिय।
साथ आय सिवसींघ, कोस चव आनंद धारिय ।।
दीय भीमसिंघ रावर जवह, हय गय भुषन बसंन सह।
सिवसिंघ गये गिरपुर सुग्रह, आय भीम उदयापुरह ।।२९०।।

वधाई वर्णन

दुहा

जांन आय सुनि दूत मुख, मात वधाई दीन।
उडि सोव्रंन ग्रहराज मनुं, नगर हरख सव[1] कीन ।।२९१।।

सगन जगन द्वै चरन में, जानि छंद ऊधौर।
द्वादस मत्ता अंत लवु, कहति सुकवि सिरमौर ।।२९२।।

छंद उद्धौर

सुनि सहर चर मुख वात । जव निकट आय बरात ।।
वहुमुलि वसन निकार । सिंगारि हाट वाजार ।।
घर घर सुऊछव जांन । सुभ गीत मंगल गांन ।।
सुभ[2] कलस तोरन थंडि । चित्रांम ग्रह ग्रह मंडि ।।
मुख दुलह देखहि प्रात । उर हर्ष नहिन समात ।।
निस निकरि उग्गीय भांन । आनंद वज्जि निसांन ।।
प्रावेस समय दुजेस । किय अरज अग्र नरेस ।।
तव हुकम कीय महारांन । हय गयन करहु पलांन ।।
तिहि बेर धारक आय । दै बौल गज विरदाय ।।
सामाध रिष जिम दिठ्ठ । तव पलक खोलीय निठ्ठ ।।

---

१. इम २. अरु

रज पीठ आव्रत ताय । मनुं अद्रि खंखल छाय ॥
तल डांन झरत अपार । मनुं झरन भूधर वार ॥
भिभरूत्त भूत समांन । मनुं दूत जम भयवांन ॥
कै अस्त विंध गिरंद । सनि राह मनुं कुहु नंद ॥
जोगिंद्र राज सुभेस । कै स्यांम रूप गनेस ॥
तन कुंभ मानहुं बीर । कै जलद भद्द सनीर ॥
आमूल व्रच्छ उडाय । रठठंत लंगर पाय ॥
अरि गढन भंज किवार । दल रूप नीर पगार ॥
वैठाय छल करि निठ्ठ । तिन चढिय धारक पिठ्ठ ॥
द्रढ वंधि कंठ किलाव । गिर अस्त गंग प्रभाव ॥
कर थप्पि कुंभ सुढाल । रज झारि पिठ्ठ रूमाल ॥
अन्हवाय उजल आव । तन तेल करि गरकाब ॥
आंवलन बोह चढाय । गिर स्यांम मनुं घन छाय ॥
जंगाल सिंदुर रेखि । वनि सुमुख सीस विसेखि ॥
रित मनहुं पावस रंग । खचि इंद्र चाप निहंग ॥
सिकलात मुखमल साज । जरदोज झूल समाज ॥
हिमतार हवद सु मंड । कसि पीठ कै चव डंड ॥
सिर किहुं न झंड प्रकास । मनुं व्यंध फूलि पलास ॥
किहुं पीठ नोबत सोभ । गिर सीस गजि घन लोभ ॥
सजि हेम नगमय साज । गनराज रूप विराज ॥
दारोग पायग जांम । हय सज्जि अखिय तांम ॥
मुख रांम हुकम सुनंत । पंडून हय करि तंत ॥
अेलांन दीन तुखार । थपि कंध झूल उतार ॥
अन्हवाय उज्जल नीर । गुंथि व्याल ओप सरीर ॥
फवि चहर व्याल सलंव । मनुं नाग छौंन विलंव ॥
रंग रंग आरिय सोह । जर पाट सूत विमोह ॥
किय सद्रिढ पेटिय जांम । सिर धर अवाइय तांम ॥
धरि पिठ्ठ जीन सुरंग । दुहुं ओर खंचि दुतंग ॥
गज गाह लुंव परठ्ठि । मनुं गंग भारथि दिठ्ठि ॥
हिम जोट दुमचिय सज्जि । खचि जेरवंध विरज्जि ॥

हालर किलायद लग्गि । हिम रूप अति छवि जग्गि ॥
किलंगी रु तुररा धार । मनु धूम्र सिर तप धार ॥
वज पाय झंझर हेम । मनु नृत्य अच्छरि जेम ॥
कुलभांन द्वार हुलास । मनु आय कुल सपतास ॥
करि उछ्ट चपल तुखार । मनु मच्छ नीर मंझार ॥
घट कच्छ अरब खंधार । जल पथ्थ बलख बुखार ॥
तुरकी रु रेबिय केक । चिनाह रोम अनेक ॥
थलभी मराठ धरास । द्रावर तिलंग हु वास ॥
हालार कठ्ठ पंचाल । हय अंग बंग सुढाल ॥
सु भखे तसं भव तेह । वहु मौल मौलिय जेह ॥
अरु ब्रह्म छत्रिय जात । अग पाय गिजवर गात ॥
तिन पसम मुखमल फाव । आरीस सम तन आब ॥
सम ओप बावन गौंन । जिहि पाय मद्धि त्रिभौंन ॥
नीले कुमेत सुरंग । नुकरे संजाव सुढंग ॥
अरु स्याह जांन समंद । जे कुलह अवलख ज्यंद[1] ॥
कहि सुरख लख्खिय केक । वुरदे हंस विसेक ॥
फुलवार महुवे बाज । सिंदली कनूहे साज ॥
अठ मंगल पंच कलांन । कै स्यांमकर्न सुजांन ॥
पट सूत केहरि पेखि । गुलदार जरदे लेखि ॥
नहि यार रंग तुरंग । सुभ लच्छि चाट सुचंग ॥
जे वांन सम सुभ धाप । अग ग्रीव घल्लत चाप ॥
कनवत केतक पंख । अखि पुत्र गिलका अंख ॥
नलि जंत्र कढ्ढि सजोर । नखबज ऊलटि कटोर ॥
प्रथु भाल कंध सुचाप । तुछ पिट्ठ मुझत माप ॥
रजि चाक पुठ्ठहु पिंड । सुर पुंछ तुछ्छिय डंड ॥
उर ठहत फील सफील । विन सुंड गय मनु डील ॥
पय फिरत आतुर आछ । मनु कीन कुलट कटाछ ॥
उडि राग धारक चंप । मनु डार सारंग झंप ॥

---

१. जिद

नहि करत हौड समीर । सुध घाप मांनहुं तीर ॥
उडि चुटक हाथ वगांन । मनुं गुटक सिघ समांन ॥
यौ अंग तेज दिखात । मनुं गंठ वंधिय वात ॥
थरकंत थारिय मज्झ । मनुं न्रत्य अच्छरि सज्झ ॥
फिर गोलकुंड सुभात । मनुं भ्रांमि चक्र अलात ॥
चलि राग वाग अचांन । मनुं सोर आग लगांन ॥
मुख साच वगु तुलि जंद । मनुं खंचि कार समंद ॥
पवसाक सज्जि दिवांन । हयराज पीठ चढांन ॥
यह उपम सुकवि प्रकास । मनुं सूर चढि सपतास ॥
ऊंचास[1] मनुं सुरयंद । मनुं गरूर रोहि गुविंद ॥
वजि वंव नाद प्रमोद । सहनाय वंधि सुरोद ॥
सव सुभट सज्जि पवसाक । जुत हरख चढि अयराक ॥
सुभ सगुन कीन पयांन । पुर उदय प्रविसत जांन ॥
आनंद नगर अपार । अरु हर्ष राजदवार ॥
वंदि कलस पग पग भूप । तिन देत द्रव्य अनूप ॥
जव समय महुरत आय । प्रावेस महल सुभाय ॥
हय उतरि भीम दिवांन । नमि मात चर्न सुजांन ॥
कुलदेव पायन लग्गि । उदमाद सव तन जग्गि ॥
फिर महल आय नरेस । सुख सयन कीन विसेस ॥२९३॥

दुहा

रात विलसि आनंद मय, प्रात जग्गि महारांन ।
नित क्रत किय सिंभू अरचि, जथा इच्छ विहरांन ॥२९४॥

रावत भीम को मनाना

कवित्त छप्पै

ठारह सौ संमत, वरस चालीस वि आगर ।
लेंन काज माहाराज, भीम चलै मग भींडर ॥

1. उच्चैःश्रवा

आय कटक दर कूंच, गांम खैरौदे संनिध।
तहां सिघ उधांन वीच, उठ्ठिय असंख क्रुध ।।
सुन रांन सिघ हक्किय तुरंग, आय सबैं भट तिहिं जगन।
परवेख रहे कर तरफ चव, मनहुं सिंघ बरवा अगिन ।।२९५।।

भीम अग्र तिहिं समय, नांम भगवंत अभंगम[1]।
मुंछ भ्रुहाटी मिलित, धारिय भाटी संमुख क्रम ।।
तेग उछटि भुज दंड, सिंघ परचंड हकारिय।
लथबथ्थ भय उभय, सीस हरि असि वरडारिय ।।
अहि जांनु बदन हो फरि दुछर, भीम तांम हक्किय सुभर।
जमदढ्ढ सेल किरवांन झट, केहरि मारि पछारि धर ।।२९६।।

दुहा

समुख आय दीवांन कै, मौहकंम कौस चियार।
करि नौछावर लग्गि पय, करि श्रीरांन जुहार ।।२९७।।

छंद पद्धरी

पधराय रांन भींडर मझार । हिम सुमन वर्ष पय मंझधार ।।
महारांन आय तव महल मंझ । गादी वयट्ठ रवि तेज पुंज ।।
ह्वै नौछावर तहां नजर होय । आनंद धवल मंगल सजोय ।।
पय लगि कुंवर फतमाल जोर । पय लगि सांग नाहर अरोर ।।
अंतहपुर फिर श्रीरांन आय । ह्वै निजर निछावर हर्ष पाय ।।
फिर गोठ जेव बाहर पधारि । अनेक भंत सुभ जिनस सारि ।।
कर धौय पांन कर्पूर दीन । मुकांम आय सुख सयन कीन[2] ।।
तिहिं समय आय जालंम अभंग । हज्जार पंच तिहिं लोक संग ।।
लगि पाय रांन पाधर नरेस । दीय कुरब भींम सुध मन विसेस ।।
मौहकम मनाय आगमच भीम । श्रीय रांन तखत आये कदीम ।।
प्रावेस महल करि हिंदुनाथ । दीय सीख राज जालम समाथ ।।
क्रत भीम उदयपुर तखत राज । आनंद ऊछह सव पुर विराज ।।२९८।।

---

१. भगोन सिंघ भाटी, पलाना
२. हय गय सुवसन हिम निजर कीन

दुहा

ठारह सौ चालीस त्रय, जांनहु वरष सुभाय।
भीम अजुन धीरत पतो, सादल अजो सु आय ॥२९९॥

किसन बिलास मुकाम करि, लगे पाय दीवांन।
राज काज कछु चित दुमन, गांधी सोम करांन ॥३००॥

कोटा तें आये इतें, चलि मौहकंम माहाराज।
पंच सहंस संग सैंन तिन, सात सुभट सामाज ॥३०१॥

कवित्त छप्पै

झाला राज भवांन, आय सूरजमल अम्मर।
हिरदावत माहाराज नाथ, जेसाह महाभर॥
सगरावत सोवन धरीर, माहाराज रांन कुल।
दयानाथ वगसी सुमंत, भट सत्त महावल॥
करि राज क्रिया जालंम पठय, छल करि सोम वुलाय तिन।
श्रीरांन पाय लगि मांन दिय, सुनिय भीम अर्जुन तदिन ॥३०२॥

रावत भीम रूसाय, कींन मुकांम पुलांनह।
सुनि श्री वाईराज, करिय सिर कोप दिवांनह॥
तू सिसु मति नादांन, स्वांम धरमी भट कढ्ढत।
जिन रखि तुव पितुराज, कपट ता ऊपर पढ्ढत॥
कर जोरि भीम सिर नम्मि कहि, मात हुकम सिर ऊपरह।
तुम चित होय सौ कीजियैं, छल न करूं जटधर सिरह ॥३०३॥

तद श्री वाईराज, भीम मंनावन चल्लिय[1]।
महाज्यांन मंगवाय, अवर भट संगह हल्लिय॥
आय पुलांनै ग्रांम, भीम अरजुन वुलाइय।
दै आदर अरु वचन, पाय माहारांन लगाइय॥
करि कूंच लीन रावत सथह, अेकलिंग मुकांम कीय।
करि वंदवस्त दरसन कजह, रांन मात सिव सिर नमीय ॥३०४॥

---

१. रावतजी ने मनावा पुलांणे श्री वाईजीराज पधारा श्री दुरवार साथै नहीं।

श्री एकलिंग स्तुति

छंद विराज

नमौ अेकरिंगं । ध्रतं मथ्थ गंगं ॥
नमौ पंच माथं । नमौ सूल हाथं ॥
नमौ नागहारी । नमौ ब्रम्हचारी ॥
नमौ गौरि ईसं । नमौ गंग सीसं ॥
चखं अगि ज्वालं । नमौ चंद्र भालं ॥
नमौ मुंडमाली । नमौ वज्रताली ॥
नमौ धूर जट्टी । अघं औघ कट्टी ॥
नमौ देव वांमं । नमौ दाह कांमं ॥
नमौ नील पीतं । नमौ स्यांम सीतं ॥
नमौ लोहितेनं । नमौ मिश्रयेनं ॥
नमौ सिभवायं । नमस्ते सिवायं ॥
नमौ भीम नाथं । नमस्ते प्रमाथं ॥
भयं भंजि दुख्खं । नमौ च्यारि मुख्खं ॥
वरं दास दैनं । नमौ तीन नैनं ॥
नमौ रूप घोरं । नमस्ते अघोरं ॥
विरागं समुद्रं । नमौ रूप रूद्रं ॥
नदं सिंगि साजं । नमौ सिद्धराजं ॥
नमस्ते अनादं । नमौ अंत आदं ॥
दिखं ज्याग ध्वंसी । नमौ भू प्रसंसी ॥
गर्जं त्रैपुरायं । नमौ अंध धायं ॥
भसंमा कहंतं । नमौ गौरि कंतं ॥
अमोहं समोहं । नमौ नंदि रोहं ॥
जनं सत्रु नस्तं । नमस्तं नमस्तं ॥२०५॥

छंद साटक

(अपभ्रंस भाषा)

शीर्षं गंग भुजंगहार सुधृतं रूंडाल माला उरं ।
चंदं भाल मदाल खाल बसनं कापाल सूलं करं ॥

फर्सं मृग्वर भीतिहस्तदधतं हेमाद्रिअंगं निभं।
श्री गिरजानन कंज मध्व मधुपं जै जै सिवं संकरं।।३०६।।

अंघ्रि पद्मदसास्य अर्चनतया तत्प्राप्य लंकापुरं।
यत्सेव्यं पदव्यिधने समगमत कौवेरयं जक्षिराटं।।
वाणं वाहुवलं प्रसिद्धं प्रवलं माहेस्वरं अर्चनातं।
सोयं सिभ समे प्रसन्न वरदा भूयात् सिग्रविभुं।।३०७।।

छंद सालिनी

भवति जगविभूती भूतयं अंगरागात्[1]।
अखिल अवनिसिधि प्राप्यते सिद्धिराजात्।।
मन सरव मनोर्थ पूज्यते कांमदाहात्।
विलयतु जग वाधा संकरा संकर स्यात्।।३०८।।

छंद त्रिभंगी

प्रथम दहमत्ता अठ्ठ सुमत्ता फिर अठ्ठमत्ता षटमत्ता।
द्वात्रिसत मत्ता पय प्रति भत्ता अंत सुभत्ता गुरु जुत्ता।।
खगराज अगानं नाग वखानं लच्छन जानं छंदानं।
तिरभंगी छंदं अखिख कविंदं सेखर चंदं गुन गानं।।
जय जय इकलिंगं दाह अनंगं धरि उत्तमंगं जल गंगं।
पटखाल मतंगं आवृत अंगं गिरजा रंगं भखि भ्रंगं।।
उर उरग सुढारं सोभित हारं नंदि सवारं जटधारं।
कर वांन प्रहारं कोपि अपारं कीन्ह सिंघारं त्रिपुरारं।।
म्रत्युंजय नांमं दाहक कांमं गिरजा भांमं गुन ग्रांमं।
निज आतम रांमं जोग जगामं धरि उर ठांमं घनस्यामं।।
जय सिव अवधूतं तन अद्भूतं परिगह भूतं आहिसुतं[2]।
सारद जीमूतं छवि तन पूतं दिखि डर हूतं जमदूतं।।
जय आदि जटेसं दिग पट भेसं तात गनेसं गिरजेसं।

---

१. सोलमो तत्तो वोले सो बिजन छै, परो काढ्यां छंद तुटै घटै नहीं
२. नाग उपवीत

दुतिया नखतेसं भाल रजेसं उर अगेसं भुजंगेसं ।।
जय जय चऊ मुख्खं सानंद रुख्खं विजया भख्खं रत अख्खं ।
लोचन हुत भख्खं परम पुरख्खं विगत विपख्खं सुख दुख्खं ।।
सिर धारन आकं पांन किनाकं डमरू डाकं बर वाकं ।
वजि वीरन हाकं अरि पर धाकं दिख जिगसाकं सुनि नाकं ।।
रावल वप्पानं अचि पयानं छत्र धरानं वरदानं ।
सीसौद कुलानं थिर थरपानं चित्रगढानं सम पानं ।।
कर डमर सुवाजं सूल समाजं जोग जिहाजं तप भ्राजं ।
यह भीम सकाजं थिर करि राजं श्रीसिधराज रख्खि लाजं ।।३०९।।

दुहा

अेकलिंग दरसन करै, लै आसिका सु आय ।
लगे वाईराज तव, व्यंधवासिनी[1] पाय ।।३१०।।

श्री देवी व्यंध्यवासनी स्तुति

छंद भुजंगी

ऊवंकार रूपी नमौ मात अंवे । नमौ वासिनी व्यंध्य वाहं प्रलंवे ।।
नमौ तूं सवित्री नमौ विष्णु माया । नमौ बांम अंगा सिवं जौग माया[2] ।।
नमौ तूं कुमारी नमस्ते नवौढ़ा । नमौ मध्यवेसं नमौ रूप प्रौढ़ा ।।
नमौ स्वकीया प्रकीया वार नारी । त्रिया रूप सर्वं नमौ मूल धारी ।।
नमौ ब्रांम्हनी खित्रीया वेस बांमा । नमौ सूद्रनी यावनी रूप रांमा ।।
नमौ रोहिनी तूं रना रूप रज्जं । नमौ नारसिंघी कुमारी सकज्जं ।।
नमौ माधवी भैरवी रिद्धि सिद्धि । नमौ जख्खिनो वारुनी निन्द्य बुद्धि ।।
नमौ नैरती वायवी यांमिनीयं । नमौ तूं स्वहायं सिवं भामिनीयं ।।
नमौ भ्रंम्ह माया अधं नागिनीयं । नमौ रूप भूपं ग्रहं रागिनीयं ।।
नमौ किन्नरी पंछ्छिनी रछ्छिनीयं । नमौ संभवी भख्खनी रख्खिनीयं ।।
नमौ सारस्वती रसन्ना निवासं । नमौ लज्ज रूपी जगं नैंन वासं ।।

---

१. विंधवासिनी २. धाया

नमो गंध्रवी विध्यरी राग रंगी । नमो घट्ट वट्ट निजी दास संगी ।।
नमो पूरवं मां कुमक्ष्या स्वरूपी[1] । नमो कंगुरावासिनी ज्वाल रूपी ।।
नमो पच्छिमं कोयला हींगुलाजं । नमो दच्छिनं भू तुलज्जा सकाजं ।।
नमो मध्ययं वास आरास अंवा । नमो अर्बुदं अर्बुदा दास भंबा ।।
नमो नागिनेची रवेची करंनी । नमो पूरना अंन दुख्ख हरंनी ।।
नमो कालका टाल आकाल कालं । नमो धरन्नी अर्ध राकेस भालं ।।
नमो खग्गनी सूलिनी संखिनीयं । नमो वज्रनी चापिनी यंखिनीयं ।।
नमो परिघायं भुसंडी द्धानं । नमो जंमदढ्ढा फरीसेल बानं ।।
नमस्ते ऋतं सत्रु प्राहार रन्नी । नमस्ते जनं वंधनी धार अन्नी ।।
तुंही भृंम रूपी स्रजैं श्रष्टि सारैं । तुंही विष्णु रूपी दया धार पारैं ।।
तुंही रुद्र रूपी करै अंतनासं । तुंही भांन रूपी करैं भू प्रकासं ।।
प्रथी आप तेजं तुंही भू समीरं । तुंही पंच तत्वं प्रपंचं सरीरं ।।
तुंही बुद्ध रूपी हिरदै प्रकासैं । तुंही वाग वांनी रसन्ना निवासैं ।।
तुंही देह तूं नेह तूं ग्रेह चंडी । तुंही सत्त तूं जत्त तूं मत्त मंडी ।।
तुंही कांम तूं भांम तूं धांम छाया । तुंही जीव तूं सीव तूं मोह माया ।।
तुंही रूप सीता हरैं रांम वाधा । व्रजं कंन्ह मौहैं तुं ही रूप राधा ।।
अलछ्छी न लछ्छी मनुछ्छी न रछ्छी । विपछ्छी न पछ्छी न जछ्छी अपछ्छी ।।
अनंगी न अंगी कुरंगी न रंगी । पनंगी न नंगी न भ्रंगी मतंगी ।।
अदोषा न दोषा सरोषा विदोषा । अघोषा न घोषा सो तोषा न तोषा ।।
मुनि दान चंदा दुरि दान इंदा । फुनिंदा न सिंघा गिरिंदा गुत्रिंदा ।।
अतोली न तोली अवोली न वोली । अमोली न मोली अनोली न नोली ।।
अधीरा न धीरा समीरा न वीरा । अभीरा न भीरा वजीरा न मीरा ।।
तुंही निर्गुनं सर्गुनं तें प्रकास्यौ । निराकार आकार में तैं विलास्यौ ।।
मधु कीट माहिष्प तैं ही विडार्यौ । चखं धूम्र तैं चंड मुंडं सिघार्यौ ।
तुंही रत्त वीजं हृत्यौ सोखि रत्तं । हते सुंभ निस्संभ तैं ही सगत्तं ।।
निराकार मज्झै पहल्लै समांनी । भही अच्छिरा रूप दूजै भवांनी ।।
स्वरं चोरसं विजनं तीस तीनं । अनुस्वारं विसर्ग प्लुतं प्रवीनं ।।
गजं कुंभ रूपं जिव्हा मूल मंडी । भई वावनं मात्रका रूप चंडी ।।
करे च्यार खांनां नरं नार दूनं । असी च्यार लख्खं कीयं जीव जूनं ।।

---

१. मगुरूपी

विचैं सक्ति रूपी विराजी सुठाहं । गई तूं तहं[1] सव्य ते आगिदाहं ॥
तुंही भू प्रकासै सवै जंत्र मंत्रं । क्रीया रूप मूली तुंही देवि तंत्रं ॥
तुंही रोग तूं वेद तूं सिभरांनी । तुंही औसधं रूप राजै भवांनी ॥
अनंतंरमालजं कामं स्वहायं । रितं अच्छिरं तो[2] मनुं वेद गायं ॥
नमौ वासिनी व्यिध श्रीमात अंवै । पयं सेव्य मांनं अहं रख्ख उवै ॥
करी मात[3] अस्तुत पै लग्गि जामं । दियं आसिकं देवि आनंद तामं ॥३११॥

दुहा

विंधवासनी तैं निकट, सुंदर आश्रम जांन ।
रिष हरीत कै पाय तव, लग्गी मात दिवांन ॥३१२॥

हारीत रिष स्तुति

छंद पद्धरी

जय रिप हरीत अघहर्नहार । जय ब्रंह्म रूप ब्रंह्मावतार ॥
जय जटाजूट सिरधर रखेस । जय ध्यांन मग्न भूतेस भेस ॥
जय अेकलिंग आराध्यवांन । जय दांत सांत्त रस साध्यवांन ॥
जय सत्त रूप रज तम विहींन । जय मौह क्रोध लोभह अलींन ॥
जय भस्मराग दिग वसन अंग । सुक रूप जयति जेता अनंग ॥
जय जोगराज वर्जित उपाध । जय जोग भेद अष्टांग साध ॥
जम नियम रु आसन प्रनायांम । प्रत्या अहार ध्यांनह सुस्यांम ॥
धारना सप्त अष्टम समाध । जय जोग सिंधु पेरक अगाध ॥
जय धारवांन जग्यौपवित्र । जय अवुधि तिमिर नासक सुमित्र ॥
तप सिंधु जयति भस्मंगराग । जय जगत वोध सुभ धर्म माग ॥
वर देन जयति वापा नरेस । सीसौद वंस गुरु जय रिखेस ॥
हारोत नांम जय जय मुनिंद । अस्तुति कीन जननी नरिंद ॥
अ तिक सु लींन मुक्काम आय । आनंद कींह अहनिस सुभाय ॥३१३॥

---

१. तनं २. रितं रंग तोयं
३. वाईजीराज

दुहा

उठि मुकांम कयलासपुर, आय सहेलिन बाग।
सहित भीम अर्जुन सबन, बाइराज बड भाग ।।३१४।।

कवित्त छप्पै

करि सलाह जिह ठोर, भूमि कारज जग जांनिय।
रांन बहुत समझाय, भीम अरजुन नहीं मांनिय ।।
सोम कपट दिल रख्खि, भीम अरजुन चढ चल्लिय।
गये दुरग चीत्तौर,[1] रांन निज महलन हल्लिय ।।
अरि तिमिर उलूक निस नसविलत, अगह गहत ना मत अनम ।
दीवांन भीम राजस करत, जेठ भांन मध्यांन सम ।।३१५।।

मेहता मालदास का मारा जाना

अरिल

ठारह सै चालीस चियारं। वरस मास मृगसह सु विचारं।।
मालदास महतौ तिंहि वेरं। विदा कीयो दिस जावद नेरं।।३१६।।

इतने विदा कीये उमरावं। मांन पांन दै दै सरपावं।।
पति सादरी राव सुरतानं। सजा सुतन कहि राजकलानं।।३१७।।

जालम रावत[2] सूर सधीरं। महाराज दौलत वरवीरं।
रानावत कुसीयाल अभंग। सादक अरु पंज दिय संग।।३१८।।

कवित्त छप्पै

मालदास हकि कटक, कूंच दर कूंच अपारह।
जावद आय अभंग, अमल कीनौ तिंहि वारह ।।
अरु उतकूं परगना, लीन जे अमल करानह।

---

१. सोमजी गांधी ने चुकवां पछे रावतजी चित्तौड़ गिया।
२. कानोड़

जंगी जैत वजाय, फेरि निज ख्वाइंद आंनह ॥
निज धर जमाय अरि सरद करि, पर धर ऊपर दाव दिय।
यह धुंध भयो मालव धरा, सुनत प्रजालि मरहट्ठ जिय ॥३१९॥

प्रवल सैंन दस सहंस, सजि उत मरहठ्ठ धाइय।
मालदास सुन इतें, समुख निज सैंन चलाइय ॥
मिटीय वीच अरि हर, नगीच झंडा फहरांनह।
सुनत तोप आवाज, सुनत जंगी नदकांनह ॥
करि स्नांन दान रवि उगमन, सझि सिलह अरु अनिय वट।
वस क्रोध रात कढ्ढियसु निठ्ठ, प्रात तेग वज्जिय झपट ॥३२०॥

छंद पद्धरी

दुव दलन मज्झ वजि तोप रीठ। जगी कि सिंभ मनु प्रलय दीठ ॥
दुव तरफ परत गोले सुमार। मनु वूठि मेह अंगार धार ॥
हयराज हक्कि तव मालदास। निज हथ्थ उनग्गिय चंद्रहास ॥
अरि सीस खग्ग हथ्थवाह होय। यक घाव हौत तन टूक दोय ॥
निज स्वांमि काज तन भंजिसूर। गो मालदास वयकूंट सूर ॥
सुरतांन राज भुज झल्लि सार। अरि भंजि तेग समहर अपार ॥
भिद कूंत तीर तन रूंम रूंम। तव पर्‌यौ खेत घट घाय घुंम ॥
कढि तेग राज समहर कलांन। मनु लग्गि विपंन ज्वाला क्रसांन ॥
इम करत घाव सजमाल नंद। मनु भिरत पथ्थ दुरजोध व्रंद ॥
लगि लोह सुतन लिलाट भार। मनु जटित समुख रजवट जुहार ॥
जगतेस नंद जालम अभंग। जुट्टीय अभंग अरि सेन जंग ॥
घन भंगि सत्रु तन लग्गि घाय। परि खेत लीन अरिहर ऊंचाय ॥
दोलतसिंघ अरि तेग खंड। भुज डंड विरद निज वंस मंड[1] ॥
कुसियालसिंघ निज रांन वंस। लिय तेग व्यौम रवि करि प्रसंस ॥
रिन उदध वीचकिय वुंद वाज। तन खंड खंड करि लौंन काज ॥
अरि टूक टूक करि ईस जोत। गो अमर लोक सिर चमर होत ॥
सादक अरु पंजू जुट्टि सार। सिंधी सिपाह रजवाट धार ॥
सादक नि लोह पंजू सुघाय। अरि हस्त भंज जिहि भिस्त पाय ॥

१. कटि सिलह घाव भुज विरद मंड

जावद सु छंडि लरि दीपचंद । लै तोप गयौ निज ग्रह उकंद ॥
यह भांत वित्ति भारथ भरांन । देवत गत सब जग सिरांन ॥
तिहिं लंघवांन सामर्थ कौंन । तिहिं इच्छ होय सौ अवस्य हौंन ॥३२१॥

माधव-जालम का उदियापुर आना

कवित्त छप्पै

ठारह सौ चालीस आठ, जांनहु संमछ्छर ।
पावस सांवन मास, घटा घहरात निरभ्भर ॥
माधव जालंम समिल, पंथ उदीयापुर झम्मीय ॥
माधव नाहर गिर मुकांम, दल कीध[1] अनम्मीय ॥
जालंम पठाय उदीयापुरह, तिह चौगांन मुकांम किय ।
लगि रांन पाय अरदास करि, वारि गाह बाहर खचिय ॥३२२॥

दुहा

सोरह मत्ता चरन प्रति, गुरु लघु नियमन नांहि ।
पिंगल ग्याता कवि कहत, छंद वियख्खरि जांहि ॥३२३॥

छंद वैअख्खरी

जालंम राज अरज सुन कांनं । नाहर गिरि किय भीम पयांनं ।
हुकंम साह सिवदासह अख्खिय । उदयापुर सतिदासह थप्पिय ॥
साथ लिये जयचंद अभंगह । रखन रेह स्वांम ध्रंम रंगह ॥
वज्जिय प्रात नगार निनादं । नभ धर धुज्जि गिरं परसादं ॥
भीम चढे हयराज अनम्मिय । रवि रज ढंकि सेस सिर नम्मिय ॥
सथ्थ चढे भट सज्जि सकांमं । अख्खत तास पात मुख नांमं ॥
पति सादरी राज सुरतांनं । रावत वीजो संभरी रांनं ॥
रूपवंस मोहकम माहाराजं । काको बखत सज्झि पित काजं ॥
सगतावत रावत सगरांमं । बावो कहिं सालम वरियांमं ॥
रावत जोरो सझि रिन रावत । सुत गोपाल विसन सांगावत ॥
दै करतल भुज भार दिवांनं । उदियापुर रख्खे कलियांनं ॥
काको भैरव सजि अगजीयं । बाघ सुजाव स्वांम ध्रंम रजीयं ॥

---

1 कीन्ह

सजि काको भगवंत अभंगह । रावत अेकलिंग पथ जंगह ।।
वावो दौलतसिंघ महाब्भर । ऊदल दलौ संभरी अड्डर ।।
राणावत वखतेस अरेहं । अख मौहकम सगतावत अेहं ।।
विसन अदोत छता सुत बीरह । भीम भ्रात गोपाल सधीरह ।।
सज्जि दास मनहर भगवानं । सजीय देव रु चैंन जवानं ।।
मूंहनदास तखत सजि अंगं । सज्झिय साह दास इकलिंगं ।।
महतौ अगर संग चढ़ चल्लिय । साह किसौर रोह हय हल्लिय ।।
धाभाइ चढीया पित ढालं । ऊदल फतो अवर हठुमालं ।।
चुत्रभुज पंचौली चूंडावत । रांम मसांनी स्वांम रिझावत ।।
नाथ सुरुप पंचौली नाहर । सिवदत्त व्यास गुलाब सराहर ।।[1] ।।
केसवराय नगो पटवारी । लाल गजन्न उभै जलधारी ।।
पांडे विसन जोर गहलोतं । लालौ नींक किसन विरदैतं ।।
सादक सिंधी दार जमातं । कौ भट अन्य गिनैं चढि प्रातं ।।
अन सिर वंधिय लोक अमांनं । पहु जाहर द्वै सहस पठांनं ।।
यो रजि भीम अरोहि हुबासं । मांनहु सूर चढे सपतासं ।।
चांमर होत दुओर झपट्टह । मनुं गंगा गिर मेर उपट्ट ।।
फोज जसोल भये इतमांमं । मांनहु मोर घटा घनस्यांमं ।।
केत उडी गज पीठ सुरग्गिय । मनुं गिर स्यांम निसा दव लग्गिय ।।
यौं चढि भीम दिवांन पधारिय । सिंघ गिरंद समीप सवारिय ।।
माधहि आगम भीम सु मन्निय । दूतन जाय जवैं सुध दिन्निय ।।३२४।।

दुहा

मुरधरपति विजपाल न्रप, सुत तिंहिं जालमस्यंघ ।
भागिनेय मातुल ढिगह, सुभट पंच सत संग ।।३२५ ।।

---

१. क-इसके वाद मूल ग्रन्थ में निम्न पंक्ति लिखकर वाद में काटी गई है—

'वारट भोप जसौ सिवदांनं । सुकवि तीन संग चल्लि सुजांनं' ।।

ख-पर हांशिये में निम्नलिखित नाम लिखे गये हैं

'सहीवाला नाथजी खवास नंदरांमजी केहणो'

कवित्त छप्पै

जालंम राज दिवांन भीम, नाहर गिर ल्याईय।
सुनि माधव [1] आगंम दिवांन, चढि संमुह आईय[2] ॥
दोय कोस सनमुख पधारि, माधव पय लग्गिय।
किय नौछावर कह्यौ, आज हम प्रावत भग्गिय॥
हिंदू-दिनेस चित्तौर पति, सिव सरूप जग उच्चरीय।
कहि माध करूं माहारांन कौ, हुंकम होय सौ नौकरीय ॥३२६॥

पठानों का घरना

कवित्त छप्पै

नाहर गिर महलन मुकांम, कीन्हें छत्रधारिय।
तव प्रधांन सिवदास, करे सव सज तय्यारिय॥
कितक दिवस रहि सिघकूट, चढि चल्लन अख्खिय।
द्वै दिन प्रथंम पठांन, [3] आय धरना डोढीकिय॥
दिन त्रतीय कूंच रुकि वक्कि मुख, गैर जुवां खग नग करि।
करि हल्ला समिट डोढी दिसह, अली अली मुख तें उचरि ॥३२७॥

कवित्त

जिंहि पुल अेते जोध, हुते माहारांन हजूरं।
वावो जालम वखत, साह किसौर सनूरं॥
भाटी अजब अभंग, सद्रिढ मौहकम सगतावत।
सिवदत व्यास सधीर, द्रोन समहर दरसावत॥
नरस्यिंघदास माहाराज निज, ताखौ चुंडावत तखत।
खग नगी भीम ढिग भट यते, वगी हाक जुध जिंहि वखत ॥३२८॥

सुनि निरत महारांन भीम, उर क्रोध प्रगट्टिय।
छुट्टिय संकर सिघ, रुद्रताली मनु खुट्टिय॥
कै ग्रीषम वन मांझ, मनहुं दावानल लग्गिय।
कै सिंचत घ्रत कुंभ, मनहुं जिग आग सु जग्गिय॥

---

१. पटैल २. चढि आतुर धाईय ३. पठाणां मोलक दोय सेर जंग खां, कफूर खां

दिखि अँन खुटि चित्रक कुलफ, पुंछ चंपि अहि फुंकारिय।
परि तत्त तेल जल बुंद मनुं, सोर गंज पावक परिय ॥३२९॥

छंद विराज

भयं[1] रांन कोपं । मुखं बीर ओपं ॥
फरक्के भुजांनं । चखं रत्त वांनं ॥
उरं जग्गि कोहं । मिली मूंछ भौहं ॥
कढी पांन खग्गं । मनौ आगि जग्गं ॥
चितं जंग चायं । दियं अग्ग वायं ॥
भटं हक्कि तारं । मुखं मार मारं ॥
चली तेग अैसैं । घनं वीज जैसैं ॥
इतं ऊत सथ्थं । भये लथ्थ बथ्थं ॥
बखत्तेस जुट्टं । मनौ सिंघ छुट्टं ॥
तखत्तेस सूरं । रजं मुख्ख नूरं ॥
अरि सैंन डोहं । करं लग्गि लोहं ॥
घटं घुम्मि घायं । वयंकूंट पायं ॥
ऊदेराम भाई । तहां बढ्ढि ताई ॥
जुध पै अडग्गं । करं घाव लग्गं ॥
सुतं वाघ भेरं । मनौ छुट सेरं ॥
मन्हौरं अभंगं । जुटे दूठ जंगं ॥
दलं चैंन दासं । खगं भंजि खासं ॥
अभै पै जवांनं । ईर[2] जूथ भांनं ॥
भगवांन देवं । गुपालं जुटेवं ॥
दुहू धा कराली । बजी तेग ताली ॥
समाधं सकाजं । खुटी सिधराजं ॥
उडै तेग मुंडं । मनौ चक्क पिंडं ॥
चलैं रत्त खालं । पतंग प्रनालं ॥
इकं घाय अंगं । उडै द्वै वरंगं ॥
बहैं श्रौन घट्टं । मनौ रंग मट्टं ॥
तुटैं तेग सीसं । फुले कंज दीसं ॥
जुतं वीर साथं । नचै भूतनाथं ॥३३०॥

---

१. तन २. अरि

छंद पद्धरी

माहारांन भीम सुभटन हकार । वगि तेग भाट मुख मार मार ।।
सुनि जुद्ध हाक सव हक्कि सैंन । कपि उलटि मनहुं गढ लंक लैंन ।।
पैंतीस कट्टि तेगन पठांन । फिर निठ्ठ पिठ्ठ तव घाव मांन ।।
अरि माहारांन अग्र भग्गि अेम । मनु सिंघ अग्ग म्रग डार तेम ।।
जुध रोस अरिन चढि पिठ्ठ तेह । वरजीय सु भीम निज सुभट जेह ।।
अरि मार तेग भैरव अभंग । जर कीन वाघ सुत अडर जंग ।।
भट करि सलांम कम्मीय मुकांम । जर्राह वुल्लि वंधि घाव तांम ।।
फिर दुतिय दिवस माधव सु आय । निज सेन रांन हाजरि दिखाय ।।
करि कूंच त्रतीय दिन उभय सैंन । उडि गिरद पाय रवि मुंदि गैंन ।।
दर कूंच कूंच चित्तौर आय । मुकांम ग्रांम हथ्थी सुभाय ।।
फिर दुतीय दिवस चित करि विचार । कहि भीम भीम कहुं समंचार ।।
श्रीरांन हुकम फुरमाय अेह । खाली दुरंग करियै अछेह ।।
कछु वातचीत नहि धरीय तव । फिर कटक सज गढ घेरि जव ।।
दक्खिन दिसांन मौरचा मंडि । रचि जुध दिवस निसप्रति अखंडि ।।
रावत विचारि चित लाज लोग । नहिं कवहु स्वांम संग्राम जोग ।।
अंवाहि ज्वाव कहवाय भीम । हम रांन चरन सेवक कदीम ।।
जालंम करहि रुखसत्त जांम । हम रांन पाय लगहि सु तांम ।।
जालंम ही सीख तव दीय दिवांन । लगि रांन चरन तव भीम आंन ।।
कुछ मामलत्त ठहराय जांम । दीय माध हथ्थ माहारांन तांम ।।
माधवहिं सीख वगसीय दिवांन । गज वाज सन भूषन सुमांन ।।
करि निजर भीम फिर माधराव । हय गय वसंन भूषन सुभाय ।।
करि माध कूंच दक्खिन दिसांन । माहारांन आय पुर उदय थांन ।।
सुभ दिवस प्रविस महलन मझार । पय मात नम्मि आसिख ऊचार ।।३३१।।

दुहा

गुनचासा जांनहु वरस, रित वसंत वैसाख ।
लगन थप्पि तांनै त दिन, भीम व्याह अभिलाख ।।३३२।।

कवित्त छप्पै

सुभ मोहरत चढि रांन, जांन तांनैपुर हल्लिय ।
वंब बज्जि नीसांन, धजा गज पिट्ठ सुखुल्लिय ।।
सनमुख राज किसोर, आय करि नजर लग्गि पय ।
करि मुकांम फिर चढीय रांन, वंधि मौर पिठ्ठ गय ।।
तौरन सुवंदि चंवरी प्रविस, वेद मंत्र भांवरि फिरीय ।
झाली विवाहि माहारांन इम, ऊदयापुर दिस संचरीय ।।३३३।।

कुंभलगढ़ फतह करना

कवित्त छप्पै

गये माध दच्छिनह, रख्खि आंवौ मेवारह ।
मिलि प्रधांन सिवदास, मुलक करि अमल जि वारह ।।
संग दल बीस सहंस; रांन सिर ऊपर रख्खत ।
करत मुलकतह सील, फिरत धर रच्छि काज नित ।।
श्री रांन भीम सिवदास अरु, मिल आंबौ सलाह किय ।
फतूर करन निरमूल तब, कुंभमेर पर दाव दिय ।।३३४।।

अरिल

रावत अर्जुनसिंघ महा भर । महतौ अगर किसौर सचिव फिर ।।
अे त्रय सुभट भीम माहारांनह । दीये संग सिवदास समांनह ।।३३५।।

उडि धज फील वंब नद वज्जिय । बंधि सिलह करि कूंच फवज्जिय ।।
आय मुकाम करे खमनौरह । परि आतंक सत्र चव औरह ।।३३६।।

दिय कागद घांनोरा जांमह । दुरजन कमंध वीर सुत तांमह ।।
स्वांमि धरम सिर ऊपर धारहु । तो यह कारज स्वांमि सुधारहु ।।३३७।।

उततैं तुंम इततैं हम आवंहि । तेगन मारि दुरंग छुडावहि ।।
यह निज खांमिंद काज करैतैं । रहि हैं वात सूर सिस जैतैं ।।३३८।।

दुहा

समाचार पीछे लिखहु, जो कुछ चाहैं चीत।
ना करवौ तुम जोग नहि, हां करवौ कुल रीत ॥३३९॥

हम जुध करि हैं अवस ही, तेग सत्र दल तोर।
भीमसींघ परताव तें, लैहैं गढ़ भुज जोर ॥३४०॥

सुनि कग्गर दुरजन कमंध, लिखीय पत्र मजवूत।
तुम पहलैं हम लैंहि गढ़, तो जांनहु रजपूत ॥३४१॥

भीम भाग्य तैं लैंहि गढ़, तेग सत्र दल भांन।
हम तयार आवन सु तुम, न करहु ढील प्रधांन ॥३४२॥

सुनि हरखे सिवदास चित, दिय दूतन वगसीस।
कुंभलगढ़ दिसि चढि कटक, आसमांन लगि सीस ॥३४३॥

छंद पद्धरी

वजि प्रात वंव सजि सिलह सैंन। कीय कूंच उठ्ठि रज छाय गैंन ॥
चढि सैंन अंव मरहठ अभंग। मनु सभ्भन लंक लंगूर जंग ॥
दल भार छूट धर कूट सिंघ। भ्रमि कोल दढ्ढ नमि नाग कंध ॥
मग अमग हलि भट थट अपार। मनु प्रलय लुप्पि सर अठ्ठ[1]पार ॥
हयराज पाय उडि गिरद संप। मनु[2] इंद रूप ग्रहराज ढंप ॥
घम घमकि वज्जि पख्खरन घोर। मनु ताल हद्द दद्दुरन सोर ॥
सिर टोप सुभट चमकत सनाह। मनु गंग सूर निक्करि अनाह ॥
हलि भीम सुभट सिर लग्गि गैंन। मनु लंक लैंन रघुनाथ सैंन ॥
उत दल फतूर सभ्भ जोग थाट। हयनार वांन ग्रहि रुक्कि घाट ॥
नागीच आय सामीच ग्रांम। खग खुट्टि उभय दल जुट्टि जांम ॥
हथनार सिलक गिरराज गाज। दगि तोप इतहि घन गरजि छाज ॥
उडि सोर धूंम्र नहि सूझि अंख। रूकि व्योम मग्ग आमुंझि पंख ॥

---

१. सप्त २. वनि

छुटि कुहक-बांन अति सोर जोर । वरखा कि उडि मनु अग्गि मोर ॥
दल जूथ वंधि उहि दिस जटैत । पायाद सूर हक्किय पटैत ॥
इत झोक सेल असवार तंग । रटि मार मार जुटि उभय जंग ॥
गिर जोगि केक उर सेल फुट्ट । मनु गिरत बरत गहि वंस नट्ट ॥
उडि सीस तेग नच्चत कमंध । मनु रचत नट्ट भग्गल प्रवंध ॥
घन घाय अंग घुम्मत अनंत । मतवार मनहुं खिल्लत वसंत ॥
कटि तेग कंध उडि रत्तधार । मनु छुट्टि नीर जावक फुंहार ॥
इक घाय अंग द्वै टूक होय । मनु वंधु वंटि घरवात दोय ॥
खग सेल घाय रत वहत घट्ट । मट फुट्ट कुसुंभ रंगरेज हट्ट ॥
सिर चुनत प्रेत गन सिंभु हात । तरबूज मनहुं लुट्टत जमात ॥
उडि तेग झपट तुटि तुंड मुंड । जंवुक अनेक परि ग्रीध्र झुंड ॥
नचि वीर जुथ्थ खंचि वाग सूर । वर वरत स्वच्छ रिन अच्छ हूर ॥
झिलि पहर अेक सिर तेग झाट । तजि खेत लज्ज भजि जोग राट ॥
रिन दल फतूर अगवत पलाय । सिव कृपा भीम दल विजय पाय ॥
जोगी सु भज्जि[1] गढ़ कुंभ भज्जि । सिवदास कूंच तिन पीठ सज्जि ॥
मजहेर ग्रांम कीनै मुकांम । तल लुट्टि निध आनेक तांम ॥३४४॥

कवित्त छप्पै

दुतिय दिवस दल चढिय, वजि रिन विजय दमांमं ।
कायलवारा गांम, छंडि भजि जोगी तांमं ॥
सवैं समिट गढ़ धसीय, इतै सिवदासह चंपिय ।
उत आये दुरजन कमंध, सुनि अरि आकंपिय ॥
भंजीय फतूर जोगी सहित, जय अंवै सिवदास लीय ।
श्रीरांन भीम तप भाग तैं, कुंभमेर कायम करीय ॥३४५॥

किलादार जसवंतराज, हठी सींधह थप्पिय ।
वंधि कुंभगढ़ जतन, सथ दुरजन कमंध लिय ॥
कूंच करिय सिवदास, उदयगढ़ मग्ग प्रचारिय ।
दुजन अंव दिय कुरब, रांन सनमुख पवधारिय ॥

---

१. पयठ

सिवदास अग्गर किसौर त्रिहुं, पाय लगि पितु कुरव दीय।
लगि अजन[1]पाय कहि भीम मुख, स्वांम ध्रंम तुंम हद्द कीय ।।३४६।।

फिर दिवांन निज महल आय, आनंद सुख किन्निय।
हय गय पटा समप्पि, सीख दुरजन कहुं दिन्निय ।।
फिर अंवा दल सहित, अडर संचरिय मुलक वचि।
मेर चोर सव रुक्कि, वहुत सुख वाट चैंन मचि ।।
किय कुंभमेर कायम तदिन, जांनहु गुनचासा वरस।
सिवदास स्वांमि ध्रंम कीन्ह यह, जग ऊपर निहचल सुजस ।।३४७।।

ईडर का दूसरा विवाह

दुहा

ठारह सौ पच्चास को, साल रु फागुन मास[2]।
दुतिय व्याह ईडरगढह, सजि भीम सहुलास ।।३४८।।

प्रथम सु कुंवरि गुलाव कहि, सुता न्रपत सिवसिंघ।
भांन सुता ऊमां कुंवरि, किय सगपन रस रंग ।।३४९।।

छंद त्रोटक

हलि जांन भवांन नरेस गढं । वनि दुल्लह भीम दिवांन चढं ।।
सिवसिंघ भवाईक भांन सुता । सगपन्न भतीजि भुवा सुहिता ।।
करि भीम दिवांन सगारथयं । रूकमन्नि गुविंद इव कथयं ।।
हय पिठ्ठ चढे माहारांन जवं । सजि सथ्थ भटं कहि नांम कवं ।।
सभि गोकुल राव अनोप सुवं । चढि पातल रावत तोल धुवं ।।
चढि भीम नरेस्वर साहिपुरं । रिन सिंघ सुजाव अभंग भरं ।।
चढि भीम कुमार हमीर सुतं । वनि दुल्लह व्याह उछाह चितं ।।
चढि रावत सिंघ अरज्जुनयं । जुध देस लजा जिन भुज्जनयं ।।
माहाराज सिवौ चढि भीम सुवं । भुज भ्रात विरद्द सुभंत ध्रुवं ।।
चढि भैंरव सूरजमल्ल उभं । भुज वाघ अज्जंन विरद्द सुभं ।।

---

१. रा. अर्जुनसीघजी   २. फागुण सुद २

चढि राम सु प्रोहित राज सथ । सिवदास प्रधांन अभंग कथं ।।
वगतावर सिंघ अभंग सभं । सगतावत रावत सांग छजं ।।
सिव नांम [1] रु रावत धीर चढं । चढि ऊदल भ्रात दलेल द्रढं ।।
कुसीयाल चढे हय सुद्ध चितं । चढि चूंड अजीत अजन्न सुतं[2] ।।
विसनेस सलामत सिंघ दुवं । मोहकंम चढे फतमाल सुवं ।।
विसनेस विजो रु अदीत त्रयं । छतरेस सुतं चढि जुध जयं ।।
भगवांन गुपाल मन्होर तहां । चढि देव रु चैंन जवांन जहां ।।
चढि मोहन वाज विसुध चितं । सत बंधव भीम अरस सुतं ।।
हठमाल रु ऊदल धावरयं । सिवदत्त मुसानीय रांम दुयं ।।
इकलिंग[3] रु मौजीयरांम [4] उभै । कवि दूल्ह [5] पनावत संग सुभै ।।
चुतरेस [6] रु नाथ स्वरूप चलं । विसनेस रु नंद गुलाव ललं [7] ।।
दुज केसवराय गजन्न तहां [8] । सजि जौर गजन्न रु नीक जहां[9] ।।
सतिदास चढं न्रप सथ्थ तवं । रखि जैचंद सूंपि दुरंग जवं ।।
संग पंडित नान्ह गनेस चढं । चढि सादल चंदर चित्त द्रढं ।।
दर कूंचह कूंच दलं खरयं । गढ ईडर आय सु ऊतरयं ।।
नछरावर भूप भवांन सजं । दिखि दुल्लह देत असीस प्रजं ।।३५०।।

कवित्त छप्पै

करि दूलह पवसाक, मौर वंधि चढि तुरंग हलि ।
आय कमंध दवार, वंदि तौरन समधी मिलि ।।
चौरिय वर प्रावेस कीन्ह, दुजवर तहां आइय ।
हरित वंस मंडपह, वेह हिमरूप सुभाइय ।।
दुलहनि वुलाय दुजराज तव, लगन समय लिखि हरख जुत ।
दुव भुवा भतीजी आय संग, वांम अंग वर प्राविसत ।।३५१।।

---

१. एकलिंगदासजी रावत, वाठरड़ा २. महाराज काको वहादुरसिंघजी ऊरजरा सींगोत कहणो ३. एकलिंगदासजी वोल्या ४. मौजीरांम जो मेहता
५. दूलजी आढ़ा ६. पंडाहा मयांरामजी, प्रोहत नादेसरजी खवास रूगनाथजी, सहीवाला वल्लभदासजी कहणो ७. पांडे, खवास, त्रवाड़ी, लाला भोई
८. प्रोत, पाणेरी ९. ढीकड्या, भोई

दुहा

पुत्र मात वरनन करत, होत चित्त लजवांन।
त्रिय तन आदि अनादि तें, यह उपम जग जांन ॥३५२॥

कवित्त छप्पै

(जाति विधानिका)

सेस इंदु म्रग दीप, जांन कोकिल म्रगपति गज।
वेनि वदन चख नाक, वोल कटि जंघ चाल सज॥
असित अंसिख चल सुथिर, गुप्त अंगिरात आक्रमत।
सुरभि व्योम बन अयन, नूंत पव्वय सुविध्य थित॥
मनि सरद चकित निस रति-पतह, लंघिनी कमंदह चलत।
पदमिनीय नारि कुलवंत तन, यह उपम कवि उपमित ॥३५३॥

छंद पद्धरी

तव भीम वांम अंगह सिताव। पधराय तांम कुंवरीय गुलाव॥
अरु भांन न्रपत तनया उमांनि। गठ जोरि वांम अंगह बिठांनि॥
वर त्रिया उभय हथलेव जोरि। करि जग्नि अग्नि अछित चहोरि॥
पढि वेद मंत्र भांवरि फिराय। हथलेव सिंचि न्रप कर छुडाय॥
सुरजकुमार न्रप परनि भीम। हामीर नंद रजवाट सीम॥
सुभ गारि गीत ऊछह विनोद। आनंद सगन दुव विध प्रमोद॥
आरोहि सुखासन सुचित चाय। दुलहिनीय दुलह जनिवास आय॥
किय भक्ति भाव न्रपवर भवांन। दायज सु दीन्ह कीय विदा जांन॥
दर कूंच कूंच तव जांन आय। कीय सरित स्यांम मुक्कांम ताय॥
सिवसिंघ सुवन अरिसाल जांन। गिरपुर नरेस फतमाल तांम॥
कछु कीन्ह जोम जिन मत्त भंड। तिन सीस कीन्ह त्रय लख्ख डंड॥
गोकलहदास पातल अभंग। तिन सत्थ राव वाले अढंग॥
संग सहंस आठ सेना समथ्थ। पंच वीस तोप अरि भंज जुथ्थ॥
उपरि मुकांम तट महीय आय। धर वंस वार आतंक पाय॥
रावल विजैस करि मंत्र सांम। कर जोध भेज त्रय लख्ख दांम॥
ताही मुकांम सामंत राव। भेजीय वकील माहारांन पाव॥

तिन सीस डंड मनमान थप्प । त्रय लख्ख दांम इक ठांम अप्प ।।
छंडाय धरावद ग्रांम लीन । रघुनाथ राव कहुं पटै दीन ।।
त्रय थांन मथ्थ करि डंड अेम । बापा रु सांग परताप जेम ।।
करि विजय महल प्रावेस कीन । सब सुभट ग्रेह निज विदा दीन ।।
इम करत भीम पुर उदय राज । आनंद लच्छि भुगवत समाज ।।३५४।।

कुंवर अमरसिंघ का जनम

दुहा

अेकावन को वरस जब, जनमैं अमर कुमार[1] ।
उदर मज्झ राठोर[2] के, सोव्रन कूंख उदार ।।३५५।।

कवित्त छप्पै

जदिन जनम अमरेस, तदिन षटवरन भाग खुलि ।
जदिन जनम अमरेस, तदिन हय हथ्थि सुकवि मिलि ।।
जदिन जनम अमरेस, ऊदिक लख दांन समप्पिय ।
जदिन जनम अमरेस, तदिन कंचन रवि तप्पिय ।।
दीय मोज भीम आनंद उर, सत्र दलद आकंप जब ।
राठोर उदर निज वंस रवि, जनमीय अमर कुमार जब ।।३५६।।

फिर बरषा रितु आय, मास भद्दव घनघोरह ।
घट संघट जल श्रवत, विज्जु चमकत चिहुं ओरह ।।
भरि जल नदी निवांन, मोर कुहकंत गिरोवर ।
भुम्मि हरित पप्पीह चीह, मंजरित तरोवर ।।
दद्दुरन रोर चिहुं ओर सर, अति हुलास करसन उदंम ।
संजोग भोग घरहीं बिलसि, पावस रितु विरही विषंम ।।३५७।।

---

१. राणीजी राठोड़जी गुलाब कुंवर बाई रै अमरस्यंघजी जनमैं
२. गुलाब कुंवर

कुंभलगढ़ दुबारा फतह करना

कवित्त छप्पै

सव जोगी गढ़ लैंन, समिट सिवपुरी दिसांनह।
सहस सत्त दल सज्जि, रत्त त्रय कूंच करांनह॥
धसि गढ़ मज्झ अचित, गढ्ढ कटार सुघेरिय।
विच महतो हठमाल, राज जसवंत अफेरिय॥
दुव ओर नाल जंबूर वहि, बीर हाक वज्जिय विषंम।
भुज जोर कियौ जिन जुद्ध करि, जीव रखौ अंगद कदंम॥३५८॥

रांन भीम सुनि खवर, हुकंम कीन्हो सिवदासह।
पुर मुकांम तव खवर, पहुंचि दूतन मुख भासह॥
सुनत खवर सिवदास, कूंच तिंहिं वेर करांनह।
सुभट सत्थ सव लये, भीम न्रप अगर सुजांनह॥
किसोरसाह सांगावतह, लये जगावत कमंधजह।
सगतावत पूरावत सुभट, सथ सादक चंदर सभ्भह॥३५९॥

अेक रात विच आय, जुटि सिवदास स्वांमि कज।
लगि किसोर सिर घाय, वगि भ्झट तेग वंव वजि॥
भजि जोगि दल भरकि, धरकि चित पाय थर थर।
वाज भ्झपट सिवदास, भगे जोगी मनु तीतर॥
नोवत निसांन सव खोसलिय, रषत वषत लुटि दरव घन।
गढ़ आस छंडि जोगी भजिय, जीत साह सिवदास रन॥३६०॥

धनिव साह सिवदास, स्वांमि ध्रंम सिर पर रक्खिय।
कुंभमेर गढ़ लयौ, सूर ससिहर तिंहिं सक्खिय॥
साल निकास फतूर, राज निज स्वांमि जमाइय।
आय हठी जसराज, पटा दै पाय लगाइय॥
कर जैत आय उदयापुरह, लग्गि भींम पय दाद दिय।
संग सुभट निवाजस करि, तिनहिं दई सीख जसवास लिय॥३६१॥

दुहा

फिर वावंना के वरस,[1] सजि भारथी गुमांन।
आठ सहस दल संग तिन, वहु पटेत वलवांन ।।३६२।।

कोठहरी नद ऊपर तिन, किन्हें आय मुकांम।
कुंभमेर गढ़ लैंन फिर, हूंस धरिय संग्राम ।।३६३।।

खवर पाय माहारांन तव, कीयौ विदा सिवदास।
मानहुं डार अगीन पैं, सिंघ चल्यौ सहुलास ।।३६४।।

कवित्त छप्पै

सज्झि सैंन सिवदास, कूंच दर कूंच चलाइय।
उत गुमांन भारथी, खवर दूतन मुख पाइय ।।
सझि सैंन संनाह, भये दे ठाल अनी वंटि।
छुट्टि तोप हथनार, वंनि जंवूर सूर जुटि ।।
उनग्ग खाग धख आग चख, दु दल वाग लीन्ही तुरिय।
वजि सार धार प्राहार रिन, मार मार मुख उच्चरिय ।।३६५।।

छंद विराज

तुरं वाग उठ्ठं। दुवं सैंन जुट्टं ।।
मुखं मार मारं। वजी सार धारं ।।
रूपी सूर धीरं। भयं भग्गि भीरं ।।
रिवं व्योम मथ्थं। रह्यौ खेच रथ्थं ।।
भये सेल भेलं। फुटे अंग सेलं ।।
फटै खाग सीसं। फुले कंज दीसं ।।
भटं श्रौंन लल्लं। मनौ फाग खिल्लं ।।

---

१. 'गांम थांणै गैलोत नेतसी कांम आया सो केहणो आंक अड़तालीस पछै' अर्थात् संवत् १८४८ के वाद गांव थाणा में गहलोत नेणसी काम आया, इसका वर्णन अलग छन्द में कवि करना चाहता था, जिसका संकेत मूल ग्रन्थ के हाशिये में उपर्युक्त पंक्तियों द्वारा किया गया है। सं.

इतं ऊत भट्टं । मनौ मल्ल जुट्टं ॥
वजी सीक तीरं । मनौ मेघ नीरं ॥
चले चक्र अैसे । मनौ चंद जैसे ॥
वहैं रत्त अंगं । मनौ मट्ट रंगं ॥
हयं तुट्टि तुंडं । गजं सुंड खंडं ॥
जुतं क्रौध थट्टं । भये लट्ट चट्टं ॥
ऊतें जौग धूतं । इतें राजपूतं ॥
दुवं काल क्रधं । जुटे घोर जुधं ॥३६६॥

छंद व्रद्धनराज

जुटे फतूर सैन तें सुजोध भीम रांन के ।
दुवान सथ्थ लथ्थ वथ्थ खंचि रथ्थ भांन के ॥
प्रधांन तेग झट्ट वाहि तोरि सत्रु थट्टयं ।
बहंत रत्त घट्ट फुट्ट ज्यो कसुंभ मट्टयं ॥
भराथ टूक टूक ह्वै पर्‌यौ गुमांन भारथी ।
पुग्यो महेस थांन में रतन्नं लौंन स्वारथी ॥
जुगीन सैन भग्गि तांम हौय जत्र कत्रयं ।
उडेव धूल पौंन तैं मनौ कि तूल पत्रयं ॥३६७॥

दुहा

भग्यौ सैंन मुरधर दिसहं, मरि भारथी गुमांन ।
कियौ निकंटक राज पित, यौं सिवदास प्रधांन ॥३६८॥

कवित्त छप्पै

राज मद्द धन मद्द, कछुक नैंन पर छाइय ।
हौनहार वलवंत, ठसक दिल अन्दर आइय ॥
हुकम स्वांमि नहि गिनिय, वुधि अपजौर चलांनह ।
गरव अहारी स्वांम रांम, चित रोस धरांनह ॥
करि कैंद गांधी[1] सिवदासह, अगर दीन्ह परधांन पद ।
त्रेपना मास अगसर तदिन, रितु हिमंत सिसु सीत तद ॥३६९॥

१. गंद्दि

ईडर का तीसरा विवाह

दुहा

पचावना अरु जेठ महि, ईडर त्रतिय विवाह।
वहन नरिंद गंभीर की, परनी भीम ऊमाह ॥३७०॥

वाहन चंद समांन चख, सझि सिंगार कल चंद[1]।
चंद सहोदरि लच्छि सम, चंद कुंवरि[2] मुख चंद ॥३७१॥

पीछै आवत डंड लिय, गिरपुर वंस वहाल।
देवलिया किय कर नजर, तव वहुरे भूपाल ॥३७२॥

फिर पचपन्ना वरस विच, रचि आंवा सौ जंग।
दटी सु भूमि छंडाय लिय, सव भट समिट अभंग ॥३७३॥

छंद पद्धरी

कीय कटक विदा माहारांन तांम। संग दीन्ह अगर परधांन जांम॥
रावत सु भीम कुवेर नंद। पातल सधीर गोकल उकंद॥
कमधज्ज जेत बधनौर स्वांम। सीसोद धीर वरवीर तांम॥
अभमाल नंद सादल अवीह। ऊदल अनोप अन भंग सीह॥
अन सुभट वहुत तिन संग दीन। महारांन भीम दल विदा कीन॥
हम्मीर दुरंग भय प्रथंम जुद्ध। भट जूझि इते दुव वंस सुद्ध॥
सुत्त धीर भांन अभमाल दोय। ऊदल अनोप खग टूक होय॥
जालम संग्राम चूंडा अवीह[3]। रिन कांम आय पित काज सींह॥
गोरधनदास कायथ अभंग। भौ टूक टूक पित काज जंग॥
पंडत गनेस तव छुट्टि पाय। अरु गढ़ हमीर खाली कराय॥
विय जुध मूस मूसी प्रवंध। कटि दुजन लाल भट्टी उकंद॥
जामातदार चंदर सधीर। भौ टूक टूक पित अरथ वीर॥
अंवा गनेसधर ऊठि थांन। खाली कराय इतनै मकांन॥
गाडरहमाल गुरलां गिनाय। फिर गढ़ हमीर व्यिझोलि ताय॥
केसवह धीर गोपाल देव। चव सुभट थपि चव थांन तेव॥

---

१. सोलह शृंगार २. चांद कुंवर वाई ३. दोई जगावत

अंवाहि कढ्ढि दस सहंस पार । फिर खंचि लक्ख लहसकर अपार ॥
लगवाय जाजपुर दुरग जेह । करवाय तांम खाली अरेह ॥
खालसह थप्पि निज स्वांमि थांन । कीय भीम अगर यह अकथ मांन ॥
फिर आय उदयपुर स्वांमि पाय । आनंद भूमि घर घर अमाय ॥३७४॥

पदम कुंवरि अरु चावड़ी सुं विवाह

दुहा

फिर छपंना संमत लगि, आय भूप सुरतांन ।
पदम कुंवरि ताकी सुता, दीनी भीम दिवांन ॥३७५॥

कवित्त

प्रफुल्लित पदम समान, समुख सौ गंध पदमसम ।
पदम पत्र चख ओप, अंग पदमिनीय अनूपम ॥
छत्र रहै सिर छाय, भ्रमर आमोद पदम लुभि ।
सुभ आरत सुकमार, सरस निज हाथ पदम सुभि ॥
पठ सुरख मृदुल पद पदमसम, अत छवि नख सिख अदुतीय ।
सरजित सु हाथ निज पदम सुव, पदम कंवर पदमा हुतीय ॥३७६॥

सेस केस राकेस भाल, सुभ भ्रूंह धनख सम ।
चख पनंग नासिक उतंग, अहरत व्यंब[1] यम ॥
दंत हीर कुच कोक, वांह अनाल उदर सर ।
गहर नाभ कटि सिंघ, रंभ नारंग अव्ज तर ॥
सुभ लच्छ सील विद्या विनय, न्रमल चित्त जल गंग ज्यौं ।
कुल लाज दांन पतिव्रत जुकत, उमयाहर अरधंग ज्यौं ॥३७७॥

दुहा

अेकलिंग पुर मांडही, रचि सुरतांन अभंग ।
जांन उदयपुर तैं चढी, भीम ऊछह जुत अंग ॥३७८॥

---

१. विंव

छंद उद्धौर

वनि दुलह भीम दिवांन । चढि सुभट संजुत्त जांन ।।
चलि अग्र मत्त गयंद । मनु रूप द्रुव गज-इंद ।।
सकलात झूल सुचंग । खचि रसन रेसम अंग ।।
सिर रजत हवद सुभात । मनु स्यांम गिर रवि भात ।।
तन स्यांम बद्दल रूप । वगपंत दंत अनूप ।।
धज सुरख[1] फहरत उतंग । मनु रंभ पव्वय श्रंग ।।
हय नेक संभव षेत । पय लाग नट सम लेत ।।
हिम रजत सभ्भ सिंगार । मनु रंभ कछि न्रतवार ।।
खचि वाग ग्रीव सुभांन । सुकलींन धुंघट मांन ।।
पय फुरत मनु मछ नीर । नहि करत होड समीर ।।
करि आव जाव सु अच्छ । मनु कुलट नेन कटच्छ ।।
पय लेत वाज मलंग । मनु टुटि डार प्लवंग ।।
तिन पिठ्ठ रोहि सवार । तिन चढत छाक दुवार ।।
वुचकार थप्पत कंध । तउ चपल तेज समंध ।।
अग ग्रहत अेक चपेट । गिर कोट अंठुन फेट ।।
तन तेज वीज विभात । निज छांह कंपत गात ।।
रथ सथ्थ सोभ अमांन । मनु खंचि[2] देव विमांन ।।
पायाद अगनित सथ्थ । को कहन सुकवि समथ्थ ।।
तिन बीच दुल्लह भीम । मन मथन मनु छवि सीम ।।
कै जदुन बीच गुविंद । कै देव विच सुरइंद ।।
रघुवंस विच कै रांम । सिय व्याह उछह सकांम ।।
यह भांत आय बरात । सिव नयर सोभ सुभात ।।
सिव दरस करि न्रप तांम । निज महल कींन मुकांम ।।३७९।।

कवित्त छप्पै

लगन समय जब आय, सभ्भि पवसाक[3] दुल्लह तव ।
सुभट सज्भि पवसाक, मौर सिर बंधि भीम तव ।।

---

१. पीठ २. भूम्मि ३. सिंगार

चढ़ि तुरंग हलि जांन, आय ससुरार द्वार वर।
वंदि तौरन चौंरी प्रवेस, कीय हिंदु दिनेस्वर।।
पधराय त्रिया वामंग जव[1], गठजोरा बंधि हथ्थ-जुर।
पढ़ि वेद मंत्र दुजराज तव, अगनि साख भांवरि सु फिर।।३८०।।

आय कमंध सुरतांन, दांन कन्या वर दिन्हिय।
जनवासै पधराय, दुलह दुलही रंग भिन्निय।।
ज्यौं सत्राजित ग्रेह, किसन व्याही सतभांमा।
भीषमजा रुकमिनी, किधौ सिय रांम सकांमा।।
सुभ रूप सील पतिव्रत जुकत, दयादांन जुत चित अघट।
मन बंधि भीम माहारांन कौ, फिर गठजोरा बसन खुट।।३८१।।

छंद साटक

सारूपा सकुला सलज्ज सुदया सानंद साबुद्धया,
सासीला सुह्लदा समांन वयसा सौजन्य सौभाषिता।
ह्लस्वा थूल असेत स्वेत जुकता श्रंगार या सौड़सा,
कमधज्जी सुरतांन भूप तनया पतिव्रता संजुता।।३८२।।

दुहा

पदंम कुंवरि इम भीम वरि, अतहित जुगत उछाह।
ज्यौं पदमावति विथ्थ न्रप, समंद सिखर गढ़ व्याह।।३८३।।

करी गौठ सुरतांन न्रप, जीम्हें भीम दिवांन।
सेस होय कविराज तौ, वरनै गौठ सौजन्य वखांन।।३८४।।

अरिल

करि मनुंहार नूंत माहारांनह। दायज दीन कमंध सुरतांनह।
दासि दास हय गय नग भूपन। पाट पटंवर वास विदूपन।।३८५।।

मोतीयरांम प्रधांन दयो संग। हरख हास्य जुत सगन रह्यो रंग।
वीकानेरी परनि नरेस्वर। भयै विदा कीय कूंच उदैपुर।।३८६।।

---

१. पधराय वांग कुंवरि पदम

दुहा

सुभ दिन महल प्रवेस किय, भींमसिंघ माहारांन ।
नित नवीन सुख भोगवत, सत सुरराज समांन ।।३८७।।

थांनकं वरसोरा सुथिर, वीच परगना भाल ।
गूजर धर तापित सुभट, जगपत नांम दुझाल ।।३८८।।

ताकी तनया चावरी, व्याही भींम दिवांन ।
सील सुलच्छन सुमति जुत, निज पतिवरत निधांन ।।३८९।।

कुंवर जवांन सिंघ का जनम

अठारह सै सत्तावने[1], अगसर सुदि त्रतियांन ।
उदर कुंवरि गुल्लाब के, जनमे कुंवर जवांन ।।३९०।।

जेत खंभ आजांन भुज, संग जगा समतूल ।
मूल नखत्र जनम्यौ कंवर, करन सत्र निरमूल ।।३९१।।

कवित्त छप्पै

जदिन जनंम रजवाट, दांन जनम्यौ जाही दिन ।
जदिन जनंम सत सुक्रत, धरम जनम्यौ ताही दिन ।।
सासत्र सस्त्र अभ्यास, जनंम कुलरीत अनम्मिय ।
जनंम भाग पट वरन, हरख पित ग्रेह जनम्मिय ।।
उछाह वंस सविता उरह, कविता रचि पारख सुकव ।
नरलोक थोक जनमै इता, जनम्यौ कंवर जवांन जव ।।३९२।।

सुनि वधाई माहारांन भीम, हय गय लख दिन्हिय ।
दीय सांसन द्रब वसन, हरख रंगराग सु किन्हिय ।।
खुलि ताला पट वरन, हरन सुरराज लगी झर ।
पुग्गि हाक दध पार, उग्गि सोव्रंन सहंस कर ।।

---

१. केहणो छे वो छे जठे वालेराव ने पकड्यो जदी साह फिरंगी सु रावत जवांन सिंघजी झगड़ो करे देवारी बारे काढ्यो संमत ५७ में

दै दै उचार नाकार नहि, पुर अपार आनंद वन।
तिंहि दिवस भीम माहारांन चित्त, करन भोज तै सहंस गुन ॥३९३॥

छंद निसांणी

(भापा पंजाबी)

जनम सुनीं दन पूत गोस दिल मौज उझल्ला।
असपुं फील हजार हांन मंगि सुत रुंगल्ला॥
जरबफतूं दे ढेर अख लख जेवर तिल्ला।
तूं देंदा दालिद्रनू भुज मौजूं टल्ला॥
तूं देखंदा दांनवार तुछ सौव्रंन कल्ला।
तूं फरजंद हमीर दादत तेग अपल्ला॥
तैंनू वित्त हजार हथ्थ पूरंदा अल्ला।
दिलखुस कीत ऊचार दा षट वरनूं जल्ला॥
दांन तु संडा चित्त भींम भल्ला वे भल्ला ॥३९४॥

कवित्त इकतीसा

(व्रजभापा)

अंकुरित चौजैं मन मौजैं दैंन आठौं जांम,
कैऊ कवि नित जमा हौत दरवारे के।
आवैं जे पयादे ते सिधावैं गज वाजैं वैठि,
वसन सुरंग अंग भूषन संवारे के॥
दांन कौ सुमार दफतर में कहां लौं धरैं,
लिखि लिखि थाके हाथ लिखिया विचारे के।
भीम तेरे हाथ हैं तमांम जग हाथन पैं,
तेरे सिर हाथ हैं हजार हाथ वारे के ॥३९५॥

कैऊ वूझैं गांम कांमदारन हजारन के,
वूझत हवेली कैऊ सुढव सुढाली हैं।
चावुक महावत कौं कैऊ गजवाज वूझैं,

कैऊ बूझैं दरव उचाय वे हमाली हैं ।।
सांसन सदन हाथी हय हेम हीर हिय,
वंधै मौज ताहु तैं मिलत आली आली हैं ।
भीम महोदध कौं सुकवि पनिहार भेंट,
भरे जात देखे मैंन देखे जात खाली हैं ।।३९६।।

दुहा

दीन्हैं हय गय भूंमि नग, पाट पटंवर चाय ।
भीम दांन कवि ग्रेह तैं, दारिद गये विलाय ।।३९७।।

कवित्त छप्पै

(जात मुक्तागह)

अवसर हैं चित अडिग, अडिग पग समर अवसर ।
अवसर चुक्कै नांहीं, नांहि नाकार जपत नर ।।
नर तन पाय निबाह, बाह पागार बिरद बर ।
वर कीरत सुप्रवीत, बीत नित ब्रवैं कवेसर ।।
सरसात जास सु सबद बसत, सत नह छंडै दत सरस ।
रस जितैं कहैं अहि नर अमर, अमर भीम सुदता अवस ।।३९८।।

यह विध भीम दिवांन, करत राजस उदयापुर ।
थहरत जुथ्थ अरिंद, भगि आश्रित गिर किंदर ।।
सुभट वंस षट तीस, सुपय नित सेव समाजत ।
सांगा जगा हमीर, बिरद भुज दंडन छाजत ।
हय हथ्थि लच्छि लख्खन ब्रवत, वाहुवली वड्डम वखत ।
दीवांन भीम अरसिंघ सुव, तप्पत उदयापुर तखत ।।३९९।।

जसवन्तराव होल्कर का आना

दुहा

ठारह सौ अठावना, माह मास जग जांन ।
आयो जसवंत राव सझि, हुलकर फौज अमांन ।।४००।।

छंद त्रौटक

व्रजि हक्क चिहूं चक चक्क चढं । गढदारन छंडिय कोट गढं ।।
प्रज नठ्ठ रु कंपिय अठ्ठ दिसी । दल हक्कि करार हजार असी ।।
न गिनै ध्रम हिंदुव मेच्छ दुवं । मनु काल जवंन अवतार हुवं ।।
नहिं मन्निय मसीतन देवलयं । ध्रम हीन चितं व्रत केवलयं ।।
यह नाथदवार सुनी कथयं । गिरधार गुसांयन सोच थयं ।।
लिख कग्गर भीम दिवांन दिसं । तपसील विगत्तय राव जसं ।।
माहारांन कहो सु करै जु इतैं । थिर होत नहीं पय या भयतैं ।।
गिरधारन कागद रांन सुनै । खत फेर लिखे जुत प्रीत विनै ।।४०१।।

श्रीनाथ जी का उदयपुर-घसियार विराजना

छंद पद्धरी

लिख अर्ज अेह गिरधर्न रांन । जुत विनय प्रेम सादर समांन ।।
अह देस रावरो हैं महंत । चित मोद होय तहां बसहू संत ।।
गिरधरन हुकम फिर जो लिखांन । हम हौंहि आय हाजुर पयांन ।।
पुर उदय पाव धारहिं गुविंद । मम भाग धन्य निश्चय दुर्जिंद ।।
अरदास भीम लिखि निरत अेह । कीय बिदा सुभट षट कहत जेह ।।
बोलयो साह इकलिंगदास । कलयांन राज विजपाल जास ।।
जगतेस अजो नाथो सिपाह । रत्ते सु नित्य ध्रम सांम राह ।।
अे दये दास इकलिंग संग । सव आय नाथद्वारह अभंग ।।
पय लग्गि नाथ गिरधरन तांम । कीय अरज साह इकलिंग जांम ।।
उत्तिम सलाह रचि जुद अनंद । पधराय उदयपुर श्री गुव्यिंद ।।
संग नाथ संभरीय पति सिधार । विजमाल आय रावत जिवार ।।
कीय हरि प्रयांन दित करन नास । मुकांम ग्रांम करि ऊनवास ।।
सुनि भीम जांम श्रीनाथ आय । गोपाल भ्रात सनमुख पठाय ।।
पुधराय[1] कुसल जदुराय आंन । विजपाल सीख मंगि चाहुवांन ।।
मग्ग जात सेन जसवंत घेरि । रूपि पाय राव समसेर भेरि ।।

---

१. पुहचाय

हय छंडि दीन्ह असमेद पाय । अरिसेन खंडि घट घुम्मि घाय ।।
विजमाल नीर आवट्टि जांम । श्रीनाथ छीर पुगि कुसल तांम ।।
तन खंड खंड करि चाहुवांन । विजमाल पुग्य गोलोक थांन ।।
घट घाय घुम्मि दोलत भतीज । परिखेत सूर रत वस्त्र भीज ।।
इन भंत समर चहुवांन कीन्ह । जसवंतराव मुख दाद दीन्ह ।।
फिर आय नाथ परिकर घसार । सुनि खबर समुख चढि छत्रधार ।।
सामीप आय हयराज छंडि । करि भेंट दंडवत समुख मंडि ।।
पग मंड मंडि पधराय नाथ । पायाद भीम चलि जोरि हाथ ।।
श्रीनाथ उदयपुर सिर विराज । जग जीव नेक उद्धरित काज ।।
रहि उदयनैर दस मास स्यांम । दीये दरस रांन उछव तमांम ।।
सव नयर भेंटि हरि जुत कुटंव । भव उदध नाव जिंहि नांन भंत्र ।।४०२।।

दुहा

रहे उदयपुर मास दस, श्रीगिरधर सुख पाय ।
फिर अन्नकोट अरौगि कै, किय घसार चित चाय ।।४०३।।

जव श्रीनाथ पधारि तव, करीय भेंट श्रीरांन ।
हय गय ग्रांम रु नग वसन, किय सतुति जुरि पांन ।।४०४।।

कवित्त छप्पै

जय जय नंद कुमार, पांन गिरधार धरनि धर ।
जय जय कंस निकंद, गर्व सुर इंद्र भंजिवर ।।
जय गुरु सुत म्रत आंनि, फेरि गुरु पांन समप्पिय ।
जय सुदांम दुज दीन देखि, तिंहि नव निधि अप्पिय ।।
सुरनाथ पाथ स्वारथ जयति, गोप साथ कारक अभय ।
खल नाग नाथ गिरि हाथ धर, श्री गोवर्द्धन नाथ जय ।।४०५।।

श्रीराधा मुख कुमुद, मुदित कर सीत भांन जय ।
जय मुरलीधर पांन, तांन रुचि सांमवेद मय ।।
जय कालिंदी कूल, रास व्रज वाल रमावन ।
जय असोक मुख मज्झ, मात त्रय लोक दिखावन ।।

अघ वकी सकट भंजन जयति, व्रज अनेक गंजन विघन।
भय भंजि दास जामन मरन, जय जय जय आनंदघन ॥४०६॥

जय जय गो द्विजपाल, भाल सारंग पछ्छ धर।
जयति जुद्ध विकराल, काल सिसुपाल खयंकर॥
जय पूरन ससि वदन, मदन मोहन उवि माधव।
जय जय श्री सुख सदन, मुदित मन रटतउ माधव॥
भुज संख चक्र गद कज धरन, देव देव आसुर दवन।
श्रति नयति नयति अख्खत सु नित्य, जयति जयति रुक्मिनि रवन ॥४०७॥

छंद उद्धौर

जय नंद राज कुंमार। नख अग्र गिरवर धार॥
जय स्यांम घन तन रूंप। पट पीत तड़ित अनूंप॥
जय पांनि पग चख कंज। जयमाल ध्रत गल[1] गंज॥
जय रसित नव रस अंग। जय वेनु वाद त्रिभंग॥
मुख प्रिया चंद चकोर। जय जयति नंद किसोर॥
जय नागनाथ समाथ। जय जयति गोकुलनाथ॥
अघ कंस केसि कराल। जय व्रषभ खर वक काल॥
सिर मुकट चंद-मयोर। सनि सीस मनुं ससि कौर॥
चख वांन भ्रूंह धनंख। जितवांन उपम असंख॥
कवि मुक्ति नास अखंत। मनुं कीर जलज भखंत॥
रद वज्र ओठ प्रवाल। रजि वंचन मधुर रसाल॥
श्रुति कनक कुंडल सज्झ। रथ चंद्र अर्क विरज्ज॥
सुभ संख ग्रीव सुभात। श्रग मुक्ति गंग सुहात॥
उर प्रथुल भुज आजांन। मनुं संत अभय सु मांन॥
सुभ सोभ उदर समुंद। अलि नाभि लंक मयंद॥
गज सुंड जंघ प्रमांन। जुधवार अडिग सुजांन॥
पग पांन आरत कंज। नख वाल रवि तप पुंज॥

---

[1] उर

व्रज भक्त हरि चहुं ओर । मनु चितय चंद चकोर ।।
उर धरति हरि यह ध्यांन । गोचरन तिंहि भव मांन ।।
कीय भीम नमि रु प्रनांम । जय नंद नंदन स्यांम ।।
हे कृष्न हे जदुनाथ । हे स्यांम घन अहिनाथ ।।
हे नंद नंद अहीर । हे कुंमर जसुमति धीर ।।
हे गोप गोकुल राज । हे वंसीधर माहाराज ।।
हे रास रसिक मुरारि । हे वास हृत व्रज नारि ।।
हे स्यांम मांखन चोर । हे धोट नंद किसोर ।।
हे रमन राधा नांम । गोव्यिंद हे घनस्यांम ।।
इत्यादि तौ हरि नांम । जे भजहि तिरहि ति स्यांम ।।
श्रीनाथ यह तव रूप । मम हृदय वसहुं अनूप ।।
नमि भीम पायन तांम । दंडौत कींन प्रनांम ।।४०८।।

दुहा

पुर घसार श्रीनाथ तव, वसे चित्त सुख पाय ।
नाथदवारे चोसठै, फिर प्रविसे जदुराय ।।४०९।।

अठ्ठावन का वरस महि, रौक्यौ वालेराव ।
छोडि दयौ निधि लूट सव, जीव दांन दै ताव ।।४१०।।

अरिल

साठा बरस लग्यौ फिर जा दिन । आयो जसवंतराव सु ता दिन ।।
नारै मंगरै कीन मुकांमह । रांन अजीत विदा किय तांमह ।।४११।।

मोल जसवंत मोद मन पायो । करिव मांमलत कूंच करायो ।।
साथ जसा अगजीत सधारीय । घर वाहर सव सेंन निकारीय ।।४१२।।

फिर जस जुकत रांन पय लग्गिय । पाय मांन असहन उर दग्गिय ।।
नेत स्वांमि ध्रंम सिर पर रख्खिय । जस नांमी भीमह मुख भख्खिय ।।४१३।।

वांसी का जुद्ध

कवित्त छप्पै

ठारह सौ वैसाख, वरस साठो जग जाहर ।
तव मरहठ हरनाथ, आय दल मेद पाट धर ।।

हय गय तोप पयांद, हल्लि चतुरंग अपारह।
वांनसेन पुर निकट, आय करि कूंच सवाहर ॥
जासूस भेजि गुलाव कहुं, वुलवाये दिल कपट सभ्भि।
करि सिलह आय गुलाव तहां, सीस व्यौम लग्गिय उछजि[1] ॥४१४॥

छंद पद्धरी

चढ़ि वाजराज गुलवेस जांम । तिन सत्थ सुभट सभ्भि सिलह तांम ॥
कमधज जवांन छतरेस दोय । जुध पथ रूप पति ढाल होय ॥
भट्टीय सु भैर सथ्थह अभंग । मुख नीर खित्रवट वीर जंग ॥
कविराज कर्न गाडन सधीर । यक लख्ख रूप हनि लख्ख बीर ॥
कहि सैद मियां हट्टू अबीह । निज पय अफेर जुध वेरसीह ॥
भट पंच पंच सत रूप सथ्थ । अन सथ्थ वहुत सज्झीय समथ्थ ॥
भारथ्थ कमंध चूंडो सुधीर । रासेन मज्झ रहि उभय वीर ॥
गुल्लाव आय दल निकट तांम । निज सुभट सहित हय छंडि जांम ॥४१५॥

दुहा

भ्रात रतन हरनाथ तव, पठयो पास गुलाव।
निज सलाह किय सु ग्रहन, कपट वत्त मुख जाव ॥४१६॥

कवित्त

आय रतंन सूं मिलि गुलाव, संनमुख किय वैठक।
भुज गुलाव दछ वांम, मेछ थित ग्रहन चित धक ॥
रतन इसारत कीन्ह, मेछ गुलवेस भुजा ग्रहि।
तांम हकारि गुलाव, हद करनेस खग वहि ॥
ग्रह नाह दिखि साराह करि, लखि हथवाह जवांन के।
वहि रूक चूक लुटत धरनि, च्यार टूक ह्वै खांन के ॥४१७॥

विफरि गुलाव अभंग, रतन घल्लिय गलवथ्थह।
क्रोध ज्वाल जगि उवर, जरी प्रतमाल समथ्थह ॥

---

१. संमत १८६० रा वैसाख सुद ४ रवै ठाकुर गुलावसींघ जी सुं हरनाथ चूक कीधो।

उर दुसार कढि पार, सहित पूंचा रतनारिय।
मनुं जावक झकबोर, हथ्थ दुलही कढि बारिय॥
रस रूद्र रंगि सिंदूर मनु, जीहं महिष जुध साज की।
तंमोर रंग रच्चिय सुभग[1], मनहुं दढ्ढ जमराज की॥४१८॥

दुहा

जरी कटारी सत्र उर, पार करी रत चोल।
रतन भेंट जमराव कै, कियौ हरोल हरोल॥४१९॥

छंद विराज

भयं चूक चूकं। नची नग्ग रूकं॥
बके सूर तारं। मुखं मार मारं॥
गुलावं समथ्थं। खची खाग हथ्थं॥
वही रोस वेगं। भई टूक तेगं॥
रतंनेस लख्खं। चखं आग धख्खं॥
सुतं रोर दढ्ढं। कढी जंम दढ्ढं॥
गरं घालि वथ्थी। मनौं मित्र सथ्थी॥
जरी तांम ऊरं। जमंदाढ सूरं॥
उराथी परानं। पहुंचा समानं॥
सुभैं यौं सुढंगं। रतं श्रौंन रंगं॥
नवोढ़ा दिखारी। मनौं हथ्थ बारी॥
गिर्यो घाय घूमं। रतंनेस भूमं॥
लई मांमलत्तं। सवैं अेक सथ्थं॥४२०॥

दुहा

भ्रात रतंन पुंहच्यौ सरग, सुन्यौ श्रवंन हरनाथ।
घेर्यौ सिंघ गुलाव तिन, समिटि सैंन यक साथ॥४२१॥

छंद पद्धरी

फिर फोज विंट जिम सिंधु फाव। बर बाग मध्य सोभित गुलाब॥
प्रतमाल लाल टपकतन रंग। जमदाढ[2] मनहुं जावक सुरंग॥

१. रंगोय कि हिंगरु जुध समय २. यमराज

रसवीर उलसि मिलि मूंछ भौंह । मनु द्वैज चंद तन स्यांम सौंह ।।
परजलित क्रोध द्रुति लाल दीठ । सतपत्र मनहुं रंगीय मजीठ ।।
छतरेस भैर हदमाल जवांन । कवि कर्न सहित भट पंच मांन ।।
लखि कटक घिरत सीसोद राव । दीनैं गुलाब असमेद पाव ।।
हरनाथ देख गज रोहि नैंन । गुलवेस सिंघ क्रमि फारि सैंन ।।
गहि दंत फील सनमुख प्रचंड । प्रतमाल गरक किन्हीय भूसुंड ।।
त्रय घाव कीन्ह गज सिर कटार । भभकंत तांम त्रय रूधिर धार ।।
गज स्यांम रत्त चलि कर्न राह । गिर अस्त मनहुं सरसति प्रवाह ।।४२२।।

दुहा

कटारी इम वांधियै, बंधी जेम गुलाब ।
हक वग्गी तथ्थैं करी, गज मथ्थैं गरकाव ।।४२३।।

छंद पद्धरी

घमकंत संग तन वार पार । वहि तेग धार मुख मार मार ।।
प्रतमाल खंचि कवि कर्न ओप । सिंधुर भ्रसुंड जुध बार रोप ।।
साहस देखि कवि चित अथाह । गुलवेस समुख अप्पिये सराह ।।
भट पंच पंच सत रूप होय । मुख चढत नहिन मरहट्ट कोय ।।
सिर हथ्थ पाय हय जोध तग । यक घाय उडत द्वै द्वै वरंग ।।
सझि न्रत्य बीर बजि तेग ताल । गूंथत महेस गर मुंडमाल ।।
भेदंत सूर मंडल सिपाह । वर सूर हूर अच्छरि विवाह ।।
हरनाथ विखंम खग ताप दिठ्ठ । गज उतरि भज्ज तव निठ्ठ निठ्ठ ।।
द्वै पहुर खंचि हय आफताव । मुख वाह वाह अखिय गुलाव ।।
गजराज अेक पैंतीस सूर । द्वै असुर रतंन खगखेत चूर ।।
गुलवेस तांम परि निठ्ठ निठ्ठ । तन छिन-भिन सव सैंन दिठ्ठ ।।
सुनि चूक ग्रांम मज्झह सुजंग । भारथ्थसिंघ कमधज अभंग ।।
ऊछ्छाज तेग सव सैंन डोह । अरि थट्ट भंजि तन लग्गि लोह ।।
गुल्लाबसिंघ सामीप आय । परिखेत मज्झ घट घुम्मि घाय ।।
चूंडो सुघोर सरजांम ठाह । अजवारि लूंन अरि सैंन गाह ।।
करि टूक टक तंन खग्ग तेस । सर जांम लीन्ह तापच्छ अरेस ।।

रजपूत सिंघ यह जात अेक । नहि सहत बंध अरि मिल अनेक ॥
अवसांन साच दिख्खिय गुलाब । तंन वढ्ढि खाग कुल चढ्ढि आब ॥
अतलोक मज्झ जस अमर राख । कवि भूप जगत रवि सूर साख[1] ॥४२४॥

माहोली का जुद्ध

दुहा

ठारह सै अरु त्रेसठा, सज्झि सुभट निज सैंन।
भीम सलुंबर करि कृपा, गये पदंम कहुं लैंन[2] ॥४२५॥

उदयापुर गढ़ जतन कहुं, रखीय भीम रिन धीर।
भेरूं रावत भींम सुत, सादल सुतन हमीर[3] ॥४२६॥

कवित्त छप्पै

प्रविसि सलूंबर भींम, तांम मरहठ्ठ बिचारिय।
नहिन उदयपुर जतन, यहैं खल बत्त सुधारिय[4] ॥
सखारांम मोहबत्तराव, अति जोर अमाइय।
सझि दल दोय हजार, कूंच दर कूंच चलाइय ॥
दिस दिसिन हाक बज्जिय विषंम, चाक बंधि मरहठ्ठ खरि।
माहोलीय कीन्ह मुकांम तिहिं, थहरि रयत आतंक परि ॥४२७॥

दुहा

भेरूं रावत कथ सुनिय, सुनि कथ कंवर हमीर।
मनहुं लग्गि ज्वाला विपुन, क्रोध सिहाय समीर ॥४२८॥

कवित्त छप्पै

रावत भैर हमीर, समुख यह बत्त ऊचारिय।
गये सलूंबर रांन,[5] नेत हंम तुंम भुज धारिय ॥

---

१. [illegible]त १८६० वैसाख सुद ४ रवै ठाकुर गुलाबसींघ जी सूं [illegible]ड़ो हरनाथ दादै [illegible]धी ने काम आया सो केहणो छै ।
२. [illegible]ठे संमत में दुरवार रावत पदमसींघ जी नै लेवा गिया।
३. [illegible]पुर भेरुसींघजी हमीरसींघजी ने मेल गया।
४. [illegible] गर वो धर सारीय ५. भींम

आय सयंन मरहठ्ठ, रयंत भग्गिय धर लुट्टत।
प्रजन करत कहुं बंध, कहुक निरबल लखि कुट्टत ॥
भैरव सु कहिय हम जुध करहिं, तुहिं हमीरगढ़ की सरंम।
विनु रांन दच्छिन लुट्टत रयंत, नहिं दिखन[1] छत्रीय धरंम ॥४२९॥

दुहा

भैरव कहुं अख्खिय हमूं, तुम गढ बंधहु कंठ।
हम जुध करिहैं दच्छिन सहुं, खगन खाप ऊछंठ ॥४३०॥

कवित्त छप्पै

भैरहिं कहत हमीर, अेह कथ सत प्रमांनहु।
कै मारहिं अरिसैंन, मरहि कै हम यह जांनहु ॥
कै अरि सिर हर कंठ, कंठ हर कै मम मथ्थह।
विजय लयें जस तिलक, तिलक कै अच्छरि हथ्थह ॥
हम्मीर अेह कथ ऊचर्यो, धरहुं हरख काका ऊवर।
जीवहिं त फेर लेंहें पटा, कै लैहैं वयकुंट पुर ॥४३१॥

दुहा

मिलि काका भतीज दुहुं, करीय अमल मनुंहार।
कै मिल हैं अरि भंज दल, कै दूजैं अवतार ॥४३२॥

छंद पद्धरी

जुध काज कंवर हल्लिय हमीर। सादल सुजाव वीराध वीर ॥
असवार साठ तिन संग जोध। यक यक लख भंजन सक्रोध ॥
मुख नीर खित्रवट वीर जाग। मनुं घिरत सिंचि परजुलित आग ॥
चढि मूंछ्छ तार भ्रंहन मझार। मनुं पथ्थ वीर गो ग्रहन वार ॥
करि सिलह अंग रावत सधीर। मनुं सूर घेरि वद्दल सनीर ॥
चमकंत सेल फल ऊजल सोह। मनुं स्यांम निसा तारक विमोह ॥

---

१ न अेह

हय लाह लेत पय बल सनूर । मनुं तुट्टि डार झंपत लंगूर ।।
गवि सिंधुराग जंगर सुतेह । अंकुरित वीर सुनि वीरदेह ।।
अरिसैंन खबरि चर दीन्ह धाय । हंम्मीर कंवर जुध काज आय ।।
सझि सिलह सैंन मरहठ्ठ जांम । तुर जींन परठि खचि तंग तांम ।।
धरि तोप अग्र पायाद जूथ । द्रुति लोह लाठ संझिय वरुथ ।।
फहरत निसांन लखि तरफ दोय । दीठाल तांम दुव दलन होय ।।
बंदूक सिलक वजि तोप रीठ । खुट्टीय कि रुद्र मनुं प्रलय दीठ ।।
जय चुत्रवाह मुख जपि सकाज । हंम्मीर हक्कि तव बाजराज ।।
द्वै सहंस उतहिं इत सूर साठ । नत्रीठ हक्कि वजि तेग झाट ।।
घमकंत सेल तन वार पार । उडि छिछ मनहुं जावक फुंहार ।।
खग टोप विहरि सिर फट रजंत । जगनाथ मनहुं अटका छजंत ।।
असि घाय कंध कटि उडंत सीस । बल सक्ति मनहुं अज कमल दीस ।।
उडि हथ्थ पांय धर परत अछ्छ । तरफरत मनहुं जल तुछ्छ मछ्छ ।।
हामीर भीम न्रप कज छछोह । वापरीय विषम विध समर लौह ।।
नहिं झल्लि तेग भगि सैंन सत्र । मनुं सिंघ कीन्ह म्रग जत्र कत्र ।।
पय घाव छाप रजवट बिराज । करि विजय कंवर निज स्वांमि काज ।।
निज भ्रात चूंड मोहवत अभंग । रिन आय कांम जितवांन जंग ।।
भट आय कांम बहु घाय घुंम्मि । अरिसैंन भंजि किय अभय भुंम्मि ।।
सत उभय जोध मरहट सुकट्टि । लीय रखत बखत अरिसैंन लुट्टि ।।
करि विजय आय इम उदयनेर । मिलि समुख आय भैरव अफेर ।।
सुनि भीम रांन जस विजय कथ्थ । साराह पट्टा समप्पिय समथ्थ ।।
यह भांत विजय कीन्हिय हमीर[1] । निज चूंड राव कुल चाढि नीर ।।४३३।।

दौलतराव–मीरखांन का आना

दुहा

फिर चौसठा वरस महि, आयो दौलतराव ।
लख सयंन तिन संग गनि, मनहुं टिड्ड दरियाव ।।४३४।।

---

१. सखारांम सुं माहोली हमीरसींघ जी कंवरपदे झगड़ो कीधौ नै फतै करी ।

आकोला सैं कूंच करि, चेजां तरहर आय।
नाला सागर उदय तट, किय मुकांम चित चाय ॥४३५॥

रावत सादल चाल ग्रहि, दौलतराव समझाय।
आय उदयपुर भीम पय, लग्गि अरज गुजराय ॥४३६॥

कवित्त छप्पै

रावत सादल तदिन, स्वांमि ध्रंम धरंम विचारिय।
थपि सलाह करि राह, मिलन माहारांन पधारिय ॥
दोय कोस लौं दोल, आय संनमुख करि निजरि।
फिर मिल डेरन आय, रागरंग हरख चित्त धरि ॥
हय गय पट भूषन निजर करि, विदा कीये सिर नम्मि तव।
आइयो सहर दिखन महल, हुकंम कीन्ह माहारांन जब ॥४३७॥

भीम आय तव महल, दुतिय दिन दौलत आइय।
जग मंदिर अरु जगनिवास, दुव महल दिखाइय ॥
हय गय भूपन वसन दीन्ह, कीय विदा पटेलह।
सादल यह वंदगी, करी कुल रीत अठेलह ॥
कीय कूंच तांम मरहट कटक, उदयापुर आनंद नित।
माहारांन भीम तप जोर तैं, वाय वद्दल ज्यौं खल विलत ॥४३८॥

दुहा

पंचम सुतिथि असाढ़ सुदि, वरस छासठा जांन।
मीरखांन [1] आयौ ज दिन, संग दल लियें अमांन ॥४३९॥

भीम विदा अगजीत कीय, मिलन रांन ठहराय।
आनि निवावहि भीम के, तदिन लगायौ पाय ॥४४०॥

स्वांमि धरम पन सुभनद्रिढ, धन अजीत मति सार।
सहस मुखो दल वुद्धि वल, सूची रंध्र निकास ॥४४१॥

---

१. 'मीरखांन' के लिए इतिहास ग्रन्थों में 'अमीर खां' नाम प्रयुक्त हुआ है। सं०

छंद भुजंगी

लग्यौ पाय श्रीरांन कै मीरखानं । तिनं सत्थ मिछ्छं अनेकं भयानं ॥
सजे संग आसेख तेसेख रूम्मि । परेसांन अग्गं चले चींन भूम्मि ॥
हवस्सांन थांन अनेकं हव्वस्सो । मुगल्लं इरांनी चले तेग कस्सी ॥
तुरांनी अमांनी कठ्ठठे अनूपं । बलख्खी खुरासांनयं घोर रूपं ॥
दिलीवाल सूरं करूरं अनेकं । तनं दिघ्घ आजांन वाहं सु केकं ॥
अजं यक माहिष्ष रोजं भखानं । वलं खंचि आढार टंको कमानं ।
तिनं इंगुरू रंग मुखं सुरूख्खं । रजं चित्रकं सिंघ मंजार चख्खं ॥
तनं ते त्रिकालं पवित्रं गुसल्ला । करे पंच निव्वाजं धू नम्मि अल्ला ॥
कृतं आदरं पीर पैगंवरानं । मनं फक्करं मंन्नि काजी कुरानं ॥
हकं चीज भोगी अहक्कं तियागी । विरतं जगं स्वांमि अल्लाह रागी ॥
गरिठ्ठं भुजा जंग पिठ्ठं अफेरं । खिजं दिठ्ठ धिठ्ठं मनौ रूठ्ठि सेरं ॥
करं वंटनं आथ खैरात सारं । रिनं उल्लहं दुल्लहं हूर नारं ॥
चितं धौनि सा जग्गि सामाध जंगं । फिरे पांहुने से जिमी धूम्र भंगं ॥
धरै पाय नित्तं किताबं सरस्से । मनौ भूमि आयं खुदायं फिरस्से ॥
गढे कौल वौलं सुध्रम्मं गरव्वी । पढै पारसी ते तुरक्की अरव्वी ॥
सभ्भे आयूधं भेद छत्तीस भत्ती । तुजी लेजमं वांक पट्टा कुसत्ता ॥
धरी देह नव्वाब साहाय कज्जं । मनौ कुंभ कै इंद्रजीतं विरज्जं ॥
अमौलख्ख साजं अमौलख्ख वाजं । भुजं लख्ख लख्खं लहैं तेस काजं ॥
इसे जोध आनेक घेर्‌यौ अमांनं । लग्यौ मीरखां पाय श्री भीमरांनं ॥४४२॥

कवित्त छप्पै

मीरखांन लगि पाय, जोरि कर अरज सुनाइय ।
तुंम हिंदुव पतसाह, हम जु पय सेव सिपाइय ॥
भईजु कछु तकसीर, माफ करियौं माहाराजन ।
विदा देहुं अब हमहि, और कहियें ग्रह काजन ॥
करि कुरव भींम हय गय बगसि, सीख दीन्ह वाहुरि असुर ।
गिरजेस कृपा आनंद अति, मनहुं मिटिय उपरागपुर ॥४४३॥

दुहा

भुगति ग्रहन ज्यौं सूर ससि, फिरे हौत निकलंक ।
यौं केते हमला टला, भगते भीम असंक ॥४४४॥

अकाल वर्णन

दुहा

फिर वरप गुनहत्तरा, भयौ महा दुरभख्ख।
अन्न ताप त्रिय पुरख तजि, तरुनी तजे पुरुख्ख ॥४४५॥*

छंद वेअख्खरी

भौं गुनहत्तर वरप भयंकर। दुरभख घोर जिहांन खयंकर॥
अदय धरम सुरराज विचार्यौ। चित तैं दया धरम व्रत टार्यौ॥
असमय प्रलैभूत भव मंडिय[1]। मेघ वूंद तिलमात न छंडिय[2]॥
आसमुद्र लगि अंन त्रिन नासे। जगजीवन हाकार प्रकासे॥
भांम तजे भरतार सकांमा। तजि भरतार अन्न दुख भांमा॥
नेह देह अरु ग्रेह विसारे। सगपन नाते उलंघित सारे॥
काठ तुचा भखि जीतव कारन। भख्ख अभख्ख अनेक प्रकारन॥
सौन्रन हौत कलेऊ जगसर। औषध अंन भयौ ता अवसर॥
पूरव पच्छिम दच्छिन उत्तर। अन्न त्रास हाकार विसत्तर॥
पंच तपाय असंखित मांनव। कंकर वार भई जग जांनव॥
दागैं को कित गाडन हारे। नांहि मिलैं कोऊ धींसन हारे॥
मांनुष मुंड रूलंत जमी पर। टोल विहारत ज्यौं नद अंतर॥
अदता धरम इंद्र चित सज्जिय। सुदता धरम भीम नहिं तज्जिय॥
द्रव भूपन लेख विमन कंकर। सेवक रैत जिवाय नरेस्वर॥
घोर समैं चित हौय दयालह। दास जिवाय करी प्रतपालह॥४४६॥

छंद निसांणी

ठारह सैं गुनहत्तरा जग रौरव छाये।
मठहुंदा देवराज जल छंटन दाये॥
फैल दुनी हहकार नाद लखूं म्रत पाये।
खसम विसारे अवरतां न अंन ताप अमाये॥

---

* संवत १८६७ में भाऊरी फौज थी पोटला झगड़ो हुवो देवीसींघ जी काम आया सो केहणो छै। (इसका वर्णन अलग छन्द में कवि करना चाहता था जिसका संकेत मूल ग्रन्थ के हाशिये में उपर्युक्त पंक्ति द्वारा किया गया है) सं.

१. मंड्यौ २. छंड्यौ

आदम सौर सितौर के आखिर अस्याये ।
ढेर दिपं दाउस्तखांन मिट्टी न दगाये ।।
आलंमवार दुहिल्लियां चोदस वरताये ।
चचापिदर वरादरांन मादर विसराये ।
जिथू तिथूं हाक अन्न किथ्थूं नहि थाये ।
खालक महर विसारं दा जग कहर दिखाये ।।
द्वादस मेघ जिहांन पैं जल वूंद न आये ।
मेह दिवांन त्रियौदसै जग भीम जिवाये ।।४४७।।

दुहा

कोऊ पालत अप्प ग्रह, कोऊ तन पाल अपांन ।
जग दाता पालक जगत, धनिव भींम माहारांन ।।४४८।।

घोर समय गुनहत्तरा, सब जग दखिय छेह ।
भीम सत्त रख्यौ भुजन, तातें बरष्यौ मेह ।।४४९।।

सींग पूंछ अवतार कै, सुने नांहिं निरधार ।
सतव्रत संपत विपत इक, इहि लच्छिन अवतार ।।४५०।।

म. भीमसिंघ का चित्तौड़ जाना

दुहा

चेत वदि अेकादिसी, वरष सत्तरा फेर ।
भये दिवांन सवार संम, लै नवाव जमसेर ।।४५१।।

छंद पद्धरी

माहारांन भीम आरौहि वाज । पायांन कीन निज धर सकाज ।।
माहाराज कंवर लिय अमर संग । अरु लिय जवांन जितवांन जंग ।।
श्रीनाथ नयर दर कूंच आय । कीय दरस रांन व्रजराज पाय ।।
कर कूंच आय फिर द्वारिकेस । लिय राजनगर गढ तव नरेस ।।
निज थांन थप्पि अग कूंच कींन । आंविलीय घेर चितं कोप भींन ।।

कोठारदार[1] रूपहसि रांन । करि डंड कीन्ह फिर कूंच रांन ।।
सिवदांन आत तहां लग्गि पाय । तिन भेजि उदयपुर जतन चाय ।।
गोपालसिंघ नूंतीय सकांम । गाडरहमाल तव किय मुकांम ।।
पधराय रांन पय मंड मंड । करि निजर गौठ उच्छव अखंड ।।
संग पासवांन मोतीय सुभाय । तिंहि सहित उतरि गढ वीच आय ।।
जैवंन सु गौठ सुख च्यार जांम । त्रय रात्रि दिवस त्रय रहि सकांम ।।
हय वसन निजर कीन्है गुपाल । फिर चढें भीम तिंहि वंधि पाल ।।
मुक्कांम दुरग हंम्मीर आय । सतिदास संग परधांन राय ।।
लगि पाय आय वीरम किसौर । साद्दल पाय लगि ताहि ठौर ।।
करि कूंच आय वस्सी नरेस । कीन्है मुकांम कंपित अरेस ।।
चीत्तौर अग्र माहारांन आय । धीरत आय तहां लग्गि पाय ।।
पधराय भीम गढ़ सीस धीर । पग मंड निजर कर गौठ वीर ।।४५२।।

दुहा

प्रात समय दूजै दिवस, अन्नपूरना आय ।
भीम देवि के पाय लगि, अस्तुति करत वनाय ।।४५३।।

श्री अन्नपूर्णा स्तुति

छंद अर्द्धनराज

नमांमि अंनपूरना । असंख दैंत चूरना ।।
त्रिसूल डाकयंधरी । नमांमि सक्ति संकरी ।।
दयंत नासकारिनी । नमांमि दासतारिनी ।।
त्रिलोक जीव मोहिनी । नमांमि सिंघ रोहिनी ।।
नवघ्घनं उवारिनी । छराल वास कारिनी ।।
सु आय कौर कावरी । जिम्हाय अेक डावरी ।।
निग्रोध पल्लवं तरं । भये कनंक तासरं ।।
हमोर मोद कारिनी । सुमाल जुध हारिनी ।।
निहारि देवि देवतं । प्रनाम गौरखं कतं ।।

---
१. कोठारिया

जुधं महिष्ष भंजनी । नमांमि देव रंजनी ।।
नमांमि तार अच्छरी । दुलज्ज बीजयंधरी ।।
त्रई रमा विधायकं । चऊथ कांम गायकं ।।
सुपंच अंनपूरना । यई नमो संपूरना ।।
मनुं सु द्वादसा खिरं । सु रिद्धि सिधियं करं ।।
पढैं जुलख्ख भावही । जनंम रौर नावही ।।
नमो अकाल टालिनी । नमौ सुबाल पालिनी ।।
घटं घटं निवासिनी । नमौ चित्तौर वासिनी ।।
अनेक दुख्ख भंजनी । नमौ नमौ निरंजनी ।।४५४।।

छंद साटक

वाहं वेदत्रिसूलअंकुसगदा डाकायुधाधारिनी ।
पायं नम्मि सुरिंद्र चंद्र वदना सदना सुवुध्यादया ।।
अंग नेत्रा मृगराज मध्य सुभिता हस्तांघ्रिभा नीरजा ।
श्री मां पूरन अन्नतन्नसुखदा जैं जै सिवासंभवा ।।४५५।।

श्लोक अनुष्टप

सवित्री पद्मा गौरी, माधवी रोहिनी रना ।
नैरती वायवी यांमी, जै जया विजया स्वहा ।।४५६।।

रिद्धि सिद्धि खिमा लज्जा, तुष्टि पुष्टि सु सिद्धिदा ।
स्त्रीपुत्रधनदा देवी, वरंदात्री नमोनमः ।।४५७।।

त्वं नरीकिंनरी जक्षी, अमरी पन्नग्गी नग्गी ।
कौवेरी तारखी माया, गांधर्व्यै ते नमो नमः ।।४५८।।

संपदा शीलदा शीला, सर्वगा सर्व रक्षिनी ।
सर्वथा सर्व देहस्था, सर्वेशी सर्व मंगला ।।४५९।।

निर्विघ्ना नांमरूपा च, नर नारी निरामया ।
नर्मदा निम्नगानेका, निप्कला निर्भया नमः ।।४६०।।

कल्पादी कल्प अंता च, कविद्रा काव्यि कल्पिता।
कुलकन्या कामदा काली, कल्पवृक्षा नमस्कृतः ॥४६१॥

मधुकैटवधा देवी, माहिपंधूम्र घातिनी।
रवेता चंड मुंड्घ्ना, शुंभनिशुंभहा नमः ॥४६२॥

जनानां संकटे त्राता, भुक्ति मुक्ति प्रदायनी।
दुर्भिक्षं नाशिनी अंबे, अन्नपूरनया नमः ॥४६३॥

अंनपूर्णा इदं स्तोत्र, प्रातरुथ्थाय यः पठेत्।
रौरव शत्रु भय नास्ति, संपदामगमत् ध्रुवम् ॥४६४॥

दुहा

फिर दिवांन दरसन करे, नीलकंठ जटधार।
पय वंदत सुर नर असुर, अजरामर त्रिपुरार ॥४६५॥

संकर सिसधर सत्रुहर, सूल डमरूधर ईस।
कीय सतूति अरिसिंघ सुव, जयसिव कहि नमि सीस ॥४६६॥

श्री नीलकंठ शिव स्तुति

छंद वृद्धनराज

तनं विभूत आद भूत भूतनाथ भासयं।
मनौ कि रूप अद्रिको अनूपभा प्रकासयं॥
तुचाम तंग आव्रतं कि वारि दंस पाथयं।
नमो अनाथ नाथ सिंभु नीलकंठ नाथयं ॥४६७॥

पिनाक डाक पांनि सोह सीस आक रज्जयं।
जगत आद सत्यवाद सिंगि नाद वज्जयं॥
अघोघ दुख भंजनं कृतं जनं सनाथयं।
नमो अनाथ नाथ सिंभु नीलकंठ नाथयं ॥४६८॥

निसेस भाल रूंडमाल व्याल कंठ सोभितं ।
कपाल खाल ज्वाल ओज टाल गंग लोभितं ।।
दिगेस सुरं रिखेस आय नंम्मि पाय माथयं ।
नमौ अनाथ नाथ सिभु नीलकंठ नाथयं ।।४६९।।

ऊचार तार अग्र ओंनम सिवाय पछ्छयं ।
पटखिरी चार मंत्र भूतनाथ अछ्छयं ।।
रटत तास ग्रेह होत पुत्र रिधि अत्थयं ।
नमौ अनाथ नाथ सिभु नीलकंठ नाथयं ।।४७०।।

अनंग नैंन पावकं पतंग लौं दघांनयं ।
भसंम अंध त्रेपुरं मतंग जंग भांनयं ।।
दयाल दींन विस्वपाल देव पंच माथयं ।
नमौ अनाथ नाथ सिभु नीलकंठ नाथयं ।।४७१।।

गलै भुजंग सीस गंग आरधंग गौरयं ।
लिलाट चंद जोग सिद्ध भृंग नैंन घौरयं ।।
धतूर आक कैफ हेत भूत प्रेत साथयं ।
नमौ अनाथ नाथ सिभु नीलकंठ नाथयं ।।४७२।।

दुहा

करि सतूत परदछ्छ फिर, आसिख लीन महेस ।
काली मंदिर दरस कज, कर्यो प्रवेस नरेस ।।४७३।।

कीय दरसन प्रणांम करि, ह्वै अधीन जुरि पांन ।
द्रव्य भेंट धरि देवि की, किय अस्तुति माहारांन ।।४७४।।

श्री कालिका देवी की स्तुति

छंद सारसी

विश्रांम चव नव सत सत्तह पंच मत अठईसयं ।
सारसी छंदं अख्खि फुनिंदं अग परिंदं ईसयं ।।

वाहं प्रलंवे जयति अंवे दास भंवे संकटं ।
जय जयति चंडी खेत खंडी चंड मुंडी दुर्घटं ।।
जय दैंत भख्खी दास रख्खी सूर सख्खी संकरी ।
जय राजरांनी सुख्ख दांनी श्री भवानी ईस्वरी ।।
जय श्री सवित्री सिंघपत्री सिभ सत्री सूलिनी ।
जय सर्व सिद्धि रिद्धि निद्धि दैंत कुल निरमूलनी ।।
जय जगविधाता पिता माता सर्व नाता संनिधी ।
जय पुरष नारी वेपधारी जगतकारी अद्रधी ।।
रत वल असंभं निसुंभसुंभं महन रंभं भंजनी ।
मधुकैट जोरं महिष घोरं धुम्र लोचन गंजनी ।।
नर नागदेवं जुक्त भेवं करत सेवं पायतं ।
संसार सारा पुत्र दारा निध अपारा दायतं ।।
निज जन कृपाली रूप काली काल टाली लाघवी ।
जय विष्णु माया अमित काया दीह दाया माधवी ।।४७५।।

कवित्त छप्पै

मुख विलास तंमोर, नयन जुग रेख सुकज्जल ।
केसर आड लिलाट, ग्रीव मोती हारावल ।।
कंचन रसना कमर, चीर हिम तार अचंभम ।
प्रभु कटि तट ओपंत, सुरंग लहंगौ रविकर सम ।।
अविरल अखंड हननी अछत, तैं जननी सुखदात तूं ।
यह रूप भजूं तो कहुं उमा, हिमगिरि राज कुमार हूं ।।४७६।।

छंद साटक

(पट भापा वर्णन)

त्वं त्रिदशारि निघाय खङ्ग विस्मेछित्वासि रासीपदं[1] ।
काली लोयण लोल मीण अलके आलोल आलि अलि[2-3] ।।

१. संस्कृत २. नागपिसाची ३. पिसाची

कंदो चंदो अविंदो सुहयं बंधौ वाग कुंदौ सुहिंदौ [1]।
विव्रूहोण रणायणंम्मि पैणा जै जै ऊमा कालिका [2-3] ॥४७७॥※

छंद साटक

(नव रस वर्णन)

बांमगे हरथा सिंगार [4] नगनं हास्यं[5] भयं [6] भोगिनां।
कामं दाह विलौक नैन करुणा [7] सारोस [8] गंगा तया॥
नाना भेप महेस दिखि विसमं [9] संग्राम [10] सानंदया।
नौ रस श्रीसिव[11] वित्त कुत्स[12] पुरुषास्तेसानमः कालिका ॥४७८॥

दुहा

लै वर आसिक सक्ति पह, करि सुचित उदमाद।
भीम आय दरसन करिय, कुंभ स्यांम परसाद ॥४७९॥

श्री कुंभश्यांम स्तुति

छप्पै

ॐकार अकार, जगत आधार जगतपति।
पावत वेद न पार, नाथ निरकार सुध नित॥
अखिल उदार अपार, स्वांमि संसार सुरेस्वर।
ऋष्ण दया का सार, तार जगदेव तरेस्वर॥
भरतार लछ्छि सुख सारभनि, कर हजार संतार करि।
जय जय निधार आधार प्रभु, कुंभस्यांम गिरधार हरि ॥४८०॥

---

१. सूरसेनी २. मागधी ३. प्राकृत

※ क– सर्व साटक अपभ्रंस

ख– लछना : जहां उपमांन सौ उपमेय जांन्यो जाय सों प्रयोजनवती सुध साध्य-वसांना लछना। कंजलता को देवे वारौ मेघ ता सों केस जांने, चंद्र सों मुख,...... ज्यों अरविंद दसोंन, सुक सों नाक, वं...दपहर्या पुष्प सों होंठ, वाक सरस्वंती सों न कुंद सों दांत ...य्याति लछना।

ग– रूपकातिसयोक्ति अलंकार छैं, इत्यार्थ।

४. शृंगार ५. हास्य ६. भयानक ७. करुण ८. रौद्र ९ अद्भुत १०. वीर ११. शांत १२. विभत्स

जय वराह उग्राह भूमि, करि राह समंदर।
जय जय कमठ गरिठ्ठ पिठ्ठ, पव्वय धृत मंदर॥
जयति मछ्छ निज भक्ति पछ्छ, कृत रछ्छ सत्य व्रत।
जय नृसिंघ मृग कस्य भंग, प्रहलाद काज कृत॥
बावन दुजेस पावन जयति, जय रघुवर जदुवर सदय।
त्रय लोक भूप दसरूप कृत, बुध रु किलकी जयति जय॥४८१॥

नीरद स्यांम समांन, देह छवि अतुल प्रकासित।
सीस मुकट पट पीत, छटा विद्युत अभ्यासत॥
वांम पांनि रजि चाप, बांन छवि देत दछ्छ कर।
कसि कटि तट तूंनीर, वदन छवि कोटि कांम वर॥
श्रुति जुगल सुनग कुंडल सुभग, मनु ससि रथ रवि जुग चरन।
मुख मधुर हास्य बामंग श्रीय, जय जय जय असरन सरन॥४८२॥

गरूरध्वज गुन ग्रांम, गदा ग्राहक गनि गोविंद।
परमपुरुष परमेस, पतित पावन पंकज पद॥
नागनाथ नरनाथ, न्रवर नरहरि नारायन।
माधव मधुपुर मीस, मदन मन मोह नमायन॥
कंसारि कमल लोचन कसन, कौसलेय करुना करन।
धानंष पांन निश्चेतेज[1] धनि, धराधीस गिरवर धरन[2]॥४८३॥

रमा रंज रघुराज, राज राजेस रोषरत।
रांवनारि मरिन रौध, रूप रिव रूचि तन राजत॥
रंक राव कृत रीझ, रसा राखव मिटि रौरव।
रखत रैंनि सिर रजा, रूंख रोहन पट चौरव॥
रंगनाथ रज्जि ससि रार रवि, रट रत रहत जुजन अवन।
रिझवार रूप रंगराग रूचि, रास रसिक राधा रवन[3]॥४८४॥

श्रीधर श्रीकर श्रीस, सोम सूरज कुल मंडन।
सीतापति श्रीरांम, सीस दस सकुल विहंडन॥
सत्यभांम सुख सजन, सुर्ग तैं सुरतरु आंनन।
श्री रुक्मिनि संदेस, सुनत सजि सत्रव भांनन॥

---

१. ध्रुवधांम २. वृत्यानुप्रास, प्रसादगुण ३. वृत्यानुप्रास

सिंधुर सिहाय सद श्रुतिसझन, संख पांनि सुभगत करन।
सीसोद सीस नमि कीय सतुति, श्री श्रीवर असरन सरन[1] ॥४८५॥

दुहा

कुंभस्यांम के पाय लगि, आय महल माहारांन।
राजकाज कीन्है वहुरि, रचि सलाह परधांन ॥४८६॥

कवित्त छप्पै

धीर पास चित्तौर, लै रु खाली करवाइय।
कूंची कर अमरेस, वगसि गढ सरभ भलाइय ॥
भीम आय तरहटी, भये दाखिल मुक्कांमह।
करि सलाह निज सुभट, सीख जमसेर सु तांमह ॥
नवाव खिज्जि हक्क मंगि जब, औल कज्ज सब सुभट नटि।
कर जोरिय कंवर जवांन तव, हम नवाव लै जैंहि थटि ॥४८७॥

दुहा

पीठ थप्प कर सीस धरि, अख्ख भीम यह वैंन।
जाहू पूत तुव सैंनपत्त, हैं तेरैं संग सैंन ॥४८८॥

सतीदास परधांन संग, दीन्है कंवर जवांन।
भीम चलै उदयापुरह, करि दर कूंच पयांन ॥४८९॥

अरिल

आय उदयपुर करत अनंदह । सादल धीर साथ नर इंदह ॥
राजकाज जयचंद चलावत । आपद सिंधु थाह नहिं आवत ॥४९०॥

लग्यौ फेर वरस इकहत्तर । रखै रांन सिरवंधी नौकर ॥
रूस्तम वेग महंमद खांनह । याकु सह सत पंच जवांनह ॥४९१॥

हक चढि धरनौ भयौ सिपाहन । डौढी पोल वंध जल राहन ॥
सादल आय वचन मुख रट्टिय । किसनावत पित संकट कट्टिय ॥४९२॥

---

१. वृत्यानुप्रास

दुहा

दूध अभय जल आवटत, यह रजपूतन चाल।
सिर देतैं निज स्वामि कज, साच करी सदमाल ॥४९३॥

सादल ज्यौं संकट समय, सिर दै स्वांमि समंध।
राजनेत रजपूत जे, न्याय धरै निज कंध ॥४९४॥

अरिल

भीम भांन ग्रहि मेछ्छ अमप्पिय । ऊग्रहि सदै सीस निज अप्पिय ॥
आय फवज्ज चारि उदयापुर । वापू अरु जमसेरऊ वंवर ॥९४५॥

समिल दलेल रु साहिवजादह । अरु हीमत वहादुर आदह ॥
ताव विताव सुवग्गि अमांनह । अंगद पाय भयौ माहारांनह ॥४९६॥

छंद पद्धरी

चवसैंन उदयपुर करि मुकांम । चित धर्म छंडि लूटि रय्यत ग्रांम ॥
आवर्त्त कीन्ह इम उदयनेर । सिव कंठ मनहुं अहिराज घेर ॥
वद्दल कि विंटि मनुं मारतुंड । मनुं चद छाय निसि वायकुंड ॥
कै कंन्ह रास परिवेरव वाल । कै उदध नीर वरवाग ज्वाल ॥
चहुं ओर असुर विच भीमसिंघ । नेवात कवच मनुं पथ अभंग ॥
वेरिय कि सिंघ जंवूक असंक । हनुमंत असुर घिरि मनहुं लंक ॥
घेरिय कि ब्रंम्ह माया विभात । गोरख कि व्यटि सिधंन जमात ॥
दल फैल रूप नीरध अथाह । अगसत भींम अंचमय ताह ॥
निज पाय पंच सत जोध जांम । चालीस सहस दल रूकि तांम ॥
न्रप वुधि पवन दच्छिन चलाय । अरिसेन उत्तर वद्दल उडाय ॥
तप भाग्य जौर अरु क्रपा सिंभ । अरि कढ्ढि भीम थिर जेतखंभ ॥
भुज विरद रांन संग्रांम लीन्ह । थल ऊथल भूमि तिंहि सुथल कीन्ह ॥
सुत अरसि रांन सूरत सींम । कपि पाय जेम रहि अडिग भींम ॥
वहु जुध जीत जुद्धन अचल्ल । अखरेत सद्रढ अवखाल मल्ल ॥
हामीर भौज क्रन सिवर हाथ । नखतेत भीम धन्य हिंदुनाथ ॥४९७॥

इन्द्रगढ़-कोटा का विवाह

दुहा

ठारह सै वोहित्तरा, कोटै थप्पि विवाह।
भीम रु अमर जवांन त्रय, दुल्लह बने ऊमाह ॥४९८॥

कोटा तें सव सौंज लें, आयौ गोकलचंद।
दूलह भीम जवांन वनि, आय चित्तौर अनंद ॥४९९॥

अमर कुंवर तहां पाय लगि, वनिरु वींद संग थाय।
चले कूंच दर कूंच तव, भैंसरोरगढ़ आय ॥५००॥

कवित्त छप्पै

रावत रूघपत समुख आय, पय लग्गि नम्मि सिर।
गढ़ मज्झैं पधराय, परठि पयमंड निजरि करि ॥
हय गय भूपन वसन, दरव कीनै निजरांनह।
गोठ दीन पित प्रसंन कीन, सज्झि संग प्रयांनह ॥
मुकांम आय गिरधरपुरह, माधव सनमुख आय तहां।
हय हथ्थि द्रव्य भूषन वसन, अरु झिलाय नालेर जहां ॥५०१॥

दुहा

कूंच भयौ दुजै दिवस, लग्गे पाय अजीत।
ह्वै जगपुरे मुकांम तव, गवत वंना रसरीत ॥५०२॥

व्याहन कज चढि इंद्रगढ़, कंवर जवांन अभंग।
भीम अमर कोटा दिसह, चढ़ि व्याहन रसरंग ॥५०३॥

कवित्त छप्पै

चढिय भीम अमरेस, मग्ग नंद गांम उमंगह।
आय समुख द्वै कौस, भूप उमेद अभंगह ॥
मिलि माहाराव दिवांन, अमर उमेद मिलांनह।
मिलि किसोर पीथल विसंन, आनंद अमांनह ॥

दुतरफ जुहांर चल्ले मगन, भये मुकांम किसोरपुर।
पवसाक सभि वंधि मोर चढि, व्याह काज गहिलोत गुर ॥५०४॥

छंद अर्द्धनराज

चढे दिवांन भीम वंधि मोर धू विवाहनं।
चढे कुमार अंमरेस दुल्लह उछाहनं ॥
अरोहि गजपीठ भूप भूषितं जवाहरं।
मनौ भयौ ऊदे दिनेस सीस स्यांम पाहरं ॥
वजैं सवद रूद श्रौंन आनकं उछाहयं।
मनौ समुद्र नीर गाजि पूनिमं अथाहयं ॥
हरौल भूप सानिधं जसौल होत सौरयं।
मनौ कि गाज इंद्र पैं करैं अवाज मौरयं ॥
जगी हलाल जोत रात द्यौ भई अभूतयं।
मनौ लगाय लंक वायपूत रांम दूतयं ॥
उमेद द्वार आय भीम तोरनं वंदानयं।
विदेह ग्रेह व्याह सीत रांमचंद्र जांनयं ॥५०५॥

कवित्त छप्पै

कीय चौंरी प्रावेस, त्रिया पधराय वांम अंग।
जोरि गंठ हथलेव, जग्य करि वेद मंत्र संग ॥
फिर भांवरि रह वेद, आय माहाराव उमेदह।
दीय कन्या वर दांन, सींचि हथलेव सुभेदह ॥
किसोर विसन पीथल सुत्रय, आय मंगि निजु नेग तव।
सगपन सनेह आछेह करि, दिय कटार महारांन जव ॥५०६॥

दुहा

सुता उमेद सु भीम वरि, किसन सुता अमरेस।
सुता समांन जवांन वरि, ऊछव भये असेस ॥५०७॥

दिवस पंच दस कटक जुत, भई गोठ मनुंहारि।
अमिट रसत माहाराव घर, मनहुं कुमेर भंडारि ॥५०८॥

आय राज जालंम तवें, पाय लग्य माहारांन।
दे दायज हय गय वसन, सीख दीन्ह फिर जांन ॥५०९॥

चांमिल नद ऊतरि तवें, किय नांनतै मुकांम।
गोठ करी जालम तहां, मिलन आय निज गांम ॥५१०॥

कीन्ह निजर हय प्रांत पुल, कीय प्रयांन महारांन।
आय कूंच दर कूंच करि, बींझोली निज थांन ॥५११॥

गोठ निजरि लै कूंच करि, फिर मांडलगढ़ आय।
कुंवर अमर पितु अरज करि, चित्रकोट पधराय ॥५१२॥

छंद पद्धरी

अमरेस चित्रगढ़ हरखि मांन। पगमंड मंडि पधराय रांन॥
करि निजरि निछावरि द्रव्य वारि। हिम रजत सुमन पग पग उछारि॥
पधराय महल मझ मात तात। करि गोठ रूचिर अठ्ठार भात॥
रहि चित्रकोट त्रय दिवस भूप। किय कूंच उदयपुर मग अनूप॥
दर कूंच कूंच निज नगर आय। सुभ दिन प्रवेस करि हिंदुराय ॥५१३॥

दुहा

सेवग स्वांमि सलाह करि, गोप जुगल मन मज्झ।
कोटे रखि आये अजंन, जमी वहौरन कज्झ ॥५१४॥

खेवत नित आपद धरम, तज तन हिम्मत राह।
प्रतपत पातल अमर ज्यौं, भीमसिंघ नरनाह ॥५१५॥*

धर्म-नीति वर्णन

अथ गाथा

यक दिन भीम दिवानं, पुछ्छिय सहुलास नीत रजधर्मं।
अरु वर्नाश्रम धर्मं, षट गुनयं राज अंगायं ॥५१६॥

---

* अठे संमत १८७३ रा आसोज विद १२ रे दन दलेल खां सुं रावत दुल्हैसींघ जी झगड़ो कीधो।

छंद पद्धरी

राजनीति वर्णन

कवि कृष्ण कहत सुनि भीम रांन । न्रप नीत रीत चित धरि विनांन ।।
वलमींक व्यास कहि रामचंद । अवलोक कहत सुनियें नरिंद ।।
न्रपनीत च्यार कहि सांम दांम । अरु दंड भेद विदुषन वखांन ।।

राजधर्म वर्णन

फिर माली धर्म न्रपराज अख्ख । उखटे सु फेर रौपहिं पुरख्ख ।।
चुनि लेय कुसम लखि कर्म काल । लघु पोषि भृत्य करि प्रनितपाल ।।
अति वृध विषम सम करहि छेद । वहु समिल वृछ करि विरल भेद ।।
जुत जतन समय जलपांन देंहि । अत वृधि लछि फल वेरि लेंहि ।।
नहीं लेंहि लच्छि न्रप करि अदव्व । फल सरहि जेम विगरहिं दरव्व ।।
करि वाग भूंम रच्छित सुघट्ट । रच वार भृत्य कंटक विकट्ट ।।
न्रप धर्म निपुन चित मालकार । सुख भुगति राज भुम्मिय सुधार ।।
मंडल सुतेर न्रप सधित कींन । सुनि सत्रु मित्र अरु उदासींन ।।
इतनी सु वुधि नृप चलहिं कौय । सुप्नहूं दुख्ख तिंहि नहिन हौय ।।

सप्त अंग राज वर्णन

सप्त अंग राज वर्नत कवेस । स्वांमी प्रधांन दल दुर्ग देस ।।
भंडार मित्र उत्तिम सु मांन । यह सात अंग राजस प्रमांन ।।५१७।।

छंद उद्धौर

राजा का पट्गुण वर्णन

गुन प्रथम संधि नरेस । करि सवल संध अरेस ।
गुन दुतीय विग्रह मांन । अरि भुम्मि लुट्टि जु रांन ।।
गुन त्रतिय न्रपवर जांन । जुध काज जात्र करांन ।।
गुन चऊथ द्वैध कहात । अन जुरन कही अनघात ।।
गुन पंचम आसन मंडि । अरि जोर लखि जुध छंडि ।।

गुन पटम आश्रय मांन । अरि प्रवल आश्रय आंन ॥
पट गुन सु अेह नरिंद्र । कहि वेद ब्रह्म दुजिंद्र ॥
प्रजपाल धर्म नरेस । जुग जुगन कथ्थित दुजेस ॥
हरिचंद भूप विदेह । सतवर्त प्रथु जु अरेह ॥
पनराज जोग सधाय । सुख उभय लोक सुपाय ॥
न्रप धर्म मूल अनाद । न्रप सत्य जग सतवाद ॥
न्रप अदय अदय जिहांन । न्रप मूढ जग सठ जांन ॥
न्रप विगरि विगरि संसाजि । न्रप सुधरि जक्त सुधारि ॥
जे राज निज ध्रम पाय । जिन अमर कवि जस गाय ॥५१८॥

चतुरवर्ण धर्म वर्णनम्

ब्राह्मण धर्म वर्णनम्

दुज प्रथम वर्न प्रकास । स्वाभाव सतगुन जास ॥
समदम रु सोच वखांन । तप क्षांति आर्जव मांन ॥
विग्यांन ग्यांन अछेह । परलोक निश्चय अेह ॥
अे भृंम्ह कर्म सुभायं । श्रीकृष्ण श्रीमुख गाय ॥

क्षत्रीय धर्म वर्णनम्

रज सत्व पित्रीय गात । सुभ सूर तेज सुहात ॥
जुत धीर दक्ष अभंग । दत्त भाव ईस्वर अंग ॥
स्वाभाव गुन रजपूत । यह जन्म साथ अभूत ॥

वैश्य धर्म वर्णनम्

रजत महवैस सरीर । वानिज कृषि हमगीर ॥
गौरस्य पालन गाय । दध दूध विक्रय चाय ॥
यह वैस सु धरम जांनि । मुख व्यास वेद प्रमांन ॥

शूद्र धर्म वर्णनम्

उतपत्ति तम रज सुद्र । अति तास दूभर उद्र ॥
कहि ब्रह्म पित्रीय वेस । त्रय वर्न सेवन तेस ॥
स्वाभाव सुद्र सु कथ्थं । चउ वर्न धर्म समथ्थ ॥

चतुर्आश्रम नाम धर्म वर्णनम्

ब्रह्मचारी

भ्रंम्हचार ग्रहीय प्रकास । अरु वांनप्रस्थ संन्यास ॥
पढि वेद विद्या सोय । चित भृंम्ह निष्टक होय ॥
मन वसहि भृंम्ह गिनांन । सौ भृंम्हचारीय जांन ॥

ग्रहस्थ

करि जक्त रीत विवाह । त्रिय भोग्य भुगवत चाह ॥
जिहि द्वार भिछुक आय । खाली न जात सुभाय ॥
सत देखि जक्त सराहि । कहि ग्रही आश्रंम ताहि ॥

वानप्रस्थ

ग्रह भोग भुगत अनेक । तिहि पुत्र उपजित अेक ॥
ग्रह सूंपि अथवा राज । वनवास करत सकाज ॥
त्रिय जुक्त तप सझि काय । सौ वांनप्रस्थ कहाय ॥

संन्यास

वन वसि रु मुक्ति अभ्यास । चित ब्रंह्म अनुभव आस ॥
सब त्याग हरिमय होय । संन्यास आश्रम सोय ॥
कवि किसन धर्म वखांन । सुनि रीझि भीम दिवांन ॥५१९॥

अंग्रेजों के सहयोग से दमन

दुहा

ठारह सै तिहोत्तरा, वरष जगत सिर वीत ।
कोटा तैं दिल्ली गये, भीम हुकंम अगजीत ॥५२०॥

मांनत नांहि न सैंधिया, वापू धर्म विहींन ।
ता पर भीम अजीत मय, रूद्र कोप मनुं कीन ॥५२१॥

कवित्त छप्पै

पुग्गीय चंडीनयर, सुतन अरजुन अरिसालह।
लाटसाह जरनेल, आय सनमुख अजमालह॥
नगर मज्झ लैजाय, ऊंच आवास उतारिय।
फिर मिझमांनी भेजि, मिलव सलाह उचारिय॥
अंगरेज अजंन सामिलि उभय, अेक प्रांन मय दोय तनुं।
किय विदा सेन दिखनाथ पर, लुपी पाज दरीयाव मनुं॥५२२॥

छंद पद्धरी

अंगरेज सेन करि कूंच जांम। दिखनाथ सीस चित कुप्पि तांम॥
पलटन असंख चलि कंपु जूथ। वहुरं गमनहुं वारिद वरूथ॥
रजमन सवार आपार चल्लि। वासंत मनहुं वनराय फुल्लि॥
अरु कठ्ठि तौप हय व्रपभ जुट्टि। दिन प्रलय मनहुं वरवाग छुट्टि॥
चलि मग्ग अमग्ग दल जूथविध। मनुं लुप्पि पाज मिल सातसिंध॥
वजि हाक सैंन अंगरेज जोर। मरहठ्ठ भज्जि लुकि च्यार ओर॥
हकि प्रथम सैंन पिंडार लार। किय जत्र कत्र मनुं प्रात तार॥
असवाव अस्व गज तोप छींन। पिंडार लुट्टि दहवट्ट कींन॥
जसवंतराव भाऊ अभंग। जावद वसांन जितवांन जंग॥
ता सीस कोपि अंगरेज तत्र। भगि मांन हींन ह्वै जत्र कत्र॥
डंकीन समिलि हलि टाट साह। तिन संग फौज इक लख्ख अथाह॥
हुररा रु रायपुर तिंहि छुडाय। लिय राजनगर अरिहर पुलाय॥
खाली कराय फिर कुंभमेर। रूकसत कराय दल उतर फेर॥
फिर टाट आय माहारांन पाय। मिल निजर कींन्ह चित हर्ष चाय॥
किय निर्जरि पत्र जे कंपिनीय। मंमारखी सुफिर मुलक दीय॥
जालमह पास लीय जाजनेर। सव सुभट आय पय भींम फेर॥
वंधि भूम्मिराह वेराह खंडि। सिवलाल तांम परधांन मंडि॥
तपवांन भूप महारांन भींम। भुजवलह लीन जिहि अथ सींम॥
साहाव टाट से अकलवंध। तिह मुलुक राज वंधीय प्रवंध॥
अगजीत स्वांमिध्रंम जगत जांन। भुज चूंड विरद दिय भींम रांन॥

कीय मेर जेर खग वज्जि झाट । रचि भीम दुर्ग इक दुर्ग टाट ॥
लु'टाक चोर ठग गय विलाय । अज सींह नीर इक घाट पाय ॥५२३॥

म. भीमसिंघ की बिमारी अर दान-पुण्य

अरिल

फिर पचहत्तर वरष लगांनह । तव थपि रांमस्यंघ परधांनह ॥
रामौ भीम रांन हमराहन । करत राज कारिज सुखराहन ॥५२४॥

भई सरीर खेद न्रप भीमह । सिव किय सुखी खित्रवट सीमह ॥
फिर दत कज निज भुजा फरक्किय । भीम मूंछ कर धर यह भक्खिय ॥५२५॥

खैंहै अमल रहैं जगवत्तिय । अमल विनां यह देह अन्यत्तिय ॥
सदन दीप विन तिमन सुभांनिय । जिम विन अमल देह जग जांनिय॥५२६॥

दुहा

सुखी भयै तव भीम कीय, खैवौ अमल विचार ।
रीझ विचारिय लख्ख यिक, रहैं गल्ल संसार ॥५२७॥

करवौ सो झट कीजियै, चुप कर रहियै नांहि ।
छीजत अंजुलि नीर ज्यौं, यौं नर ऊंवर जांहि ॥५२८॥

माया घन छाया यहैं, थिरन कहूं ठहराय ।
जग ठगनी ताकौं ठगे, कौ बिरले न्रपराय ॥५२९॥

माया हरि की आदतें, नर की कैसैं होय ।
वहुत नेह यातें करैं, मरैं अंत दिन रोय ॥५३०॥

रखीया कौं नेह करि, वीसल कारू'न[1] वैंन ।
यह चख अंजे और पैं, गये नितारत नैंन ॥५३१॥

जे दांनी हरिअंस तिन, जांनी देह अन्यत्त ।
दीनी जिन कीरत लही, रही जुगौं-जुग वत्त ॥५३२॥

---

१. कारून पैगंवर रो भाई हो जिके ऊंट ४० चालीस खजाना री कूंच्यारा हालता हा ।

कवित्त छप्पै

वल[1] अरु सिवर[2] दधीच,[3] भूप हरिचंद[4] रघुव्वर[5] ।
करन[6] भोज[7] विक्रम[8] हमीर,[9] जगदेव[10] जगौ[11] धर ।।
लाखौ[12] जेहौ[13] मांनसिंघ,[14] गजसिंघ [15] अमर [16] लहि ।
रायसिंघ[17] सुरतांन,[18] खांनखांना[19] अकवर[20] कहि ।।
खट्टीय भुजांन वल जुध करि, दै मट्टी दट्टो न तिन ।
इत्यादि भूप वंटी सुलच्छि, नाम अमर रख्खिय धन ।।५३३।।

दुहा

करा सु जोरी पंच सत, मोती जूंट पचास ।
द्वै सत कहि सिरपाव अरु, द्वै गज सौ वरहास ।।५३४।।

सवैं कविन को अस्व गज, दै भूषन सिरपाव ।
अमल पीत दत भीम किय, छोल मनहुं दरीयाव ।।५३५।।

कविरांजिन राठौर तव, दै सरपाव अनूप ।
घर घर कवित्रिय पलक में, कींनी दुलहनि रूप ।।५३६।।

कवित्त इकतीसा

व्रजभापा

अमल अरोगिवे के उछह दिवांन भींम,
रीझ छाजे आये सुनि अघ डौलियतु हैं ।
पट व्रंन पीर मेटिवे कौं जर चीर हीर,
गहनें चमीर के अमोल मोलियतु हैं ।।

---

१. दैत्यराज २. राजा ३. रिष ४. राजा ५. रांमचंद्र ६. राजा ७. राजा ८. राजा ९. राणा १०. पुंवार ११. राणा १२. जाड़ेचौ १३. चाड़ेचौ १४. कछवाहा १५. राठौड़ राजा १६. रावल अमरस्यंघ भाटी, जैसलमेर १७. वीकानेर राजा १८. सिरोही राव १९. नवाव २०. वादशाह

तोसाखांनै खजांनै पलनांखांनै फीलखांनै,
दै दै मुख सवद चिहुंधां वौलियतु हैं।
हाथिन के हलके तवेले वाजराजन के,
आज कविराजन के काज खोलियतु हैं ॥५३७॥
मगन कौ हाल श्री गुपाल सौ निवेद्यौ विध,
मिटत अजाद कैसी हौत अेकु चाल हैं।
मैंनें तो वनाये आजनम के कंगाल ताकै,
लिखे निज कर तैं सुरंक अंक भाल हैं॥
अैसो नर भेटत दिवांन के चरन ताकौं,
भीम रीझ दै कैं अेती करत सुथाल है।
ओढिवे दुसाल पौढिवे कौ चित्रसाल घर,
भरिवे कौं माल वैठिवे को सुखपाल हैं॥५३८॥

दुहा

च्यारहुं दिस मग वहत लिखि, हय गय करभ कतार।
च्यारहुं मुख चक्रित रह्यौ, विध दत भीम निहार ॥५३९॥

फिर मंदिर जगदीस कै, धजाडंड चढवाय।
थपि मौसल इकलिंग इक, अमर दुतिय भटराय ॥५४०॥

दिवस महौछव मौसलन, दै मोती रु दुसाल।
गोवरधन गजधर दये, हिम गज हथिनी ठाल ॥५४१॥

दीनी मौज सिलावटन, करा सु जोरी वीस।
पाघैं समपी अेक सत, प्रसंन भये जगदीस ॥५४२॥

दिय रांनी राठौर दत, इक गज वसन अनेक।
कीय सतुति महरांन जव, सिर नंमि सहित विवेक ॥५४३॥

श्री जगंनाथरायजी की स्तुति

छंद गीतमालती तथा वेताल

जिंहि चरन मत अठईस कविवर अंत पय गुरु जांनयं।
हरिगीतिमालति छंद अरु वेताल खगपति मांनयं॥

जय कर्न कारन हरन अघ भय जगतपति जगदीस्वरं।
जय दीनवंधु दयाल सुरवर अमर नर नग ईस्वरं।।
जय स्यांम तन अजांन भुज कटि पीत पट लपटांनयं।
मनु नभ घना घन मेघ विच छवि तरित भात प्रमांनयं।।
जय च्यारभुज हरि गदा नीरज संख चक्र दधांनयं।
सिर मुकुट मनु नीलाद्रि पर उगि प्रात अवसर भांनयं।।
जय गरुरगांमीं गरुर अग्रज गरुरध्वज गोव्यंदयं।
जय महामायक अजितमाया जगतमाया फदयं।।
जय कमल-कर पदकत-कमला कमल-भव भय छेदयं।
जय अखिल ईस्वर अज अनामय अजर अंग अखेदयं।।
जय मात वदन त्रिलोक दिखवन भक्त हित जदुदेवयं।
रथ चरन पांन दधांन श्रीवर रख्खि पन गगेवयं।।
वाराह जय हिरनाक्ष मार विहार कार समुंदरं।
रद अग्र धार उधार उरवी जस ऊचार मुनिंदरं।।
जय मच्छ कारनभूत[1] माधव लख्ख जोजन श्रंगयं।
सतवर्त भूप उवार निज जन प्रगट वेद प्रसंगयं।।
जय कमठ पिठ्ठ गरिठ्ठ क्रत मथ पयोरासि महाबलं।
धृत अद्रि मंदर रतन चौदह कढ्ढि हरि सुर वाछलं[2]।।
जय जयति जन प्रहलाद रख्खि करूप नरहरि धारनं।
धर धरम वाध असाध आसुर हिरनकस्यप मारनं।।
जय छलन वल सुरराज जनहित हास्य क्रत तन वावनं।
वैराट त्रयपुर त्रिपद छिद नभ आंनि सुरसुरि पावनं।।
दुजरांम जय जिन अेकविंसति कीय नछत्रि धरातल।
पित वैर अमरप मारि है हय सहस्रबाहु महाबलं।।
जय जयति क्रत वनवास राघव पिता वचन निवाहनं।
निज जन विभीपन लंक दे सीय वयर रांवन गाहनं।।
जय कृष्ण कंस विनास कर नख अग्र गिरवर धारकं।
मुख पुंज वाल गवाल लै व्रज कुंज्ज कूंज विहारकं।।
जय वुद्धि रूप सुवोध दाता दया धर्म प्रकासकं।

१. कारणभूत स्वरूप हुवो २. देवतां रे हेत कारण

पसु घात निंदत वेद विधि अरु क्रिया जग्य विनासकं ॥
जय हौंनहार किलंकि माधव ग्रांम संभल ठाहरं।
जस विष्णु पित ता ग्रेह संभव देस दच्छिन जाहरं ॥
जगंनाथराय अनाथ बंधव जय दसा कृति कारकं।
जय निगुन सगुन सरूप सुन्दर सिंभु हृदय विहारकं ॥
जय अज अरेह अरूप अत्थय अमर अजर अखंडयं।
पट भाव माया रहित अच्युत जोतिमय तन मंडयं ॥
जय सगुन स्यांम सरीर सिरधरि कीट पीठ निषंगयं।
दुव कर्न कुंडल वाम श्रीकर चाप वांन अभंगयं ॥
कटि तट बिराजत पीतअंबर वेदबाहु अजांनयं।
चव सस्त्र सुंदर गदा पद्म रु संख चक्र दधांनयं ॥
पद कमल नख रत स्वेत रवि छवि गंग जन्म वसुंधरं।
नित रमा सेवत कमल कर सिर नमत दिन प्रति सुर नरं ॥
पधराय उदयानयर जगपत रांन रचित प्रसादयं।
ध्वजडंड भीम चढाय कीन्ह प्रनांम जय हरि आदयं ॥५४४॥

कुंवरियों का विवाह

दुहा

वहुर्‌यौ वरप छिहत्तरै, भीमसिंघ नरनाह।
लगन पुच्छि सुभ जोतसिन, वायन रच्यौ विवाह ॥५४५॥

रांमस्यंघ परधांन सौं, करि सलाह महारांन।
कीन हुकम सरजांम कौं, अन धन वसन खजांन ॥५४६॥

सुरतसिंघ नृप वीकपुर, तास पुत्र रतनेस।
अजवकंवर ताकहुं दई, भीम चित्तौर नरेस ॥५४७॥

भाटी जैसलमेर पति, सुभ रावर गजसींघ।
रूपकंवर ताकहुं न्रपत, भीम दई रस रंग ॥५४८॥

कलौ भूप कहि किसनगढ़, ता सुत मोहकंम मांन।
कीकीवाई तिहिं दई, अमरसुता सुखदांन ॥५४९॥

विद असाढ़ आंठम लगन, थप्प पठय कज जांन।
किसननाथ अरु बीकपुर, पठये राव जवांन ॥५५०॥

जैसलपुर भाटी अजन, मेहता नाथ गनेस।
केहरगढ़ दिस बारहट, पठियौ रांम कवेस ॥५५१॥

जांन लेन केहर नगर, महतो सीताराम।
सगतावत गोकल[1] समथ, भीम पठय बुधि धांम ॥५५२॥

कवित्त छप्पै

भीम फरद लिखवाय, दये नूंते कविराजन।
देस देस हलि दूत, सुकवि लैअैवै काजन ॥
संभलि हाक विवाह, सुकवि धाये उदयापुर।
सिया व्याह रिषराज, मनहुं सांमिले जनकपुर ॥
दरियाव महोदध उदयपुर, दांन हाक बरखा बदीय।
इक सथ मनहुं प्रावेस किय, सुकवि रूप नवसै नदीय ॥५५३॥

छंद पद्धरी

हलि देस देस कवि उदयनेर। वसि भर्तखंड धर च्यार फेर ॥
चारन सु अेक सत वीस जात। आसंख भाट दिसि दिसि जमात ॥
दुजराज आय पंडित कवेस। सायर[2] जुवांन पढि मिच्छ तेस ॥
मोतीसर रावल आय जुथ्थ। बरवा रु सुक्ल[3] भोजग विरूथ्थ ॥
अरु कलावंत भगतन अनेक। लंघा रु जांनि ढाढीय विमेक ॥
मंगा सु कंवर रांनीयमंग। गढवार गढनमंगा उमंग ॥
परतीया अवर बीरव सु अख्ब। नट्त्रा रु राज नट ऊभय सख्ख ॥
भावाय और बहुरूप[4] आय। तरवारिय छेहन कवि बताय ॥
जे जगत मध्य मंगन कहात। ते आय उदयपुर जात जात ॥

---

१. सगतावत ठाकुर गोकुलदास जी कसनगढ़ जान लैवा गया सो केह्रणो।
२. सायर फारसी री वेतां वणावै जे मुसलमांनी कवैस्वर वै। ३. सुक्ल, वामणां रा मंगणहार होवे। ४. भांड

कै सिया व्याह मिथलेस मंडि । मनु आय सुकवि मिलि खंड खंडि ॥
को गिनहि नांम तिन देस जात । आये सु इते दिसि दिसि सुपात ॥
तिन हुकम दीन्ह रिध दैंन ढेर । मानहुं भंडार खुट्टे कुमेर ॥
कोठार सुकवि सरवत विलास । मालक सु थप्पि इकलिंगदास ॥
चिठ्ठी सु देखि रिध देत जात । अष्टाविधांन सभि दिवस रात ॥
जित तित दिखंत कविजन अनूप । मनु रचीय श्रष्टि विधि मगन रूप॥५५४॥

दुहा

अेक मगन लखि सूम के, कंपत तन मन प्रांन ।
कोट मगन लखि हरखि चित, धनिव भीम माहारांन ॥५५५॥

तन मन धन देवैं रहत, जाकै नित्य अिलाज ।
मनु अवतार हमीर लिय, कविजन पोषन काज ॥५५६॥

हींदू हींदूनाथ कै, नूते आय दवार ।
कहे आद षटतीस कुल, वरनत प्रगट विचार ॥५५७॥

छंद पद्धरी

कहि आद छत्रि रवि सोमवंस । अव प्रगट कहत छत्रावतंस ॥
सीसोद कमंध कूरम सुढार । चहुवांन गोरवाड गुज्जर धार ॥
चावरे तौंर चालुक वघेल । पांवार हड्ड खल खग्ग ठेल ॥
ऊमट चंदेल गोहिल अभंग । देवरे डाभि जितवांन जंग ॥
झाला रु डोडभट्टीय वखांन । परिहार जोध सोढा समांन ॥
नहि वर्तमांन ते नहिन दख्ख । जे वर्तमांन सव आय सख्ख ॥
उमराव आय सोलह अभंग । भुज मेदपाट जिन समय जंग ॥
कीरतसींघ[1] करतल अवीह । संभरीय राव केहर[2] जु सीह ॥
मोहकम्म[3] विजा सुत चाहुवांन । रावत पदम्म[4] नंदह भवांन ॥
कमधज अजीत[5] केसव पंवार[6] । रजवाट तेग दत भुजन्ह धार ॥

---

१. राजराणा कीरतसिंह, सादड़ी २. राव केशरीसिंह, वेदला ३. रावत मोहकमसिंह, कोठारिया ४. रावत पदमसिंह, सलुम्बर ५. राठौड़ अजित सिंह, घाणेराव ६. राव केसवसिंह, बीजोल्या

अनपाल सुवन गोकुल[1] अगंज । माहव[2] अनौप सुत दुसह भंज।।
सजमाल सुतन कलियांनराज[3] । साल्लंम[4] पतावत सुजस साज ।।
पाटरीय राज कहि छत्रसाल[5] । सारंगदेव अजमल[6] अपाल ।।
महाराज जौर[7] मौहकंम सुतन्न । अमरेस[8] भूप औपंम उतन्न ।।
हमीर सुतन महाराज भीम[9] । निज जैत[10]कमंध खित्रवाट नीम ।।
रावत जवांन[11] जालम सुजाव । रुघनाथ[12] मांन सुत सद्रिढ पाव* ।।
माहाराज कंवर सुदता जवांन । सुत भीम जोध निज भुज अजांन ।।
पित भूमि कज्ज मानहुं सिहाय । परताप रांन फिर जनम पाय ।।
सिवदांनसिघ[13] वंधव सपूत । करतव्व तेग निज वंस कूत ।।
सूरज्जमाल[14] वंधव जु सोह । अनपाल[15] दोल सुत जुध छछोह ।।
सूरत[16] इंद्र[17] काको सधीर । हद चूंड उभय दुलह[18] हम्मीर[19] ।।
सालंमसिघ[20] मधकर[21] अवीह । सूरज्जमाल[22] मौहव्रत[23] जु सीह ।।
जैसींघ[24] फत्तौ[25] गोकल[26]अफेर । मोहकंम[27]जोर[28] विजमल[29] सुमेर।।
सालम[30] अनौप[31] पीथल[32] कमंध । जालंम[33] ऊदौत[34] पदमौ[35]उकंध ।।

---

१. रावत गोकुलदास, देवगढ़ २. रावत महासिंह, वेगूं ३. राजराणा कल्याणसिंह, देलवाड़ा ४. रावत सालमसिंह, आमेट ५. राजराणा छत्रमाल, गोगुन्दा ६. रावत अजमाल, कानोड़ ७. महाराज जोरावरसिंह, भीण्डर ८. राजाधिराज अमरसिंह, शाहपुरा ९. राजा भीमसिंह, वनेड़ा १०. ठाकुर जैतसिंह, वदनोर ११. रावत जवानसिंह, कुरावड़ १२. रावत रघुनाथसिंह, भैंसरोड़गढ़ ।

* कुरावड़ हेटै रावत लालसींघ चवांण पारसोली, भैंसरोड़ हेटै वानसी रावत नारस्यंघ सगतावत ।

१३. महाराज शिवदानसिंह, वागोर १४. महाराज सूरजमल, शिवरत्ती १५. महाराज अनूपसिंह, करजाली १६. महाराज (वावा) सूरतसिंह, कारोई १७. महाराज (वावा) इन्द्रसिंह, वावलास १८. रावत दुलेहसिंह, आसीन्द १९. रावत हम्मीरसिंह, भदेसर २०. रावत सालमसिंह, ववोरा २१. रावत मधुकर, चावंड २२. रावत सूरजमल, थाणा २३. रावत मोहव्वतसिंह, वाठरड़ा २४. जयसिंह, लावा २५. रावत फतेहसिंह, वोहेड़ा २६. रावत गोकुलदास, पीपल्या २७. मोहकमसिंह, विजयपुर २८. रावत जोरावरसिंह, सेमारी २९. विजयसिंह, रूद ३०. ठाकुर सालमसिंह, रूपाहेली ३१. ठाकुर अनोपसिंह, केलवा ३२. पृथ्वीराज, दवाला ३३. जालमसिंह, वगेड़ा ३४. उदौतसिंह, मेजा ३५. पदमसिंह, गुड़ला ।

कुसीयाल[1] वहादुर पतो[2] सूर । वीरम[3] दोल[4] विसनो[5] सनूर ।।
किसोर[6] नवल[7] पाहर[8] अगंज । अभ[9] मालदेव[10] अरि जूथ भंज ।।
रिरमाल[11] विरद[12] नरहर[13] सुजांन । अगजीत[14] विसन[15] विजमाल[16] कांन[17] ।।
जसकर्न[18] खत डूंगर[19] अभंग । रिरमाल[20] अजन[21] तेजल[22] सुढंग ।।
चालूक नवल[23] सादल सुजाव । सव सुभट आय निज स्यांम पाव ।।
अगजीत[24] आय अरजुन सुतन्न । ध्रंम सांम नेत अति उछव मन्न ।।
घर घर उछाह प्रज वर्न च्यार । मंगल निसांन वजि राजद्वार ।।५५८।।

दुहा

घर घर चित्र विचित्र दुति, घर घर होत उछाह ।
सौभि जनकपुर अनंदमय, मानहुं सिया विवाह ।।५५९।।

देवीचंद रामा जुगत, घरत सांम ध्रंम मथ्थ ।
महतो सीतारांम सुत, सेरा सहत समथ्थ ।।५६०।।

कवित्त छप्पै

प्रथमहि आय वरात, कंवर रतनेस वीकपुर ।
सुरतसिंघ सुत उभय, वने दुलह सु वीरवर ।।
सहंस पंनर संग सैंन, सुतर हय गय रथ पायक ।
डेरा किसन विलास, भये आनंद सुभायक ।।

---

१. कुसालसिंह, थांवला २. ठाकुर प्रतापसिंह, फलीचड़ा, ३. रावत वीरमदेव, हमीरगढ़ ४. दौलतसिंह, सनवाड़ ५. वावा विशनसिंह, महुवा ६. वावा किशोरसिंह, खेरावाद ७. नवलसिंह, पहुणा ८. पाहड़सिंह, जेवाणा ९. अभयसिंह, खेड़ी १०. मालदेव, मंडिया ११. वावा रिणमाल, गाडरमाला १२. विरद, मंगरोप १३. नरहर, गुरला १४. राजावहादुर अजीतसिंह, करेड़ा १५ विसन सिंह, दौलतगढ़ १६. विजमाल, कुंठवै १७. कानसिंह, कोसीथल १८. जस-करण, लसाणी १९. डूंगरसिंह, जीलोला २०. रिणमाल, ओरड़ी २१. अर्जुनसिंह वसी २२. तेजसिंह, अठांणा २३. ठाकुर नवलसिंह, रूपनगर २४. ठाकुर अजीतरयंघ अरजुणसीघोत, आसींद

अरु दुतिय जांन केहर नगर, आय कंवर मौहकंम दुलह।
डेरा कराय हरसिध्धि ढिग, रांन भीम निज चित उलह ॥५६१॥

लरत हुते कहुं दुरग, कटक सामिल गज[1] बंधह।
ताहि सरद करि विजय पाय, वांनैत उकंधह॥
लगन अट्ठ त्रय दिवस जांनि, सब जांन पच्छ रख्खि।
संग सवार पच्चीस, हक्कि ताकीद व्याह धख्खि॥
अरजुन गनेस सालंम संग, अति आतुर रावर हलीय।
गज तार रुकमिनिय व्याह मनु, गरुर हक्कि गोव्यंद चलीय ॥५६२॥

छंद पद्धरी

जब लगन समय अति निकट आय। श्रंगार सज्जि दुल्लह सुभाय॥
गजराज रोहि मोहकंम रतन्न। तौरन पधारि घर उछह मन्न॥
त्रय दुलह वंदि तोरन उमंग। वारहट नेग तब दिय मतंग॥
अमरेस आय प्रोहीतराज। आरतीय कीन्ह मंगल समाज॥
चौंरी प्रवेस त्रय दुलह कीन। रचि वेह कनक मंडप नवीन॥
दुलहिनिय सज्जि श्रंगार जांम। चौंरीन वीच पवधारि तांम॥
रचि अजब कुंवरि रननेस वांम। कीकी सु कंवर मोहकंम हि तांम॥
सुभ दीप कुंवरि सिवदांन भ्रात। मोतीकुमार गठजोर भात॥
केहरगढ़ न्रप पातल वखांन। तिहि पुत्र जोर सुत पासवांन॥
खसवांन भीम लाडु सुचाय। तिहि सरस कुंवरि तनय सुभाय॥
तिहिं जोरस्यंघ थपि अंग वांम। वरनार उतरीय गंठ तांम॥
हथलेव जोरि पढि वेद मंत्र। प्रोहीतराज कीय हवन तंत्र॥
विवहार वेद भांवरि फिराय। हथलेव छुड़न माहारांन आय॥
माहाराज कंवर आये जवांन। सिवदांन सुतन सिरदार जांन॥
अमरेस भीम दुव आय भूप। सुरज्जमाल अनपाल जूप॥
सुरत इंद्र काका सुभाय। गुल्लाव सेर तिहिं वेर आय॥
इकलिंग कंवर सुत भींम रांन। आये जु तांम मनमोद मांन॥
मनहोर चैंन अरसी सुजाव। आये जवांन मोहन सुभाव॥

---

१. रावल श्री गजस्यंघ जी जिण समैं फौज दाखल कर कोई गढ़ लेता हा।

रसालू चंद गोधन भवांन । अरु नवल सेर चंद रुघो जांन ।।
रतनेस पास निज नेग आंन । साला कटार लीन्हिय जवांन ।।
दे हय गय द्रवि रीतह कदीम । दीय कन्यावर माहारांन भीम ।।
रावर न आय तिंहि चित उदास । कीय अरज तांम जटधर प्रवास ।।
हे अेकलिंग करुंना निधांन । हे उमाकंत हे डमरुपांन ।।
हे पंचमाथ हे गंगधार । हे चतुरमुख हे नागहार ।।
हे नंदिरोह हे सिधिराज । हे चंद्रभाल सिव महाराज ।।
मम लाज रखिय सिव बारबार । आनेक विकट संकट सु टार ।।
इह पुल जु आय गजसिंघ आज । तौ वांननाथ मम रख्ख लाज ।।
सिर नम्मि सुद्ध चित जौरि पांन । धरि ध्यांन कीन्ह करुना दिवांन ।।
सिव ध्यांन दरस दिय हुकम कींन । कांमना पूर तव डरन भींम ।।
चख खोलि भीम विस्वास धार । इतनें सु आय वधायदार ।।
रावर पधारि कथ जंपि अेह । सुनि वर्ष भीम घर दुग्ध मेह ।।
सुकंत वेलि सुख विरह ताय । मनु सींचि मेघ गजसिंघ आय ।।
तन सिलह सज्जि वीराधवीर । हय रोहि सेल भुज उछजि धीर ।।
जैसांन दुर्ग छत्रावतंस । बानैत जोध श्रीकृष्ण वंस ।।
हय उतरि सुजन चित दाह मेट । भर भुजन भीम माहारांन भेट ।।
माहाराज कंवर मिलि गजन तांम । कीन्हीय गनेस अर्जुन सलांम ।।
तुम करीय चीत कारज अथाह । कीय भीम रांन श्रीमुख सराह ।।
रावल सुसजि श्रंगार जांम । वनि दुलह बंधि सिरमौर तांम ।।
आरोहि गज तोरन सु वंदि । दीय नेग सुकवि उतरि गयंदि ।।
प्रोहित पधार आरतीय कींन । चौंरी प्रवेस चित हर्ष चींन ।।
महलांन हरषि नहि उर समात । मुख गीत धवल मंगल सुगात ।।
नौछावर वारिय द्रव अनेक । आसीस दीन्ह विध वित विवेक ।।
श्री रूपकुंवरि तनया सु भीम । श्रंगार सज्जि कुल विध कदीम ।।
आईय सु वीच मंडफ हजांम । गजसिंघ वांम अंग थप्पि तांम ।।
रावर अनुज रचि वांम गात । सुत हुकम कुंवरि सिवदांन भ्रात[1] ।।
गठ जोरि वंधि हथलेव जुट्टि । निरखंत तेह सुख नयन लुट्टि ।।

---

१. श्री रावल जी का छोटा भाई श्री तेजसिंघ जी नै माहाराज सवदांनस्यंघ जी री वेटी हुकमकंवर परणाया, राजावतजी का वेटी हा ।

किय होम मंत्र वैदिक ऊचार । प्रोहित व्याह विवहारकार ।।
भांवरि फिराय वर बरनि जांम । बुलवाय भीम सह कंवर जांम ।।
मंगीय जवांन रावरह पास । साला कटारि लिय नेग जास ।।
हथलेव हथि हय द्रव्य दींन । वर धीया दांन संकल्प कींन ।।
चित वंधि गंठ हथलेव छुट्टि । जनवास वहुरि वर पंच उठ्ठि ।।
अन दुलह आय निज डेर रंज । रावर सुरख्खि निज महल मंझ ।।
भय प्रात तांम अनेक राय । पीहर सु पंच दुलहिनीय आय ।।
रहि सगन रंग चित अति प्रमोद । प्रति दिवस होत आनंद विनोद ।।५६३।।

दुहा

त्रतिय दिवस रचि गोठ अरु, नूति त्रिहूं बरजांन ।
पंगत भई रसोवरै, आये भीम दिवांन ।।५६४।।

अरिल

पठि प्रधांन माहारांन बुलाये । रतन गजन मोहकंम त्रिहुं आये ।।
आये सवै सुभट तिंहि औसर । उजल पंत रची तहां चौसर ।।५६५।।

वैठे भीम जवांन कंवर जव । रतन गजन मोहकंम वैठे तव ।।
वैठे सवै सुभट चिहुं औरन । सनमुख पंत सुकवि जस जोरन ।।५६६।।

गोकरचंद किसन वखतावर । विस्वनाथ अरु रामनाथ वर ।।
इतने चौकस रखि जिमावन । भीम हुकम कीय भोजन लावन ।।५६७।।

पल्लव नील पलास अछिद्रन । दौना वाज धरे प्रथमं पन ।।
भात परुसिय स्वेत सुगंधन । फुल्लीय जाय मनो कलि कुंदन ।।५६८।।

कवित्त छप्पै

त्रिविधि जांन सुभ अन्न, श्रृंग घंटह अरु सरस ।
तीन प्रकारन मांस, जांन जल थल नभ चारस ।।
पंच साक जर फल सुपत्र, कौंपल सु पुहप वरु ।
षटरस मधुर कषाय, लवन आमल कटु तिक्त रु ।।

व्रत अेक भांत अठ्ठारयह, भोजन जानहु नर भवन।
फिर खाज्य पेज्य अरु चोज्य कहि, लेज भंत जीवन चवन ॥५६९॥

छंद त्रोटक

तव चौकीय रूप धरी सु अग्गं । महारांनन रु दुल्लह तीन अग्गं ॥
हिम थाल धरे तिन ऊपरयं । रजतं हिम थप्पि कटोरनयं ॥
तिन मध्य परोसिय व्यंजनयं । षटरस्स सवाद अभूतनयं ॥
अत सव्व अगं पनवार धरे । परुसार जनं अत वेग फिरे ॥
प्रथमं सुभ भात परुसनयं । अतिकोमल स्वेत सुगंधनयं ॥
पुरियं फिर रोटीय अग्रधरी । सुभ सेकि सुचंतर ब्रत्तकरी ॥
मिसटांन घनं धरि मौदकयं । अरु घेवर पैर दुग्धकयं ॥
इक मंस अनेक प्रकार करे । तलि छूटक रंधि महा सुधरे ॥
अखनी चख तार सुमोकलयं । गन नांम कहैं कवि को भलयं ॥
परुसे सुभ सूलक स्वाद जुतं । सु मुसाल भिदे सकि भारि घ्रतं ॥
वहु भंत पुलाव रु सोहितयं । कवि नांम कहै इति नांमतयं ॥
त्रय तोस सु सारन साग रचे । अरु भंति अनेक अचार सचे ॥
धरि तक्र कढी अरु रायतयं । अंगुरी चटका वटका जुतयं ॥
सुभ सीरक खीर दुगद्ध धरे । मिलि सक्कर औटि महामधुरे ॥
धरि जीमन अग्र संग जितने । नहि जात सुपात जनंम गिने ॥
परुसार लियें जिनसं अनुठे । मनु ग्रेह कुमेर भंडार खुठे ॥
महारांन जवायन गोठ दीयं । मनु ज्याग जुजिठ्ठल भूप कीयं ॥
दुतियं उपमा कविराज कहं । मनु ज्याग थयं वलिराज ग्रहं ॥
सव जीम सुभट्ट त्रपत थयं । खचि हथ्थ समथ्थ जलं अचयं ॥
तव लीन पछावर स्वाद जुतं । सुभ जीरक लौंन म्रिच मिलतं ॥
न्रप जोध कविंद त्रपत तनं । दीय पांन लीयं कर आचमनं ॥
करि भीम जुहारि सुचित हितं । वहुरे त्रय दुलह नेह जुतं ॥
इम गोठि दिनं प्रति राजनयं । सुख हास्य विनोद समाजनयं ॥५७०॥

दुहा

त्याग काज कविराज मिलि, जौं लौं जलनिधि सीम।
ता कारन दिय त्याग कौं, द्रव लख्ख दस[1] भीम ॥५७१॥

१. दह

तीस सहंस रतनेस दिय, तीस सहंस गजसिंघ।
दे मोहकम तेरह सहंस, करतव काज अभंग ॥५७२॥

निज कवि भीम बुलाय तव, कृपा करिव सुनमांन।
करि सलाह नांमा सुबंधि, पच्चिस रूप प्रमांन ॥५७३॥

जसो अमर सांवल किसन, तांम बुलाये भीम।
त्याग देन कीन्हो हुकम, भुज धरि विरद कदीम ॥५७४॥

कवित्त छप्पै

जसो किसन सांवलह, अवर भंडारी केहर।
अेक चुकारा अेह, भये कवि मुलक मरुधर॥
गोकलचंद अमरेस चूकि, मेवार ढुंढारह।
अन्य देस चूकार, दुतीय भय कौथलि धारह॥
बखतेस मुसांनीं रांम सुत, आवर अरु भट जालमह।
अय अे चुकार सब भट कहि, अरु ढोली जगमालह ॥५७५॥

मुरधर अरु गोढांन, मेर जेसल रु बीकपुर।
सोढवटी उंवरहकोट, सिखवट्टि थिरादधर॥
जालंधर सिवपुरी, हांसि हिसार सिंध लग।
पाल्हनपुर पच्छिमह, पव्वयसर अरु पोढी जग॥
तिरवारिय भोजग लंग ढढ, गिने कौंन अवरहु मुलक।
केहर सु अढ महीयारकर, मुरधर कोथरि बीच चुक ॥५७६॥

मेदपाट ढुंढार, रावधर नागरचालह।
हाडोती मालवसु, खिच्चि उमट्ट अपालह॥
कंठल वागर सूंत, कच्छ ईडरधर गुज्जर।
इतै जांन पर मुलक, और सुकवी सेवागर॥
गोकलह चंद अमरेस अरु, अनसेवक संगत नहिं।
कोयलीय धार स्वांमित धरि, इते मुलक चुकयेइ नहिं ॥५७७॥

मेदपाट मुरधरह, जट्ट ढुंढार धरतीय।
हाडौती मालव रु खिच्चि, गूजरधर जितीय॥
अरु दतिया ओंडछा, खंड वघेल रु सागर।
दिल्ली अंतरवेध, खंड बुंदेल जनकपुर॥
दखिन रु पुव्व कवि भट्ट जे, अरु ढोली जे च्यार दस।
बखतेस मुसांनी जालम रु, आवर कोथलि चुकि सरस॥५७८॥

नहिन पार चारनह, पार भटन नहिं पावत।
पार न भोजग ब्रह्म, पार ढोली नहिं आवत॥
वहत रात दिन मग, आत रीते भरि जातह।
च्यारहुं दिस निस दिवस, मनहुं घटि रहट विभातह॥
जलधार इंद्र वरषत इतैं, रूपधार इत भीम कर।
दाता न थकि मगतान थकि, गिननहार थकीय सुकर॥५७९॥

दुहा

मंगीय सीख वरात तव, फिर सफटूंन कराय।
हय गय भूषन बसन द्रव, दै दायज नृपराय॥५८०॥

छंद पद्धरी

मंगीय जू सीख त्रय दुलह जांम। दायज सु दींन माहारांन तांम॥
हय गय रु सुतर रथ दासि दास। भूषन वसंन अरु रूप रास॥
पहराय सत्थ सव जुगत नेह। अंगरेज जिनस भिजि टाट तेह॥
अंतहपुर दुलह प्रविसि जांम। प्रौहित कींन सिर तिलक तांम॥
कहवाय दुलह जवहार तव। रांनी सु भेजि जवहारि जव॥
पुत्रीय सु मिलीय पित मात आय। वाछंल्लि सहज जल नैंन छाय॥
मिलि वहन तांम वंधव जवांन। जल नैंन कंठ नहि फुरत बांन॥
मिलि चंद्र कुंवरि धीय कंठ लाय। आनोप कंवरि मिलि सुहित चाय॥
सव मिलि कुटंव अरु पासवांन। सव त्रियन नैंनहि त जल वहांन॥
त्रय कुंवरि लै रु जामात हल्लि। गज हय रथ पयदल सुतर चल्लि॥
रावर सु रहिय महलन जवांन। मोहकंम रतन्न करि कूंच जांन॥
नित वटत त्याग कविजन अपार। दिसि च्यार वहत हिमरूप धार॥५८१॥

दुहा

मोर सु कवि लागे इतैं, वाद विरद्द वखांन।
जल द्रव वरसन इत लगे, वादरांन मघवांन ।।५८२।।

आय भीम माहारांन पय, चारन लगे कविंद।
गीत कवित्त नीसांनि पढ़ि, मारूभाषा छंद ।।५८३।।

म. भीमसिंघ का यश अर दान

अथ गीत कवित्त दुहा नीसांणी छंद मारूभाषा

गीत सुपंखरौ

कंजासो भाग रा सुधनां धनेस जांणे जमा कीधा,
आंणे कै हिरनांपती नागरा अमांन।
पट्टव्रनां भाग रा खोलवा ताला नवे खंडे,
सीसोदीयै मंडे अहा ज्यागरा सामांन।।

सांकलां खुटाया कोठा हरांय्याया गंज संज,
आया ईष चितां सुरां नाहरा अचंभ।
ईहगां वुलाया नूंता पाठवे जाहरा इला,
इसा वीमाहरा भीम रचाया आरंभ।।

गिड़ गेऊ डंडे गांमे वयंडे दुकूल गंजे,
वूठौ हेम वूंदां ज्यूं घुमंडे माघवांण।
पातजादां खंडे रोर भूमंडे सु वोल पूगो,
दूजै पतै मंडै अहो मांडहौ दीवांण।।

तई वलां जुजीठ वीकरी लीधां दांन तीख,
सुख त्रीपणा में आडी लीक री सरूप।
जांणे माल ठीकरी तीयाग वंटै भीम जेही,
भलां जिके डीकरी जीया गमंडै भूप ।।५८४।।

गीत दूजो

जात सुपंखरी

वापी वेगड़ा मुंछारा तांण नकारा न दखे वौल,
वजाया नगारा जैजैकारा ध्रवे वीत।
भुजां थारा ऊझली अफारा आराजीत भीम,
रूपधारा त्याग री हजार धारा रीत ॥

जिहांन सुणी रै कथां तणीं रै बांधतां ज्याग,
भूम चाव जणी रै जौड़ कुंणी रै न भूप।
उंमंदा घंणी रै वही चीत्तौड़ धणी रै आचां,
सही तार नंदा मंदाकणी रै स्वरूप ॥

जौम भंगा सूंवड़ां पनंगां सीस नंगा जड़े,
हेलां दीध मत्तंगा गिड़ंगां अंगा हूंस।
समें ब्यांह ऊपटी अढंगा भूप करां सगा,
राज तीत रंगा चंगा गंगाधार रूंस ॥

वरसालां आगमां उमंड़े मेह रूप वालां,
वजे क्रीत त्रंवालां सिघालां जै जै वांण।
भीम त्याग नंदी पात आलां तालां जेम भरे,
सही अदेवालां चाअवालां वहे मांण ॥५८५॥

गीत तीजो

जात छोटो सांणोर, हंसमग खुड़द

अण संका मेर भुजांवल आंणे,
लंका लूटी जस लगन।
मही अचंभ हेम झड़ मचियौ,
जगाहरा रचियौ जगंन ॥

जेसलमेर लिग्रायो जूटे,
त्रिकुटाचल लूटे ति कर।
इल सौव्रन सुरराज उमंडे,
सुज क्यावर मंडे सुकर ।।

सुर गिर लियौ सुरां मद सोसे,
दस सिर पुर खोसे ग्रदग।
इंद्र कनक चीधार उलटियौ,
जिग थटियौ भीमेण जग ।।

ग्रथ सुमेरगढ लंक ऊधमे,
मेह कनक ग्रणछेह मच।
तैं षट वरन खौलीया ताला,
रांण विलाला जिगन रच ।।५८६।।

गीत चौथौ

जात छोटौ सांणोर, हंसमग खुड़द

जिग रचे ग्रगंज जितैं भीमाजल,
दस दस पातां भंज दु:ख।
थई ग्रखूटत गंज थैलीया,
रतनागर कारंज रुख ।।

हद ग्रारंभ तै व्याह जगाहर,
गढवां घर घर दलद गंम।
नौली गहर ऊवके नांणा,
जग महरांणा नहर जिम ।।

मंडतै जिगंन रांण मूंछाला,
नीपण ग्राला भरे निध।
वधे दांम कौथलीयां वाला,
वारिं धनाला तणीं विध ।।

अेक धड़े तो जिम वंन आंदे,
करतव लहड़क पड़ै किम।
हुवो भीम जग रेलह मरके,
जग रेलण महरांण जिम ॥५८७॥

गीत पांचमो

जात खुड़द सांणोर

सामलिया थैला भर भर सदनां,
दूथी वलीया दूसू दसा।
त्याग तणें गहरी चीत्तोड़ा,
रूपहरी नद हली रसा॥

रोकड़ झोला भरे घरां रुख,
सुकवह वैला फिरे सही।
जस धारक दतरी भींमाजल,
विसुधा तारक नदी वही॥

नांणा भरे असे सथ ही निज,
सुज धिरनेस सुपात सली।
इल पर करतब त्याग अनूपा,
चौवल रूपा सरित्त चली॥

रचते भीम त्याग हिक रंगा,
वेग तरंगा त्याग वही।
निज रूपै भरीया रूपानंद,
जसकर घर घर समंद जही, ॥५८८॥

गीत छठौ

जात छोटो सांणोर, हंसमग

करतै जिग भींम भिड़जदत कीधा,
सुकव रौर हरतै समरथ।
खुरताळां नागिंद खळभलियौ,
रज गूडलियौ भांणरथ॥

राजड़हरा राजसू रचतै,
साकुर दंन दीधा सधर।
लाह खुरां सिर सेस लटांणौ,
धूड़ दटांणौ तेजधर॥

अरसांणी कर व्याह अरौड़ा,
घोड़ा गढवां दीध घंण।
अह धू छड़ीयौ पाय अछेहा,
मढ़ीयौ खेहा गयंण मंण॥

सिर घूंदण मूंदण रज सिंदन,
वेग खुराटां झाट वज।
रांणक वेस दिया अैराकी,
साखी सेस दिनेस सुज॥५८९॥

गीत सातमौ

विधांनीक चौसर, जात वेलीयौ सांणोर

सुकवी जद अगन भीम तद सोनौ,
ईहग दुज वल़ भीम अफेर।
सुकव धकौ भींमाजल सायर,
सुकव पवंन तद भींम सुमेर॥

किव झाल़ाहल़ कनंक कैलपुर,
किव वावंन वल़ जितूं कहाड़।
गढवी भचक जितूं रतनागर,
पात वात सीसौद पहाड़॥

रेणव दहण हेम तद रांणौ,
रेणव हरि रांणौ दितराज।
रेणव फेट सुजल निधरांणौ,
रेणव अनिल़ रांण गिरराज॥

तावस लोभ धकां वाजंतां,
किव जिग परखे चिहुं प्रकार।
अकलंक अनट अभल कित अणडग,
धवल भींम रहीयौ हिकधार ॥५९०॥

गीत आठमौ

जात खुड़द सांणोर

आयौ आसौज मेह औहटीया,
अंन थटीया पुर हेकवकी।
जलची नदी रुकी भींमाजल,
रूपा नंदीयां निकुं रुकी ॥

इलची सरित सरद रत आगंम,
छौल समिट थक नीर छजै।
वट घाटां नद नांणा वाली,
आटां पाटां वहै अजै ॥

तौय नहर आसू आवंतां,
ठहर कीया जल ठांम थले।
विसूं रूप धारा मेवाड़ा,
वहै कराड़ा छेक वले ॥

वही धुंनी जल सींम मास वे,
कमंण भींम सम इंद्र कहै।
वेल अतूट रेल द्रव वाली,
विसुधा अजै ऊभैल वहै ॥५९१॥

कवित्त छप्पै

मारूभाषा

आरंण धखता ईसौ, वरण मिलीयौ वौह वौलौ।
तिम तिम दीधौ ताव, थयौ जिम जिम घण मौलौ ॥

किव सुनार हठ करे, वांण चौटां वीनड़ीयौ।
विरड़े नह विखरीयौ, निपट निकलंक नीवड़ीयौ ॥
जस करां भीड़ जंती जवर, वधीयौ खंच वखांणीयां।
सोलमा कनक भींमा सुपह, तूं नह तूटौ तांणीयां ॥५९२॥

सोरठा

मारूभाषा

ढंमकांणा जिग ढोल, जीत तणा रांणा जके।
विसुधा रहसी बोल, जस वाला वीजा जगा ॥५९३॥

हेकवले जिग हौय, तैं भीमा कीधौ तिसौ।
कलजुग लग किव कौय, वीजां नह जाचै वले ॥५९४॥

मंडे भींम मघवांण, रूपाभड़ वीमाह रच।
नीपण सदन निवांण, हेक साथ भरीया हुलस ॥५९५॥

नाकारै नाकार, देवै देवौ दाखियौ।
बिया जगा जिग वार, अेक अणीं निबही अड़प ॥५९६॥

छंद नीसांणी

मारूभाषा

श्री गणराज समापजै अत उकतऊ पट्टा।
मैं गाऊं जस भींम दामौं जूं अघं मिट्टा।
थिर निज कंवरी व्याह कज तै आरंभ थट्टा।
फज़र सुपातां तेड़वा परवांना फट्टा।
परधांनूं पूगा हुकंम कज माल प्रगट्टा।
ह्वै खरीद रंग रंग वसंन खुल वांणज हट्टा।
सुत पाट जर वादला पसमींन समठ्ठा।
धजराजां कीधा तयार पायग कछ धठ्ठा।

पाहड़ फी सिगारीया वेछाहड़ पठ्ठा ।
जमा कतारां कीध जूं गछिव मांकड़ छट्टा ।
सोनहरी रूपै सकाज भूषण भल लट्टा ।
जभ्भै मील खरीद जे जंवहर झल लट्टा ।
हूं नर वंध मुंहगा हुवा तेड़ै जठ तठ्ठा ।
कै गाडा ग्रन ग्रत सकर कौठ्ठार कठठ्ठा ।
दै देकार दरसीयै इल पर दस अठ्ठा ।
लौभी जस दै भींमसींघ लंकागढ़ लुट्टा ।
खित्री कुमेर भंडार दाकाय ताला खुट्टा ॥५९७॥

नीसांणी दूजी

नूंताह ले छत्तीस वंस लख फरद नक़ल्ले ।
पवंन अठारह वरण च्यार सुज आय समिल्ले ।
मेर नेर गढ़ जेस वीक केहर त्रिहुं मल्ले ।
रतंन गजंन मौहकंम नरेस भण दूलह भल्ले ।
हौय जांनां त्रिहुं अेकठी उदीयापुर हल्ले ।
है हूंकल हलवल पयाद गजराज हमल्ले ।
जिग वल जिग जिम सांमिलै सुर असुर जल्ले ।
थट भूपांवांण जिय्याग जांणक जुजठल्ले ।
सु कवि सुमेला देस देस मेला वौहमल्ले ।
आडी छुड़ी न दीजीये षट वरंन अपल्ले ।
चीहलां रांण हमीर सांग जगपत दां चल्ले ।
घण भीमाजल ऊछव कर सल नाक न घल्ले ।
वर्णं जीयाग तीयाग झड़ वरसात वहल्ले ।
सांभल हाक कुमेर मेर लंका थर सल्ले ।
आभूषण रोकड़ उरड़ पाकेट अलल्ले ।
सिरपावां सांण हसत घण हवदां घल्ले ।
चौतरफां मौती कड़ां मौहरां नद चल्ले ।
गढ़ गढ़ लग सामंद कड़ां पूगी जस गल्ले ।
दातारां पाया हरख अदतार दहल्ले ।

जस वातां राखण जगत पातां अघ पल्ले।
श्री भीमांजल आठमौ महरांण ऊभल्ले ॥५९८॥

नीसांणी तीजी

मिल मेला भाई सगां उछरंग अमांमा।
आया वीसौत्तर उमंग कविराज सकांमा।
उलट भट थट्टां अपार उर धार अरांमा।
पंडित भृहम कवेस कै सायर सर सांमा।
आया वड़वा धर उमंग कुल पाठ करांमा।
मौतीसर रावल मिले वीरम वरदांमा।
कुंवरमंगा रांणीमंगा सुज आया सांमां।
हद तरवाड़ी हल्लीया उर पूरण हांमा।
भौजग थाट उलट्टीया चित हूंस भरांमा।
गढ़ गढ़वाड़ां मंगणा ढोली गहरांमा।
ढाढी लंघां ढूलरा पर रतीया पढांमा।
राजनटां मिलीया समाज पर झपट रचांमा।
आया कै वहरूप भंड सुभ सांग सभांमा।
मिले कलांमत कै कवाल रंगराग रचांमा।
तायफलोक उमेदवार कै आय सकांमा।
कुंण कुंण वाखांणें सुकव तद मिले तमांमा।
जे सौह आया भरथखंड ज्यां पाया जांमा।
श्रीमुख भीम हुकंम कीध किव गोठां सांमा।
जद कौठारां संकला खुल आठुं जांमा।
आडी छड़ी न दीजीयै कीजै इ तमांमा।
जे आया पाया जिकां सकटां भर सांमा।
मुख वाखांणां जंपतां जद पूग मुकांमा।
सुज तौ वेला सीस वद जग और न जांमा।
न्रप दंभ जौड़ा दूसरा अंजसै न कांमा।
तूं क्रंन भौज हमीर तूं रांणा रुघरांमा।
तें कीधा सिस सूर लग नंहचल इलनांमा।

अै थारा आठु पहर नींधसै अमांमा।
दुनीयां ऊपर भीमसींघ जस तणा दमांमा ॥५९९॥

नीसांणी चौथी

त्याग वंटे सौभाग काज मझ ज्याग सरीतर।
सौनै रूपै मेह वूठ अणछेह जमीं सिर।
ऊझल का पूगा हुकंम गज हलकां ऊपर।
चौ लंगर खरलक पगां वरलक मद चाचर।
सुज मदमत्ता धुंमत्ता दत्ता जौगेसर।
रजी असुंडां बीटीया गह पिडां गिरवर।
सागै असताचल स्वरूप उर सूं घसता सिर।
राह छटा भाद्रव घटा विकटा जौरावर।
आठ भटी सड़कां अठेल अत हठी अपंपर।
वेंडा जूह वलाय वीर अड़ पैंडा ऊपर।
कै गडदारां जूथ गज अडदारां वसकर।
धुवेह कालां चौतरफ चरखी भालां धर।
मिल लड़कां अगनैंणीयां घड़ कांत जस घर।
दख झट अला खुदाय नांम नट झंप वहादर।
पढ़िया इलमां पीलवांन इम चढीया ऊपर।
सुज झलीया रूंमाल कर थापलिया सींधुर।
वौह झट काया पीठ रज विरदाया वौलर।
वाप वाप काला पहाड़ इरझाड़ अपंपर।
गढ़ ढहाड़ केहर पछाड़ मझराड़ गहभर।
अौप सनेही आंवलां सांवला गजांसिर।
जरद जंगाली रेख लेखं सझ लाली सिंदुर।
वण गजराज सुहावणा गणराज वरावर।
कसे किलावा कंठ झूल जरदौजी जाहर।
कसे अंवाड़ी हवद कै रेसंम नाड़ी कर।
घंटां ठणणाहट सघोर रणणाहट घुंघर।
झणणाहट झेलां कपौल भणणाहट भंमर।
सिणगारे काल़ा गयंद सिखराल़ा संमसर।

हेल इसा वारण सुजस कारण सांगाहर।
चारण हवदां चाढीया उवारण आखर।
वोहला सींभ दुसख जल सांसण गढ़ संमसर।
किता दीया लुंपीया उदक कंदीया नवाकर।
उण वेलां पूंगा हुकंम साहणीयां ऊपर।
धजराजां त्यारी करौ साजां भूषणधर।
ताता मात झंपता ऊछटां करता तुर
मुख अेलांणां चाढीया कैकांण सरोतर।
सौनहरी रूपैहरी रज साखत ऊपर।
जींणमढे सुलतांनीयां मुखमल दोजां जर।
पलगा नग साजां पड़ै होय झलका हालर।
सिर घंम धमीया सेसरा घंम घंमीया घुंघर।
फगगंगा शृंगा सुमेर गजगाहां फरहर।
कै गढ़ धड़हड़ उरट कर फड़हड़ नासांकर।
मांकड़ फालां सीम लफ भागां डालांभर।
अंगस जौरां ओंझलै अत डौरां ऊपर।
भिड़ जस लंवी व्याल रालंवी भीखूंभर।
कीया झलंबी साखतां कज अंबी कंवर।
राखै काठा जंत्र कर माठा राजेसर।
वाह विलालां मौड़ भीम के वालां सझकर।
किवराजां दीधा इसा धजराजां सधर।
हुकंम दवाग्रा सारवांन आया तद हाजर।
पाकेटां आंणौ गला थेटां थलीयांपर।
चुगद बिलौची देसवाल काछी धरं वग्गर।
अगड़ मजीठा माकड़ा भूरा पीतंबर।
भाभड़भूत भडंग अंग वन भूत ऊवंवर।
वण नव हथ्थी झौकरा तन हथ्थी विहत्तर।
छिव वणींया हुंकार नाद लांघणीया दूछर।
वापूकार रवार वौल टचकार विसतर।
ऊंचा थूहा ऊतंग अंग गिर शृंग गहभर।

फीफर कढां फैलीया पंड फेण अपंपर।
सुथरी गड़गड़ प्रगड़ साद आवाजां उच्चर।
अंग वल काथल काउ तंन अत हलका इड्डर।
सूंध नली ऊरली बुगलटामंक जिसा सिर।
चसलक नेसां गसचखां तसलक पै आतुर।
बावंन डग भरता वहै छित नगबल छेतर।
पींहचै जौसां चंपीया सौ कौसां ऊपर।
पर धर माल लिआवणा मुरधर का गैंवर।
अेहा जूंगां आपड़े सज किया सरौतर।
कूंची धर सुलतांनीयां रेसम कसणाकर।
निज नौखीडौरां नकेल गल घाते घुंघर।
चौतरफूं भूवांस भाय लूंबा वत्थूं भर।
देव विमांणां सारखा कछ भ्रल वस भांकर।
निज जस कज चीत्तौड़ नाथ समराथ जमीं सिर।
अेहा ऊंट उबारीया हेलां जगपत हर।
ह्वै उरड़ां मौती कड़ां सरपेच जवाहर।
सिर पावां भलहल सभाय भलहल जादाजर।
सुज ताजींम पसाव लाखं के लहे कवेसर।
वरसाला आगंम लगौ सौव्रंन भड़ सधर।
दांन हूंत सुन मांन च वाखांण वधौतर।
मेटी उंणत मागणां वेटी चौ जिग कर।
तौ सारीखौ तूंहीज तूं हेलां जगपत हर।
वीया करंन हींदू तुरक कुण तूभ वरावर।
यूं पटवरन उचारीयौ कीरत हाका कर।
पौह वीजां जस बौलड़ा राखी जै इल पर।
तौ कीजै रांणै भीमसींघ कीधौ ज्यूं क्यावर ॥६००॥

नीसांणी पांचमी

गढ़ जौधांण दिवांण जस वीकांण गहक्कै।
तौ जस जेसलमेर धर आंवेर त्रहक्कै।
ऊगै रवि केहर नयर मुखपात उवक्कै।

हाडां न्रप कोटै सहर बूंदी दिस हक्कै।
डाक वजंदी सिवपुरी ईडर इक डक्कै।
चालक झालां चावड़ां वाघेल चहक्कै।
ऊमट खीची दिसभ दौड़ गढ़ गौड़ उभक्कै।
थिर डूंगरपुर वांसपुर छिन वांण न थक्कै।
छित देवलीयै रांमपुर परमार स छक्कै।
अत रतनागर झावूवो सिलहांण उभक्कै।
फावै वांण उजेंण गढ़ फाटां फजरक्कै।
सोपुर मांचाहेड़ीयां जिम धांम जटक्कै।
तेम वुंदेला गहरवार सुण सुण मुख तक्कै।
दली सतारै आगरै लाहौर दहक्कै।
मुलतांणां कावूल खंधार सुरसांण महक्कै।
लग पूरव पिछमांण सूंण सिर सूंव लटक्कै।
यल उतर दिखणाध देस भीमाजल अक्खै।
अंगरेजी डाकां अवाद कासीदां मुक्कै।
आठूं दिस समंदां लगै हद फजरां हक्कै।
सुंणे ज्याग सुदतां हुलस सूंवा मुख सुक्कै।
वीदग दस दस वौलड़ा भीमा तौ वक्कै॥६०१॥

निसांणी छठ्ठी

तें तूजी खग त्याग दी भुजडंडू झल्ली।
तें मुख मौसर आवतां जस चौसर घल्ली।
तें खल झुंड खपाय के रिण पाय अचल्ली।
तें सल नाक न घल्लियौ दतवार दुहिल्ली।
मासूं चूकी हाड तें छुरीयूं के झल्ली।
तूं गिरमेर न डौलियौ ईर फौजूं डुल्ली।
हला हमल्ला कीध कैतें वार वार वहल्ली।
तें खेवी संपत विपत सौह जांण सहल्ली।
तूं वेराह नह लीयौ पतसाह अदल्ली।
तें धवला रथ क्रीत दी भुज भूसर झल्ली।
तूं अवतार महेस दा पख च्यार असल्ली।

रांणा जाहर पीर तूं सत्रहां उर सल्ली।
तैं डै सिर ग्रासां न दी किण रेख न घल्ली।
ग्राश्रंम चौथै ग्रायतैं व्याही कीकल्ली।
तैं सौव्रंन भड़ मंडीयौ वरसात वहल्ली।
गज हलका सूत रूंगला तौ ग्राच उभल्ली।
तैं जस वासां कारणै हय लासां खुल्ली।
दै दैंकार उचारीयौ नाकारस नल्ली।
माहारांणा कित्ती खरीद कीरत घण मुल्ली।
तूं रहीय्यौ हेकण धड़ै चितव्रत न डुल्ली।
भीमाजल करतै जीयाग ग्रथ त्याग उभल्ली।
केलपुरा चाढी धवल धवलां जस कल्ली ॥६०२॥

नीसांणी सातमी

दूठ भीम षट वरन काज धारी तैं देहा।
तूं कुल मंडण क्रीत दै रथ तंडण तेहा।
तौ सम वड़ीयौ ग्रौर न्रप नह घड़ीयौ वेहा।
लगान तौ अंगखाटरा लालच दा लेहा।
तूं ग्राचारां जैतवार जुजठल बल़ तेहा।
हाथ जिकां सिर तौ हुग्रा कह ऊंणत केहा।
तूं केदार कल़ंकीयां ग्रघ मेटण तेहा।
ज्यां तौ पायन भेटीया ग्रंग सूतक ग्रेहा।
तूं तांणे कर मौसरां ऊभल तौ ग्ररेहा।
वयण ग्रढंगा बोलतौ तूं जगसिर जेहा।
धरतौ तूं मन दांन धंख सुज पात सनेहा।
तूं तैं रच कंवरी जीय्याग मंड सौव्रंन मेहा।
गज ग्रस सांसण छोल़ तैं रेले किव गेहा।
तैं हींदूपत हींदवां ग्रजवाल़ ग्ररेहा।
तूं रहीयौ ग्रपहड़ ग्रनट ग्रवनाड़ ग्रछेहा।
तौ सारीखौ तूंहीज तूंनह मींठ ग्रनेहा।
तूझ भरौसै बौलड़ा तूं कंहतौ तेहा।
भला दिखाया भीमड़ा जग जेठी जेहा ॥६०३॥

कवित्त छप्पै

वोल जिसा वोलतौ, रांण सत जेम रहायौ।
जिसौ भरोसौ हुंतौ, तिसौ विमाह रचायौ ।।
सौव्रंन झड़ मंडीयौ, सतें आगंम वरसाल़ै ।
सौना रूपा नदी, वही नवखंड विचाल़ै ।।
देस देस दीध पटव्रंन दवा, हथां झोक जगते सहर।
साला हजार भीमां सुपह, रांण विलाला राज कर ।।६०४।।

कवित्त इकतीसा

व्रजभाषा

तनया स्वयंवर रचत रघुराज वंस,
लींनी कीत गाथ अरु दींनी ध्रंम नींम हैं।
गंज सरजांमन के दांमन के पुंज हय,
गय नेक दीनें व्रद अनट कदींम हैं ।।
विक्रम करन वल भोज भये आगें पर,
या जुग मैं तेरे जिगहूं तें भई सींम हैं।
वनतें सुनार थाके गिनतें सचिव दांम,
लेत थाके कवि पैं न देत थाक्यौ भींम हैं ।।६०५।।

अन्य कवित्त

रचि कैं स्वयंवर सुजस काज भींमसिंघ,
मोजें कवि वाज रवि वाज सिरताज से।
रांन के लगाते झांप जाते हैवर छिन पें,
ताते माते धकन ढ़हाते गजराज से ।।
न्रत में परी से चकरी से आव जावन में,
ओपें तेज उदध न लोपें वाग पाज से।
पर आये पाहर पटी में परधार करे,
पौंन के से पूत पै चलाक पंखराज से ।।६०६।।

वारन दुरायौ इंद्र आज लौं न देखियत,
भांनकुल नातै है अभय लीजियतु हैं।
चिंतामनि पारस कलपतरु लुके भाजि,
उदध थहरि विप्र भय भीजियतु हैं॥
भीम वारे दांन की ऊछट जगदीस देखि,
सुवरन धन के जतंन कीजियतु हैं।
लंका अग हाट हिम थाट गिरराट बाट,
धनराट धांम न कपाट दीजियतु हैं॥६०७॥

सरन सधार बड़े विरद सुधार निर,
धार के अधार सब आलंम सुभावरे।
ताते वाजराज मदमाते गजराज ग्रांम,
हेम हीर गंज मौज करन उतावरे॥
जाकै सिर आये ते कहाये वड़े जग मांझ,
तिन्हें छांडि अनतें भ्रमें ते नर बावरे।
मेटिकै फिकर कर देत राव रंकन कौं,
रूप सुरतर के सुकर भींम रावरे॥६०८॥

अन्य कवित्त

जमक

आरत हरत हैं वरन की वरन क्रीत,
प्रीत हैं वरन की न प्रीत सुवरन की।
सातहू सरन की सरन तें वढ़त दांन,
सरन सधार काहू भूपति सरन की॥
गज के तरन की तरन तें न लौभ्यौ देव,
तरन समांन वंस अंजस तरन की।
रीझ के करन की उमंग दै करन यातें,
वातें भीम अधिक करन तें करन की॥६०९॥

पुहुकर सौ पय सौ पयौधि सौ पनंग सौ,
पारद सौ नारद सौ सारद अमंद सौ।

हंस सौ हरी सौ हिय हुलसनि हास जैसौ,
हिम हलधारक सौ हीरा सौ हयंद सौ ॥
जुध जैत खंभ जग जेता भींम तेरौ जस,
बीस विसें विसुधा पैं वारिज के ब्रंद सौ ।
गौरि सौ गनेस सौ गजेस सौ गजाधिप सौ,
गंगा सौ गिरा सौ गंगाधर के गिरंद सौ ॥६१०॥

अन्य सवैया

भींम कहैं जस राख्यौ चहैं न्रप ते दत जोग अजोगन भांखै ।
को ऊबर्‌यौ विनु दीनें जिहांन मैं ताकी भरें ससि सूरज सांखै ॥
कोटिक सूं मन के तन लोचन सीस समेत भये जरि रांखै ।
सीस अजौं जगदेव कौ वौलत सूझत औ ज्यौं हमीर की आंखै ॥६११॥

अन्य कवित्त

काहू न्रपद्वार रासौ भारथ वचत जव,
खित्रिन कौं खित्रीवट जव याद आवते ।
सांसन गयंद वलि बिक्रंम करंन भोज,
दाता अरु दांन अे कहांनी मांझ गावते ॥
वखत विलंद भींम अरसी दिवांन घर,
आप या समय मैं जौ जनंम न पावते ।
कीरत विचारी जाय तीरथ करत वास,
कीरत करन वारे लापर कहावते ॥६१२॥

दुहा

कवि वहुरे इम सुजस जरि, पाय हथि हय हेम ।
वावन कविवर भीम मिलि, चलि वराट तन तेम ॥६१३॥

सुख विलसि अरु तीज करि, मंगीय सीख गजन्न ।
रूपकंवरि मिलि सीख दीय, भीम जवांन प्रसन्न ॥६१४॥

यह विधि आवत जात कवि, वंटि बरस इक त्याग ।
धन्य धन्य जग भीम कहि, सामंद लग सौभाग ॥६१५॥

फेरि वरस सतहत्तरा, थपि प्रधांन सिवलाल ।
राजकाज तिन अदल कीय, नीत धरम अरिसाल ॥६१६॥

सीह अजा तिन ईक थल, नीर पाय नरनाह ।
स्वांमि धरम सिर राखि जिन, अखत दुनीं सराह ॥६१७॥

छंद पद्धरी

माहारांन भीम इम करत राज । सिल तिरत नीर मत्थह सकाज ॥
अरजुन सुजाव अगजीत जांम । वंदगीय कीन्ह निज स्वांमि तांम ॥
विघ्न सि दिखन अरिसेन कुट्टि । रद कीन फौज पिंडार लुट्टि ॥
कायम कराय गढ़ कुंभमेर । लिय पांन भुजन गढ़ जाजनेर ॥
पित आंन डांन करि मेदपाट । परनाय धिया आनंद थाट ॥
कीय प्रसंन भीम कुल चाढि नीर । भुज चूंड बिरद धरि सूर धीर ॥६१८॥

कवित्त इकतीसा

सीस पर स्वांमि ध्रंम धरि कैं दिवांन वारौ,
हुकंम बजाय सिर भीम पय कौं नयौ ।
सावत सलाह दुवराह मैं दिखाई ऐसें,
जैसें जगदीस घट घट मैं सवैं रयौ ॥
हनूं द्रोनागिर ज्यौं उठाय अंगरेज ल्यायौ,
दल दिखनाथ कौ असंभ छिन मैं जयौ ।
उरवी उगाह वे अथाह जल दंगा हूतैं,
अजा नरनाह तूं वराह दाढ लौं भयौ ॥६१९॥

छंद पद्धरी

अगजीत सर्व करि स्वांमि कांम । चितीय सू देह ऊधार तांम ॥
गोरखधंध यह जगत जांन । अय तप्त छंट ऊंवर प्रमांन ॥

मारग प्रवर्ति चित कीय विरत्त । निरवर्ति पंथ निज प्रांनरत्त ।।
निरलेप निरंजन निराकार । अविकार अजन्मा अजर धार ।।
निरगुन निरीह निर्दोप नित्य । अप्रमेय अनामय इक अमित्य ।।
जिह ग्यांन द्रष्टि लखि सद्रिढ जांन । नट भगल तुल्य संसार मांन ।।
अनुरक्त चित्त विस्वेस पाय । जल गंग पांन मनमोद आय ।।
कासी सुखरासी वास चित । मंगि सीख भीम पह साच मंत ।।
माहारांन भीम हठ वहुत कींन । अगजीत द्रष्टि जग सुखन दींन ।।
दीय भीम सीख सुख पाय जांम । कासी प्रयांन अगजीत तांम ।।
धन धन्य मात पित धन्य तास । दुव मरन जनम जग सुधरि जास।।६२०।।

कुंवर जवानसिंघ का विवाह

दुहा

आय वरप अठहत्तरा, मधुरित वदि वैसाख ।
तिथ तेरस बांधव दुरग, व्याह कंवर जग भाख ।।६२१।।

अनम देव जयसिंघ न्रप, वंस वघेल अभंग ।
तनया तास जवांन सहुं, सगपन थप्पि सुढंग ।।६२२।।

सचिव आय जयसिंघ को, सनमुख अवधि प्रसाद ।
करिय निजर हय हत्थि द्रव, श्रीफल वसनहि आद ।।६२३।।

तेरसि तिथि वैसाख वदि, ता संग जांन प्रयांन ।
भीम पाय लगि व्याह कज, हल्लिय कंवर जवांन ।।६२४।।

छंद त्रोटक

चढि राजकंवार जवांन जवैं । सझि चल्लिय सथ्थ सुभट्ट सवैं ।।
चढि केहरि राव[1] अभंग सथं । चहुवांन पतावत जंग पथं ।।
चढि सालमसिंघ[2] जगावतयं । कुल चूंड पतावत रावतयं ।।

१. राव केसरीसिंह, वेदला २. रावत सालमसिंह, आमेट

अगजीत [1] जलावत चाढि तुरं । सिंघ रावत सारंगदेव तरं ।।
सुत जालंम राव जवांन [2] चढं । अरजुन्न ब्रंद भुज जास द्रढं ।।
सिर नेत सदा ध्रंम स्वांमि धरं । जुध पथ्थ सुदत्त करन्न करं ।।
चढि ऊदल [3] भीम नरेस सुतं । कुलरांन भुजं जसवास जुतं ।।
चढि रावत दुल्लहसिंघ [4] तुरं । जुध अंगद पाय सधीर भरं ।।
मुख चख खित्रीवट की लजयं । अगजीत विरद्द छजै भुजयं ।।
जयसाह [5] चढे सुत सांग हयं । वखतावर रावत [6] चढि तयं ।।
चढि जोध कमंधज [7] जैत सुतं । सिरदार कंवार [8] चढे सुचितं ।।
माहाराज सिवा सुत पथ्थरिनं । ध्रंम स्वांमि भुजं दत तेग तिनं ।।
अमरेस्वर प्रोहितराज सजं । मुख देखि तिनं अघ ओघ भजं ।।
चढि वीरमदेव [9] अभंग तुरं । फतमाल [10] किसोर [11] चढे सुभरं ।।
चढि भैरवसिंघ [12] गुमान असं । सगतो चढि गोकल [13] जुत्त जसं ।।
मोहकंम सुजाव [14] वजेपुरयं । चढि चूंड अजो [15] वखतावरयं [16] ।।
कमधज सिवो [17] पदमेस [18] दुवं । चढि जालंम संभरिराय धुवं ।।
चढि दौलतसिंघ उदोत सुतं । अरु दौलत ऊदल नंद जुतं ।।
अभमाल रु तेज जवान [19] चढं । चढि वैरीयसाल सु रांम द्रढं ।।
चढि पीथल [20] और गुपाल [21] हयं । रिरमाल लिछंमन [22] जुध्ध जयं ।।
चढि गोइंद घासीयरांम [23] भरं । चढि भट्टिय चांद रु सेर [24] तुरं ।।
दुरजन [25] रुघपत [26] भेर [27] त्रयं । अरु देव सुतं चढि चंद [28] हयं ।।

---

१. रावत अजीतसिंह, कानोड़ २. रावत जवानसिंह, कुरावड़ ३. राजा-उदयसिंह, वनेड़ा ४. रावत दूलहसिंह, आसींद ५. ठाकुर जयसिंह, लावासरदार-गढ़ ६. रावत वख्तावरसिंह, वोहेड़ा ७. ठाकुर जोधसिंह, वदनोर ८. कुंवर सरदारसिंह, वागोर (वागोर महाराज शिवदानसिंह जी के कुंवर जो महाराणा जवान-सिंह जी के उत्तराधिकारी वने) ९. ठाकुर वीरमदेव, नींवाहेड़ा १०. वावा फतेहसिंह, केर्या ११. वावा किशोरसिंह खैरावाद १२. राज भैरवसिंह, ताणा १३. रावत गोकुलदास, पीपल्या १४. कुंवर भैरवसिंह, विजयपुर (मोहकमसिंह के पुत्र) १५. अर्जुनसिंह, वसी १६. वख्तावरसिंह, जीलोला १७. महा-राज जवान दास जी के साला १८. पद्मसिंह चौहान, गुड़ला १९. तीनों ही राणावत २०. देवली २१. इटाली के राठौड़ २२. दोनों राठौड़ २३. दोनों शक्तावत २४. दोनों भाटी २५. महाराज वनेड़ा २६. चुण्डावत २७. राणावत २८. महाराज देवीसिंह जी के पुत्र चन्द्रसिंह

चढि रांम सु लाल[1] लिछमनयं[2] । चढि राजर जालमयं[3] भनयं ।।
नवलेस[4] हमीर[5] प्रताप[6] जुतं । जगतेस[7] रु भीम[8] हमीर[9] भृतं ।।
चढि संकर वार पदंम तुरं । जग जाहर नाहर जुध्ध जुरं ।।
सिवनाथ[10] रु जोर[11] सलांमतयं । जयसिंघ[12] रु भीम[13] खुमांन[14] तयं ।।
परताप[15] रु जोर[16] सु भारथयं[17] । चढि पीथल[18] चत्रभुज[19] कथयं ।।
चढि धावर भैर सु स्यांम दुवं । त्रतिय कहि नथ्थ समांन धुवं ।।
कवि सांवल[20] और जिसौभ छयं । कहि भीम[21] रु सुरजमल्ल[22] ठयं ।।
हरराज सहं चढि संग वनौ । इक भट्ट सु दौलतरांम गनौ ।।६२५।।

छंद पद्धरी

कीय हुकम भीम अरसिंघ नंद । चढि कंवर सथ्थ गोकुलह चंद ।।
सुज किसननाथ हरनाथ साथ । सुभ रामनाथ दोलह समाथ ।।
चढि रांम सवाइय सचिव सोय । गनेस नाथ ग्यांनह सु जोय ।।
महतो सु जवाहर हेमराज । अरु रांमराय मोडह सकाज ।।
मांणक खवास पांडे गुपाल । वेनीयरांम तेजल सुढाल ।।
कहि हंसराज इमरत्तराय । अरु अचलदेव मोती सुभाय ।।
अरु वेजनाथ ठाकुर सिदास । मोतीचंद वखतावर प्रकास ।।
लालौ वियास अजमल अभंग । सभि महापुरस चव सुजन संग ।।
राधिका उपासिक[23] दयालाल । सुभ हरूमांन दासह सुढाल ।।
इक संत आतमारांम जांन । मेनां संन्यास जुगिनि वखांन ।।
महंमद हय्यात जामांन खांन । चढि मीरवाज अरु वाजखांन ।।
जमातदार ईसौ अभंग । सु वराति अजीठन सेख संग ।।
हय गय पयाद रथ सुतरह पयांन । मुकांम प्रथम छांवनिय थांन ।।
सव सुभट संमिलि तिन ठांम होय । भींडर मुकांम दिन दुतीय जोय ।।
पधराय कंवर पय मंड कींन । करि निजरि गोठ चित हरख भींन ।।

---

१. शक्तावत २. राठौड़ ३. वेगम के दो उमराव, मेघावत ४. राणावत ५. भाटी ६. राठौड़ ७. ग्वालियर कुंवर जी ८. राठौड़ ९. हाड़ा १० पुरावत ११. डोढ्या, राठौड़ १२. राणावत १३. पारड़ा ठाकुर १४. पुरावत १५. चौहान १६. भाटी १७. राणावत १८. पंवार १९. चूण्डावत २०. महियारिया २१. कविया २२. आसिया २३. गुरुराज गुसांईय

पायांन जांन करि कंवर प्रात । माहाराज जोर सजि सिलह साथ ॥
तलहटीय रक्खि सव जांन तांम । किय कंवर चित्रगढ़ सिर मुकांम ॥
किय रात्रि समय आनंद सैंन । जगि प्रात समय रवि दरसि नैंन ॥
रघुवंस रीत नित कृत्य कींन । फिर देवि दरस कहूं चित्त दींन ॥
प्रासाद अन्नपूरना आय । कीन्हीय सतुति फिर लग्गि पाय ॥६२६॥

श्री अन्नपूर्णा स्तुति

छंद भुजंगी

जयौ पूरना अंन श्री राजरांनी । जयौ चित्र कौटेस्वरी मां भवांनी ॥
जयौ ब्रंम्हरूपी जग अद्वितीयं । नमौ माय या रूप रूपं द्वितीयं ॥
त्रिगुनं त्रिदेवं त्रिसभ्रं त्रिकालं । त्रिसक्तं त्रिवेदं त्रिरामं त्रिज्वालं ॥
त्रिनेत्रं तूंही कासिका मोछ्छिदैनी । त्रियं पथि गंगा नमस्ते त्रिवेनी ॥
चतुराननं रूप तूंही सकत्ती । चतुर्बाहु वेदं चवं रूप रत्ती ॥
पदारथ रूपं तनं सेन च्यारं । नमौ च्यार वर्नाश्रमं भूमिकारं ॥
नमो पंच इंद्री कृतं पंच भूतं । नमौ मात्रिका पंच प्रांनं अभूतं ॥
नमो पचमोक्षं कृतं पंच वांनं । नमौ अंमृतं पंच भुक्ता विधांनं ॥
नमस्ते षट सासत्रं रूप रत्तं । नमो द्रसंनं रागयं चक्रवर्त्तं ॥
नमो सात पातालयं सात लोकं । मुनी द्वीप सूरं हयं नीर ओकं ॥
पुरी सात देवी तूंही मोछ्छ दैंनी । नमौ सप्त माता [1] स्वरूपी त्रिनैंनी ॥
नमौ सिध्धि अठ्ठं अठ्ठं जोग अंगं । नमस्ते दिसानाथ नागं [2] अभंग ॥
नमो खंड भूमी नवं निद्धि रूपं । रसं नौ कृतं भक्ति नौधा अनूपं ॥
नमस्ते दसं रूपकारी गुविंदं । दसं माथ हंती नमौ रांमचंदं ॥
नमस्ते दसारूप[3] संसार सारं । दिसारूप[4] देवी नमौ भू अधारं ॥
तूंही ब्रंह्म माया घटं घट छाजी । तूं ही थावरं जंगमं में विराजी ॥
सिरं नम्मि अक्खी सतूती जवानं । करौ दुर्घटं साहि अंबे प्रमानं ॥६२७॥

---

१. सप्तमाता नाम-ब्रांम्ही, माहेश्वरी, कौमारी, चामुंडी, इन्द्राणी, वैष्णवी, वाराही ।

२ नाग: आठ पर्वतराज ३. पूर्व आदि दस दिशा ४. अभिलाषादि दस दिशा, नायिका भेद

दुहा

नीलकंठ के पाय तव, लगि महाराज कुमार।
फिर परदछ्छि प्रनांम करि, किय अस्तूति ऊचार ॥६२८॥

श्री शिव स्तुति

छंद अर्द्ध नराज

नमांमि नीलकंठयं । भुजंग हार गंठयं ॥
नमांमि सूल पांनयं । हलाहलं अचांनयं ॥
नमांमि भाल चंदयं । सुरेस पाय वंदयं ॥
नमांमि मुंड धारकं । जनं अनंद कारकं ॥
नमांमि नाग भूषनं । जटाधरं विदूषनं ॥
नमांमि गंग सीसयं । अजं अखंड ईसयं ॥
नमौ अनंग दाहकं । धतूर आक गाहकं ॥
नमौ नमौ दिगंवरं । अलख्खयं उमावरं ॥
नमौ जमात[1] नागयं । भसंम अंग रागयं ॥
नमौ वसत्र खालयं । त्रिनेत्र अग्गि ज्वालयं ॥
कपाल सूलयं करं । नमांमि रौह डंगरं ॥
कुमारि हेम ईसयं । नमौ नमौ गिरीसयं ॥
असेस भृंग आसनं । नमौ मसांन वासनं ॥
पिनाक डाक धारकं । मतंग अंध मारकं ॥
सु त्रेपुरं विनासनं । नमौ भसंम वासनं ॥
अनेक दुख हारकं । जनं अनंद कारकं ॥
जवांन नंमि सांकरं । नमौ नमौ जटाधरं ॥६२९॥

अरिल

सिव पय वंदि कंवर लीय आसिक । स्यांमा मंदिर आय हुलासिक ॥
फिर प्रदछ्छि करि डंड प्रनामं । कीय अस्तूति नंमि सिर जांमं ॥६३०॥

---

१. नाग पर्वत हेमाचल के जमाई (दामाद) शिव

श्री कालिका स्तुति

छंद साटक

राकाचंद प्रमांन मांनसमुखानेकंज नानंददा।
श्री माहेश्वर वांम अंग सुभिता जुधादित्ता भंजनी ॥
चापं अंकुस वांन पास सुभगा वेदं भुजा धारिनी।
दासं अंग सिहाय जुध करनी अंवा जयौ कालिका ॥६३१॥

छंद त्रोटक

जय कालीय दास सिहाय करी। जय भीर अजं मधुकीट हरी॥
जय माहिप सैंन सिंघारनयं। जय धुंम्र चखं हक जारनयं॥
जय चक्र प्रहारन चंड सिरं। जय मुंड दितं जुध नास करं॥
जय वीरजरत्त अचान रतं। जय सिंभ निसुंभ वधा सकतं॥
जय गोरि सवित्रीय श्रीतनयं। जय वांम तनं त्रय देवनयं॥
श्रीय रूप जयं दससीस हनं। जय भांन प्रकासक त्रैभवनं॥
त्रीय मोहन मात पूरष्ष भई। पुरषं चित मोहत नारमई॥
जय रूप सुधाकर पै श्रवनं। जय इंद्रवरी सजलं अवनं॥
जय खांन चवं विसतार धरं। जय वांनीय च्यार प्रकास करं॥
जय लाजमई कुल नारि हीये। वसि सुग्य ह्रिदे बुध रूप कीये॥
जय अेक अनेक स्वरूप धरी। अहि मांनव देह निवास करी॥६३२॥

दुहा

आसिक लै गुर कंवर तव, सीख मंगि नमि सीस।
मंदिर आय स्तूति कीय, कुंभस्यांम जगदीस ॥६३३॥

श्री कुंभस्यांम स्तुति

छंद पद्धरी

जय कुंभस्यांम करुना निधांन। तन स्यांम नील वारिद समांन॥
जय रख्ख मांन भीषम समाथ। रथ चरन पांन धरि नांम नाथ॥

जय जयति पथ्थ स्वारथि अभंग । जय मगधराज[1] जितवांन जंग ।।
जय कंस केसि भंजन वृजेस । नख अग्र जयति धारन गिरेस ।।
जय जयति संत रिछ पाल नांम[2] । मीरां सिहाय सभ्भवांन स्यांम ।।
जय संख चक्र गद कंज धार । आजांन सुभग भुज जयति च्यार ।।
जय नथ्थिवांन कालीय कराल । जय रख्खि दवागिन ग्वाल-बाल ।।
जय मोरमुकट सिर धर सधीर । जय रास रचन कालिंदि तीर ।।
जय मुर मधु भंजन समर सूर । जय वकी व्योम अघ संकट चूर ।।
नरसिंघ जयति प्रहलाद रख्खि । मृग केसि भंजि ससि सूर सख्खि ।।
मरजाद सिंधु जय रांमचंद । सिय आंन भांन रांवन अरिंद ।।
जय मच्छ कच्छ वांमन बराह । दुजरांम जयति खल खित्रि दाह ।।
जय बुध किलकि तन स्वयंसिद्ध । प्रतपाल संत त्रयपुर प्रसिद्ध ।।
असरंन सरंन अंनाथ नाथ । दुज दीनपाल जय जय समाथ ।।
जय माधव केसव दुरदतार । अच्युत अनंत भुव हरनभार ।।
जय कुंभस्यांम मम रख्खि मांन । सिर नम्मि करीय अस्तुति जवांन ।।६३४।।

अरिल

आय महल माहाराज कंवारह । करि भोजन निसि सयन सुढारह ।।
कितक दिवस चित्तौर रहांनह । वांधुगढ दिस कीन प्रयांनह ।।६३५।।

आय कूंच दर कूंच अभंगह । रीमां दुरग नजीक सुढंगह ।।
न्रप जयसिंघ साठि न्रप सथ्थह । समुख आय चव कोस समथ्थह ।।६३६।।

गज तें उतरे ससुर जमातं । मिल कीय निजरि अधिक सुख गातं ।।
चढि गज वाज कूंच कीय तांमह । रीमांगढ तव कीन मुकांमह ।।६३७।।

दुहा

जा दिन तें रीमां सहर, कीये मुकांम वरात ।
ता दिन तें जैसिंघ की, रसत सुभट प्रति आत ।।६३८।।

---

१. शिशुपाल नामक मगधराज २. स्यांम

समिधी जन के जतन कज, अरु कज कंवरी व्याह ।
मांनहुं सुनिध्धि कुमेर की, लई लूटि जैसाह ॥६३९॥

कासमीर मृग मद अतर, अमल अन्न मिष्टांन ।
लैनहार थक्किय सु कर, दैनहार न थकांन ॥६४०॥

छंद उद्धौर

जब लगन समय सु आय । कहि कंवर प्रोहितराय ॥
तव दुलह सजि श्रंगार । मनु वीर कांम सुढार ॥
सिर पाघ जरकसि सोह । मनु कमल रवि मिल मोह ॥
सिरपेच बंधि प्रमांन । मनु भेंटि नव ग्रह भांन ॥
सिर स्यांम किलंगीय सोभ । मनु भांन भुज सनि लोभ ॥
अरु वंधि मन मय मोर । मनु उदित भय रवि कोर ॥
पवसाक जरकस दीस । मनु उदित किरन दिनीस ॥
सभि सुरख तिलक लिलाट । मनु अंक रवि कुज थाट ॥
रजि श्रवन मुक्ति सुभाय । भ्रगु भोम षट तन भाय ॥
लसि ग्रीव मुत्तीमाल । मनु मेर गंग सचाल ॥
प्रतमाल तेग सुचंग । कसि बांम दच्छिन अंग ॥
मिलि मुच्छ श्रोंहन सूर । मनु कांम वीर अंकूर ॥
कसि पिठ्ठ बड फर तांम । मनु मेर बदल स्यांम ॥
सव सुभट सजि पवसाक । श्रंगारि गज अयराक ॥
चढि दुरद कंवर जवांन । मनु नीलांचल उगि भांन ॥
गज पिठ दुलह सिंघ । सजि चंमर हाथ अभंग ॥
तव सुभट सब हयरोहि । मनु इंद्र अग सुर सोहि ॥
अरु राग मंगल गांन । सजि कलस नार समांन ॥
द्रव देत मौज सुभाय । जयसिंघ न्रप ग्रह आय ॥
तोरन सु वंदि जवार । गज उतरि राजकुंमार ॥
करि आय आरति जांम । वघेल दुज वर तांम ॥
सभि चौंरि मंडफ राय । तिह ठांम दुलह आय ॥
जयसिंघ तनया आंन । थपि वांम अंग जवांन ॥

दुज जग्य कृत अधिकार । मुख वेद मंत्र ऊचारि ।।
गठजोर जुरि हथलेव । दिखि देत आसिष देव ।।
रह वेद कीय जयसाह । सियरांम रीत विवाह ।।
भांवरिय फिर वरनार । रघुवंस रीत उदार ।।
जयसिंघ आय प्रवीन । कन्या समर्पित कीन ।।
विसनाथ लिछमन आय । वलिभद्र[1] नेग सुपाय[2] ।।
हथलेव दिय नवनिद्ध । पय पूजि दुलह प्रसिद्ध ।।
हथलेव छुट्टिय जांम । तव दुलह आय मुकांम ।।
फिर दुतिय दिन न्रपराय । सव जांन नूंति सुभाय ।।
वहुभंत भोजन साज । जेंवाय समधि समाज ।।
नित परत वधि नव नेह । रस हास्य हरख अछेह ।।६४१।।

दुहा

पुरव दिस के मगन जै, मिले व्याह सुनि ठाट ।
भेंटे कंवर जवांन कहुं, सुजस पढ़त कवि भाट ।।६४२।।

कवित्त इकतीसा

व्रजभाषा

देवतरु झंव से विलंव कुल हिंदुन के,
आयुध छतीस पढे समर इरादा के ।
मेदपाट ग्रौठंम दुरंग गज वेल के से,
पाठक करंन भोज सुदत विनादा के ।।
भीम सुत नाहर जवांन वारे जाहर भू,
धारक विरद जे प्रतापसिंघ दादा के ।
अरि झुंड खंडन अडंड भूप डंडवे कौ,
खंभ ब्रह्मंड भुजडंड रायजादा के ।।६४३।।

अन्य कवित्त

सागर सुमति कौ सरीर कौ समीर सुत,
जाहर जवांन जौध जगत जयंत है ।

१. लिय साल २. सुभाय

भीम सुत भीम भुज दंडन कौ भासै भूमि,
भव कौ भगत भांनभा कौ भासवंत है ।।
धराधीस धारक धनुष कौ धनंजय सौ,
धरम कौ ध्वज[1] ध्रुव जस धनवंत है।
कांमिन कौ कांम कविराजन कौ कांमतरु,
कुल कौ कलस कौंर कीरत को कंत हैं ।।६४४।।

च्यारौं ओर वारे कवि तनया सुयंवर मैं,
आये ते चढाये हय गय मौज भारे कै ।
त्याग नदी चली नव खंड हिम रूपधार,
सुकवि सदन भरे सर ज्यौं सुढारे कै ।।
मोती करे कंठी साल जोरी पवसाक लख,
दीन्हैं भीमसींघ करि आदर अपारे कै ।
ता सुत जवांनसिंघ जस के सुढारे सुनौ,
वज्जत नगारे अ्रे हमीर वंसवारे कै ।।६४५।।

प्रीतैं चाहवे की हद्द सफरी तैं सांच अघ,
दाहवे की हद्द गंगा जूतैं उनमांनीयै ।
नाग औ कुरंग रिझवारन की हद्द तप,
धारन की हद्द जट धारन तैं मांनीयै ।।
रांमचंद्र हूंतैं हद्द भई अनकूल ताकी,
सीता पैं पतिव्रता की हद्द पहचांनीयै ।
हद रजपूती की दिवांन भींमसिंघ जू तैं,
कंवर जवांन तै सपूती हद्द जांनीयै ।।६४६।।

दुहा

यौं कविवर जस ऊचरे, दै हय गय तिन दांन ।
सीख मंगि जयसाह सौं, हठ करि कंवर जवांन ।।६४७।।

अरिल

हय गय दासि-दास हिम नग जर । दीय दायज जयसिंघ नरेस्वर ।।
मिल तनया जामात सु वच्छल । गदगद कंठ नयंन छाये जल ।।६४८।।

---

१. धुज

सुभ मति जुकत भूप जयसिंघह । पहुंचावन चढि कंवर अभंगह[1] ।।
वाहुरि न्रप जयसिंघ सुतांमह । तांमस सरिता तीर मुकांमह ।।६४९।।

दुहा

किय मुकांम तांमस तटह, वरखा रित जल जोर ।
वरखत मेघ अखंड जल, घनघौरत चिहुं ओर ।।६५०।।

कवित्त छप्पै

अथ वर्षारितु वर्णन

रितु पावस घनघोर, जौर जल ओर चियारह ।
मोर सौर मयमत्त, रौर दद्दुर सर पारह ।।
भद्रव कद्रव भुम्मि, झूम्मि वद्दर सु लुम्बि गिर ।
विरहि अग जग रुम्मि रुम्मि, घन घुम्मि चूम्मि धर ।।
संजोगि भोग अहरत विलसि, खहरत दांमिनि तेज कर ।
झहरत सु नीर घहरत गगन, विरही जन थहरत उवर ।।६५१।।

वहत नदी जल अट्ट-पट्ट, रूधि घट्ट-वट्ट नर ।
तांमस नीर उपट्ट, छिलि तवहि उभय तट्ट पर ।।
विलसित भूप हरम्प, रम्य रंमनी चंदानन ।
करत रूप मद पांन, दिवस निस जांन परंत नन ।।
सुरधनुप ओप खंचित गगन, खंजन हंस अलोप इल ।
रघुनाथ कटक जिम दसहुं दिसि, मग्ग अमग्ग वहंत जल ।।६५२।।

छंद साटक

देवधीश गजिंद्र रौहित वरं उर्वशीमालिंगनं ।
भारं ठारसु पौपनेन सु तरं नीरं घनं श्रावनं ।।

---

१. वांधुगढ़ राजा जैसिंघदेव नांम; वेटा तीन—विस्वनाथसिंघ, लिछमनसिंघ, वलिभद्रसिंघ । विशेप—उपरोक्त नामों के आधार पर इस छन्द में निम्नलिखित पंक्ति और जोड़ी गयी प्रतीत होती है—

'विस्वनाथ लिछमन वरवीरह । वलिभद्र सहित कंवर त्रय धीरह ।।'

केकी कूक सुमार कीन्ह विरही आनंगवानं इवं ।
संजोगी सुहयं वियोग दुहदा वर्षा दिनं दुर्वहा ॥६५३॥

छंद हरिगीतमालती

नभ मिलि घनाघन श्रवति बन घन वहत सरित उपट्टयं ।
मंजरित तरवर हरित गिरवर छलित सरवर तट्टयं ॥
वग वैठि पावस तिमिर दस दिस मनहुं मावस रत्तयं ।
नहि दरसि हंसन हंस खंजन सुस्क रवि तरु पत्तयं ॥
घनघोर चात्रक मोर सौरह रोर दद्दुर झिंगुरं ।
झंकार झिल्लीय लपट विल्लीय पिटप[1] अंग मनौहरं ॥
भरि खाल नाल सुताल पूरित चाल झरन पहारयं ।
मातंग अंग अनंग अमुदित तरुन साख अहारयं ॥
गिर गुहा आश्रित सिंघ मुनिवर उवर भय नभ गज्जयं ।
नहि रूकत्त विरहनि नैंन मांनहुं श्रवत जल सुर-रज्जयं ॥
धरं नहिन मावति सुजल अहनिसि वहत मग्ग अभग्गयं ।
मनु समय कलिजुग धर्म तजि निज कगति मांनव लग्गयं ॥
लघु दिर्घ[2] गरत सु भरित जल प्रतिबिंव भाति प्रकारयं ।
मनु मिलन पति-सुरराज पुहमीय[3] सजि[4] अंग सिंगारयं ॥
सुभ थलनि करति बिहार वूढन सूरख[5] रंग अनंदयं ।
मनु दीन्ह सुभत सुढाल ऊर्वीय भाल कुंकम बिंदयं ॥
घनघोर बरषत और च्यारहुं पहर अठ्ठ दिन-रातयं ।
मनु अष्टि विध जलमईय बिरचित विस्वनैंन विभातयं ॥
सुख विलसि दंपत वार गाहन मध्य सुचित्त हगामयं ।
तट सरित तांमस कितक वासुर रख्ख कंवर मुकांमयं ॥६५४॥

दुहा

करि पूजन तमसा सरित, किय जवांन अरदास ।
तव सरिता जल पंथ दिय, उतरि पार सहुलास ॥६५५॥

१. विटप २. दिरघ ३. पुहमिय ४. सजिय ५. सुरख

चित्रकूट दल आये तब, किय दस दिवस मुकांम।
किय जात्रा गिरराज की, जहां वसत रघुरांम ॥६५६॥

छंद पद्धरी

किय चित्रकूट जात्रा कुमार। कवि कहत कछुक निज सुमति सार ॥
करि प्रथम स्नांन मंदाकिनीय। जिह नांम तिरत जे अधम जीय ॥
जलपांन कीन्ह अंदोल देह। धन धन्य मात पित धन्य तेह ॥
फिर रांमलला दरसनहि आय। किय भेंटि दंडवत सुचित चाय ॥
अस्तुति कीन्ह जुरि जुगलपांन। लखि नयन रूप धरि चित्त ध्यांन ॥
जय कोसलेस करुना-निवास। दसरथ नरेस सुत रूपरास ॥
जय मात मुख्ख दिखन त्रिलोक। सुषमा समुद्र जय जय असोक ॥
जय काकभुसंडिय चित निवास। त्रयलोक दिखि तिहि उदर वास ॥
जय रूद्र हृदय मांनस मराल। निज संत पाल जय जय दयाल ॥
फिर आय कंवर हनुमंतधार। किय स्नांन दरस अरु अंचिवार ॥
फिर पैसरनी सरिता अन्हाय। किय अनसूया दरसन सुभाय ॥
पतनी सु अत्र रिष अति दयाल। दिय अंगराग सीतहिं सुढाल ॥
फिर चित्रकूट परिक्रमन कीन। अरु दरस कांमतानाथ चीन ॥
किय कोट्य तीर्थ दरसन सुभाय। अरु रामसिला दरसन सुपाय ॥
आसन सु कीन्ह रघुनाथ जत्र। फिर फटिकसिला कीय दरस तत्र ॥
सझि तिहि ठां पैसरनी सनांन। जल अंचि न्हाय तन मोदमांन ॥
जगवेदी कीय दरसन कुमार। पित मात पख्ख जिन उभय तार ॥
गिरचित्र सर्ब करि दरस स्नांन। करि पुन्य द्रव्य चित मोदमांन ॥
दस दिवस रख्ख तिहिं थल मुकांम। दिस प्रागराज करि कूंच जांम ॥
मग मज्झ राजपुर घाट आय। अठ दिन मुकांम तट जमुन ठाय ॥
हनुमंत दरस कालिंदि स्नांन। अरु तुलसिदास आश्रम सुमांन ॥
आतिथ्थ कीन्ह चित मोद साज। किय कूंच आय फिर प्रागराज ॥६५७॥

दुहा

प्रागराज षट दिवस लग, रख्खीय कंवर मुकांम।
स्नांन दरस सुरदल भजे, किये जवांन तमांम ॥६५८॥

छंद भुजंगी

गंगा स्तुति

किये प्रात वेरं त्रिवेनी सनानं । कुमारं जवानं चितं मौदमानं ॥
जयौ मात जाह्नवी पाप हांनी । धरा भाग भागीरथं भूप आंनी ॥
जयौ भृंम्ह[1] कांमडली सूध नीरं । जयौ विष्णु पादोदकी दूध सीरं ॥
जयौ तूं जटा संकरी सिभ सीसं । जयौ मात वंदै सुरीसं नरीसं ॥
जयौ पांमरं पातकी पाप छैंनी । जयौ मात भागीरथी मोछ्छ दैंनी ॥

जमुना स्तुति

नमौ कृष्ण रूपी अनूपी कलिंदी । नमौ भांनु जाया अघं औघ छिंदी ॥
नमौ नीर स्यामं गतं सुध दाता । नमौ दूत कीनास हादास त्राता ॥
नमस्ते कलिंदाचलं भेद जामं । नमस्ते जमंना जमंना सुनामं ॥

सरस्वती स्तुति

नमौ भारथी भारथं पाप जेता । नमौ तारनी पातकी वृंद केना ॥
नमस्ते नदी राजसं ब्रंह्म रूपी । नमौ पूर सिंदूर आभा अनूपी ॥
नमौ मात प्रानी त्रयं ताप कट्टी । भयी संगमं प्राग प्राचत्त कट्टी ॥
किया स्नांन वैंनी कुमारं जवांनं । तिनं पुस्त अेकोतरं पाप भानं ॥६५९॥

दुहा

वैंनी माधव दरस किय, वहु द्रव्य भट चढाय ।
भरद्वाज रिषराज कौ, फिर दरसन किय आय ॥६६०॥

छंद पद्धरी

गढ़ मध्य कंवर प्रावेस जांम । कीय प्रागवट्ट दरसन सुतांम ॥
फिर वासक सांई दरसि देव । श्री दस सुमेर दरसीय सभेव ॥
फिर गंग स्नांन कीन्हे कुमार । जिहि ठांह भिरत जग गंगवार ॥
गजराज अेक गुरराज दीन । गंगा स्तूति फिर कंवर कीन ॥६६१॥

---

१. ब्रंह्म

श्री गंगा स्तुति

छंद त्रिभंगी

सुत सैल सपत्नी सिसधर पत्नी सदगत दत्नी पतित नरं।
वसुमति श्रृंगारा हार अकारा सुपय विहारा न्रमल धरं॥
सुरलोक निसैंनी कलमख छैंनी अति जम भैंनी कृत भंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६२॥

बहु पांमर जालं तन कंकालं सपर सकालं वियद दतं।
मृग मद ब्यंदन लेपत चंदन दत वन नंदन स्नांन कृतं॥
तांवूल तरंगं वलयक रंगं वसत सुरंगं पय संगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६३॥

मानुस मति मंदा तुव जल पिंदा करत अनंदा पुरईंदा।
तटवास करंदा रिष मुनि वृंदा धरत गुव्यंदा हरजंदा॥
जल न्हांन सज्झंदा तुहि सुमिरंदा जे जंन जंदा उधमंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६४॥

जलमल विहरंदी सिरधुज नंदी जय सुरनंदी अघ छिंदी।
त्रिभुवन जनवंदी दुरित हरंदी सुजस पढंदी अजवंदी॥
तुव जनंम सुभंदी बांमन हंदी पय वर इंदी नख अंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६५॥

बहु उडंत विहंगं नखत निहंगं कीट पतंगं तरु संगं।
चढि साख उतंगं पुत्र उछंगं लेत मलंगं कपि अंगं॥
प्रतिव्यंव निसंगं वंसत सुरंगं धरि धरि अंगं धरि गंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६६॥

जल परसि समीरं विहरत तीरं परसि सरीरं तिरत जनं।
उधरत विषंग्रासी मलय निवासी अनिल अनासी कृत असनं॥
तुव नीर सुगंधन तजि भव वंधन हरिहर जंदन कृत चंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६७॥

वसि प्रथमं तुवं जल भृह्म[1] कमंडल पय स म ऊजल मल विहरं।
फिर श्री हरि वावन पद नख पावन नांम सुभावन रटत धरं॥
वसि सु जट महेसं जन्हु उरेसं भग्न रथेसं न्रप संगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६८॥

उचरत तुव नामं यह भव जामं अघ विहरामं विमल हुतं।
दरसन मिट तापं मंजत आपं सतभव दापं नास क्रतं॥
जल अचवत जेसं सहस भवेसं कलुष असेसं क्रत भंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६६९॥

अज हरिहर गंगा नभ धर गंगा सत क्रत गंगा श्रुत गंगा।
जप तप मख गंगा जौग सु गंगा मंत्र सु गंगा दत्त गंगा॥
मायामय गंगा थिर चर गंगा सच्चिद्रूपा श्री गंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा[2] ॥६७०॥

यक चव पंचानन पट सहंसानन महिमा जांनन समथनते।
अहमपि इक आंनन उकत अजांनन किम गुन गांनन मूढमते॥
कवि किसन उचारत पतित उधारत यह पख धारत सुध अंगा।
जय जय श्री गंगा जय श्री गंगा जय जय गंगा जय गंगा॥६७१॥

कवित्त छप्पै

वालक गो द्विज वांम, स्वांम-द्रोही रु सुरापी।
कोट इसा अघ करै, पुरुष घौरारिव पापी॥
ते सुरसरि तो तीर, आय तंन नीर अन्हावै।
विहर पाप तिंहि वेर, प्रगट हरिहर पद पावै॥
चढि चढि विमांन व्यंजित चमर, कवि पुरांन श्रुति जस कथी।
उजागर पतित-तारन अवस्य[3], भवसागर भागीरथी॥६७२॥

---

१. ब्रंह्म २. कृति के मूल पाठ में यह पंक्ति लिखी हुई नहीं है।
३. अवसि

दुहा

तीरथराज अन्हाय फिर, किय कासी दिस कूंच।
पावत विस्वैसुर दरस, जाहि पुराकृत ऊंच ॥६७३॥

कासी को अंगरेज अरु, अरजुन सुत अजमाल।
पंच कोस आये समुख, ऊछव सुचित अपाल ॥६७४॥

रांनापुरे मुकांम किय, कासी कुंवर जवांन।
ताही दिन विस्वैस कौ, दरसन करे सुमांन ॥६७५॥

श्री विश्वनाथ स्तुति

छंद भुजंगी

नमौ देव देवेस श्री विस्वनाथं । नमौ कासि दुर्गाधिपं पंच माथं ॥
नमौ अद्रिजाया ध्रतं वांम भागं । नमौ आदि जोगी तनं भूति रागं ॥
नमौ मुंडमाली उरं नाग-हारं । नमौ चंद्रचूडं सिरं गंग धारं ॥
नमौ मंगलं भाल नेतं दधानं । नमौ कांम क्रौधानलं दाहवानं ॥
नमौ अंवरं वारनं-खाल जेसं । नमौ डाक पिन्नाकधारी उमेसं ॥
नमौ सूल कापाल हस्तं धराकं । नमौ भंग आहार धत्तूर-आकं ॥
नमौ भूतनाथं मसानं विहारी । नमस्ते दिगं अंवरं वेषधारी ॥
नमौ निर्गुनं सर्गुनं भू प्रचारं । नमौ तीन नैनं त्रिगुनं अकारं ॥
नमौ सूलि पासूपते पिंग केसं । नमस्ते सिवं स्यंभवं जोग वेसं ॥
नमस्ते हरं ईस ईसांन नाथं । नमस्ते ससी सेखरां सूलि हाथं ॥
नमस्ते अडं खंड पर्स गिरीसं । नमौ म्रत्यु जेतार सर्वं सुरीसं ॥
नमौ सिध्धराजं कृतं सिध्धि सेवं । नमस्ते पिनाकी सिवं वांमदेवं ॥
नमौ उग्रवासा कृत्यं औकपाली । नमस्ते प्रमथाधिपं मुंडमाली ॥
नमौ स्वेतकंठ श्रीयं कंठ सिभं । नमस्ते कपर्दी रूपं अचंभं ॥
नमौ त्रैपुरारी भ्रगं त्रंविकेयं । नमौ तीन नैनं जटाधू अजेयं ॥
नमौ सर्वगं लौहितं भीम नांमं । नमौ रूद्र रूपं भव दाह कांमं ॥
नमौ व्यौम-केसं सिघं वृष्व रौहं । नमौ स्थांनु हेमाद्रिजा चित्त मौहं ॥
नमौ कासिकाधीस श्री विस्वनाथं । विनै की जवानं निजं नम्मि माथं ॥६७६॥

दुहा

भेंट कियो गजराज इक, विस्वनाथ दरबार।
आय मात अंनपूरना, किये कंवर दीदार ॥६७७॥

छंद मालिनी

अन्नपूर्णा स्तुति

अखिल जगत सेवी, पूरना अन्न देवी।
सुर नर गनेकं, तस्य आगम्य भेदी॥
भव उदधि निमग्नं, दास वांहा विलंबे।
जय जय जगदंबे, विस्व आधार अंबे ॥६७८॥

जय जय जगधात्री, पुत्रती रिधिदात्री।
सुजन समरतात्री, मोहिनी मौहरात्री॥
महिष असुर खंडी, खंडनी चंडमुंडी।
रगत वल विहंडी, जै सिवा सक्तिचंडी ॥६७९॥

मधु किटभ अगंजी, द्वैई कैं मौहि गंजी।
सु कर धनुष संजी, सुंभ निसुंभ भंजी॥
सुभख अजन ऊर्ना, नैत्र माद्ये न घूर्ना।
अखिल असुर चूर्ना, जैति मां अन्नपूर्ना ॥६८०॥

छंद पद्धरी

साखी विनाक अरु ढुंढिराज। करि दरस उभय गनराज साज॥
फिर दरस कीन्ह वापी गियांन। भेरुं सु काल जग प्रगट जांन॥
किय दरस फेर भैरव सु लाट। फिर आय कंवर मनकर्निघाट॥
सव सथ सहत तहां करि सनांन। गज अेक कंवर दीय गुर्रुहि दांन॥
किय दरस फेर जगंनाथ स्यांम। अंतर ग्रहि फिर परदछ्छ तांम॥
फिर कंवर पंचकोसीय प्रदछ्छि। मधि वरुन अंसि मृत अमर इंछ्छ॥
अगजीत फेर सांमिलि जवांन। रहि तेर दिवस मुकांम जांन॥
चवदमें दिवस फिर वंव वज्जि। कौड़ीयदेवि दरसनह सज्जि॥

तिहि दांम दांम कौडिय चुकाय । तिहिं कासिजात फल सफल भाय ॥
अगजीत समिल फिर कूंच कीन्ह । बासिनीय व्यंधि मग दरस चीन्ह ॥
त्रय दिवस रख्ख तिहिं थल मुकांम । गंगा सनांन किय कंवर जांम ॥६८१॥

छंद व्रद्धनाराज

विंध्यवासिनी स्तुति

नमांमि व्यंधवासिनी अनेक संत्र गंजयं ।
नमांमि धूम्र नैंन चंड-मुंड-सुंभ-भंजयं ॥
नमांमि चंद्र-आननी लिलाट द्वैज चंदयं ।
नमांमि म्रग-लौचने सुभंत दंत-कुंदयं ॥
नमांमि बाल-व्रद्धयं तरून देह धारिनी ।
नमांमि जुध्ध-क्रुध्ध कै समथ्थ दैंत मारिनी ॥
नमांमि नोगनं करं कमंड हंस वाहिनी ।
नमांमि सवित्रि ब्रह्मरूप सेवकं निवाहिनी ॥
नमांमि संख चक्र पांन कंजयं गदाधरी ।
नमांमि सूल डाक चाप बांन रख्ख संकरी ॥
नमांमि सक्ति धारिनी कुमार रूप संभवी ।
नमांमि वज्र हथ्थयं सहश्र नैंन माधवी ॥
नमांमि विष्णु मायया घटं घटं निवासिनी ।
जनं तनं उबारिनी नमांमि व्यंधवासिनी ॥६८२॥

छंद पद्धरी

करि कूंच कंवर फिर आय प्राग । रख्खिय मुकांम त्रय दिन सभाग ॥
वैंनी [1] अन्हाय अरु कूंच कीन्ह । व्रज जात करन कहुं चित्त दीन्ह ॥
फिर दरस कीन्ह हरिराय आय । बलदेव दरस कीय सुचित चाय ॥
इक दिन मुकांम बलदेव रख्ख । गोकल मुकांम इक दिन विसख्ख ॥
गादी स्वरूप सत दरस कीन । रेती सु रंमन दिख्खी प्रवीन ॥
वनमहा [2] तपौवन उभय जोय । मधुपुर[3] मुकांम दिन च्यार होय ॥

---

१. त्रिवेणी २. महावन ३. मथुरा जी

कालिंदि ध्यांन धरि कीय सनांन । गजराज अेक दीय गुरहिं[1] दांन ।।
विश्रांत घाट फिर कंवर आय । हरि कंस मारि बिश्रांम पाय ।।
परिक्रंमा कीन मथुरा जवांन । जग धन्य धन्य यह कहत बांन ।।

व्रंदावन वर्णन

फिर व्रंदावन दस दिन मुकांम । किय जहां रास सु विलास स्यांम ।।
किय जगंनाथ दरसन अभंग । बन गहवर कालीद्रह सुढंग ।।
फिर महल जु सेवा कुंज मांनि । सामीर धीर[2] मधुवन सु जांन ।।
सुभ वंसी वटि सरवर सुमांन । कौस कंहिं वर्नि व्रज के वखांन ।।
फिर दयानिध नूंती कुमार । भोजन सु कीन तहां हर्ष धार ।।
सनमांन कीन्ह गुर को असेस । कहि धन्य धन्य व्रज सर्व देस ।।
करि दयानिध गज भेंटि दोय । श्री राधावल्लभ दर्सि होय ।।
गोवर्धन पर्वत कंवर आय । किय परिक्रमा अति सुचित चाय ।।
श्री राधाकुंड अन्हाय गात । तहां लख्ख कोटि भव पाप जात ।।
फिरि लखिख वर्सानौ नंद गांम । व्रज भूप प्रिया प्रीत[3] मुकांम ।।
नर नार धन्य व्रजवास पाय । पसु पंछि धन्य[4] जे व्रज रहाय ।।
धन्य मछ्छ कछ्छ जमुना विहार । कीटी पतंग धन्य सु व्रजचार ।।
धन्य रूंख वेलि व्रज भूंमि तेह । परवत सु धन्य व्रज सथर जेह ।।
त्रिन गुल्म पुस्प व्रज धन्य जांन । व्रज सरित धन्य जमुना वखांन ।।
अरु धन्य धरनि व्रज रज सुभाय । हरि विहरि लोटि मनमोद पाय ।।
अरु धन्य धन्य व्रजवासि लोग । जिन जन्म मरन गौलोक जोग ।।
प्रांनी सु धन्य व्रजवास कीन्ह । तजि विपय त्रिषा हरि चित्त दीन्ह ।।
व्रज जात करत मांनव सुधन्य । नहिं तास मांन अतलोक जन्य ।।
व्रज पर विहार कृत पंवन आय । सौ धन्य धन्य जग में कहाय ।।
जड़ जीव मात्र व्रजभूमि वास । सौ धन्य धन्य कहि वेद भास ।।
कुल तार कंवर धंन धंन जवांन । तिहि व्रज जात्रा कीय हरख मांन ।।
तिन संग सुभट जे धन्य भाग । क्रंम क्रंम सु लीन्ह फल कोट ज्याग ।।

---

१. दयालालजी चौबे, मथुरा २. 'धीर समीर' जमुना जी की धार छै ३. प्रीतम
४. 'धन्य' सवद सुं विपसा अलंकार छै

कवि कृष्ण कहत मन मोद पाय । मम भाग धंन व्रज सुजस गाय ।।
दर कूंच कूंच फिर कीय जवांन । कीनैं मुकांम पुस्कर सु आंन ।।
फिर प्रात व्रद्ध पुस्कर अन्हाय । गज भेंट कीन्ह गुरराज पाय ।।
पुस्कर सु आद अरु सुधावाय । किय स्नांन दांन मन मोद पाय ।।
किय ब्रह्म दरस बहु विधि प्रनांम । सांबित्रि सहित गायत्रि वांम ।।
वाराहदेव पय लगि कुमार । किय भेंट द्रव्य अरु नमस्कार ।।
करि कूंच आय आंसिध ग्रांम । नूंतीय सु दूल्ह करि गोठ तांम ।।
पय मंड मंडि पधराय मज्झ । करि निजरि हरख प्रति रोम सज्झ ।।
सब फोज गोठ दै त्रपत कींन । किय निजरि अस्व गज द्वै अधींन ।।
माहाराज कंवर चित मोद पाय । फिर गोठ जीम्हि बधनौर आय ।।
फतमाल नूंत फिर गोठ कींन । गुर कंवर जीम्हि मनमोद भींन ।।
ले निजरि आय आंमेट थाह । नूंतीय सु हरखि सालम अथाह ।।
पय मंड मंडि कीय नजरि द्रब । जीम्हिय सु गोठ करि हरख तब ।।
लै निजरि वाज लाहा पधारि । जयसिंघ नूंत पय मंड धार ।।
जीम्हिय सु गोठ ले निजरि बाज । किय कूंच च्यारभुज दिसि सकाज ।।
आनंद सहित सब फोज जांम । गढबोर आय कींनै मुकांम ।।
करि प्रात नित्य कृत न्हायवार । किय चतुरबाह दरसन कुमार ।।
सिर नम्मि धरिय चित सुद्ध ध्यांन । अस्तुति करीय जुग जोरि पांन ।।६८३।।

श्री चारभुजा की स्तुति

छंद त्रौटक

जय च्यारभुजा गढबोर न्रपं । जय सुंदर स्यांम सकाम वपं ।।
जय संख गदा कज चक्रधरं । जय खग्ग कटार ध्रतं सफरं ।।
जय वारन तारन लच्छ्छपती । जय मारन ग्राह अथाह मती ।।
जय मित्र सुकंठ अनाथ कृतं । जय बाल विनास अभंग व्रतं ।।
जय अद्रि त्रखारत बासनयं । जय व्याध कवंध विनासनयं ।।
जय आश्रित पाय भभीछनयं । जय लंकपती कीय ता छिनयं ।।
जय अद्रि जलेस तिरावनयं । जय दूत उधार सु काजनयं ।।
जय रोध कलंक असंक गढं । जय भारथ पाय गिरेस द्रढं ।।
जय सेस विभंज नमे सुरं । जय कुंभ प्रकास विनास करं ।।

जय रांवन भंजन राघवयं । जय नांम अघं दल दाघवयं ॥
जय सीत सिहायक दासरथं । जय चाप सरं ध्रतवांन हथं ॥
जय कृष्ण विहारक ब्रजवनं । कृत पांन दवागिन काज जनं ॥
जय अग्र नखं ध्रत गोरधनं । जय मांन विभंजन इंद्र मनं ॥
जय नथ्थन कालीय नाग महा । जय कंस रु केसीय सत्रपहा ॥
जय चक्र धरं ग्रनव्रत्त हतं । जय जख्ख उधारि कुवेर सुतं ॥
जय ग्वार विहारी कृतं विपनं । जय गौर जरं जित स्यांम तनं ॥
जय कोटिक कांम स्वरूपवरं । जय ग्वाल सुवेष रु वंसि धरं ॥
जय पछ्छ मयूर सिरं धररं । जय गुंज विहार श्रगं उररं ॥
जय नासिक मुत्तिय धारकयं । मनु श्रीमत पाठ पढैं सुकयं ॥
जय रास विलास विलासनयं । जय रंज चितं ब्रज वासनयं ॥
जय श्रीमुख चंद्र चकोर चखं । जय भंजन कोटिक संत दुखं ॥
जय भांनु सुता हित वंछकयं । जय दीन जनं व्रत रछ्छकयं ॥
जय मंखन चोरन गोप ग्रहं । जय लूटन दध्धि चितं उछ्हं ॥
जय नायक सोर हजार त्रियं । जय सोर हजार सुदेह कियं ॥
जय वासन द्वारमती नगरं । पट रागिनि आठ विवाह करं ॥
जय सूकर जग्य कपिल दतं । सनकादि नरायन रूप कृतं ॥
जय ध्रू वरदं प्रथु कछ्छपयं । रिषभं मछ ग्रीव तुरंग जयं ॥
नरसिंघ हरी जय वांमनयं । जय हंस मनंतर पावनयं ॥
जय व्यास यदुजेस धनं तरयं । जय राघव जेत हलं धरयं ॥
जय बुध किलंकि प्रभु अवनं । जय वीस चवं चत्रवाह तनं ॥
जय नाथ अनाथ खगेस ध्वजं । असरन्न सरंन सु च्यार भुजं ॥
मम लज्ज सदीव रहावनयं । जय च्चारभुजा बुध पावनयं ॥
महाराज कंवार जवांन कहैं । यह मूरति मो चित नित्त रहैं ॥६८४॥

दुहा

करि असतुति अरु भेंट धरि, फिर परदच्छि कुमार ।
सीस नंमि आये बहुरि, जहां मुकाम सुढार ॥६८५॥

द्वितीय दिवस श्रीरूप पय, हय द्रव्य भेंट खंदाय ।
करिय भेंट चुत्रवाह पय, सीख मंगि चित चाय ॥६८६॥

कुंभलमेर पधार फिर, गढ लखि कूंच कराय।
राजनगर मुक्कांम किय, राजसमंद दिखि आय ॥६८७॥

तहां गोठ विंजन विबध, रचिय सवाई रांम।
जीम कंवर सुभटन जुगत, कूंच प्रात करि तांम ॥६८८॥

कवित्त छप्पै

कांकरह्यौली आय, द्वारिकेसह दरसन किय।
बाज द्रव्य करि भेंट, चरन पुरसोतम वंदिय॥
नाथदवारह आय, कीन्ह दरसन निज स्वामिम।
दामोदर पय बंदि, भेंट हय द्रव्य करामिय॥
रहि रात प्रात फिर कूंच करिय, आये श्री ईकलिंगपुर।
सिर नम्मि सिभ दरसन करिय, फिर परदच्छि सुभेंट धरि ॥६८९॥

दुहा

भेंट कीन्ह गजराज इक, श्री महाराज कंवार।
अरु भंत अधीन ह्वै, कींन स्तूति ऊचार ॥६९०॥

श्री एकलिंग स्तुति

छंद मोतीदांम

नमौ यकरिंग उमावर देव। नमौ नर नाग सुरं अनभेव॥
नमौ ब्रष वाहन सूल अधार। नमौ उमयावर श्री त्रिपुरार॥
नमौ वर वाप नरेसुर दैंन। नमौ चख आग खयंकर मैंन॥
नमौ जटधारन आप सुगंग। नमौ नगराज जमात अभंग॥
नमौ अहिभूषन धार महेस। नमौ पति भूत पिसाच दिगेस॥
नमौ त्रय-नैंनन मौचन मुख्ख। नमौ कयलास बिलासन सुख्ख॥
नमौ हर जीतन काल कराल। नमौ कृत अंबर गेंवर-खाल॥
नमौ सर-चाप अधारन हाथ। नमौ यक च्यार रु पंचय माथ॥
नमौ गल मूंडन धारन माल। नमौ कर आश्रित सूल कपाल॥

नमो निरलेप निरंजन नांम । नमो निरइह निरामय ठांम ।।
नमो रज तांमस सत्त सुभाय । नमो अजपाल विनास प्रभाय ।।
नमो त्रय-मूरत रूप सुरेस । नमो अवधूत दिगंवर-वेस ।।
नमो जिखराज सखा कृतवांन । नमो जिंहि संपत दैनं जिहांन ।।
नमो निरवांन नमो निरलेप । नमो निकलंक विभूति बिलेप ।।
नमो पति मंगर डंगर केत । नमो भखि भंगर मंगर नेत ।।
नमो अवधूत अभूत अछेह । नमो अहिसूत विभूत सदेह ।।
नमो कृत मुख हलाहल पांन । नमो सिर गंग खलाहल मांन ।।
नमो कृत आक धतूर अहार । नमो सिव श्री निरधार अधार ।।६९१।।

दुहा

रहे मकर सकरांत दिन, श्रीहर नयर मुकांम ।
किये दरस त्रिपुरार के, कंवर जवांन तमांम ।।६९२।।

कवित्त छप्पै

संकर दरसन करिय, भेंट हय गय सु द्रव्यकर ।
आये कंवर मुकांम, निसा सुख किय दंपत्तिवर ।।
वज्जि गजर घरियार, प्रात उठे सु जवांनह ।
कूंच हुकंम करि समुख, कींन गज वाज पलांनह ।।
पवसाक सज्जि दुलह सुतन, सज्जि सुभट पवसाक जव ।
वज्जे निसांन ऊछाह जुत, श्रंगारिय गज वाज सव ।।६९३।।

दई वधाई कुसलपत्र, दूतन उदियापुर ।
सुनत हरखि माहारांन भीम, दीय द्रव्य वथ्थभर ।।
अंतहपुर रांनीन सथ, सुनि हरख उपज्जिय ।
सुनत हरखि प्रज सरव, वसन भूषन तन सज्जिय ।।
गज वाज सुभट सिंगार सज्ज, दिवस हरख पूजी रलिय ।
उत आय पुत्र भेंटन पिता, पिता पुत्र भेंटन चलिय ।।६९४।।

छंद उद्धोर

अति प्रगटि आनंद अंग । चढि भीमरांन तुरंग ।।
सव सुभट साज चढि वाज । ग्रह अग्र मनु ग्रहराज ।।

कै देव अग्र सुरिंद । मनु अग्र तारक चंद ॥
सिव अग्र कै गन सौभ । अग विष्णु परिषद लौभ ॥
हय गय सुतर रथ पाय । चलि रांन अग्र सुभाय ॥
सिंगारि हाट बाजार । उर वनिक हर्ष अपार ॥
सामीप ग्रह हरसिद्धि । तहां उतरि कुंवर प्रसिद्धि ॥
जिंहि ठांह आय दिवांन । अस उतरि हर्ष अमांन ॥
करि निजर सन्मुख आय । लगि कुंवर निज पितु पाय ॥
उर लाय सुत मिल रांन । मनु म्रतक पाइय प्रांन ॥
कै रंक नव निधि पाय । मिलि जोग सिद्धि सिधराय ॥
कै पाय सु मनि फुनिंद । कै संत पाय गुविंद ॥
कै मंत्र सिद्धि दुजराज । कै अर्थ सिद्धि कविराज ॥
दाता कि जाचिक पाय । कै मोर घनहर आय ॥
व्रछ सुकत्त पाय कि नीर । इम प्रफुल्लि रोम सरीर ॥
सिर हथ्थ धरि उर लाय । आनंद ऊपजि सुभाय ॥
लगि पाय पित उमराव । मिलि भीम भुज भर भाव ॥
करि निजरि सब सिरकार । इत उत दु ओर उदार ॥
निध दया भेंटि दिवांन । सिर नम्मि कीय सनमांन ॥
हनमंत दास निहार । जय रांम भीम उचार ॥
सिर नम्मि कीय सतकार । हर भक्ति देखि उदार ॥
संन्यास मेंना आय । किय नमस्कार सुभाय ॥
लगि पाय उभय नरिंद । आसीस दीन कविंद ॥
विरदाय कविवर तांम । न्रप कुरव समप्पिय जांम ॥
दुजराज अमर जिवार । आसीरवाद उचार ॥
किय नमस्कार दिवांन । कर पलक करि सनमांन ॥
फिर चढिय रांन तुरंग । जुत कंवर सुभट उमंग ॥
प्रावेस नगर सु जांम । त्रिय कलस घर घर तांम ॥
दुव तरफ ओल उदार । प्रज सभि सलांम अपार ॥
इम आय राजदवार । श्रीरांन सहित कुमार ॥
हय उतरि डौढीय आय । सह वंधु पुत्र सुभाय ॥
गंठजोर वंधि सिर मौर । हरि पाय लगि सजौर ॥

कहि मात पित्त सुत भाय । लगि सासु ससुरह पाय ॥
गुरजनहिं नम्मिय सीस । चिरजीव पाय असीस ॥
इम बंधुदुरग विवाह । आये जवांन उछाह ॥
करि चित्रकूट प्रयाग । अरु कासि व्रज वड़भाग ॥
पितु कदंम आय अभंग । सिर नम्मि कंवर सुचंग ॥६९५॥

दुहा

घर घर प्रज आनंद भये, आये कंवर जवांन ।
पिता पुत्र चित हरख जुत, सुख विलसत महारांन ॥६९६॥

आय उदयपुर कंवर गुर, संग लिये रितुराज ।
खल जन सीत सु संकुचित, प्रफुलित सुजन समाज ॥६९७॥

अथ वसंत रितु वर्णन

प्रफुल्लि कंज बन मवरि अंब, तरु झुंव सुमनभर ।
अलिकुल जुथ्थ विलंब, हंस सकुटंव हरखि उर ॥
घूमत गज मद-मत्त, भुम्मि मनमथ्थ उदीपत ।
रमत फाग नरनारि जुथ्थ, सुनि कांम गथ्थ नित ॥
उपवन विहार भूपत करत, धूंमि गुलाल अबीर वर ।
संजोग भोग विलसत सदन, विरहि कदन कृत पंचसर ॥६९८॥

विकसि गुलाव कदंव, झरत मकरंद सुमन बन ।
करत पांन सकुटंव, भ्रमत मदअंध भ्रमरगन ॥
विलसत फाग नरनारि, सवद 'हो हो होरी' कहि ।
डफ म्रदंग अरु चंग, वजत घर घर उमंग महि ॥
सव रंक-राव निरसंक मन, गारन गवत समाज कौ ।
विनहीइ लाज मुचिमांन त्रिय, भयौ राज रितुराज कौ ॥६९९॥

छंद त्रौटक

रितुराज न्रपं जगराज कियं । मनुं कोकिल कूक सु आंन दियं ॥
मद सीत सुगंध चले पवनं । मनुं दूत चले दस चौ भवनं ॥

सर कंजन पुंज प्रकासनयं । मनु सीत पराजय हासनयं ॥
जुकि मौरन भौंर सु अंव तरं । मनु चौंर नरेसुर सीस ढुरं ॥
तरु तार उतंग सपत्र सुभं । मनु छत्र वसंत विचत्र लुभं ॥
वन फुल्लि पलास सुरंगनयं । मनु दाहक अंग विजोगनयं ॥
लपटी तरु फुल्लि अनेक लता । मनु प्रीतम नार मिली सुहिता ॥
जल वूंद सु कंज दलं सुभयं । उपहार मनौ रितराजनयं ॥
तरु फुल्लि सबैं वहुरंग जुतं । पहिराय मनौ परिवार रतं ॥
सिल सुद्धदराज सुभंत गिरं । मनु आसन सिंघ वसंत धरं ॥
तरु ताल कजं दल छत्र दियं । मनु नूंतन मौर सु चौंर कियं ॥
विथुरे कन दारिम के धरयं । मनु मांनिक लाल निछावरयं ॥
जलजातं सुरंग कली उलसं । मनु वंदि वनं न्रपयं कलसं ॥
रितुराज नरेस हुलास मनं । मकरध्वज थप्पि प्रधांन तिनं ॥
कल हंस पयाद तुरं अयनं । रथ कुंज सिगारि गिरं गयनं ॥
वन औपि सरोस उतंग वपं । मनु सोभि निसांन फव्रज्ज न्रपं ॥
सुर कोकिल मोर मुखं उचरें । मनु अग्रज सोल अवाज करें ॥
रितु नायक संजि अगंज दलं । त्रिय मांन वियौग विभंजि कलं ॥
करि सद भ्रमंत तरं भ्रमरं । मनु देत नरेसुर आंन धरं ॥
रितुराज सु खिल्हन फाग तवं । किय आरंभ भीम दिवांन जवं ॥
घुरि केसर रंग पतंग घनं । भरि हौद सुरंग प्रमौद मनं ॥
वहु रंग गुलाल अबीर ढिगं । हिमरूप गनं पिचकार मगं ॥
पुर अंतह फाग रमे न्रपतं । सकुटंब जवांन कुमार जुतं ॥
किय आयस रांनिय फाग कजं । तव सोरह अंग सिंगार सझं ॥७००॥

दुहा

सील रूप पतिव्रत जुकत, रांनीय सज्झि सिंगार ।
पुत्र मात वरनन करत, लज्जित सुचित विचार ॥७०१॥

तदपि अवर तिन सथ्थ वहु, सझि सखि नारि सुढंग ।
किंचित वरनत ताहि कवि, भूषन वसन रु अंग ॥७०२॥

जे सखि दिखत न्रप निजर, कै दिखत रवि सौम ।
रति रंभा सचि उरवसिय, आय कि अच्छरि भौम ॥७०३॥

छंद वृद्धनाराज

लघु गुरु क्रमं सु सोल अछिरं विवेकयं ।
जगं रगं जगं रगं जगं पयं पयं गुरेकयं ।।
नगेसयं खगेस अग्र जंपि सूध जानयं ।
नराज छंद यौं कविंद पिंगलं प्रमानयं ।।
सखी समाज फाग काज यौं सिंगार सज्जयं ।
कहंत कव्विराज तास औपमा सकज्जयं ।।
अन्हाय वेंनि कुंद फूल ग्रंथ पीठ भागिनीं ।
मनौ पयौध न्हाय कैं कढी नवींन नागिनीं ।।
खच्यौ अतूल हेम हीर सीसफूल दीसयं ।
उग्यौ मनौ कुहू निसी अगू निहंग सीसयं ।।
विसाल चंद्रभाल पें सुरंग विंदु भासनं ।
मनौ कि वैठि भूमिनंद थापि चंद आसनं ।।
तिलक आड त्रै लिलाट हेम सौभ धारहीं ।
मनौ मयंक राहु कंक जीव त्रै निवार हीं ।।
सिंगार अंग अंग रंग औप भ्रू हु स्यांम की ।
मनौ महेस पें गढी चढी कमांन कांम की ।।
पढंत वेंन नैंन कव्वि औपमा प्रमांन कै ।
मनौ रंगे हलाहलं दुवांन पंच वांन कै ।।
अखें कविंद छंद में दुती उपंम अंख पै ।
मनौ वस्यौ लुभाय अंग भ्रंग कंज पंख पै ।।
पतंग अंग हींन के कुरंग मींन खंजनं ।
जपंत कव्वि वंक नैंन कंज मांन गंजनं ।।
कटाछ दछ्छ वांम नेंन वांम दछ्छ यौं वहें ।
मनौ दुसार कांम वांन हौत वारना रहे ।।
सुभें अनूप पीय चित्त भौंन दीप नासिका ।
अखंड जोत श्रौत दुख्ख वात तें अत्रासिका ।।
कहत कव्वि राग के कटौर श्रौंन अछ्छयं ।
मनौ कटाछ नैंन वांन के सुभंत लछ्छयं ।।

कहंत की औठ की अमंद औप आभयं ।
मनौ प्रवाल लाल कै सुभंत चीर डाभयं ॥
सुभंत दंत पंत कुंद हीर लौं प्रकासयं ।
मनौ वत्तीस लच्छिनं कि अंग वांन भासयं ॥
सु जीह् चंद आननं अभूत अंग राजयं ।
मनौ पढंत नौ रसं गिरा कि देह् साजयं ॥
उचार बोल माधुरी कि मंत्र मोहिनी कलं ।
मनौ वसंत अंव पैं करी कुहूक कोकिलं ॥
कपौत कंठ पोत वंधि यौं उपंम लौभई ।
मनौ महेस के गलं हलाहलं कि सौभई ॥
समेत पांनि यौं सुभैं भुजा स्वरूप सीव की ।
मनौ सनाल पंकजं कि प्रेम पासि पीव की ॥
छतीन पैं उतंग पींन यौं कुचं प्रवीतनं ।
मनौ सज्यौ कवच्च सिभ जुध्ध कांम जीतनं ॥
उरौज कूल यौं अतूल मुत्तिमाल घेर की ।
मनौ नछित्र पंति दै प्रदछ्छिना सुमेर की ॥
समुद्र उद्र भौंर नाभि त्रैवली सदीव की ।
मनौ कि वंभ पांनि तैं अचंभ रूप सीव की ॥
सुढंग स्यांम अंवरं भजंत अंग भांमिनी ।
मनौ कि स्यांम वद्दरं लई लपेट दांमिनी ॥
सु छींन लंक रंक लछ्छि केहरी प्रमांनयं ।
मनौ कि मूढ मित्र कौ चरित्र नेह जांनयं ॥
रतंन छुद्र घंटिका सुघाट द्वै नितंवयं ।
मनौ कि सिंघ रासि आय नौ ग्रहं विलंवयं ॥
भ्रमी खराद कांम की सुचंग जंघ पिंडयं ।
मनौ उलट्टि रंभ खंभ सुद्ध फील सुंडयं ॥
सुकंज पाय पै दु पंच सौभवांन अंगुरी ।
मनौ दुधा अनंग बांन मांन चंपकि करी ॥
नखं सुढार आरतं सुसेत तानि सज्झयं ।
मनौ मयंक भांन हीर तार तार रज्जयं ॥

सुघेर घघ्घरं सूरंग लंक जंघ आव्रतं।
मनौ अनंग गूडरं तने तनाव सोभितं॥
सु वाल की कहंत कव्वि मंद चाल सज्जयं।
मनौ मराल बाल के विहाल होत गज्जयं॥
झमंक होत हंसक घमंक पाय जैहरं।
मनौ मनोज पख्खरं वजंत जुद्ध पैहरं॥
समग्र अंग सोभितं सिंगार सजि सौरयं।
मनौ अनंग की पुरी तजंत रंभ जौरयं॥
दिवांन भीम सानिधं चमूं किधौं अनंग की।
कही कविंद तुछ्छ तुछ्छ ता उपंम अंग की॥
करी मनौ ब्रंह्म हथ्थका कविंद गावहीं।
हजार जीह होय तौ गिरान पार पावहीं॥७०४॥*

दुहा

इत महारांन जवांन दुव, उतहिं हजारन नार।
ब्रजमंडल ब्रजराजनूं, गोपी सौर हजार॥७०५॥

छंद लघुनराज

दिवांन भाग खिल्लयं। गुलाल मूंठ चल्लयं॥
ललांम[1] फेलि डंबरं। सुरंग भूमि अंबरं॥
अबीर धूंम उठ्ठयं। मनौ सरद घट्टयं॥
गुलाल मुख्ख मंजनं। सु दीन्ह नैंन अंजनं॥
सुपांन हेम गंजरं। पयांन घल्लि झंझरं॥
गवंत गारि चौजयं। फिरी अनंग फौजयं॥
सुकासमीर धारयं। वहंत पिच्चकारयं॥
सुगंध फेलि चोवरं। चुवंत रंगयं धरं॥
कुसुंभ रंगयं ललं। सुवज्जि झाट पोटलं॥

---

* यण छंद में अग्यारे जयावां मेलो वरण जधा छै; सिख सूं लगाय नख तांई वर्णन छै जीनूं।

१. सुरज्जि

पतंग रंग डौरचं । वहंत च्यार औरचं ।।
अछंन धार अंभयं । प्रसन्न[1] भीम सिंभयं ।।
चुवंत पांच रंगयं । सुरेस चाप अंगयं ।।
भई सु भुम्मि लालयं । वहंत रंग खालयं ।।
त्रियान गंठ जोरियं । गवंत गारि होरियं ।।
प्रसंन चित्त कीनयं । दिवांन गोठ दीनयं ।।
वितज्जि मज्झि ठाहरं । सु भीम आय वाहरं ।।
वुलाय कैं सुभट्टयं । सु लाग फाग थट्टयं ।।
गुलाल धूंम धांमयं । रमंत वीति जांमयं ।।
गवंत गारि पातुरं । दिखाय भाय चातुरं ।।
करैं कटाच्छ सैं नयं । निसंक बांन नैंनयं ।।
सु ढोलकं अदंगयं । वजंत डफ चंगयं ।।
वजै तंवूर तारयं । कुमायचं सतारयं ।।
नरेस खिल्लि फागयं । प्रवेस कींन वागयं ।।
अनाय उस्नयं जलं । लियै सुचैल ऊजलं ।।
सुनंत राग रौंसयं । अनंद कढ्ढि द्यौमयं ।।
त्रतीय जांम भोजनं । किये वुलाय सोजनं ।।
सिंगार सज्जि अंगयं । अरोहि कै तुरंगयं ।।
सु आय ग्रेह भूपयं । करै सुखं अनूपयं ।।
नरेस द्यौस रातयं । सुखं विलासि गातयं ।।
इतैं सु आय ग्रीखमं । दिनेस व्रख आश्रमं ।।७०६।।

अथ ग्रीष्म रितु वर्णन

दुहा

सुक्कि नीर तरफत सफर, अरु वरखाश्रित भांन ।
ग्रीषम जल थल पवन नभ, वरतत अगिन समांन ।।७०७।।

कवित्त छप्पै

रितु ग्रीषम आगमन, दिघ्घ दिन रयनि तुच्छ धर ।
मारूत वहत उडंड, तपत परचंड चंड कर ।।

---
१. मुदित

सुक्कि ताल जल तुच्छ, मच्छ कच्छह तरफि तंन ।
गेंवर केहर अहि मयूर, आश्रित तरु इक्कंन ॥
निज निज सुभाव तजि तत्व चव, बरतत पावक मय विसंम ।
मनु जेठ मास भूपति प्रवल, सवल निवल कीय इक्क संम॥७०८॥

छंद साटक

आकासं मग धूंध चक्रमरुतं पत्राव्रतं रेनयं,
नीरं सुक्कि सरे तरप्फि सफरं दावाग्य दग्धं बनं ।
संतापं रवि अंस चंड सतपं भोगी वियोगी जनं,
पाटी रंक समीर चर्चित नयं पुस्फं अगंधरयं ॥७०९॥

छंद वैताल

रवि तपत वैसम अनलझल सम दुसह ग्रीष्म आगमं ।
चलि मरुत प्रवल दिसांन आव्रत पत्र त्रन रज संभ्रमं ॥
जल छींन तलफत मींन व्याकुल हींन मद गज राजयं ।
मन मुदित वारिज चक्रवाक न थकित पंथि समाजयं ॥
अति त्रसित म्रग भ्रमि वननि दस दिसि नीर विनु मन व्याकुलं ।
वन दाह विटपि अथाह दव परिघाह बन जिय आकुलं ॥
जल सूखि सरवर नगन गिरवर पत्र झरतर झंखरं ।
उडि खेह पत्रावर्त किय रित मनहुं रूप दिगंवरं ॥
खसखांन झौंफ हमांम विलसति हिंदु लाट नरेसयं ।
घनसार चंदन अतर नीर गुलाव सेवन वेसयं ॥
खुलि नहर जल भरि हौद सीतल कासमीर विलेपनं ।
चंवेलि वेल रु जाति जलरुह कुंद कुसम सु वेसनं ॥
अनुराग सारंग राग श्रवनन पांन अम्रत कारकं ।
अंगूर आसव मुग्ध तिय कुच चंद सेवन धारकं ॥
संजोगि विभव विलास ग्रीषम विरहि जन अति दुभ्भरं ।
क्रपि कर्म आगंम करत पावसं सुद्ध लांगल जुपि धरं ॥
म्रग सिंघ चित्र गयंद सारंग व्याल तरु अंकाश्रितं ।
मनु कीन्ह जगत पवन निसम रित घांम तपि दुस्सह व्रतं ॥७१०॥

दुहा

थिर चिर जीवन पर विसम, बरतत ग्रीषम धूप।
भीम समिलि सुत सुभट जुत, जल विहार कृत भूप ॥७११॥

वारता दवावैत

समस्त जिमी के दरमियांन ग्रीषम व्याप्त भई। च्यार ही तत्वूं नैं तेज तत्व की प्रकति लई। नदी तलावु का नीर सूक कै कर्दम भया। और की क्या चली सूर्य देवहू व्रख कै आसरैं गया। जेठ की दुपहरी माह की अधरात का रूप पाया। घर वाहर कौंन जाय व्रछ कों न छंडै छाया। सूंब अस्तू के मुख दुरभख जुध में सूकैं जैसै कचै जल निवासू नैं नीर पहरे। सूर दातारूं के मुख जैसैं सचै निवांनू में जल ठहरे। अंजुली काजल जैसै रात भई। द्रोपदी का चीर की पदवी दिवस नैं लई। असैं ग्रीषम के हंगांम में माहारांन भीम जल विहार कौं चित कीया। वागीचूं के दरमीयांन हौद भरनै का हुकंम दीया। वागीचे तो अनेक तिसमैं सहेलूं का वाग नोलखा सरवत बिलास सिरनायक कहावै। जिसकी सौभा देखैं तैं इंद्र का नंदन वन पै माल जावै। और राजमिंदरूं तै पिछम पीछौला दरीयाव। नीर का अथाह खीरोद के साभाव ॥७१२॥

छंद लघुनराज

अथाह नीर आगरं। मनौ कि खीर सागरं॥
विहारि मच्छ कच्छयं। अनेक जात अच्छयं॥
वतक्क हस सारसं। जुगाव हंज पारसं॥
म्रुगाव चक्रवाकयं। सु खंजरीट भाकयं॥
विकास जूथ कंजनं। करंत भौंर गुंजनं॥
तिरंत नाव सुंदरं। विमांन कै पुरंदरं॥
सुपाज व्रंह्म नित्ययं। करंत नित्य कृत्ययं॥
अनेक नारि थाटयं। भरंत नीर घाटयं॥
सिंगारि सोल सज्झयं। निहारि रंभ लज्जयं॥
सुवेनि पीठ भागिनी। मनौ विलंवि नागिनी॥
सुगूंथि फूल सीसयं। भगू निसीथ दीसयं॥

कर्च कलिंदि सारथी । भरी सिंदूर भारथी ॥
जु मुत्तिमाल गंगयं । मनौं त्रिवेनि मंगयं ॥
त्रियान सीस दिख्खयं । प्रियाग अंतरिख्खयं ॥
अन्हात नैन साजयं । अनंग तिथ्थ राजयं ॥
सुभैं मुखारव्यंदयं । मनौं सरद्द चंदयं ॥
सुरंग विंद कुंकमं । कि भौम अध्ध चंदमं ॥
सुवंक स्यांम भ्रौहनं । धनंख कांम सौहनं ॥
चखं सोभ अंजनं । कि मीन कंज खंजनं ॥
सुभंत नाक कीरयं । कि दीप लौय धीरयं ॥
तटंक श्रौंन यौं कथं । दु भांन चंद पै रथं ॥
प्रवाल छंद रद्दनं । कली सुदंत कुंदनं ॥
सुग्रीव पीत यौं दिखं । महेस कंठ ज्यौं विखं ॥
उरोज कुंभ गज्जयं । वि चक्रवाक रज्जयं ॥
रुलंत हार दौवरं । कि गंग मेर ओवरं ॥
भुजं सनाल पंकजं । कि पास प्रीतमं सजं ॥
पिपील राजि रूंमयं । कि कांमदीप धूंमयं ॥
सु सोभ उद्र सुंदरं । मनौं कि पत्र-पीपरं ॥
गंभीर नाभि सोभयं । कि कांमकूप लोभयं ॥
त्रिरेख उद्र वांम की । कि रूप सीव कांम की ॥
सुपारसं सु घट्टयं । कनंक कांम पट्टयं ॥
सुलंक मुठ्ठि मापयं । कि मध्य मैंन चापयं ॥
अहीन श्रौंनि पिठ्ठयं । लुभंत कांम दिठ्ठयं ॥
दु जंघ हेम थंभयं । उलट्टि रंभ खंभयं ॥
अदू सुलफ्फ पिंडरी । खराद मैंन उत्तरी ॥
नरंग अेंडि रंगयं । सु पायकं जढंगयं ॥
नखं रतं सुढारकं । तरुंन हीर तारकं ॥
सुमंद चाल नारयं । गजं मराल हारयं ॥
रचंत भोम रूपरं । घमंकि पाय नूपुरं ॥
अनेक रंग अंवरं । अछादि अंग डंवरं ॥
सुगंध फेलि अंगयं । भ्रमंत सीस भ्रंगयं ॥

कलस्स हेम-तारयं । स नीर सीस धारयं ।।
निहारि वांम दच्छिनं । चलैं अपंग इच्छनं ।।
मनौं सरं अनंगयं । दुसार अंग अंगयं ।।
निरख्खि मुच्छि गातयं । छयल्ल भूमि पातयं ।।
सुनारि कै मछंभयं । भरंत नीर कुंभयं ।।
विहार देव आगरं । मनौं कि मांनसागरं ।।
अनेक सिद्धराजयं । धरंत ध्यांन पाजयं ।।
कदंब जंवु अंवयं । अनेक अच्छ लुंवयं ।।
दिसान चौक रंजयं । वहंत नीर पूंजयं ।।
जनंम सोभ गावही । न पार कव्वि पावही ।।७१३।।

कवित्त छप्पै

ता सर विच्च जगतेस, रांन महलायंत रच्चिय ।
जगनिवास इक जांन, दुतिय जगमिंदर सुच्चिय ।।
मंडप ऊंच गवख्ख, चत्रसालीय सुभ चौकह ।
अंबखास चांदिनीय, औप आरास अनोखह ।।
फौंहार नहर चादर हवद, महल बाग अद्भुत सबीय ।
मनु मांनसरोवर वीच बिध, गिर द्वै कयलास प्रकास कीय ।।७१४।।

ठांम ठांम भरि नहर हौद, ऊजल सीतल जल ।
बारिज सुमन विकास, भ्रमर भ्रमि फेरत परिमल ।।
तुंबजाल हिमरूप, चरम हय गय समीर भरि ।
वतक हंस हिमरूप, मछ कछ नाक कठ्ठ धरि ।।
माहारांन भीम सुत सुभट जुत, जल विहार ग्रीखम करत ।
सुरनाथ मनहुं सुर साथ जुत, मांनसरोवर आसरित ।।७१५।।

मरदन अतर गुलाब, पांन आसव अंगूरन ।
कासमीर चित्रित विचित्र, निज अंग हजूरन ।।
मुत्तिमाल उर सोभ, पीत केसर रंगि अंबर ।
सारंग राग समोह, सुनत आनंद श्रवनवर ।।

सीतल सुमंद सौगंध जुत, पवन करत त्रयविध गवंन।
महारांन भीम मघवांन जिम, रितु ग्रीखम विलसत भवंन ॥७१६॥

वाहर हवद पधारि, करिय अस्नांन पाक जल।
रचि सुरंग पवसाक, गोव आहारि महावल ॥
नौका होय सवार, तुरंग आरोहि सहल करि।
फिर प्रवेस कत महल, विलसि निस पतिव्रत तियबर ॥
उठि प्रात करी योगो रवि दरसि, करि सनांन कीय पाक तन।
चित्तौरनाथ निज माथ नमि, वांननाथ अरचीय चरन ॥७१७॥

सोरठा

नमो वांन श्रीनाथ, भीम अराधत भूपती।
सदा सहाय समाथ, धरा जमावन गंगधर ॥७१८॥

छंद वृद्धनाराज

श्री वांणनाथ स्तुति

धरै मतंग खाल अंग गंग सीस धारयं।
निहंग संग ओप नूप ही पनंग हारयं॥
चलंत भूत चातुरंग संग जैस माथयं।
नमो नमो नमौ नमो नमांमि वांननाथयं ॥७१९॥

विसाल चंद्र भाल कंठ रूंडमाल रज्जयं।
वनैं अनाद जोग साद सिंगिनाद बज्जयं॥
मुनी सुरेस कै रिखेस पै नमंत माथयं।
नमो नमौ नमो नमौ नमांमि वांननाथयं ॥७२०॥

सकांम अंग वांम भांम नाग हेम नंदिनी।
सिरं जु गंग धारकं सु नारकं निकंदिनी॥
अनंग अंग छार कीन्ह दीन्ह संत आथयं।
नमो नमो नमौ नमो नमांमि वांननाथयं ॥७२१॥

चढंत नंद केस ते पढंत मंत्र तारकं।
सु देवते हरीसमं जु अाधमं उधारकं।।
महाप्रसंन ह्वै करं धरंत भीम माथयं।
नमौ नमौ नमौ नमौ नमांमि बांननाथयं।।७२२।।

दुहा

यौं सुख बिलसित दिवस प्रति, भीमसिंघ महारांन।
अागम रितु बरखा भयौ, नभ बद्दल घहरांन।।७२३।।

अथ वर्षा रितु वर्णन

कवित्त छप्पै

बंधि घटा अाषाढ, गगन घोरत जलधर गन।
बरखि नीर भूम्मिय, सुबास सीतल अागमध्वन।।
कृषि उधिम कुंपरित ब्रछ, बक व्यौम विहारत।
सुनि सुनि गाज अवाज, मौर मल्लार उचारत।।
चमकंत बीज दस दिस विषम, बिरहिनि निस अाकंप तनु।
तप कियौ धरनि ग्रीखम सुरित, इंद्र मिलन फल पाय मनु।।७२४।।

दुहा

बरष रात तजि मत्त चित, करक अरोहित भांन।
सांवन बूढ़न करत रंग, का पूछिबो जवांन।।७२५।।

छंद त्रौटक

रितु पावस लुम्मि सु घुम्मि घनं। मनु त्रांन कसें नभ स्यांम तनं।।
जल वुठ्ठि अखंडित धार धरं। मनु नैंन वियोगिन नीर झरं।।
धर खंजन हंस अलोप भयं। मनु जात सु बुध्धि कुबुध्धनयं।।
सुकि पत्र जवास अरक्क तरं। कृतहा न्रप मांनहु सेव नरं।।
दिसि च्यारहु व्योम घनं गरजं। बिरही मनु जैत निसांन बजं।।
गहि कांम कमांन कसीस दियं। बिरही जन खंड विखंड कियं।।

भरि नीर लघू सर जे उभलं । मनु तुच्छ बुधं नर वाकचलं ।।
वुग पावस वेठि चुगावतती । इक आसन थप्प मुनिंद जती ।।
निस भद्दव झिगन जग्य भलं । मनु तोर चमंकत कांम दलं ।।
ससि सूरज छाय घना घ्रनयं । मनु आव्रत दंभ सुधं जनयं ।।
लपटी लतिका तरु मंजरयं । परि रंभ मनौ वरनी वरयं ।।
सरिता मिल वारिध मोद जुतं । धरनी मघवांन मिली सुहितं ।।
थकि पंथिय पंथ प्रचारनयं । जल मग्ग अमग्ग विहारनयं ।।
कुहकंत मयूर सुमत्त धरं । मनु कांमन कीव अवाज करं ।।
मनभावन सावन आवनयं । विरही दुख सुख संजोयनयं ।।
वरखा रित भीम सजोखनयं । विलसंत हरम्प झरोखनयं ।।
मद पांन रतं अति मोदतनं । भ्रत हाजर जे अनुरूप मनं ।।
अरु सांवन भद्दव तीजनयं । हय रोहि विहारत भीजनयं ।।
जहं लग्गत इंद्र सु नीर भरं । पवसाक सुरंगिय भींजि वरं ।।
घन संमुख वाज विहार रतं । दिन दुल्लह भीम उछाह चितं ।।
दत वाद तुरेस तुरेस परं । जर द्रव्य इतै उत नीर झर ।।
वह देत जलं मुख स्यांम रुखं । यह द्रव्य स्रवै प्रफुलंत मुखं ।।
जगपाल किय विध या सहलं । फिर कीन्ह प्रवेस न्रपं महलं ।।
करि अंग सिंगारि मुदं चितनं । निस नारि विलासि पतिव्रतनं ।।
उठि ब्रंह्म महूरत गौ दरसं । नित कृत्य किये सिव पै परसं ।।
रितु पावस यौं विहरंत न्रपं । फिर आय सरद्द सुहाय वपं ।।७२६।।

अथ सरद रितु वर्णन

दुहा

वरखा रितु वीतें सरद, आई अमल अकास ।
कलजुग वीतें अवनि ज्यौं, सतजुग करत प्रकास ।।७२७।।

धर करदम सरिता सुजल, नभ घन जूथ समाथ ।
नीर गुडल छिनदा तिमिर, समिटे अंकहु साथ ।।७२८।।[1]

1. सहोक्ति अलंकार

छंद साटक

कासारं वनकंजपुंजप्रफुलं सौगंध विस्तारयं।
भ्रंगं जूथ सुभ्रामनेनसिरसं आमोद मोदायनं ।।
व्योमं इंदु बिभाति राति सकलं अच्छ्छं पयं पोषितं।
कामोदीपनसारदं सुभरित भोग्यं जनं भोगिनं ।।७२९।।

कवित्त छप्पै

उदित अमल आकास, चंद निसि सकल सुभावत।
फेलि रात चंदिनीय, हस हंसनीय न पावत ।।
सरवर सरिता नीर, सुभत ससि तेज खीर संम।
निसा समय तट आय, पियत मजार दुग्ध भ्रंम ।।
ऊदीय कांम अभिरांम छिव सरस मूंह वारिज खिलत।
दंपति सनेहि भोगी जननि, सरद रयनि भाग न मिलत ।।७३०।।

छंद पद्धरी

आसोज सरद खंजन विहार । रितु दूत मनहुं धावत सुढार ।।
सरवर बिहार कल हंस माल । सज कपिन रहट्ट जूपित सचाल ।।
आसोज मास पावंन विसिख्ख । घर पितुर आगमन प्रथंम पख्ख ।।
जल पिंडदांन तिन देत पुत्र । हिंदून कर्म यह जत्र तत्र ।।
फिर दुतिय पख्ख नवरात्रि आय । महमाय अर्चि दुर्गा वचाय ।।
थापना थप्प धरि खड्ग जांम । प्रतिपदा दिवस पूजन सकांम ।।
दिन दोज दरसि अंबाय माय । महारांन भीम सुत जुकत आय ।।
दंडोत कीन्ह किय नमसकार । कर जोरि विनय किय छत्रधार ।।७३१।।

छंद लघुनराज

श्री अंबाव स्तुति

नमांमि देवि अंबिका । परं भुजा प्रलंबिका ।।
सुरत्त बीज पातिनी । नमांमि सुंभ घातिनी ।।

महिष्प धुंम्र जारिनी । नमांमि दास तारिनी ॥
करं त्रिसूल डाकयं । ध्रतं सरं पिनाकयं ॥
अनादि आदि काययां । नमांमि ब्रंह्म माययां ॥
स्वहा सवित्रि संभवा । श्रिया पुलोम यंभवा ॥
तुहीं त्रिदेव संकरी । त्रिगुन्न तूं सुभंकरी ॥
तुहीं जगत्त कारिनी । अनेक रूप धारिनी ॥
तुहीं पुरख्ख नारिका । घटं घटं विहारिका ॥
अवुद्ध वुद्ध तूं उमा । सु रिद्ध निद्ध तूं क्षमा ॥
पताल भू अकासयं । त्रिथांन तूं निवासयं ॥
विचित्र चित्र अत्रयं । सु जंत्र मंत्र तंत्रयं ॥
अलेह प्रेह गेह तूं । उमा अदेह देह तूं ॥
अमंद फूल गंध तूं । समंध छंद बंध तूं ॥
वजीर मीर धीर तूं । समीर आग नीर तूं ॥
सिवं तनं विलासिनी । उदेपुरं निवासिनी ॥
जनं अनंद दायनी । नमौ नमौ नरायनी ॥७३२॥

दुहा

करि सतुति परदछ्छ फिरि, पंच महिष अज दोय ।
वल चढाय महमाय कौं, विजय करत जुध सोय ॥७३३॥

त्रतीय दिन हरसिद्धि पय, आवत भीम दिवांन ।
क्रत प्रनांम निज सीस नमि, अस्तुति जंपि सु वांन ॥७३४॥

छंद मोतीदांम

श्री हरसिद्धिदेवी स्तुति

नमो हरसिद्धि निधार अधार । नमों ससि भाल ससी बयधार ॥
नमो सकती सिवदेह अधंग । नमो म्रगराज अरोह अभंग ॥
नमो रविरूप प्रकासक भोम । नमो जग अम्रत आवक सोम ॥
नमो विधरूप जगं करतार । नमो हरि पालक रूप सुधार ॥

नमौ सिवरूप सिंघार त्रिलोक । नमौ लछिरूप निजं जन श्रोक ।।
नमौ निरमोह समोह सकत्त । नमौ अवगत सुगत जगत्त ।।
नमौ रज तांमस सत्त सुदेह । नमौ लघु थूल अमूल अछेह ।।
नमौ वसकारक सात्रव मित्र । नमौ महमाय अमित्र चरित्र ।।
नमौ मधु कैटभ भंजन जंग । नमौ हत माहिष सैंन अभंग ।।
नमौ चख ध्रुम्र विनासन चंड । नमौ रत्त वीरज मुंड विहंड ।।
नमौ खल सुंभ निसुंभ प्रहार । नमौ खग सूल सरं धनुधार ।।
नमौ अनमंगल मंगलकार । नमौ उर धारन मूंडन हार ।।
नमौ हिम पव्वय पुत्रीय रूप । नमौ सिव मोहन अंग अनूप ।।
तुंही सुरराज तुंही दुजराज । तुंही गरुरध्वज रूप सकाज ।।
तुंही अवनी जल तेज अकास । तुंही मरुतं जगजीवन सास ।।
तुंही पटरागिनी ब्रंह्म कहाय । तुंही घट घट्ट निवास सुभाय ।।
तुंही रितरूप तुंही तन मैंन । तुंही हरसिद्धिय सिद्धिय दैंन ।।
तुंही कहि नंत सुमाय रु लच्छिछ । तुंहो मकरध्वज बीज प्रतच्छिछ ।।
तुंही हरसिद्धि नमौ पदपूठ । मनुं दस रंग सु रिद्धि अखूठ ।।
सत इक पाठ करें नित कौय । भवं यह ता ग्रह दुख्खन हौय ।।
करी यह अस्तुति भीम दिवांन । अजं दुव माहिष पंच चढांन ।।
दियं वरदांन उमा हरिसिद्धि । सुतं त्रीय आयु अखूटत रिद्धि ।।७३५।।

अथ हेमंत रितु वर्णन

दुहा

लखि मंगन चित सूंम ज्यौं, यौं दिन सकुचन लाग ।
छेह न आवत रयनि कौ, मनुं उत्तर दिसि माग ।।७३६।।

ससि वाहन गय हंस गति, म्रग गति हय दिन पीव ।
भई प्रवच्छिछत भर्तिका, चकई रहत सदीव ।।७३७।।

कवित्त छप्पै

भांन किरन तप मंद, मंद गति पाय न साजत ।
निस निसकर दुति बढ़त, चंद मुख जोत बिराजत ।।

परीय दिवस कटि छींन, उरज छिनदां अधिकाईय।
खंजरीट चख चपल, कंज वन कुमति नसाईय॥
आमोद पुहप सौगंध मुख, मिटीय घांम सैसव भरंम।
आगंमन जगत हेमंत रितु, जुवनागंम नव नारि जिम॥७३८॥

महल विलसि माहारांन भीम, आरास प्रकासन।
मृग-मद अगर सुगंध, धूप धूपित सुख रासन॥
वनि परदेसि कलात, फरस पसमींन दुलीचंन।
आसव दाख लवंग, गजक वाराह कवावंन॥
तन अमर अगर लेपन अतर, सेभ दुसालन आसरित।
मध्या ऊरोज परसंन उरह, रितु हिमंत बिलसत न्रपत॥७३९॥

छंद त्रौटक

अथ मुहूर्त शिकार वर्णन

रितु आय हिमंत सुहावनयं। माहारांन कीयं मृगया मनयं॥
सझि नील निचौल तनं सरसं। रविजा वल देव मनु परसं॥
तुर खंचीय अंग दुतं गनयं। सपतास कि राज विहंनयं॥
चढि भीम दिवांन सुपत्र मढे। हय राजकंवार जवांन चढे॥
चढि वाज जवांन रूघपतयं। चढिहै सिवदांन सदा जुतयं॥
चढि सूरजमल्ल अनोपतयं। हय रोह हमीर सुरावतयं॥
चढि सूरत इंद्र सहोदरयं। अभमाल तुरंग चढे भरयं॥
चढि दुल्लह रावत पीठ असं। मोहवत्त गुलाव चढे सरसं॥
चढि नोल सहार अजंन तुरं। चढि डूंगर और विसंन भरं॥
इंकलिग चढे हय भीम सुतं। चढि चेंन जवांन मुहन्न जुतं॥
सुतदेव चढे उभय हयनं। चढि जोध तुरंग सवै सयनं॥
चढि मोतीयरांम अजंन सुतं। सव घात सिकार प्रवींन चितं॥
दिन ऊगत मांन पयांन कियं। सव संज सिकारन सथ्थ लियं॥
रख खेद फदेत कुरंग नयं। रथ चित्रक नेंन कुलफरयं॥
लीय स्वांन विलायत जे असलं। भ्रत अेक करं दुव डोर झलं॥
मुख पूंछ नखं अति तिख्खनयं। चख तारक तेज विसख्खनयं॥

रसना अ्रदुकन्न सुकेस जुतं । लुचबांन जतं सुख हो करतं ।।
पय बेग समीर अथाह कयं । सुस अ्रेन बराह न ग्राहकयं ।।
पर वाहरू गोस सिय्याहनयं । नहरी बहरी सुकुही भनयं ।।
जुररे तुरमति रु वासकयं । सिकरेजुत तेज हुलासकयं ।।
दसतांन करं खग धारनयं । चलि जुथ्थ सुमीर सिकारनयं ।।
चलि सथ्थ सिकारीय जुथ्थनरं । धरि बग्गुर टट्टीय फंद करं ।।
सभि जुथ्थ पयाद वंदुकनयं । पसु घात सुहाथ अ्रचूकनयं ।।
असवारन आयस भीम दियं । बन पव्वय आव्रत सैंन कियं ।।
निज चित ऋपाभट रख्खि तहां । महारांन विराजीय मूल जहां ।।
माहाराजकंवार जवांन जवैं । पित आयस संज्जीय मूल तवै ।।
चलि हक्क त्रंवकन डाक बज्जं । ऊरजंत धरक्क गिरं गरजं ।।
सुख सैंन क्रतं बिच ठाहरयं । उठि हथ्थल चट्टत नाहरयं ।।
मुख होफर जगीय अग्ग चखं । सु मनौं अवतार न्रसिंग दिखं ।।
उठि रोम सटा सिर पूंछलियं । मृगराज सिरं मनु चौंर कियं ।।
चढि हथ्थल कीन्ह अग्राजतनं । मनु गज्जि कराल अकाल घनं ।।
गज भंज महा बिपरीत रुखं । दिसमूलन हल्लि न्रपं समुखं ।।
वघ आवत भींम खंलखयं । धरि छतीय हथ्थ वंदूक लयं ।।
उठि रंजक भ्रौंहन वीच लगं । परिसिंघ धरं ग्रहखाय नगं ।।
निजरं भ्रत कीन्ह प्रफुल्लि जियं । सब सैंन सिपाह सराहकियं ।।७४०।।

छंद पद्धरी

वजि हक्क डार उठिय बराह । छुटि तुपक मूल धारन अथाह ।।
परि कितक कितक लगि भुम्मि मग्ग । तिन पीठ लीन्ह हय रौह बग्ग ।।
वजि घमक सेल तन फुट्टि केक । करि तेग वार विहरत अनेक ।।
अरु कितक स्वांन जुथ्थन सिघारि । यह भंत मारि बाराह डारि ।।
सुनि कूह सैंन अरु तुपक छुट्टि । अेकल वराह थह छंड उठ्ठि ।।
तन स्यांम स्यांम बद्दर अनूप । ससि द्वैज उभय दढ्ढा सुरूप ।।
तन थूल कंद मूलन अहार । अरु ईख साल पौयनि सुचार ।।
चमकंत नैंन अति तेजवांन । निसि स्यांम मनहुं तारक समांन ।।
खुर महिष दढ्ढ मनुंरद मतंग । जलपांन करत विच उभय सिंघ ।।

मुख फेन झरत अंगह प्रचंड । हय परत भुंम्मि तिन टकर तुंड ।।
माहाराजकंवर वैठे जवांन । वाराह आय जिंहि मूलथांन ।।
वंदूक हथ्थ धरि भींम नंद । आचूक खंचि कलचित अमंद ।।
फुटि वुगल भुम्मि लुट्टीय वराह । सव सुभट भींम श्रीमुख सराह ।।
अन सुभट कितक सझि सूरसैंन । छुट्टि स्वांन सधि सस सूर अैंन ।।
खरगोस सधि मुख स्याह गौस । अहि हिरन छुटि चित्रक सरौस ।।
वगुरन सधि अगनित सिकार । सझि हिरन फंद अैनन अपार ।।
सिकरे सुलाव अहि नख विभंग । परवाह झपटि तीतर कुलंग ।।
वहुलेत झपट्टि मुरगा बिवास । अगिया परंद यह विध प्रकास ।।
माहारांन भीम चित हुलसि कीन्ह । हथ छूट सुभट तिन रीझ दीन्ह ।।
अनुचर सिकार तिन करि पसाव । इम आय महल निज हिंदुराव ।।
माहारांन भीम तप सुजसवंत । यह रीत भूप विलसत हिमंत ।।७४१।।

अथ ससिर रितु वर्णन

दुहा

आय ससिर वन कंज दचि, भांनहु अगिनत पात ।
सव जग चोपर रीत रचि, जुग बिनु मारे जात ।।७४२।।

चंदन चंद कपूर जल, कासमीर सुख दांन ।
ग्रीखम प्रांन अधार जे, ससिर प्रहारत प्रांन ।।७४३।।

कवित्त छप्पै

मकर रासि भज भांन, वढत दिन रयनिनि घट्टत ।
दंपति वढत सनेह, सीत रितु मयन उपट्टत ।।
आतप अगिन सनेह, अगर म्रगमद अवलेपन ।
पसमींना मद तूलपांन, तिय कुच आसेवन ।।
उतरित माह उनमंत रितु, चित वढिवौ अनुराग कौ ।
आरंभ करत नरनारि मिलि, फागुन घर घर फाग कौ ।।७४४।।

छंद उद्धौर

रित सिसर आय अनंद । विलसंत सुख नरयंद ।।
पट झरफि जाल गवाख । पसमींन पट अभिलाख ।।
अरु अगर धूप अवास । कस्तूरि फेलि सुवास ।।
जुपि अमर अतर मुसाल । तन सौर रचित दुसाल ।।
कुच मुग्ध सेवन अंग । मदपांन दाख[1] लवंग ।।
कृत गजक साट वराह । इम विलसि सुख नर नाह ।।
रितु ससिर भीम दिवांन । सुख विलस इंद्र समांन ।।
रितुराज आगम कींन । वन प्रफुलि कुसुम नवींन ।।
घटि सीत आगंम घांम । मनु जुबन आगम वांम ।।
सरकंज पुंज प्रकास । भ्रमि भ्रमर लोभित वास ।।
तरु प्रफुलि अंव कदंव । सुर करत कौकिल झंव ।।
चित हर्ष जुक्त अनंत । माहारांन वंदि वसंत ।।
फिर आय फागुन मास । किय फाग लागि हुलास ।।
भरि हौद केसर नीर । अनमित गुलाल अवीर ।।
सुत सुभट जुत अनुराग । नरियंद खिल्लत फाग ।।
षट रित जु भीम विलास । संषेप सु कवि प्रकास ।।
जस वर्नि भीम नरेस । नहिं पार पावहि सेस ।।७४५।।

इति षट्ट रितु संपूर्ण

छंद पद्धरी

इम करत राज माहारांन भीम । भुज धरत विरद रघुवर कदींम ।।
परधांन रहत निज हुकंम लींन । सिर धरत स्वांमि ध्रम मति प्रवींन ।।
चतुरंग सेंन नित मिलित जुथ्थ । मरि डंड सत्रु पय नमत मथ्थ ।।
अति विखम दुर्ग पूरित समान । चढ़ि चर्ख तौंप फरहरि निसांन ।।
नित चलत नीत मग्गह नरेस । सुख वसहि रैत आवाद देस ।।
भंडार अमित आगंम सुलछ्छि । मनु ग्रह धनेस सौभित प्रतछ्छि ।।
चित रचित बुधि ऊतिम सलाह । सुख प्रगटि जास दुख मिटि अथाह ।।

---

१. 'ख' प्रति में इस छन्द के पूर्व विवाह वर्णन आया है, सं.

सुत भीम धर्म अंकुर सराह । सोभत जवांन आजांनवाह ।।
पितु भूमि सिहायक मौदमांन । मनु लीन जनम परताप रांन ।।
भुज दांन तेग सूरत सिभ । जुध अडिग पाय मनु जैत खंभ ।।
हय हथ्थि दैंत ऊद्दार चीत । अग्या अधींन पितु श्रवन रीत ।।
कुल धर्म पुष्ट सिव पाय सेव । नहि विष्णु विमुख रत सर्वदेव ।।
छतीस सस्त्र विद्या प्रवींन । हयरोहन कुल नल भेद चींन ।।
रस नव छ भाख अरु अलंकार । पिंगल प्रबंध छंदन विचार ।।
नायक भेद अनकूल रंज । त्रय गुन विधांन चवरीत संज ।।
चवसठि चतुर्दस भेद जांन । गुन गीत रीझ कवि दैत दांन ।।
रज धर्मनिपुन चव राज नींत । हरि गाथ सुनत पितु जिम पुनींत ।।
चित अघटि वीर मुख अनटि नेम । अरि तूल दाह वर वाग जेम ।।
अपराध पचावन सामुद्र भाय । सुत भींम कहा अचरिज गिनाय ।।
कवि खंच करत दत काज आंन । चित वढत तार कुंदन समांन ।।
वहु दिवस भीम तप किय दिवांन । सिव कृपा पाय तिहि फल जवांन ।।
करीये वखांन का भीम नंद । जुग कोटि अमर आसिख कविंद ।।
श्रीचंद्रकंवर कहि वहन भींम । अनोपकंवरि दुति सुमति सीम ।।
जे सील ऊद गंगा समांन । प्रतपाल जगत जुत दया दांन ।।
रांनी सुवह तपति व्रत अनूप । रुक्मिनीय सिया सतभांम रूप ।।
पटवर्न पाल माता सरीस । प्रतपाल दया जन रयत सीस ।।
राधा सुरूप जे पासवांन । पतिव्रत सनेह पित हुकम मांन ।।
रत ब्रह्म कर्म प्रोहीत राज । जिन दरस करत अघ ओघ भाज ।।
चित रूप भीम जन पासवांन । दातार सूर अन न्रप समांन ।।
कहि सुभठ सोल जुध सूर धीर । ध्रम स्वांमि तेग दत समुख नीर ।।
वीराधवीर चौसठ वतीस । जुध ओट स्वांमि वडफर सरीस ।।
निज भ्रात भींम लिछमन स्वरूप । धुर धवल स्वांमि ध्रम सुरथ्थ जूप ।।७४६।।

दुहा

अथ विवाह वर्णन

भीमसिंघ महारांन कै, जितने किये विवाह ।
वंस नांम रांनीन कै, पिता नांम कहि ठाह ।।७४७।।

छंद पद्धरी

कियं प्रथंम व्याह् ईड्डर दुरंग । सिवसिंघ पिता कमधज अभंग ।।
अखकुंवरि नाम पद्मिनीय रूप । अवतार सक्ति उमया स्वरूप ।।
बिय रतनसिंघ भाटी निबाह् । रावरह् भ्रात जेसांन ठाह् ।।
तिहि सुता जैतकुंवरीय सुलच्छि । परनीय सु भीम सतसील अच्छि ।।
कहि त्रतिय जोर कमधज अनाट । गलवो ऊतन्न धर मेदपाट ।।
तिहि सुता रतनकंवरीय सुलज्ज । वीवाहि भीम तिह हिंदु रज्ज ।।
झालो चउथ मज्झ कच्छ देस । जसवंतराज हलवद नरेस ।।
तिहि सुता रूपकंवरीय सुनाम । न्रप भीम परनि रति मनहुं काम ।।
पंचम भिभूत भाटीय सधीर । रावरह् भ्रात गढ़ जेस बीर ।।
तिहि सुता लालकुंवरीय सुबुधि । जिहि व्याहि भीम कथ जग प्रसिधि ।।
रस चांद सिंघ बाघेल राज । गांगर दुरंग गुजरात साज ।।
तिहि सुता कुसलकंवरिय सुभाय । सुभ रूप लच्छि मन समंद भाय ।।*
दमयंति पतिव्रत धर सकांम । परनी सु भीम मन हर्न भांम ।।
झालो सुपिता आदीत राज । तांनें दुरंग तिहि उतन साज ।।
तनया सुभागकुंवरिय सुताहि । रसरीत भीम माहारांन व्याहि ।।
वरसोर दुर्ग गुजरात देस । चावरह् जात जगपत नरेस ।।
तिहि सुता कुंवरि गुल्लाव सुजांन । दाता दयाल सुभ लच्छिवांन ।।
व्याही उमंग धरि भीम रांन । जिहि कूंख रतन प्रगटे जवांन ।।
सिवसिंघ भूप कमधज्ज नांह । ईडर दुरंग अनभंग ठाह ।।
तिहिं सुता नांम कुंवरिय गुलाब । पद्मिनि सुलच्छ पतिवर्त आव ।।
सामुद्र चित जस रीझवांन । हय हथ्थि ग्रांम द्रव्न दैत दांन ।।
वीवाह ताहि न्रप भीम कीन्ह । जिहिं उदर जन्म अमरेस लीन्ह ।
सिय रमा उमा रुक्मिनि समांन । द्वै देह स्वांमि चित अेक मांन ।।
सिवसिंघ नंद नरपत भवांन । ईडर दुरंग जिंहि राजधांन ।।
तासुता उमाकुंवरिय सुकथ्थ । दीवांन भीम व्याहिय समथ्थ ।।
द्वै अेक सथ्थ कीनै विवाह । गुल्लावकुंवरि संग परनि ताह ।।

---

* मूल प्रति में उपरोक्त पंक्तियों पर स्याही गिर जाने से पाठ त्रुटित है अतः अन्य प्रतियों से ठीक करके लिखा गया है सं.

सिवपुरीय राव कहि वैरिसाल । तिहि भ्रात रतंनसिंघह सुढाल ।।
सिरदारकुंवरि तनया जु तास । देवरीय भीम व्याही हुलास ।।
ईडर दुरंग भूपति भवांन । तिंहि चांदकुंवरि तनया सु जांन ।।
सुभ रूप लछ्छि पतिव्रत समंद । तिंहि परनि भीम पतसाह हिंद ।।
गजसिंघ वीकपुर न्रप अभंग । तिहि लघु नंद तास सुरतांनसिंघ ।।
तिहि पदमकुंवरि तनया वखांन । सतभांम सीत उमया सभांन ।।
पद्मनीय पतिव्रत घर सुनीत । सुभ रुप सील सागर सुचीत ।।
उदार सुमन क्रन भोज जांन । लख कोटि हथ्थ द्रव देत दांन ।।
दादो सुजांन न्रप रायसिंघ । त्रय कोर दांन कवि दिय उमंग ।।
अचरिज्ज कहा दतक्रत सधीर । व्याही सु भीम वंसह हमीर ।।
लगतर दुरंग पति विरद राज । झालो अभंग अरि जंग साज ।।
व्रजकुंवरि तास तनया वखांन । जुत हर्ष व्याहि तिंहि भीम रांन ।।
सिररोहि दुरग पति हिंदु सींघ । पांवार जात अरि भंज जंग ।।
तिंहि तखतकुंवरि तनया गिनाय । परनीय सु भीम न्रप सुचित चाय ।।
पति दांनसिंघ भट्टीय सुनांम । घर माढ उतंन औ ईस ग्रांम ।।
सुरज्जकुंवरि तनया जु तास । पतिवर्त जुक्त तन रूप रास ।।
सुभ लछ्छि सुचित दत जुक्त जांन । सुभ दिवस भीम परनिय दिवांन ।।
माहाराव हड्ड कोटैं उमेद । तनया किसोरकुंवरिय सुभेद ।।
जिंहि जन्म सेव व्रजराज कीन्ह । गोविंद रीझवर भींम दींन ।।
सतरह विवाह किय रांन भींम । सुभ लछ्छि रूप पतिव्रत सींम ।।
जिन निरखि पतिव्रत सील नींव । सुकीयान होत उछ्छव सदींव ।।
जे रूप उदध सुभ बुध प्रवींन । मन हरन स्वांमि नित हुकंम लींन ।।
अवतार सक्ति अरधंग रूप । सावित्र लछ्छि उमया स्वरूप ।।
उद्दार चित्त कवि देत दांन । प्रतपाल पर्ज माता समांन ।।
रांनी सुवर्न कवि किण्ण कींन । नहि पार लहत सुरसति प्रवींन ।।
लाडु सुअवर कहि मग्नराय । रंग भीनी अरु मोती गिनाय ।।
यह भीमसिंघ चव पासवांन । निज क्रपा पात्र जाहर जिहांन ।।७४८।।

दुहा

खंभ जंजीरन संकलित, घूमत मत्त गयंद ।
पव्वय विध कलिंद मनूं, कै अयरापत इंद ।।७४९।।

छंद पद्धरी

घूमंत गयंद खंभन अनेक । मनु व्यंध्य रूप पय पवंन छेक ।।
जंगल अनूप गड्डा धनास । विनखोर देह चव जात जास ।।
तल वहृत सीस मद झरि प्रचंड । मनु झिरन झिरत गिरवर अखंड ।।
रठठंत लोह लंगरि अमांन । डग वेरि सद्रिढ़ जरि चव पयांन ।।
उनमत्त स्यांम सोभित सरीर । मनु असित अभ्रन भभरित्त नीर ।।
वगपंत दंत ऊजल विभात । वंगर कनंक विद्युत सुभात ।।
आंवलन बौह लगि तेल ताय । मनु जूथ घनाघन गगन छाय ।।
सिर रचि जंगाल सिंदूर रेख । मनु व्यौम चाप सुरपति विसेख ।।
रज खेह होत आवर्त अंग । मनु छाय अद्रि खंखल उतंग ।।
अति स्यांम सुभग धू सरित ज्यंद । सनि राह विध मांनहुं कलिंद ।।
चवडंडि हवद तिन पीठ केक । नौवत निसांन धारक अनेक ।।
रजि भीम द्वार यह विधि गयंद । अरनां मद मांनहुं द्वार इंद ।।७५०।।

हय वर्णन

दुहा

दध भव रवि हक्किय जलद, तास स्वेद अधपात ।
परि जिंहि भुम्मिय हय प्रगटि, ते तेर षेत्र कहात ।।७५१।।

सुगति सुलछ्छि सुजात के, सौभ सुषेत सु अंग ।
ताते माते लींन मुख, पायग भींम तुरंग ।।७५२।।

छंद त्रौटक

रज पायग भींम तुरंगनयं । सुभ षेत सुपात मुखं भनयं ।।
उहय्यांन भयांन तमं धकयं । त्रय लिंग रुद्रावरि अंधकयं ।।
अरु भावय सांभरि सद्रमयं । अयराक कलत्थ रु कौलकयं ।।
कहि ताजीय ओरि चिनाह धजं । अरु रूम्मि हरे वियठिल्ल गजं ।।
फिर चींन वलष्ष वुषारनयं । कहि कावुल वाज खंधारनयं ।।
कच्छ कठ्ठह लार पहार हयं । जल पंथ घटा मुलतांन जयं ।।

कहि वंग सुधठ्ठीय राठ धरं । अरु दच्छिन भीम थली सुतुरं ॥
कसमीर अरब्ब रु हालकहं । तुरकी करनाटीय सिंधचहं ॥
अस जांमत षेत अनेकनयं । कवि तुच्छ हयं जतते गिनयं ॥

रंग

रंग वौज सुरंग कुमैतनयं । अवलख्ख लखी सुभ पेतनयं ॥
गुलदार सु हंस कनूह कथ । सुरखेरु समंद अमंद पथं ॥
कहि जांनु सियाह रु वोरदयं । किसमिस्स कुलाह ततं हदयं ॥
सिंदली फुलवार चवं धरयं । हररे खगराज समं तुरयं ॥
श्रुति स्यांम संजाव हरी नुकरे । महुवे पय छेक मनौ मकरे ॥
चक्रवाक विदांमिय तेलकयं । अरु सेलि समंद अमोलकयं ॥
अस चंप सिचांन उजागरयं । पट सूत रु केहरि कागरयं ॥
जय मंगल मगल पंचहयं । अठ मंगल रंग सुभंकरयं ॥
रंग पारन वाज परावतयं । कवि वुद्धि सुमार समं कथयं ॥

जात

दुजराज सु खित्रीय जात लुभं । सुभपेत सुरंग सु लच्छ सुभं ॥
अत दिघ्घ सुघाट सुदेह जिनं । विनु सूंड प्रचंड मनु गयनं ॥
अति तिख्ख कनोतिय रूप लखं । मनु केतकि पंख कि दीप सिखं ॥
मिकराज कि वारिज पंखुरियं । सर अग्र किधौं चख कोरतियं ॥
रजि भाल विसाल सतेज चखं । मनु द्वै गिलका सुतयं विसिखं ॥
थुयरी लघु तिख्ख सुघाट मयं । मुखडाच मनौ ससि द्वै जनयं ॥
खचि ग्रीव गुमांन सुभंत भलं । सु मनौ कसि लंकिय देखि जलं ॥
अति ऊधत कंध सुवक जुतं । कलयार सिहंड कि चाप दुतं ॥
म्रदु सोभि सुलंब अयाल कचं । मनु लूंवित स्यांम बयाल वचं ॥
विस तीरन वाज सुभंत उरं । मनु चौकिय रूप कि धौंस फरं ॥
छवि श्रीफल जांनु रु सुद्धनली । दुतयं नख वज्र कटौर[1] भली ॥
सस मध्य गरिठ्ठ सु पुठ्ठ रजं । मनु चक्क सु पिंड प्रचंड छजं ॥

---

१. अन्वयार्थ–नख वज्र जैसे कठोर

तुछ डंडिय पुंछ म्रदुं चहरं । सुर चंमर मांनहुं सोभ धरं ॥
नवनीत मुखंमल सीप समं । तन फावत आव अरीस समं ॥
जिन पिठ्ठन जीन सभै भलयं । जरदोज वनात मुखंमलयं ॥
गजगाहर जै अत झुम्मरयं । हरद्वार प्रवाह सुरंसुरयं ॥
हिमतार अभूवन अंग रजं । सु कछी मनु अच्छ्छरि न्रत्य कजं ॥
चढि धारक पिठ्ठन खंचि वगं । मनुं सिंधु जलं रुकि कार लगं ॥
कच सूतन तार फिरैं समुखं । सच लींन लगांमन दोय रुखं ॥
खचि धारक वग्ग चपेट चढं । उर फेट ढहंत दिवाल गढं ॥
अति जोर अधप्प सु धावन कै । लघु वंध मनौ हय वावंन कै ॥
जिन सुध्ध हकालत धाव परै । पय होड न तीर समीर करै ॥
भरि लाह सु रांनन के दपटैं । अग साख मनौ तरु साख टुटैं ॥
लगि राग समीर सतावकयं । उडि सौर मनौ मिलि पावकयं ॥
नहि पिठ्ठ सहैं चुटकी चटका । मग धाव मनौ सिध्र के गुटका ॥
परिवेख फिरैं अति वेग तनं । ससि हाथ अलात भ्रमात मनं ॥
दुतियं उपमा कवि अेम धरैं । मनुं चक्क कि भौंर सजोर फिरैं ॥
पय वेग उलट्ट पलट्टन कै । पहु हाथ फिरैं मनुं पट्टन कै ॥
धुज चंपत रांन गरीस करी । गत आगत तेज मनौ चकरी ॥
अव जाव तुरं अति वेग करैं । मनुं गोलक काग दुवाग फिरैं ॥
कुलींन मुखं मिल गुंमरयं । अकुलींन चखं पय आतुरयं ॥
न्रत होड न पूजत वारंगयं । अग ग्रीव धरैं गुन सारगयं ॥
अदभूत नख सिख गात दिखैं । नहि जात चितारन चित्र लिखैं ॥
भट हथ्थ रु पत्र चलद्दलयं । चित कायर अैंन रु विज्जलयं ॥
कुलटा चख खंजन सावकयं । कवि जीह समीरन पावकयं ॥
उपमांन लखैं दुति अंगन की । न करैं सर भींम तुरंगन की ॥
दध जायक गौत सु तेजमये । मनुं रांनन तै कुल भांन दये ॥
कविराज जनंम सराह कहै । न्रपराज तुरंगन पार लहै ॥७५३॥

विविध वर्णन

छंद पद्धरी

क्रत राज भीम इम छत्रधार । गज वाज सुतर रथ नहिन पार ॥

अंगरेज आय फिर गाफ साह[1] । पति सचिव समिलि धर बंधराह ।।
सुख वसत वर्न चव उदयनेर । बिलसंत लछ्छि मांनहुं कुमेर ।।७५४।।

नृप महल वर्णन

सत खंन अवास नृपवर सभंत । आरास स्वेत हिम कलस पंत ।।
धज स्वेत फरकि मारुत प्रचार । अंतरिख मनहुं सुरसरि विहार ।।
कहूं चत्रसालि कहूं ऊर्ध गोख । कहूं वातायन जारिय अनोख ।।
कहूं काचमहल सौभा समूंह । नर दिखन रचिय मनुं कायबूह ।।
कहूं तावदांन कहूं मींनकार । कहूं चित्र हेम हलमय प्रकार ।।
कहूं सिघअस्म मुरवर सुसंघ । मुकरांन खंभ कहूं जटित नंग ।।
कहूं गिलांम गलीचंन वछि अपार । पचरंग वेलि वूंटन सुढार ।।
कहूं फरस स्वेत आवास साज । जिन लिखत दुग्ध दध फेंन लाज ।।
नृप तखत रचित गदरे मसंद । तकीयांन निरखि छवि लुभित इंद ।।
मुखमल बनात जरदोज कांम । परदेस मांन चिग ठांम ठांम ।।७५५।।

अथ चतुर वर्ण वर्णन

पुर ग्रेह ग्रेह ऊरध अवास । वसि वर्न च्यार नव निध विलास ।।
दुजराज करत धुंनि कहुक वेद । अठ दस पुरांन कहुं वचत भेद ।।
सारस्वत कहुक कहूं पांनिनीय । कहूं कासि कृष्ण अभ्यास कीय ।।
पिस्पलिस कटायन इंद्र चंद्र । अभ्यास अमर कहुं कहुं जिनेंद्र ।।
सासत्र सु पट्ट अरु पंच काव । दुजराज करत कहुं सम्रति जाव ।।
जोतिष पढंत कहुं भ्रहम ग्यांन । वेदग निघंट नारी निदांन ।।
कहुं कर्मकांड अभ्यासकार । कहुं रांमचरित भारथ विचार ।।
कहुं जपत जाप कहुं कर्त होम । कहुं चंडि पाठ लोमाविलोम ।।
कहुं सधत मंत्र नवग्रह विधांन । अभ्यस्त कहुंक सक्ती पुरांन ।।
विवाह कर्म कहुं मुख करंत । वासंत राज कहुं चित धरंत ।।
निर्णय सु प्रश्ण कहुं काव्यधार । श्रुति वोध कहुंक छंदन विचार ।।
कहुं सधत सुरोदय जोगग्रंथ । श्रीकृष्ण वाक्य कहुं लेत संथ ।।
मंदर तुलछि कहुं ऊर्धपुंड । सिवलिंग अक्ष कहुं खचि त्रिपुंड ।।

---
१. फिरंगा फसाह

घर घर पवित्र सुनि वेद घोष । रस सांत सुध दुजवर अदोष ।।
पुर उदय वसत खित्रिय प्रसंस । वरनत सु आदि षटतीस वंस ।।
कुलधर्म करत आयुध अभ्यास । कुस्ती सधंत न्रप मल्ल पास ।।
फुलहता फुरत पट्टा रु वंक । खंचत कवाद लेजंम निसंक ।।
कमनैत करत कहुं तीरकार । सिंगिनीय खंच टक़ह अढार ।।
खंखरन करत कायम सुहथ्थ । अं न रचित भजि अज महिष मथ्थ ।।
धरि हृदफ कहुंक धारत वंदूक । कलखंचि घात पारत अचूक ।।
कहुं सिलह पहरि निज सधत अंग । फेरत सुधारि पख्खर तुरंग ।।
खग तुपक सेल सर करि कवाद । सुध वांम दछ्छ अरु गस्तवाद ।।
हयराज कितक धावन चढाय । वहु कोस जात फिर उलटि आय ।।
करि स्नांन दांन सुचअंग नित्य । साधत ईष्टध्रंम स्वांमि चित ।।
इक विष्णु भक्ति सिव भक्ति अेक । भैरव, सुचडि सुरज अनेक ।।
हनमंत वीर आराधि कोय । निज ईष्ट पाठ जप मंत्र होय ।।
व्रत अेक पतनि चित धर्मपाल । दातार सूर किवराज माल ।।
कुल सुध खित्रि द्वै पख अरेह । जस ईष्ट मुक्ति ध्रंम स्वांमि नेह ।।
साधार सरंन समहर अडोल । दत तेग आच मुख साच वोल ।।
अहनिसा मर्न वंछहि अभंग । गांगेय पथ्थ वीय कर्न जंग ।।
हक लेत अहक नही अंस खात । दिनरैंन फिरत सिर लियें हात ।।
यह भंत उदयपुर खित्रवास । कौसकहिं जन्म कवि वर्निजास ।।

वैस्य

बसि बयस उदयपुर लंछिछवंत । ग्रह ग्रह बिलासि वैभव अनंत ।।
वनि हट्ट ओैल दुतरफ् बजार । मनु द्रुपद चीर नहि आय पार ।।
वछ्छि फरस स्वेत गदरेन गंज । जिन बेठि साह अति सुमति पुंज ।।
जंवहरिन हट्ट सोभित जुहार । नव ग्रह कि मनहुं वसि देह धार ।।
सुभ संग ढंग अरु वंग रंग । आ तोल गंज आमोल नंग ।।
ओपंत पंत सोराप हट्ट । परखंत रूप वहु महुर थट्ट ।।
सुनहार खंचि हिमरूप तार । रवि सोम किरन मांनहुं प्रचार ।।
भूपन अनेक विरचित अनोख । मोलत अनेक नर उपजि जोख ।।
वहु वसंन गंज हट्टन बजाज । फुल्लिय कि संझ गुलजार साज ।।

पसमींन सूत्र संन पाट जांन । अनेक रंग अनेक वांन ।।
इकवस्त नांम गाहक उचार । बोलंत साह हाजर हजार ।।
रंगरेज वस्त्र रंगि जिलहदार । फुलि संझ प्रात आफू कियार ।।
कहुं तंतुवाय सीवंत दुकूल । सम वसन तांम पावंत मूल ।।
जरदोज कहुंक सिकलात कांम । कहुं चिकंन दोज चिकनह सु भांम ।।
कृत चित्रकांम कहुं चित्रकार । हिल स्वर्न रूप रंगह सुढार ।।
जौंहरीय कहुंक जौंहर जरंत । कहुं मींनकार मींनह भरंत ।।
कृत नकसकार कहुं नकसकांम । चढि स्वर्नखाग प्रतमाल जांम ।।
तह जरन सतह तुल्ला प्रकास । अनेक भंत दुति ओप जास ।।
लवहार सस्त्र खुरसांन चाढ । काढत अनीन कहुं ओप बाढ ।।
गजवेल अंव जौंहर दिखाय । मनु जमुंन नीर लहरी सुभाय ।।
करि सिकल खाग अति ओपवांन । मनुं परिय मुकर प्रतिव्यंव भांन ।।
दिय वाढ सेल झलकंत आव । मनुं चपल व्यौम चमकति सिताव ।।
करि सिकल चमकि वडफरन फूल । कुहुं रैंन मनहुं नाखित्र तूल ।।
बंदूक धरत उस्ते दुकांन । लुकमांन मनहुं दूजे जिहांन ।।
आहीर घोप वासित अछेह । व्रजनंद महर सम विभव ग्रेह ।।
सत सहंस सुरभमह खीन झुंड । घुमत मथांन पय दधि घमंड ।।
कंदोय हट्ट मिष्टांन गंज । अनेक जिनस पकवांन संज ।।
मालिन अनेक पंकति बजार । मेवा सु चित्र खटरित सुढार ।।
श्रग सुमंन गंज आमोद खास । अरु अतर गंज गंधीय निवास ।।
वहु जिनस पुंज हट्टन अतार । कस्मीर आदि म्रग मद सुचार ।।
तंमोरि हट्ट दल नाग जांन । वहु चीज गंज वहुरे दुकांन ।।
लख जरत दीप सिर लाख दीस । धज फरकि कोट ग्रह कोट सीस ।।
पवसाक साह ऊंचह सझंत । दाता दयाल चित ग्यांनवंत ।।
द्रिढ जैन धर्म जिन दरसि पाय । वंदंत जतीन पवसाल आय ।।
नोकार मंत्र मंदर कल्यांन । भवतंबर सूतर कल्प जांन ।।
व्याख्यांन सुनत निज गुरन मुख । रत दया धर्म अदया विमुख ।।
धनवंत साह अैसे अनेक । निंदत घने सवै भवहि केक ।।
त्रय वर्न सेव रत सुद्र जांन । पुर वसत उदय घर घर सुथांन ।।७५६।।

छंद भुजंगी

कहूं फेरहीं गस्त फ़ीलं भ्रतानं । मनौं वाय पे ले घनं आसमानं ॥
कहूं चावुकं वाजराजं सधायं । तिनं अंख पंखं कुरंगं लजायं ॥
कहूं भग्गरं नट्ट सामठ्ठ नच्चैं । दिखैं बाल ब्रध्रं जुवं खेल रच्चैं ॥
कहूं हौत कावादयं तो वखानं । मनौं मेघमालं अकालं गजानं ॥
कहूंक मसीतं नवाजं गुदारं । मनौं व्यौम मभ्भैं कुलंगं कतारं ॥
कहूं गावंही रंभ कंठं अलापं । मनौं कोकिला अंव साखं कलापं ॥
कहूं नीर नारी भरैं कुंभ मथ्थं । मनौं अच्छरी भूल्लि आकास पथ्थं ॥
कहूं वाटिका सोभयं व्रच्छ वग्गं । फलं भार साखं निमं भूमि लग्गं ॥
कहूं मालती चंपकं फूल जुथ्थं । मनौं दीप आनंग जूपे समथ्थं ॥
दरक्की कहूं डारपक्की अनारं । मनौं मांनिकं खांन पव्वै विहारं ॥
कहूं मंडफं दाख्र अंगूर वेलं । मनौं अंम्रतं मुक्त सोभै नवेलं ॥
कहूं नालकेलं विदामं छुहारं । लता नाग अेला लवगं सुढारं ॥
सु अंजीर सेवं विही आखरोटं । सुभं नासपाती सुपारीन जोटं ॥
सुजाती फलं केल सोहैं कदंव । सुभे देव दारूचरोली सु अंवं ॥
वकुल्लं रु केलं करुना सु जंवू । असोकं सरू रायनं तूंत निंवू ॥
चिलंकोच नारंगि कुदं विजोरं । कच नारयं चंदनं छाह जोरं ॥
सुभं मोगरं जाति पूंजं गुलावं । हवासं गुलालं जसूलं सुफावं ॥
सुभं मंजरी मजरी रूप सौहं । सिरे केतकी केवरे धूबि मौहं ॥
चलै कूंप बापी रहट्टं अनेकं । वहे सारनं नीर तालं सछेकं ॥
उदैनैर वागं चिहूं ओर अैसें । विलास वनं नंदनं इंद्र जैसें ॥७५७॥

दुहा

द्वारामति कै गिरधरन, राघव अवधि प्रमांन ।
ऊदयपुर राजस करत, यह विधि भीम दिवांन ॥७५८॥

वसत सुचित मय घर घरह, वरन च्यार सुखवंत ।
नवहूं निधि अरु अष्ट सिधि, विभव जगत विलसंत ॥७५९॥

कवित्त छप्पै

ताहि तखत रघुवर अगंज, दसमथ्थ बिभंजन।
तपि बापो जिहि तखत, गाव दस दिसि खल गंजन॥
समरसिंघ जिहि तखत, पंग जुंध जुट्टि अनम्मीय।
तपि हमीर तिहि तखत, दांन जस जाहर जम्मीय॥
खेतल रु कुंभ मोकल सु, तपि, पतो अमर जगपत सुचित।
जिन तखत हिंदु कुल भांन सम; रांन भीम राजस करत॥७६०॥

दुहा

फिर गुनयासी के बरस, आये साहिब काफ।
दिये जमाय जवास अरु, किये सत्र सब साफ॥७६१॥

कवित्त छप्पै

काफ साह कपतान, आय उदियापुर जांमह।
समुख जाय माहारांन, मिले करि कुरव सु तांमह॥
भील असंखन सीस, काफ करि फौज चढाइय।
सत्र मार समसेर झेर,[1] जावास जमाईय॥
थपि रांमस्यंघ परधांन तब, करि चित भीम उमंग कौ।
अंगरेज काफ बंदबस्त करि, भरि मेला यकरिंग कौ॥७६२॥

कवित्त व्रजभाषा

वीरो लै दिवांन भीमस्यंघ सौं मिवासन पैं,
कुमख करी हैं काफ साहिब गिरंद पैं।
कंपू तोप जूथ सझि होय कैं सवार जाय,
घेरे बंकेघाटे खग खेरे अरि जंद पैं॥

---

१. जेर

अनमी नमाये भील डंड कर कर सिर,
भोग भर कीनै कर गरब निकंद पैं।

रोपि कैं निसांनै औ जवास मैं जमाय थांनै,
फते करि आये काफ साखी सूर चंद पैं ।।७६३।।

कवित्त छप्पै

राजकाज परधांन, करत नित रांम हुकंम जुत।
सांम दांम अरु भेद दंड, निरवहत नीत नित ।।

मुलक हौय आवाद, देव परसाद सु पूजन।
बहत मग्ग बिनु त्रास, दंड पावत तसकर जन ।।

सत सुकृत दांन सनमांन जुत, बरनाश्रम निज निज करंम।
महारांन भीम तप तेज महि, वहत बार हर चंद संम ।।७६४।।

असत हड्ड उचिस्ट झूठ, पाखंड ग्रांम कहि।
लकुटि दड ग्रहराज चंड, गति कुटिल क्रमत अहि ।।

मलिन धूंम पंकज सरोज, पाषांन कठिन मंन।
कंपत चलदल पत्र, मांन मोचंन बनिता जंन ।।

नाकार मुग्ध तिय रति समय, धर सर नांम कुबांन कौ।
यह लच्छि आज मेवार धर, राज भींम महारांन कौ ।।७६५।।

बंधन बापी कूप ताल, हय पाध गयंदनह।
गंधबाह बिनु हुकंम, गंध लेजात कुसंम गनह ।।

सठनायक सुनि ग्रंथ, मास फागुन निरलज्जह।
मुख मलींन कुच दीप, गढंन पावस घंन गज्जह ।।

तामाल जंत्र सिर चुगल यक, अमिल चित्र नहिं आंन कौ।
यह लच्छि आज मेवार धर, राज भींम महारांन कौ ।।७६६।।

छंद पद्धरी

इम भीम रांन राजस करंत । पाषांन नीर मध्यह तिरंत ॥
सु प्रसंन कोटि तैंतीस देव । षटतीस वंस नित करत सेव ॥
नांमत पटेत सिर मंनि संक । परबाह् पंखि पर बजि चमंक ॥
नर निवल पुकारत जुक्त पीर । तव सवल कंध जरियत जंजीर ॥
सीमार पेसकस भरत डंड । वरतंत आंन उर्वी अखंड ॥
तप तेज जगत वरतत दिवांन । निरधूंम अग्नि मनु जेठ भांन ॥
छभ रचत फरस ऊजल बिछाय । ता पर मसंद तकीये वताय ॥
रजि हेम डंड सिर सेत छत्र । सिर मेर सोभि मनु रवि बिचित्र ॥
थित होत भीम न्रपवर मसंद । मनु रजि सुधर्म तप धर सुरिंद ॥
पितु दरसि आय बाह् अजांन । जयवंत कंवर दुति धरि जवांन ॥
सोरह बत्तीस भट दछ्छि वांम । दुज मंत्रि सुभट रजि ठांम ठांम ॥
सिर नमित आय धाव्रर सओर । भुज दछ्छि सिहायक समर बीर ॥
कायथ हजूरि पसवांन जेह । निज थांन आय थित होत तेह ॥
कविराज आय सिर नमित कीन्ह । निज वंस बिरद आसिष सुदीन्ह ॥
किल्कींनराय केदार कथ्थ । पापीनराय प्राग हंस मथ्थ ॥
हत्याररराय बांनारसीह । मदवांनराय गंगा अबीह ॥
सुरतांन मांन मर्दन सुवीर । सुलतांन-ग्रहन मोखन सधीर ॥
अरसीह जगतसींघोत नंद । श्री रांन भींम पतसाह हिंद ॥
तुंहि दांन वेर जगपत हमीर । तुंहि साह-ग्राह संग्राम धीर ॥
तुंहि खेतसीह खल खग्ग भांन । तुंहि खित्रिवाट मोकल समांन ॥
तुंहि धर्म-रख्ख पातल अभंग । तुंहि समरसेंन पतसाह भंग ॥
तुंहि समंर लखंम वापो अगंज । तुंहि कुंभ रूप सिव देव रंज ॥
तुंहि रुद्र रूप खल कांम दाह । तुंहि रांम सत्र दसकंध गाह ॥
तुंहि उदिक वाज गज दैन दांन । तुंहि भोज कंर्न विक्रंम समांन ॥
तुंहि धवल क्रीत धुर धर्न कंध । तुंहि सांग रूप वंधन अबंध ॥
तुंहि सुदत रांन हामीर पछ्छ । तुंहि लख्ख कोट दत दैंन लछ्छ ॥
तुंहि भीम सर्व पालक जिहांन । नंहि अवर भूप जग तो समांन ॥

तुंहि गीत गाह गुन पर्खवार । तुंहि मस्त भूप कीरत दुवार ॥
दत्त भीमसिंघ न्रप तो सरीस । ह्वै हैं न भयो नहि भोमि ईस ॥
सुनि सुजस चित बाढत उमंग । मनु सरद चंद वारिध तरंग ॥
गजबंध कीये वहु कवि निवाज । करि हैं अनेक फिर सुजंस कांज ॥
नर रंक राव कीन्हैं अनेक । करि हैं सुरंक न्रप रूप केक ॥
जिन सीस हाथ दीन्हैं अभंग । उतमंग ऊछजि लगि जिन निहंग ॥
जस भींम पार पावै न सेस । का अेक जीह वर्नहि कवेस ॥
करि अंगीकृत सिव भींमरांन । मम वच अर्क पुस्पन समांन ॥
कवि कृष्ण देत आसिष सकाज । लख कोटि वर्ष लग अमर राज ॥७६७॥

कवित्त छप्पै

भीमसिंघ महारांन, दांन हंमीर भोज कंन ।
भीमसिंघ महारांन, सुजस रिझवार विलंद मंन ॥

भीमसिंघ महारांन, प्रवल खल दंड अदंडन ।
भीमसिंघ महारांन, मेछ खग खंड विहंडन ॥

दातार सूर उद्दार चित, जस धर वीच जिहांन कै ।
ह्वै है न भयो नहि भूप सम, भीमसिंघ महारांन कै ॥७६८॥

के कविंद गजबंध, सुभट के बंध नगारह ।
किये वहुत के करहि, सुजस जाहर संसारह ॥

दिघ्घ आयु भुगति हैं, पूत पोते सुख दिख्खहिं ।
निज भुम्मिय अपनाय, भुम्मि नवि लेंहि विसिख्खहिं ॥

वहु सुजस गाथ सुनि हैं श्रवन, वहु कवि जोध निवाजि हैं ।
वहु आव वहुत सुख वरधपंन, रांन भींम वहु राजि हैं ॥७६९॥

अष्टादस संमतह, वरस गुनयासी जांनहुं ।
रित वसंत अरु चैत सुधि, दुतिया तिथ मांनहुं ।।

भीम रांन करि कृपा, हुकंम श्रीमुख फुरमाइय ।
दूल्ह सुतन कवि किसंन, तांम यह ग्रंथ वनाइय ।।

सुनि रीझ भीम अरसिंघ सुत, कुरब कृपा दत अधिक दीय ।
यह ग्रंथ नांम सहुलास चित, 'भीम विलास' प्रकास कीय ।।७७०।।

नागराज पिंगलह, चरित रघुनाथ बखांनीय ।
भागवंत अरु अमर, अवर गीता जग जांनीय ।।

हेमकोस अरु रतंनकोस, कहि खंड प्रसस्तिय ।
भाषा भूषन लहरि गंग, षटभाष सुकथ्थिय ।।

प्राकास सभार सरीत धरि, वरनाश्रंम कुल धरम द्रढि ।
कवि किसंन वतावहि इक्क थल, पावहिं 'भीम विलास' पढि ।।७७१।।

सिष्याव्रत कविप्रिया, पिथरासो जग जाहर ।
मंत्र रहसि गज चिगछ, अवर कहि सालहोत्र तुर ।।

फिर व्यंजनह विलास, करम वीबाह राग विध ।
सिवपुरांन हठजोग, जांन जोतिष षटरितु सुध ।।

तिथ्थ जात उगति जुगतिह त्रिगुन, गिर प्रसाद सुभ सवद मढि ।
कवि किसंन वतावहि इक्क थल, पावहि 'भीम विलास' पढि ।।७७२।।

अेक वरष जो पढहि, कुकवि पद सुकवि धरावहिं ।
सुकवि श्रवन जो करहि, तिन्हैं मन-मोद उपावहिं ।।

मूरख कायर सूंव, सालै तिन हियें अखंडित ।
सुवुद्धि सूर दातार, हरख तिन हृदय सुमंडित ।।

भट असल स्वांमिध्रम करन द्रिढ, कमसल तिन दाहक हियो ।
कवि किसांन 'भीम विलास' गुन, भींम हुकंम वर्णन कियो ॥७७३॥

स्वांमि त्रिया अरु पिता पुत्र, नरपत परधांनह ।
ठाकर चाकर भ्रात मित्र, प्रोहित पसवांनह ॥

कवि दुज छत्रिय बैस्य, सुद्र जे ग्रंथनि गाये ।
निज-निज धर्म सुपात, किसांन जे वर्नि दिखाये ॥

महारांन भींम निज पुत्र जु, अमर होहु आसीस दिय ।
गुन 'भीम विलास' किसांन कवि, कीरत पुत्र प्रकास किय ॥७७४॥

दुहा

धर अंबर रवि ससि सुधर, रांम नांम जग सीस ।
जौं लौं भींम जवांन जुत, अमर रहो अवनीस ॥७७५॥

□

□

परिशिष्ट

किसना आढ़ा रचित

तेहवार वर्णन

स्वस्ती श्री १०८ श्री श्री दुरबार रा श्रीमुख हुकंम थी संवत १८८० रा सांवण विद १ थी तेहवार वर्णन, ग्रन्थ 'भीम विलास' मधे।

दुहा

ठारह सौ अरु असिया, सांवन वदि सु विचार।
तिथि अकें उदयानयर, बरनत जिते तुहार ॥१॥

कवित्त छप्पै

हरियाली मावसहं, मास सांवन सुदि अकम।
तीज ऊछव महारांन, नाव आरोहि इंद्र सम॥
जगनिवास विच आय, करत भोजन श्री हथ्थह।
रुचि अभूत बांनगी, स्वाद अखत भट जुथ्थह॥
व्यंजन अभूत षटरस जुगत, सुचित हूंस चंडी धरैं।
यक मुख कवेस नहिं कहि सकत, सेस होय वर्णन करैं॥२॥

दुहा

त्रतिय पहर दुतिया दिवस, महारांनी राठौर।
गोठ करत महारांन कहुं, ज्यांग जुजिठ्ठल जौर॥३॥

कवित्त छप्पै

आय सुभट गोपाल, आय उदल धाभाईय।
रुघपत आय खवास, अरज भोजन गुजराईय॥
ह्वैतव चौसर पंत, भीम महारांन विराजित।
राजकंवार जवांन, सुभट कवि पासवांन जुत॥
परिहार मयारांमह सु तव, पनवारी न्रप अग्र धरि।
बिसतरत बाज सब पंकतन, अरु भोजन परुसार फिर॥४॥

दुहा

बखत मुसांनी हुकंम तैं, परुसावत सब संज।
गोठ करत कनवज्जनीय, अंनकोट सम गंज॥५॥

भर अमल आसवंन के, प्रथमहि उजलत हौद।
कोटि कोटि भैरव सकत, विंदु अेक चितमौद ॥६॥

नवलसिंघ जगतेस सुत, सूर स्वांमिध्रंम लीन।
थाल भरि न्रप भीम कौं, निजर करत अहफीन ॥७॥

जगपत सुत नवलेस, रांन वंसी जग जाहर।
सुखं दुख संगी सूर, अेकलण संम जुहर ॥८॥

कियो मनख महारांन कौ, चित समांन मनरंज।
अेकलिंग आयो तवें, लिये अमल मदरंज ॥९॥

घनाहर

स्वांमिधरम धर सीस, समर पितु अग्र ढाल संम।
चितव्रत भींम प्रसंन्न, निपुन आयुध रजवट क्रम ॥
कविराज मालकुलचाल द्रिढ, मंन सुदता उनमांनीयैं।
मजवूत जुध हनमंत जिम, सिंघ रजपूत सु जांनीयैं ॥१०॥

कवित्त छप्पै

नहिन पार पकवांन, पार साकन नहि आवत।
रोटी पुरी अनेक भंत, सितभात सुभावत ॥
सुले मंस पुलाव, भांत भांतन अद्भुत विध।
दधि रायत आचार, दुग्ध सक्कर संजुत मधु ॥
षटरस प्रकार चवनेक विध, गोठ अछेह समाज कौ।
सौभाग सुकवि भट कहत मनुं, ज्याग जुजिठ्ठल राज कौ ॥११॥

दुहा

पिता सिवो दादो अनंद, ईडर दुरंग उतन्न।
भींमसिंघ भरतार तिंहि, न्याय होय वडमन्न ॥१२॥

गोठ करी राठौर सौ, कौ कवि सकै सराह।
सुधरै जाके द्रव्य में, सो न्रप सु वन व्याह ॥१३॥

गोठ सराही सु प्रसंन, भींम रु कंवर जवांन।
ओघादारन रीझ दै, फिर सुख सयन करांन ॥१४॥

छंद पद्धरी

फिर तीज दिवस मोहरत दुजेस। उठि प्रात भींम हिंदु नरेस ॥
पहु फटि धट्टि सखरीय तांम। मुख पीत हरित[1] प्राची[2] सुभांम ॥
तमचर[3] अवाज तारक विलाय। वगि सीत मंद मारुत सुभाय ॥
सतपत्र पत्र खुलि भ्रमत भौंर। गिर विटप तांम कुहकंत मौर ॥
खुलि देवद्वार पूजन प्रचार। सद होत संख झालर सुढार ॥
भैरुं विभास अरु ललित राग। न्रप देवद्वार सुनियत सभाग ॥
गतभर्त[4] कुलट[5] तिय वनिकधार[6]। आगतपति चकई[7] चोर[8] नार ॥
दुजराज जग्य मंजन सरीर। क्रत आंनहीक सर सरित तीर ॥
अलि धेन बंध छुटि पुहव डोर। गिर गुफा बंध तम उलुक चोर ॥
भय अरुन उदय प्राची दिसांन। रंगीय मजीठ मनुं सब जिहांन ॥
नभ मारतंड मंडल प्रकास। गुनचास कोटि इकसथ्थ उजास ॥
रवि दरसि भीम तव किय सनांन। सिव अर्चि नित्यक्रत करि सुजांन ॥
भोजन सु कीन्ह विधवत नरेस। सिंगार[9] सजि परिषद प्रवेस ॥१५॥

दुहा

सझि फरस ऊजल महल, हिंदु लाट न्रपराज।
हिंदे घलि चव तरफ तव, ऊछव तीज समाज ॥१६॥

कवित्त छप्पै

घलि हींदे चव तरफ, सुरख मखतूल रसांनह।
लायक तायफ लोग, तरां हींदत गवि तांनह ॥

---

१. दिसा २. पूरब ३. कुकड़ो (मुर्गा) ४. प्रविसित भर्तिका ५. कुलटा ६. वरणीथांण हुई ७. चकवा मिल्या दिन रा ८. चोर घर आया
९. हाशिये पर पेन्सिल से लिखा है—'शृंगार औरतों के होता हैं, मर्दों के नहीं।' इसके बाद निम्न पंक्ति लिखी गई है—'सजि वस्त्र भये परिषद प्रवेस'।

तीख खयाल मल्हार, होत रंगराग कुतूहल।
त्रतीय जांम अंबखास, जलजोर छुटत नल।।
श्रंगार सजि महारांन फिर,[1] नाव विराजत हिंदुपत।
फिर नाव उतर हय आरुहत, सहल तीज दिखन करत।।१७।।

दुहा

हथिद्वार मग संक्रमीय, आय भूप चौगान।
गज लराय वहुरे वहुर, सुभर सहल महारांन।।१८।।

कवित्त छप्पै

फिर असवारी वहुरि, दिल्लीद्वारह प्रवेसन।
तहां आय सव सहर तीज, त्रीय सजि सुवेसन।।
दु तरफ प्रज सजि सजि सिंगार, दिखन न्रप तीजन।
श्रवत इंद्र जलधार, भींम ऊछव चित भीजन।।
निरखत हगांम वरषत दरव, जगपालक आनंद जिय।
न्रपराज रांन अरसिंघ सुव, यह विध महल प्रवेस किय।।१९।।

रचि जगपत महारांन, छत्रसाली चिनी तहां।
होय तयारी बाग, घल्ल डोल्हर अभूत जहां।।
होय सेज तायार, कोट सुरराज अधिक छव।
श्री रांनी राठ्ठौर, आय हजूर भींम जव।।
पतिवरत जुगत जुत नेह पति, दोय देह मन अेक कहि।
तिंहि वखत भाग आलम खुलिय, लख गज सांसन मोज लहि।।२०।।

दुहा

यौं वारै राठौर कै, सुख किय भींम दिवांन।
कोट वरस अवचल यहैं, जोर रुकमिनी कांन।।२१।।

कवित्त छप्पै (दोढौ)

चंद्रकंवर की जनमगांठ, सांवन सुदि तेरस।
देरासर महारांन आय, कीय हवन जुगत जस।।

---

१. हाशिये पर पेन्सिल से लिखा है– 'सजि नीक वस्त्र माहान फिर'

फिर अंतहपुर प्रविस भीम, गुजरत नोछावर।
नृतत सहचरि जुथ्थ, ताहि द्रव्य देत नरेसुर ।।
वारीमहल मझार, फेर रेनवास पधारत।
चंद्र अनोप कुंवार, भीम भोजन संग धारत ।।
पातुर नचत[1] आंनंद जुत, दिवस रहत षट घरीय फिर।
हयरोह आय चवगांन न्रप, गज लराय आवत बहुरि ।।२२।।

दुहा

तव वारी राठौर को, उछव होतह अपार।
बड़ी छत्रसारी महल, सयन भीम छत्रधार ।।२३।।

सांवन सुदि पुंनिम दिवस, राखी वंधन जांन।
चंद्रकंवर आनोप यह, आवत भीम जवांन ।।२४।।

वंधत भीम जवांन कर, रछ्छा चंद अनोप।
माता पुत्र जवांन कर, राखी वंध सओप ।।२५।।

वाहर भीम पधार फिर, पांडे ओरी अग्र।
प्रथम पुरोहित अमर फिर, वांधत विप्र समग्र ।।२६।।

कवित्त छप्पै (दोढो)

दुतिय दिवस भद्दव सु मास, तिथ अेकम अवसर।
प्रात नाव असवार, हौत चित्तौर नरेस्वर ।।
जगनिवास विच आय, करत भोजन सु अयकर।
रुचि अभूत वांनगी, सुभट जीम्हत सराह करि ।।
दुतिया दिन आवत सु गोठ, घर बीकानेरीय।
अनठ जिनस षटरस सवाद, मनु अंम्रत घेरीय ।।
मोतीयरांम अरु विष्णुदत, किसननाथ मालम करत।
महारांन विराजत पंत तव, पुरसकार आतुर फिरत ।।२७।।

---

१. नरतंत सहेली

कवित्त छप्पै

मयारांम परिहार वेठि, अेको पान्हेरीय ।
खांन पांन तिन हथ्थ, धरत ध्रमस्वांम अफेरीय ।।
हुकंम दीन्ह बखतेस, तांम जीम्हन परुसावन ।
पुरसि गंज मिष्टांन, महारस मधुर सुहावन ।।
पुलाव मंस सुलक सुरस, भात गंज रोटी पुरीय ।
आचार साग पय पाक दधि, मनहुं ज्याग जुजठल करीय ।।२८।।

दुहा

रायसिंघ दादौ सु जिहि, तीन कोर दिय दांन ।
भर नामैं नागोर गढ, पात हिंद यो प्रमांन ।।२९।।

पदम कंवर ता घर जनंम, अचरिज कर तव कौंन ।
खांवद भीम हमीर विय, सो ओपम नर भौंन ।।३०।।

वीकानेरी गोठ किय, सुजस प्रगट नर भूंम ।
ता जीवन[1] के दरव में, जनम निकासैं सूंम ।।३१।।

ओधादारन रीझ दै, सुख किय भीम दिवांन ।
ध्रंम्ह महुरत तीज दिन, जग्य भूप जसवांन ।।३२।।

कवित्त छप्पै

तांम्रचूर जगि प्रात, सव्द सव जगत सुनाईय ।
वजि गजर जगीय नगार, सुर जगि सहनाईय ।।
जगि रिखेस जोगेस, ध्यांन मंजन तन सज्जिय ।
दंपति जगि आश्रित दुकूल, परजंक वितज्जिय ।।
रवि अरुन किरन जगि पुव्व दिसि, देवद्वार झल्लर वगीय ।
सत सुकृत दांन छत्रीय धरंम, भीमसिंघ जगत जगीय ।।३३।।

---

१. जीमन

छंद पद्धरी

उठि भीमसिंघ महारांन प्रात । रवि दरसि गंग जल मंजि गात ।।
करि वांननाथ अर्चन अभंग । सुनि कथा चरित रघुबर प्रसंग ।।
करि हवन पित्र तर्पन सु कींन । गौ पूजि विप्र गौ दांन दींन ।।
जगदीस सेवगर आय जांम । ल्हे चरनाम्रत करि पांन तांम ।।
पवसाक सझि नवरंग भूप । जवहार सुभित तन कांमरूप ।।
भदव सु मास काजरीय तीज । घलि हिंदुलाट न्रपराज रीझ ।।
वछि फरस खीरनिधि फेनमांन । चहुं ओर घलि हींदे सुभांन ।।
पचरंग रस्सी[1] मखतूल तास । पाटरीय रूप सोव्रन प्रकास ।।
तिहां हिंदुलाट थित भीमरांन । मुख अग्र कंवर सोभित जवांन ।।
चहुं ओर सुभट कवि पासवांन । धावर दुजेस अरु सचिव जांन ।।
तिह वखत आय तायफ अचभ । उरव्रसीय मनहुं दुति रूप रंभ ।।
करि करि सलांम हींदत तेह । झमकंत पाय नूपुर अछेह ।।
गावत मलार मझ तीज भाव । मानहुं मयूर सम कंठराव ।।
करि हावभाव मोहित नरिंद । पचरंग अब्र ढकि नेक चंद ।।
त्रय जांम लग्य ऊछव सु अेह । निरखंत भीम न्रपवर अछेह ।।
फिर उठि आय मझ अंबखास । नल छुटि देखि तिन चित हुलास ।।
दिन घटीय पंच रहि सेष जांम । पवसाक सझि थित नाव तांम ।।
फिर उतरि नाव चढि वाजराय । मग फीलद्वार[2] चवगांन आय ।।
गजराज लरावत तहां भूप । फिर दिल्लीद्वार प्रविसत अनूप ।।
दुव तरफ तीज त्रिय सझि सिंगार । निरखंत भूप प्रज प्रांनवार ।।
यह भांत तीज लखि भीमरांन । भीजंत तांम मन मोदमांन ।।
फिर राजद्वार प्रविसत नरेस । मझ महल भींम हिंदू दिनेस ।।
चीनी सु चित्रसालीय उतंग । रचि महल रांन जगपति सुढग ।।
तिंहि ठांम रचत अद्भूत वाग । सुभ व्रछ लता फल पुहुप लाग ।।
डोल्हर सु घल्लि रचि हिंदुलाट । सम इंद्र महल सोभत सुघाट ।।
तव वोकानेरीय श्री हजूर । ओसरह[3] विलसि पतिवरत पूर[4] ।।
तिय पदम कंवर अरु भीमरांन । द्वै देह त्रितव्रत अेकमांन ।।

---

१. डोर २. हाथीपोल ३. वारासु ४. नूर

सियरांम रूप विलसत हगांम । लख कोटि रीझ गज देत गांम ।।
आसीस देत सखि हरखि ईम । जुग कोर अमर यह जोर भीम ।।
चव जांम तीज करि सुख विलास । जगि प्रात भीम रवि लखि हुलास ।।३४।।

दुहा

दसम तेजला जांन तिथ, सुद पख भद्दव मास।
प्रात पधारत भीम तव, चंपाबाग हुलास ।।३५।।

कवित्त छप्पै

रहत वाग सब दिवस, भीम अरु कंवर जवांनह।
प्रात हि गोठ अरोग्य, सुनत रंगराग सुजांनह ।।
त्रितिय जांम गजरोहि, लिखत[1] मेलो महारांनह।
रावत दुल्लहसिंघ, विठि[2] गज चमर करांनह ।।
यह भंत महल आवत न्रपति, लिख[3] हगांम चिहुं ओर को।
निस च्यार जांम सुखमय विलसि, तब वारौ राठौर को ।।३६।।

दुहा

सुद भद्दव अकादसी, देवझूलनी नांम।
त्रतिय पहुर निकसत तहां, रेवारी श्रीरांम ।।३७।।

छंद पद्धरी

हिम कलस तास मढि कुसम छाय । साझत विमांन श्रीज्यांनराय ।।
य्याही विध पीतंवर विमांन । सझि कलस तास पुहपन समांन ।।
पवसाक सझि श्री भीमरांन । अरु सझि वसंन सुभ मति जवांन ।।
अंतहपुर डोढी भूप आय । निज भुज[4] विमांन हरि धरत चाय ।।
मुख अग्र स्यांम नटुवा नचंत । अरु न्रत्य राग पातुर रचंत ।।
त्रय पोर लग्ग ऊवहांन पाय । भुज धरि त्रिमांन चलि[5] हिंदुराय ।।

१. दिखत २. पिठी ३. दिख ४. कंध ५. हरि

फिर देत आसिका लछ्छि ईस । पय लग्ग तांम हय चढि नरीस ।।
हरि पछ रहत भ्रत सहित आप । जगदीस आय दुव हरि मिलाप ।।
सब सहर स्यांम साभित विमांन । करि भेंट सबन सिर नम्मि रांन ।।
दरीयाव आय श्री हरि जिवार । करि स्नांन सुफल श्रीफल उछार ।।
परसाद बंटि बाहुरि गुपाल । इम महल आय अनुचर भुपाल ।।
तब बीकानेरी महल आय । ओसर[1] सु बिलसि निस हिंदुराय ।।३८।।

दुहा

भदव सुदि चवदस अनंत[2], गज आरोहत रांन ।
रावत दुल्लह पीठ गज, चमर करत निज पांन ।।३९।।

महासती अरु निज पितर, तिनके लागत पाय ।
नूंत बुलावत तिनहि घर, श्राद्ध कर्म कहु राय ।।४०।।

....

.... ।।४१।।[3]

सुदि भद्दव पुंनिम दिवस, बाग सु ईछ विहार ।
गज लराय बासरो सु तब, कहै राठौर विचार ।।४२।।

छंद पद्धरी

सरद रितु, आसोज मास

आसोज सरद खंजन विचार । रितु दूत मनहुं धावत सुढार ।।
सरवर विहार कलहंस माल । सभ्भ कबिन रहट जूपित सुचाल ।।
आसोज मास पावन विसिख्ख । घर पितर आगमन प्रथम पख्ख ।।
जल पिंडदान तिन देत पुत्र । हिंदून कर्म यह जत्र तत्र ।।
फिर दुतिय पख्ख नवरात्रि आय । महमाय अर्चि दुर्गा वचाय ।।

---

१. वारो २. अंणंत चवदस (अनन्त चतुर्दशी)
३. मूलग्रन्थ में कवि ने इस स्थान पर हाशिये में 'भादवी पुंनम' का संकेत लिखकर पूरे दोहे की जगह खाली छोड़ रखी है और दोहा संख्या डाल रखी है । सं०

थापंना धारत खङ्ग तांम । आरंभ प्रतिपदा दिन सकांम ।।
तिन सथ्थ जात त्रय पासवांन । सुत पेम मोख चालुक सुभांन ।।
वखतेस मुसांनी रांमनंद । परिहार मयारांमह उकंद ।।
पवसाक नेग धन वगसि भींम । दे खङ्ग हथ्थ निज कर कदींम ।।
वडतुजक सवारीय खग्ग होय । ईतमांम लख्ख चित हुलसि लोय ।।
प्रावेस कृष्णद्वारह दिसांन । संन्यास वेठि धरि खङ्ग थांन ।।
त्रय पासवांन न्रप कदंम जाय । फिर करि सलांम निज ग्रेह आय ।।
वारो भटियांनी त दिय होय । सुख महल विलसि दंपति सजोय ।।
दिन दोज प्रात वजत दमांम । सजि सुभट सौर बत्तिस तमांम ।।
चोगांन पधारत भीमरांन । महाराज कंवर सथ्थह जवांन ।।
थित होत तखत हिंदू नरेस । निज ठांह वेठि भट द्रुज कवेस ।।
मंगवाय महिष झटको कराय । वाहुरत भीम सिंधुर लराय ।।
प्रावेस महल मध्यांन वार । कृत वरत सुभट कवि जुत सुढार ।।
दिन सप्त वरत यह भंत भूप । कृत भीम पाल जन सदय रूप ।।
फिर त्रतिय पोहर अंवाय माय । महारांन भीम सुत जुक्त आय ।।
दंडोत कीन किय नमसकार । करजोर विनय कृत छत्रधार ।।४३।।

छंद लघुनराज

अंवाव स्तुति*

नमांमि देव अंवका । इति

दुहा

करि स्तुति । इति

दुहा

भीम महल आवत वहुरि, अत तप सुजस उदोत ।
वीज दिवस निस हरखमय, हाडी वारी होत ।।४४।।

* 'अंत्राव स्तुति' का कवि ने प्रसंग वश मात्र संकेत ही दिया है, छंद संख्या भी नहीं लगाई है । सं०

तीज दिवस उषा समय, आय भीम चोगांन।
महिष भंजि गज जुट्टि, पुनि, आवत महल सुजांन ॥४५॥

दुहा

त्रतिय पहुर । इति*

छंद मोतीदांम

श्री हरसिद्धि स्तुति

नमो हरसिद्धि निधार अधार। इति ॥४६॥

दुहा

करि प्रनांम हरसिद्धि कौं, महल आय सीसोद।
वाघेली अवसर त दिन, निस विलास चित मोद ॥४७॥

छंद उद्धोर

दिन चौथ भीम दिवांन । जगि प्रात बाज चढांन ॥
चवगांन आय नरेस । थित तखत होत सुदेस ॥
हनि महिष जुट्टि गयंद । लखि खेल्ह तास अनंद ॥
फिर आय महल अभंग । सुख सयन कीन्ह सुढंग ॥
फिर त्रतीय जांम सधीर । आरोहि सिंधुर वीर ॥
चढि पिठ्ठ दूलहसिंघ । धरि चमर हाथ अभग ॥
खचि कर्न अंत कमांन । माहिष बेधत बांन ॥
पसु पार होत खतंग । पर रुधिर अभिजत अंग ॥
फिर खड्ग थापन आय । सिर नमत हिंदुन राय ॥
संन्यास भेष प्रनांम । करि तिलक आय स जांम ॥
फिर राजद्वार प्रवेस । कत भींम हिंदु नरेस ॥
राठोर वारो होय । जिय अंक दिखि तंन दोय ॥
अति हर्ष उछव सोह । निस बिलसि रांन समोह ॥४८॥

---

* 'दुहा' पूरा नहीं लिखा गया है। 'श्री हरसिद्धि स्तुति' का भी संकेत ही दिया गया है, छंद संख्या अंकित है। सं.

पंत्रमीय सुदि आसोज । चढि प्रात हय मनमोज ।।
चोगांन आय प्रथीप । थित तखत ह्वै अरिजीप ।।
छुटि महिप तव चोगांन । असवार पिठ्ठ लगांन ।।
खग सेल मार कटार । माहिष हनि धर डार ।।
तहां खाल विधावध होय । कवि वर्नि सकि नहि कोय ।।
फिर महल आवत भूप । कृत मोज इंद्र स्वरूप ।।
त्रय जांम बाज चढांन । आवत सु देवीय थांन ।।
तिहि अंनपूरन नांम । पय लग्य नरवर तांम ।।
फिर महल आय नरिंद । बनि सोभ रूप व्रजिंद ।।
सुरतांन तनया भांम । तिहिं पदम कंवर सुनांम ।।
निस होत वासरौ ताहि । खुस रांन तन मन चाहि ।।
बीकांन घर उतपत्ति । तिहिं करन सम सरचित्त ।।
निसि विलसि तासहुं रांन । रुकमिनीय कृष्ण समांन ।।४९।।

दुहा

बीकानेरी भीम दुहुं, अेक प्रांन द्वै देह ।
सुख बिलसत पालत जगत, नित प्रत अधिक सनेह ।।५०।।

छंद पद्धरी

छठ दिवस भीम महारांन प्रात । चढि वाजराज चवगांन आत ।।
गज रार दिखि महलन पधार । करि वर्त सयन कृत छत्रधार ।।
तिय जांम सिद्ध परबत सु लाल । तिहिं पाय आय वदत भुवाल ।।
फिर आय महल अरसीह नंद । निस विलसि सुख्ख मानहुं व्रजिंद ।।
वारौ तव झालीय व्रज कंवार । पतिवरत जुक्त पति हुकम धार ।।५१।।

उठि प्रात सप्तमीय दिन नरेस । चवगांन आय सुरराज वेस ।।
चवगांन महिप छुटि हुकम होय । हय पिठ्ठ वार खग सेल जोय ।।
गज जुध्ध दिखि फिर महल आय । करि वर्त सुनत रंगराग चाय ।।
भिखारिनाथ पय त्रतीय जांम । कृत आय भीम दरसन सकांम ।।

फिर आय महल मझ महारांन । वारौ तव मोतीय पासवांन ।।
निस सयन करत अरु उछव अंग । नाना विलास सम रति अनंग ।।५२।।

अष्टमीय दिवस भंडार भोम । थापना अग्र तहां होत होम ।।
दुव नागनेच अरु बांन माय । दरसंत भीम करि पूज पाय ।।
अवसर पंवार निस समय जांन । विलसंत सयन सुख भीमरांन ।।५३।।

दिन नवम प्रात जगि हिंदुराय । खेरैसमीन गुरु दरस आय ।।
करि दरस होम गुर पाय नम्मि । फिर हर्ष जुक्त निज महल क्रम्मि ।।
फिर त्रतिय जांम आवत खरग्ग । संन्यासि पोषतन गोठ जग्ग ।।
महलन मझार फिर गोठ होय । आसव दुबार मनुहार जोय ।।
कृत वर्त्त अष्टमीय भट बरुथ । कवि पासवांन धावर स जुथ्थ ।।
भटियांनी वारौ जांन तांम । निस विलसि भींम पतिवर्त्त भांम ।।५४।।

छंद पद्धरी

दिन विजयदसमि महारांन भीम । हयरोहि सोह सूरत असींम ।।
सझि त्रतिय जांम दल बजि बंब । छत्तीस वंसु जुध जैत खंब ।।
खचि बारगाह तोरन सुभाय । खेजरीय पुजि उतराध आय ।।
तोरन सुवंदि मघ प्रविस जांम । सोरह बत्तीस भट आय तांम ।।
परिषद सु थांन निज बैठि सव्व । अर्चंत सभीय महारांन तव्व ।।
पूजीय सुपथ्थ धनु बांन धार । तिहिं पूज सर्ब कृत छत्रधार ।।
अमरेसुर प्रोहित भट अभंग । भट लखम रु नरभैरांम संग ।।
अरु कथाभट्ट सब विप्र और । कृत वेद मंत्र निज बैठि ठौर ।।
कृत निजर नुछावर सर्व आय । भट सचिव पात धावर सुभाय ।।
किय हुकम तांम चारन कवेस । जस पढन भींम हिंदू नरेस ।।
पातल हमीर अरसी सग्रांम । जगतेस भीम जस उचरि तांम ।।
फिर हुंकम भीम किय तोबखांन । तब सिलक होत मनु नभ गजांन ।।
दिय पांन सुभट कवि कुरब दींन । धावर सु पांन व्रवि महर कींन ।।
फिर वहुरि सभा निज महल आय । आरोग्य गोठ अत सुचित चाय ।।
वारौ हाडी तिहिं दिवस होय । आंनंद विलसि निस सयन जोय ।।५५।।

कवित्त छप्पै

अेकादसमीं दिवस, जांम वजि त्रतीय नववति ।
होत गज्ज असवार, भीम चित्तोर दुरगपति ।।
दुल्लहसिंघ आरोहि, पिठ्ठ गज चमर हथ्थ धरि ।
आय सव ऊमराव, कुरव तिन देत नरेसुर ।।
दिल्लीदवार मग संक्रमत, हय गय रथ पयदल अमित ।
तव आय महोला मंगरीय, हय अरोहि तहां होत थित ।।५६।।

गाफ साह अंगरेज, मझ असवारी आवत ।
करि सलांम महारांन, कुरव कर पलकन पावत ।।
दुतरफ वंधत फरह, होत आयस छुटि तोपह ।
मनु भद्दव निस अद्ध, गरजि घन वद्दल ओपह ।।
आतस चरित्र वहु भंत छुटि, दुसह जुथ्थ पावत दहल ।
सब मांन रखि दे कुरव भट्ट, फिर दिवांन आये महल ।।५७।।

दुहा

आय महल अरसिंघ सुत, जग दातार सु जांन ।
वाघेली वारौ त दिन; निस विलसत महारांन ।।५८।।

सुदि आसू चवदस त दिन, जगनिवास न्रप आय ।
श्री हाथह व्यंजन करत, सुभ वांनगी सुभाय ।।५९।।

चतुरदसी की रात विच, जगनिवास रहि भीम ।
प्रात सरद पून्यम दिवस, सुनि रंगराग सनींम ।।६०।।

कवित्त छप्पै

दिन पुंनिम फिर त्रतिय जांम, करि गोठ सु भोजन ।
सझ्झि स्वैत पवसाक, नाव आरोह प्रसंन मन ।।
उतरि नाव हय रोह, भूप चवगांन पधारत ।
गज लराय लखि खेल, वहुरि निज धांम विहारत ।।

तिहिं वखत करत प्राकास ससि, सरस सेत दुति जग सुभय।
नभ धरत र गिरय देह धरं, मनु किये सब रूप मय ॥६१॥

आय महल महारांन, सझि सिंगार कांम दुति।
तव वारै राठौर, आय हजूर पातिव्रत॥
अंतहपुर मझ वेठि, गोठ चांदिनीय अरोगत।
निरख सहेली नाच, भांत भांतन सुख भोगत॥
रचि सेझ चित्रसारी वडीय, अरु वारौ राठौर कौ।
तिहिं समय भोज क्रंन रूप चित, भींम हिंदु सिरमौर कौ॥६२॥

दुहा

कातिक वदि तिथि कुहु सु तिहिं, दीपमालिका[1] नांम।
घर घर चित्र विचित्र दुति, ऊछव जगत तमांम॥६३॥

कवित्त छप्पै

दीवारी दिन प्रात जग्य, चित्तौर नरेसर।
गनि राजेस उमेस, करत आरती दुजेसर॥
त्रतिय जांम आरोग्य गोठ, देरासर आवत।
करि पीतंवर सेव, सज्जि आरती सुभावत॥
मेरये वगसि ईखह सबन, अंतहपुर प्रावेस कर।
वाहर पधारि अस आरुहत, हीर सिंचावन हरख धरि॥६४॥

आय भ्रात सिवदांन ग्रेह, अंतहपुर अंदर।
हरखि हीर सिंचवाय, फेर बाहुरि लैनिज्जर॥
सुरजमल निज भ्रात, तास घर आय अनंदह।
अंतहपुर सिंचवाय हीर, फिर आय नरिंद॥
आनोप सदन अंतहपुरह, हीर सिंचाय दिवांन तव।
फिर हीर सिंचावन हिंदुपत, आय ग्रेह परधांन जव॥६५॥

---

१. दीवाली

दुहा

दीवारी तहवार दिन, ह्वै वारौ राठौर।
विलसत रुकमिनि कृष्ण सम, भींम हिंदु सिरमौर ॥६६॥

छंद पद्धरी

दिन दुतिय दीपमाला सु प्रात । खेखरो नांम आलम कहात ॥
उठि प्रात समय प्रोहित दुजेस । आरती करत हिंदु दिनेस ॥
फिर त्रतीय जांम आरुहि ब्रहास । चवगांन आय न्रपवर हुलास ॥
भट पासवांन कवि अहम लार । थित तखत भूप परिषद मझार ॥
चावकन करत आयस नरेस । जुटि बाजराज दोरत विसेस ॥
हय पाय झाट थर थरत भोम । सपतास खंच रवि थकित व्योम ॥
हय जुरन तेज पय लखि अथाह । न्रप सुभट जगत कहि वाहवाह ॥
रुसनाय आय फिर वंद जोत । छोड़न दयंत तव हुकम होत ॥
छुटि देत वांन चलि सोर जोर । मुख सेस ज्वाल मनु सघन घोर ॥
छूटत खयाल फिर नेक भंत । मनु भू अभूत तारक सुभंत ॥
फिर बाजराज चढि भीमरांन । महलन पधारि मन मोदमांन ॥
तव बीकानेरीय महल आय । वारौ विलास सुख हिंदराय ॥
सुध कातिक चवदस फिर नरेस । कृत जगनवास सुखमय प्रवेस ॥
कृत भोजन नज कर सुधारूप । जीमंत सुभट कवि जुक्त भूप ॥
निस सयन करत आंनंद मांन । जगि सु प्रभात राका प्रमांन ॥
आरोग गोठ फिर त्रतिय जांम । नौका सवार सर विहर तांम ॥
जग दीपदांन जल घाट घाट । दीपास्त्र मनहुं विध भुम्मि थाट ॥
प्रतवंब परत जल दीपमाल । संजीवजरी मनहुं सुढाल ॥
करि नाव सहल कातकिय दीह । छुटवाय ख्याल निरखत अवीह ॥
फिर उतर नाव चढ बाजराज । न्रप भीम आय महलन सकाज ॥
अंतहपुर अंदर प्रविस जांम । करि चंदकंवर न्रपवर सलांम ॥
महलन पधारि सज्झिय सिंगार । पतिव्रत हजुर रांनीय पधार ॥६७॥

दुहा

बीकानेरी को सुनहु, वारौ ता दन होय।
भीमरांन विलसत सु नत, येक प्रांन तन दोय ॥६८॥

कवित्त छप्पै

अगसिर वदि नम दिवस, गनिक जोतष निरधारहु।
लखम रु नरभैरांम, देत मोहरत सिकारहु॥
दोय घरी निस सेष, तांम घरहर नगारह।
आखेटक अ्रत जंत, होय सब संज तियारह॥
रूमालवगस सभंत सलह, वार आय अगिया क्रमत॥
सोरह वत्तीस पसवांन कवि, धावर सब सरकार जुत॥६९॥

छंद त्रोटक

रितु आय हिमंत सुहावनयं। इति[1]

दुहा

गुजर नजर आखेट जय, आय रांन[2] आवास।
वारौ वीकानेरनी, सुख क्रत भीम विलास॥७०॥

कवित्त छप्पै

त्वै हाक गिर तख्ख, प्रात महारांन पधारत।
वंट मुलसत सुभर, हात निज तुपक सु धारत॥
सिंघ सुर म्रग रीछ, उठिते फुट गिरत धर।
रीझ भीम महारांन, मौज अ्रत देत नरेसर॥
नागंद्र अखारै आय न्रप, वारिगाह खच कमर खुलि॥
आरोग गोठ सुभटन सहत, हय अरोहि निज महल हलि॥७१॥

दुहा

वीकानेरी को सुनहु, ता दन वारौ होत।
भीम अनंग सम रति विलसि, अंग अंग हरक उदोत॥७२॥

---

१. छंद त्रोटक पूरा नहीं लिखा है। कवि ने हाशिये में संकेत स्वरूप लिखा है 'रितु हिमंत विलसतं न्रपतं' अठा आगे लखणो २. भीम

कवित्त छप्पै

फिर हाको कमलोद होत, पव्वय जग जाहर।
मुल बैठ महारांन, हनत येकल म्रग नाहर।।
आय कानपुर ग्रांम, गोठ कर चंद्रकंवर जहं।
सुत सुभटन जुत भीम, करत भोजन रुचि रुचि तहं ।।
फिर ह्वै सवार आवत महल, रागरंग ऊछव ज दन।
निस विलसि भीम आनंदकृत, वाघेली वारो त दन।।७३।।

दुहा

पोस सुदी चवदस दिवस, जगनिवास न्रप आय।
निज कर करत सुवांनगी, निसा बसत सुख पाय।।७४।।

छंद उद्धौर

दिन पोस पुंनिम भूप। सझि साझ मन्मथ रूप।।
त्रय जांम गोठ अरोग। षटरसन व्यंजन भोग।।
आरोहि नाव सुढंग। निज महल आय अभंग।।
त्रयपोल परिषद तांम। थित तखत न्रपवर जांम।।
मढि वसन स्यांम सुढार। गजफूस होत तयार।।
गजफूस दिघ्घ विसख्ख। तल गोख चिंनीय रख्ख।।
कृत होकम निज गजराय। गजफूस तांम भंजाय।।
यह निरख कोतुक रांन। निंस सयन हर्म्मं करांन।।
राठौर वारो होय। चव जांम रसमय जोय।।७५।।

इति हिमंत, अथ ससिर मध्ये

कवित्त छप्पै

माह मास रितु ससिर आय, वासंत सु पंचमि।
प्रात जग्ग महारांन भीम, पूजि बांननाथ नमि।।
होय तियारीय सभा, आय भट सोर वत्तीसह।
वंदि तांम वासंत, लोक तायफ नर ईसह।।

प्रासाद आय पीतंवरह, फाग वलावत भीम अप।
फिर ज्यांनराय बसंत बंदि, होत तखत असवार न्रप ॥७६॥

जगंनाथ मिंदर[1] पधार, क्रत दरस हिंदुपत।
हर हि फाग खिल्हवाय, आय महलन भोजन क्रत॥
त्रतिय जांम गरहर नगार, चवगांन पधारत।
गज लराय फिर महल आय. सहेलीय नरतत॥
सिवसिंघ सुता उदार चित, अवर नार तिह जोर कौ।
निस भीमरांन सुख विलसि तब, जब वारौ राठौर कौ॥७७॥

छंद पद्धरी

सुदि माह सु तिथ सत्तम प्रकास। जग प्रात भींम रवि लखि हुलास॥
सिव पाय सेव पवसाक सज्झ। थित तखत होत छभ जगत रज्ज॥
करि नागनेच पूजन अभंग। तिहिं नांम सप्तमीय तिथि प्रसंग॥
अंतहपुर अंदर प्रविसि जांम। क्रत चंद्रकंवर पय वंदि तांम॥
वाहर पधारि रंगराग श्रोत। फिर त्रतिय जांम नंगार होत॥
असवार होत चवगांन आय। वहुरंत फेर फीलन[1] लराय॥
महलन पधारि श्रंगार राच। फिर होत सहेलिन राग नाच॥
वारौ सु विकानेरीय सुभाय। विलसंत सुख्ख निस हिंदुराय॥७८॥

कवित्त छप्पै

होत प्रात असवार, भींम माही पुंनिम दिन।
आय वाग सरवत विलास, सब दिन सुख साजन॥
त्रतिय जांम आरोग गोठ, चवगांन पधारत।
गज लराय बाहुरीय, फिर महलन पग धारत॥
आनंद जुगत चित निस समय, भींम हिंदु सिरमौर कौ।
वारौ विलास जानहु त दिन, हाडी कुंवरि किसौर कौ॥७९॥*

□

---

१. मंदिर २. सिंधुर

* 'भीम विलास' की मूल प्रति में 'तेहवार वर्णन' उपर्युक्त सात माह का ही लिखा मिलता है, शेष पांच माह का वर्णन उपलब्ध नहीं है। सं०

किसना आढ़ा रचित

गीत

सीसोदा गांव का दांन

कीजे[1] कुण-मीढ न पूजे[2] कोई,
धरपत झूठी ठसक धरै।
तो जिम 'भीम' दिये तांबापत्र,
कवां[3] अजाचो भलां करै।।१।।

पटके अदत खजांना पेटां,
देतां वेटां पटा दियै।
सीसोदो सांसण सीसोदा,
थारा[4] हाथां मौज थियै।।२।।

मन महाराण धनो मेवाड़ा,
दाखै धाड़ा दसूं दसा।
राजा अन बांधे रजवाड़ा,
तूं गढवाड़ा दिये तसा।।३।।

अधपत तनै दियारौ अंजस,
लोभी अंजस लियारौ।
भांणै[5] साच जणायौ 'भीमा',
हाथां हेत हियारौ।।४।।

गीत

दान-वीरता का वर्णन

कल थाकां फैल सूमं अनकारां,
पहड़े न्रप सारा प्रथमेण।
वसुधां कर थारा यूं वरते,
भोज करन वारा 'भीमेण'।।१।।

---

१. करे २. पूगे ३. कव्यां ४. थारेज ५. भोयणे

नासत पूळ आवतां नरेसां,
मन आसत छेड़े दत्त मोद।
डहियौ तैं भूरा भुजडंडां,
सिविर दधीच पणु सीसोद ॥२॥

मठो वाव वजतां पुळ माठी,
महपालां तजतां मन मांण।
रे धुर धमळ तूज भुज रहियो,
रजवट आगाहट कर रांण ॥३॥

हेल हमीर आज तो हूंतां,
राणा हिंदू धरम रहे।
'भीमा' अपहड़ तणे भुजाळा,
विरदाळा आखड़ी वहे ॥४॥

गीत

कवियों-वीरों का पारखी

पारख धन'भींम' अभनमा पातळ,
सुजते आलम कलम सखे।
कहणां सुकव भापणां काछी,
रावत लड़णां जिके रखे ॥१॥

सुत अड़सीह जौहरी साचा,
काचा अरघै मांन कसे।
जस उचरां कचरां झंपाळा,
वर अछरा भड़ कने वसे ॥२॥

गुर सांचै सीखवी अंगूठी,
कीमत झूठी कवण कहे।
गुण जोड़ा गज मोड़ा घोड़ा,
रिमदळ तोड़ा जोध रहे ॥३॥

समरथ परख 'भींम' सीसोदा,
कथ आनालक वचन कहीं।
सोना परख पले बांधा सो,
नहचे तांमां हुवे नहीं ॥४॥

गीत

दान-यश वर्णन

कूटां चहुं जाणे हेक हुवो कन,
हिक बीसलदे अपत हुवो।
सु दतां मुवा जीवता सबदां,
माठो न्रप जीवतो मुवो ॥१॥

जग हमीर जसराज जनमियो,
अन अदात अन रहे अरीस।
दुनियां अमर वांकड़ा दाता,
सूमड़ा जीवत मड़ा सरीस ॥२॥

जगो अचल दस सहसो जाहर,
नव सहसो उदल नाकार।
जगदातार जुगोजुग जीवे,
तन सावत मुरदो अदतार ॥३॥

मागा छतां तपण अछ तामह,
सूतक वाल म्रतक सहनांण।
जुग जातां वातां 'भीमाजल'
दाता अमर रहे दीवांण ॥४॥

गीत

दान महिमा

लज राखण 'भीम' दासलह वहीयां,
दहीयां दलद असह दहलोत।
कूण जाने दुखं सहीया कहीयां,
गहीयां हाथ जिकां गहलोत ॥१॥

लख सांसण कुख लाभीयां,
धन दावीयां चरू निजधांम।
फील बंध नर जकै फाबीयां,
सूकर ढाबीयां वीये संग्राम ॥२॥

ज्या पग अडग भांण सीस जैते,
मांने कांण जगत अणमाप।
न्रप अहनांण हुवा जैं नसचै,
पांण झालीयां दूवै प्रताप ॥३॥

सुण तै गाथ कमंध कछ सूणीयां,
नहचे वेणीयां पात नरेस।
महमा हाथ 'भीम' महरांणां,
जग अखीयात दुवा जगतेस ॥४॥

गीत

यश वर्णन

बैठो अड़ाकां रावतां हेट हेटो जंग जेतवार,
मेटो रोर पातां थेटो पलेटो समोद।
हेक अणी न नामे दलीस अंवखास हेटो,
साचो 'भींम' थारो छेटो लपेटो सीसोद ॥१॥

दमी सत्रां अदंमां अखंमीआर जगा दूजा,
पाडिसां विखंमी वागां न भीमीस सपीठ।
जमी नवा खंड़ां भालो ऊगंमी रसमी जैते,
केलपुरा वालो एतो अनंमी किरीठ ॥२॥

झड़ी डंकां वाहरां नकाई ताय वाघ झूठे,
अड़ीघां साहरां की वजाई खाग आप।
खुमाण साहरां गोखां नमाई न रहे खड़ो,
पाधरो जाहरां धड़ो विजाई प्रताप ॥३॥

अभेटे कुराण भेटे पुराण सांभलो ईस,
खेटे लाग असुराणां चोवलो खपांण।
गण हेटे डंड झोल दे न नामा व (गो) लो,
हिंदु थांरो लपेटो ऊजलो हिंदुवांण ॥४॥

□

(१) नवा गाम का ताम्रपत्र, वि. सं. १८६३ आसाढ़ सुद ४ बुधवार

॥ श्री रामो जयति ॥

श्री गणेस प्रसादातु — श्री एकलिंग प्रसादातु

भाले का निशान

सही

१- महाराजाधिराज महाराणा श्री भीम
२- सिघजी आदेशातु आड़ा कीसना दुलाव
३- त कस्य गाम नवो गाम प्रगणे चावड रे त
४- ने आघाट करे दीदो लागत वीलगत गा
५- म टको दाण सुदी सो चोलण कणी वात री
६- व्हेगा न्ही स्वदत्तां परदत्तां वाजे हरंती वसु
७- धरां षसी व्रष सहस्राणी वीसटायं जायेते
८- क्रमी दुवे श्री मुष लीषता पंचोली वलभ दा
९- स गीरधरलालोत संवत १८६३ वर्षे असा
१०- ढ सुद ४ बुध[1]

(२) सारणों का खेड़ा का ताम्रपत्र, वि. सं. १८६७ मृगसिर विद १२ शुक्रवार

॥ श्री रामो जयति ॥

श्री गणेस प्रसादातु — श्री एकलिंग प्रसादातु

भाले का निशान

सही

१- महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंघ जी
२- आदेशातु आडा कीसना दुला रा कस्य गाम सा
३- रणां रो षेडो प्रगणे पुर रे तोहे आघाट करे ता
४- वापत्र करे दीदो लागत वीलगत षड लाषड
५- गाम टको सरव सुदी सो कणी वात री चोल

---

१. ताम्रपत्र का आकार–१९.५ × २९.५ से. मी.

६- ग्रा वहेगा नही स्वदत्तां परदत्तां वाजे हरं
७- ती वसुध्रां पस्टी व्रष सहस्राणी वीसटायं
८- जायेते क्रमी दुवे श्री मुष लीषता पंचोली व
९- लभ दास गीरधरलालोत संवत १८६७
१०- रा मगसर वीद १२ सुक्रे [1]

(३) वलदरखा का ताम्रपत्र, वि. सं. १८७३ पोष सुद ३ रविवार

॥ श्री रामो जयति ॥

श्री गणेस प्रसादातु श्री एकलिंग प्रसादातु

भाले का निशान

सही

१- म्हाराजाधिराज म्हाराजकुवार श्री अमरसीघजी आदेशातु
२- आढा कसना दुलावत कस्य म्हे चीत्रकोट ऊप्रे थांहे नीवा ज
३- स कर हाथी १ घोड़ो १ रूपा री सागत सु गाम १ वलदर
४- षो प्रगणे चीत्रकोट रे तावापत्र ऊदक आगाट करे दीवा
५- णी नीम सीम लोग भोग लागत वीलगत डंड वीराड ष
६- ड लापड गाम टका सुदी मया कीदो सो कणी वात री चोल
७- ण व्हेगा न्ही थे हे थाहारो पावा जावोगा सवदत्तां परद
८- तां वाये हरंती वसुध्रा षस्टी व्रष सहस्राणी वीसटायं
९- जायेते क्रमी प्रत दुवे पंचोली वीसवनाथ भट सुष
१०- रांम लीपता पंचोली सुरतसीघ नाथुराम रा संवत
११- १८७३ वर्षे पोस सुद ३ र वे ऊ [2]

---

१. ताम्रपत्र का आकार-३० X २० से. मी.
२. ताम्रपत्र का आकार-२४.५ X ३१.८ से. मी.

(४) वड़ा सीसोदा का ताम्रपत्र, वि. सं. १८७५ चैत्र विद ५ मंगलवार

॥ श्री रामो जयति ॥

श्री गणेस प्रसादातु | श्री एकलिंग प्रसादातु

म्हार वंरो उठावेगो श्री जी

पुगेगा जीने तलाक छे

भाले का निशान

सही

१- महाराजधिराज महाराणा श्री भीमसिघजी आदेशातु आडा कस
२- ना दुलावत कस्या थाहे म्हे नीवाजस कर अजाची कीदा जणी
३- रा बगसीस महे गाम वडो सीसोदो प्ररगणा पाहालाव ला
४- रे थाहे नीम सीम भागल ऊणी री लारे वे ज्या चाम चाम जमी
५- लोग भोग डड वीराड षड लाषड गाम टको लागत वीलग
६- त रूष वरष कुडा नीवाण सरब सुदी आघाट सासण कर म्हे
७- कसी व हे बगसीस कीदो हे सो थारा वेटा पोता सपुत कपुत पी
८- डी दर पीडी तारी गडवाडो करे दीवाणो हे सो थे घणी जमा
९- षातर सु षावा पाया जावोगा अणी गाम्ह सु सली १ जतरी षेच
१०- ल वेगा नही म्हारा वन्स रा वेगा सो तो अणी गाम री परतपा
११- ल राषेगा सीसोद रा वन्स रा असल वेगा सो तो थारी
१२- अर अणी गाम री मरमरजाद प्रतपाल राषेगा हुकम
१३- श्री मुष मारफत रावत जवानसीघ जालमसीघोत सव द
१४- त्तां परदत्तां वाजे हरंती वसुधरा ससटी व्रस सह
१५- सराणी वीसटायं जायेती करमी प्रत दुवे पंचो
१६- ली कसननाथ लीषता पंचोली सुरतसीघ नाथुराम
१७- रा संवत १८७५ वर्षे चेत व्दी ५ भोमे [1]

---

१. ताम्रपत्र का आकार-३९ × २४.५ से. मी.

(५) गोवला का ताम्रपत्र, वि. सं. १८८२ आश्विन विद ७

॥ श्री रामो जयति ॥

श्री गणेस प्रसादातु

श्री एकलिंग प्रसादातु

म्हारो वचन छे सो उथापेगा नही

भाले का निशान

सही

१- महाराजाधिराज महाराणा श्री भीमसिंघजी
२- आदेशातु आहडा कीसना वेटा मेसा दुला
३- वत कस्य गाम गोवला प्रगणे वेगम रे था
४- हे रावत सवाई माहासीध दीदो सो म्हे थाहे
५- राजी वे ने तावापत्र आघाट सासण करे
६- दीदो नीम सीम माल मगरा लोग भोग ला
७- गत वीलगत डंड वीराड षड लाषड माल गा
८- म टको था ओर ही ऊणी प्रगणे लागत लाग
९- ज्या था हे वगसी हे सो थे लीजो श्री द्रवार सु कड़ी
१०- वात री षेचल वेगा न्ही ने वेगम री आडी सु प
११- ण कोई पेचल करेगा न्ही थारा वेटा पोता पाया
१२- पाया जायगा म्हे राजी वे ने वगस्यो हे सो आवादा
१३- न करजे म्हारो वचन हे स्वदत्ता प्रदत्ता वाजे
१४- हरंती वसुध्रा पस्टी व्रष सहसाणी बीसटाय
१५- जायेते क्रमी दुवे श्री मुष लीषता पंचोली
१६- सुरतसीध नाथुरामोत संवत १८८२ रा
१७- आसोज वदी ७ [1]

---

१. ताम्रपत्र का आकार-३२ × १९ से. मी.

ऐतिहासिक व्यक्ति सन्दर्भ

१. अक्षयकुंवर (७९/२८२)[1]

यह महाराणा भीमसिंह की रानी तथा ईडर के राजा शिवसिंह की पुत्री थी। इसका विवाह वि. सं. १८३९ ज्येष्ठ वदि ११ को हुआ था।

२. अगरचन्द (२०/७२, ४५/१५६, १०९/३६९)

मेहता पृथ्वीराज का सबसे बड़ा पुत्र। महाराणा अरिसिंह ने इसे सामरिक महत्व के किले मांडलगढ़ का किलेदार एवं उस जिले का हाकिम बनाया। माधवराव सिंधिया के साथ उज्जैन की लड़ाई में मेवाड़ की सेना की ओर से लड़ा और घायल हुआ। टोपल मगरी व गंगरार की लड़ाइयों में भी भाग लिया। महाराणा हमीरसिंह (द्वि.) के काल में यह अमरचन्द बड़वा का सहयोगी रहा। महाराणा भीमसिंह ने इसे प्रधान बनाया।

३. अजबकुंवर (१५१/५४७)

महाराणा भीमसिंह की पुत्री। महारानी बाघेली जी इसकी माता थी। इसका विवाह बीकानेर के राजा सूरतसिंह के पुत्र रतनसिंह के साथ हुआ था।

४. अजीतसिंह, कानोड़ (१२७/४४१)

यह ठिकाना कानोड़ के रावत जालिमसिंह सारंगदेवोत का पुत्र था। महाराणा भीमसिंह के समय में वि. स. १८५९ में चेजा घाटी की लड़ाई में घायल हुआ था।

५. अजीतसिंह, बूंदी (५६/१८६)

यह बूंदी के महाराव राजा उम्मेदसिंह का पुत्र था। वि. सं. १८२७ वैशाख वदि १२ को अपने पिता की आज्ञा से बूंदी की गद्दी पर बैठा। मेवाड़

---

१. पृष्ठ एवं छंद संख्या अर्थात् पृष्ठ ७९/छंद संख्या २८२

के महाराणा और अजीतसिंह के बीच विलहठा गांव में किला बनाने के प्रश्न पर विवाद हुआ। अरिसिंह जब अमरगढ़ गया हुआ था तब अजीतसिंह महाराणा अरिसिंह को शिकार के बहाने ले गया और धोखे से वि. सं. १८२९ में हत्या कर दी। अजीतसिंह का केवल २१ वर्ष की आयु में वि. सं १८३० वैशाख सुदि १५ को चेचक की विमारी से निधन हो गया।

६. अनोपकुंवर (१६१/५८१)

यह महाराणा अरिसिंह की पुत्री थी। इसकी माता का नाम अमृत कुंवर (देवड़ोजी) था।

७ अब्दुल रहीम बेग (२८/९२, ३०/९२)

यह महाराणा अरिसिंह (द्वि.) की सिंधी सेना का अफसर था। ग्रंथ में इसके लिए 'सेरवेग' नाम आया है।

८. अमरसिंह (१०६/३५५, १४१/५०७)

यह महाराणा भीमसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म वि.सं. १८५१ में हुआ। इसकी माता का नाम गुलाबकुंवर (राठौड़णीजी) था। वि. सं. १८७२ में बिशनसिंह (कोटा) की पुत्री से विवाह हुआ। कुंवरपदे में ही इसका देहान्त हो गया।

९. अमरसिंह (प्र.) (८/४४, २३५/७६०)

मेवाड़ का महाराणा। यह महाराणा प्रताप का पुत्र था। वि. सं. १६५३ में राजगद्दी पर बैठा। इसने बादशाह जहांगीर के साथ संधि की। भीम विलास में इसे अम्मर, अमरसिंघ के नाम से सम्बोधित किया गया है।

१०. अमरसिंह (द्वि.) (८/४५)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १७५५ आश्विन सुदि ४ को गद्दी-नशीनी हुई। मेवाड़ में अनेक शासन सुधार किये। सरदारों की 'सोलह-बत्तीस' की श्रेणी निश्चित की। अमरशाही पगड़ी इसी के नाम से प्रचलित हुई।

११. अमीरखां पिण्डारी (१२७/४३९)

यह पिण्डारी नेता था। इसका जन्म फर्रुखाबाद में १७६८ ई. में एक रोहिल्ला कबीले में हुआ था। यह मोहम्मद हयात खां का पुत्र था। २० वर्ष की आयु में इसने गृह त्याग दिया। खेतड़ी के राजा बाघसिंह, जोधपुर के महाराजा विजयसिंह, इस्माइल बेग खां तथा बालाराव आदि की सेवा की जिसके बदले में इसने काफी धन अर्जित किया। जसवन्तराव होल्कर के साथ इसकी गहरी मित्रता थी। यह मात्र लुटेरी प्रवृत्ति का ही नहीं अपितु एक राजनीतिक महत्त्वाकांक्षी भी था। भीम विलास तथा ख्यातों में इसके लिए 'मीरखांन' नाम आया है।

१२. अर्जुनसिंह (३३/९८, ५४/१८१)

यह कुराबड़ ठिकाने का संस्थापक तथा सलूम्बर के रावत केसरीसिंह का तीसरा पुत्र था। रावत इसकी उपाधि थी। महाराणा जगतसिंह(द्वि.)के समय में अर्जुनसिंह को कुराबड़ की जागीर मिली। वि. सं. १८२६ में माधव राव सिंधिया के उदयपुर घेरा डालने के समय नगर की रक्षा करने में तत्पर रहा।

१३. अर्जुनसिंह, महाराज (२६/८२, ३३/९८, ५३/१७५)

यह महाराणा संग्रामसिंह (द्वि.) का चौथा कुंवर तथा शिवरती का स्वामी था। महाराज इसकी उपाधि थी। महाराणा अरिसिंह (द्वि.) के समय मेवाड़ पर माधवराव सिंधिया ने चढ़ाई की उस समय उसकी सेना से युद्ध किया। गगरार में महापुरुषों के साथ लड़ाई हुई उसमें यह महाराणा के साथ हरावल में रहकर बहादुरी के साथ लड़ा तथा घायल हुआ। महाराणा हम्मीरसिंह (द्वि.) की नाबालिगी के समय मुसाहिबों की सलाह से महाराज बाघसिंह के साथ इसने राज्य की रक्षा का भार सभाला था।

१४. अरिसिंह (द्वि.) (८/४६, ८/४७, २०/७२)

मेवाड़ का महाराणा। महाराणा जगतसिंह (द्वि.) का छोटा पुत्र था। महाराणा राजसिंह (द्वि.) के निःसन्तान देहावसान होने पर वि. सं. १८१७ चैत्र वदि १३ को राजगद्दी पर बैठा। वि. सं. १८२९ चैत्र वदि १

को बूंदी के राव अजीतसिंह द्वारा इसकी धोखे से हत्या कर दी गई। भीम विलास का चरित नायक महाराणा भीमसिंह इसी का पुत्र था। ग्रंथ में इसके लिए अड़सी, अरस, अरसिंघ, अरिसिंघ, आरसींघ आदि नाम आये हैं।

१५. आंबाजी इंगलिया (१००/३३४)

यह महादजी सिंधिया का सूबेदार था। सन् १७९१ ई. में महादजी ने इसे मेवाड़ के समस्त दीवानी एवं फौजदारी अधिकार सौंपे जिससे यह कुछ समय तक मराठों की ओर से मेवाड़ का सर्वेसर्वा रहा। मेवाड़ में यह ८ वर्ष तक रहा। महादजी की विधवाओं और दौलतराव में जो संघर्ष हुआ उस समय इसने दौलतराव का समर्थन किया, इससे दौलतराव ने इसे उत्तरी भारत का अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। मेवाड़ से इसने करीब २ करोड़ रुपये वसूल किये। इसकी मृत्यु ८० वर्ष की उम्र में ५ मई १८०९ ई. को हुई। ग्रंथ में इसके लए 'आंबौ' नाम आया है।

१६. उदयसिंह (७/४१)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १५९२ में राजसिंहासन पर बैठा। बादशाह अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के बाद वि. सं. १६१६ में उदयपुर बसाकर इसे मेवाड़ की राजधानी बनाई। ग्रन्थ में इसके लिए 'उदल' सम्बोधन हुआ है।

१७. उमाकुंवर (१०३/३४९)

यह ईडर के भवानीसिंह की पुत्री थी। इसका विवाह महाराणा भीमसिंह से गुलाबकुंवर के साथ ही हुआ, जो इसकी भुआ थी।

१८. उम्मेदसिंह (१४०/५०४)

कोटा के महाराव गुमानसिंह का पुत्र था। इसका शासनकाल वि.सं. १८२७-७६ है। इसकी लड़की किशोरकुंवर से मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह ने विवाह किया।

१९. उम्मेदसिंह, राजाधिराज (२०/७२)

शाहपुरा के राजाधिराज भारतसिंह का पुत्र था। महाराणा अरिसिंह (द्वि.) के विरुद्ध फितूरी रतनसिंह के बखेड़े के समय इसने महाराणा का साथ दिया था। ग्रन्थ में इसके लिये उम्मेद, उमेदसी नामों का प्रयोग हुआ है।

२०. एकलिंगदास बोलिया (३१/९६, ६७/२३९, ११७/४०२)

महाराणा अरिसिंह के समय से भीमसिंह के राज्यारोहण के समय तक यह मेवाड़ का प्रधान रहा। ग्रन्थ में इसके लिये एकौ, एकलिंग आदि नामों से सम्बोधन हुआ है।

२१. औरंगजेब (८/४५)

मुगलवंश का एक प्रसिद्ध बादशाह। शाहजहां के बाद यह दिल्ली के तख्त पर बैठा।

२२. कर्णसिंह (८/४४)

मेवाड़ का महाराणा और अमरसिंह का पुत्र। वि. सं. १६७६ माघ वदि २ को राजगद्दी पर बैठा। मेवाड़ में अनेक सुधार तथा निर्माण कार्य कराये। यह महाराणा वीर प्रकृति का था। भीम विलास में इसके लिये करन, करनसिंघ नाम आये है।

२३. किसना आढ़ा (१/०, २/६, ३/८, १४३/५१७, २३९/७७०)

'भीम विलास' ग्रन्थ का रचयिता। इतिहास प्रसिद्ध दुरसा आढ़ा के वंश में उत्पन्न हुआ। इसके पिता का नाम दुलहजी आढ़ा था। इसके द्वारा रचे हुए दो ग्रन्थ 'रघुवरजसप्रकास' तथा 'भीम विलास' प्रसिद्ध हैं। त्यौहार वर्णन तथा अनेक फुटकर गीतों की रचना भी इसने की थी। यह महाराणा भीमसिंह का समकालीन था। विशेष जानकारी के लिये भीम विलास ग्रन्थ की भूमिका दृष्टव्य है। ग्रन्थ में इसके लिये कसंन कसन, किसन, किष्ण आदि नाम आये हैं।

२४. कीकीबाई (१५१/५४९)

महाराणा भीमसिंह की पौत्री तथा कुंवर अमरसिंह की पुत्री। इसका विवाह किशनगढ़ के राजा कल्याणसिंह के पुत्र मोहकमसिंह के साथ हुआ।

२५. कुंभा (७/४१, २३५/७६०)

मेवाड़ का महाराणा। यह महाराणा मोकल का पुत्र था। वि. सं. १४९० में मेवाड़ के राज सिंहासन पर बैठा। इसका शासनकाल ३५ वर्ष तक रहा। कुंभलगढ़ तथा विजयस्तम्भ का निर्माण कराया। अनेक युद्धों में विजय प्राप्त कर मेवाड़ का गौरव बढ़ाया। अपने समय का महान् विद्वान्, शिल्प-शास्त्री, कला व संगीत प्रेमी और वीर था। ग्रंथ में इसके लिये 'कुंभो' सम्बोधन हुआ है।

२६. कुबेर (४९/१६५, ५३/१७७)

यह फतूर रतनसिंह का प्रधान था। वि. सं. १८२७ के वैशाख मास में इसने रतनसिंह की तरफ से महाराणा अरिसिंह की सेना से गगरार में युद्ध किया था। पकड़े जाने पर पेट में खंजर मारकर आत्महत्या कर ली। ग्रंथ में इसके लिये 'साह कुबेर' नाम से संबोधन हुआ है।

२७. केसर भण्डारी (१६०/५७५)

महाराणा भीमसिंह का कृपा पात्र। पहले अन्तःपुर का अधिकारी फिर राज्य का कर अधिकारी और अन्त में न्यायाधीश के रूप में नाम कमाया। महाराणा ने इसे चार गांवों की जागीर दी। ग्रंथ में 'केहर' नाम आया है।

२८. गजसिंह (१५१/५४८)

इसका पूरा नाम रावल गजसिंह भाटी था। यह जैसलमेर का शासक था। महाराणा भीमसिंह की पुत्री रूपकुंवर के साथ इसका विवाह हुआ था।

२९. गुलाबकुंवर (१०३/३४९)

यह ईडर के राजा शिवसिंह की पुत्री थी। महाराणा भीमसिंह ने इसके साथ विवाह किया था।

३०. गुलाबसिंह (१२१/४१४, १२३/४२४)

ठाकुर गुलाबसिंह ने वि. सं. १८६० के वैशाख सुदि ४ रविवार

को मराठा हरनाथ से युद्ध किया और वीरगति को प्राप्त हुआ। ग्रंथ में इसके लिये गुलवेस, गुलाब आदि नामों का सम्बोधन हुआ है।

३१. चंद्रकुंवर (चांदकुंवर) (१६१/५८१)

महाराणा अरिसिंह (द्वि.) की पुत्री। इसकी माता का नाम सरदार कुंवर झाली था। यह महाराणा हमीरसिंह तथा महाराणा भीमसिंह की सहोदरा थी। इसी का नाम चांदकुंवर बाई था। देलवाड़ा की भानजी थी।अविवाहित अवस्था में ही इसका देहान्त हो गया। महाराणा भीमसिंह ने इसकी स्मृति में 'चांदोड़ी' सिक्कों का प्रचलन किया।

३२. चंद्रकुंवरी (११०/३७१)

यह ईडर के राजा गंभीरसिंह की बहिन थी। महाराणा भीमसिंह का इसके साथ विवाह हुआ।

३३. चावड़ी जी ११४/३८९, ११४/३९०)

महाराणा भीमसिंह की रानी। इसका पूरा नाम गुलाबकुंवर था। महाराणा जवानसिंह इसी का पुत्र था। यह गुजरात परगने के वरसोरा ठिकाने के राजा जगपतसिंह की बेटी थी।

३४. जगतसिंह (प्र.) (८/४४, ६३/२२०, २३५/ ७६०)

मेवाड़ का महाराणा। महाराणा करणसिंह का पुत्र था। वि. सं. १६८४ में शासनारूढ़ हुआ। जगन्नाथराय(जगतशिरोमणी,जगदीश)के मन्दिर का निर्माण कराया। ग्रंथ में इसके लिए जगत, जगपत आदि नाम आये हैं।

३५. जगतसिंह (द्वि.) (८/४५,२०/७२, २१४/७१४)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १७९० माघ वदि ३ को इसका राज्याभिषेक हुआ। महाराणा संग्रामसिंह (द्वि.) के बाद मेवाड़ (उदयपुर) की राजगद्दी पर बैठा। पिछोला स्थित जगनिवास महल बनवाया। इसके लिये 'जगतेस' नाम भी प्रयुक्त हुआ है।

३६. जमशेदखां (१३०/४५१, १३८/४८७, १३९/४९५)

नवाव जमशेद खां का भीम विलास में 'जमसेर खां' नाम आया है। यह अमीर खां का दामाद था। इसके लुटेरेपन एव अन्याय की पराकाष्ठा से यह 'जमशेदगर्दी' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

३७. जयचन्द (१३८/४९०)

यह सोमचन्द गांधी का पुत्र था। अपने चाचा सतीदास की हत्या की खवर सुनकर अपनी रक्षा के निमित्त उदयपुर से नाई गांव की ओर भागा किन्तु रास्ते में यह पकड़ा गया और चूण्डावतों ने इसकी हत्या कर दी।

३८. जयसिंह (८/४५)

मेवाड़ का महाराणा और महाराणा राजसिंह (प्रथम) का पुत्र था। वि. सं. १७३७ में मेवाड़ की राजगद्दी पर वैठा। 'जयसमुद्र' झील का निर्माण कराया। ग्रथ में इसके लिये जयसिंघ, जैसिंघ, जैसी आदि नाम आये हैं।

३९ जयसिंहदेव (१८०/६२२)

यह वांधुगढ़ (रीवां) का राजा था। इसका पूरा नाम जयसिंधदेव वाघेल था। वि. सं. १८७८ वैशाख वदि १३ के दिन इसकी लड़की के साथ कुंवर जवानसिंह की शादी हुई थी।

४०. जवानसिंह (११४/३९०, १४०/५०३)

मेवाड़ का महाराणा। महाराणा भीमसिंह का पुत्र था। इसका जन्म वि. सं. १८५७ मार्गशीर्ष सुदि ३ को हुआ था। माता का नाम गुलाव कुंवर था। वि सं. १८८५ चैत्र सुदि १५ को राजगद्दी पर वैठा। यह मद्य और शिकार का शौकीन तथा पितृभक्त था। 'व्रजराज' उपनाम से कविता करता था।

४१. जसवन्तराव होल्कर (११६/५७३)

यह तुकोजी होल्कर का अवैध पुत्र तथा विठोजी का छोटा भाई था।

दौलतराव ने तुकोजी होल्कर के पुत्र मल्हारराव की जो दयनीय दशा कर दी थी, उससे जसवन्तराव उग्र होकर अन्याय का बदला लेने हेतु आतुर हो गया। सिंधिया के प्रदेशों को लूटता हुआ, उससे बराबर संघर्ष करता रहा। राजस्थान में इसका आतंक एवं प्रभाव विशेषरूप से रहा। २८ अक्टूबर १८११ ई. को ३० वर्ष की अवस्था में भानपुरा में इसका निधन हो गया।

४२. जसा (१६०/५७४)

यह दुल्हजी का पुत्र तथा किसना आढ़ा का भाई था। महाराणा भीमसिंह की कुंवरियों के विवाह के समय मौजूद था। इसके द्वारा रचे हुए फुटकर गीत मिलते हैं।

४३. जालमसिंह (७१/२६०)

यह महाराणा भीमसिंह का मामा था, जो उक्त महाराणा के ईडर के प्रथम विवाह के समय माहेरा (मौसार) लेकर आया था।

४४. जालिमसिंह (९५/३२२)

यह कोटा के झाला पृथ्वीसिंह का पुत्र था। १९ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यह राजस्थान के राजपूत सरदारों में बड़ा प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित था। महाराणा अरिसिंह ने इसे चीताखेड़ा की जागीर और राजराणा की उपाधि दी थी। मेवाड़ के आन्तरिक कलह में इसका काफी हाथ रहा था। राजस्थान के राजाओं की अंग्रेजों के साथ संधि कराने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह अपने समय का बड़ा राजनीतिज्ञ और वीर था। इसके वंशधर झालावाड़ के स्वामी हुए।

४५. झालीजी (४२/१३९, ५८/२००)

इसका पूरा नाम सरदारकुंवर था। यह महाराणा अरिसिंह (द्वि.) की पटरानी तथा महाराणा भीमसिंह की माता थी। इसका पीहर देलवाड़ा में था। यह राजराणा कानसिंह की बेटी तथा अजैसिंह की पोती थी। इसकी पुत्री का नाम चांदकुंवर था।

४६. झालीजी (१००/३३३)

यह तांणा के राज किशोरसिंह की पुत्री थी। वि. सं. १८४९ के वैशाख मास में महाराणा भीमसिंह ने इसके साथ विवाह किया।

४७. टॉड (१४६/५२३, १६१/५८१)

वि. सं. १८६३ में कप्तान जेम्स टॉड सिंधिया की सेना में रहने वाले अंग्रेजी राजदूत के साथ सर्वप्रथम मेवाड़ में आया था। वि. सं. १८७५ में दुबारा मेवाड़ में आया। पोलिटिकल एजेन्ट के रूप में काम करते हुए उसने महाराणा भीमसिंह तथा सरदारों के पारस्परिक सम्बन्ध स्थिर करने का कार्य किया। इसके नाम पर मेरवाड़ा में टाटगढ़ बसाया गया। ग्रन्थ में इसके लिये 'टाट साहब' नाम आया है। 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटिज ऑफ राजस्थान' तथा 'पश्चिमी भारत की यात्रा' इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

४८. दुलह पनावत (१०४/३५०, २३९/७७०)

यह आढ़ा पनजी का पुत्र तथा किसना आढ़ा का पिता था। महाराणा भीमसिंह के ईडर के दूसरे विवाह के समय साथ था। इसने अनेक फुटकर गीतों की रचना की।

४९. देवड़ीजी (९/४८)

यह महाराणा अरिसिंह की रानी थी। इसका पूरा नाम अमृतकुंवर था। यह दौलतसिंह की पोती थी। इसकी पुत्री का नाम अनोपकुंवर था। ग्रंथ में 'चावड़ी' संबोधन हुआ है।

५०. देवीचन्द (६१/२१०, १५५/५६०)

यह मेहता अगरचन्द का पुत्र था। इसे महाराणा भीमसिंह ने वि. सं. १८५६ में प्रधान बनाया था। ग्रंथ में इसके लिये 'देवीयचंद' नाम आया है।

५१. दौलतराव सिंधिया (१२६/४३४)

इसका जन्म १७८० ई. में हुआ। इसके पिता का नाम आनन्दराव था। महादजी ने इसे गोद लिया जो १० मई १७९४ में अधिकृत रूप से

महादजी का उत्तराधिकारी बना। होल्कर से इसका सतत संघर्ष बना रहा। वि. सं. १८६४ में असंख्य सेना लेकर मेवाड़ में आया था। उदयसागर मुकाम पर इसके साथ संधि की गयी। ग्रथ में इसके लिये दौलत, दौलतराव नामों का सम्बोधन हुआ है।

५२. दौलतसिंह (९३/३१८, ९६/३२४)

यह शिवरती के महाराज अर्जुनसिंह का पौत्र तथा शिवसिंह का दूसरा पुत्र था। करजाली के महाराज भैरवसिंह के निःसन्तान होने के कारण इसे गोद लिया गया।

५३. धीरतसिंह (४६/१५७, १३८/४८७)

यह चित्तौड़ का प्रभावशाली किलेदार था। बाद में महाराणा भीमसिंह ने इसे चित्तौड़ से हटा दिया। ग्रंथ में इसके लिये 'धीर' नाम आया है।

५४. नाथसिंह (५०/१६९)

यह बागोर का स्वामी तथा महाराणा संग्रामसिंह (द्वि.) का दूसरा कुंवर था। 'महाराज' इसकी उपाधि थी। यह महाराणा अरिसिंह (द्वि.) के विरोधी सरदारों का सहायक माना जाता था। महाराणा अरिसिंह के आदेशानुसार भैंसरोड़गढ़ के सरदार लालसिंह ने इसकी हत्या की।

५५. पनजी आढ़ा (२७/९१, ३०/९२, ५०/१६९, ५४/१७९, ६१/२१०, ६७/२३९)

भीम विलास में इसके लिये 'पनराज' नाम आया है। यह किसना आढ़ा का पितामह था। प्रसिद्ध कवि था जिसकी अनेक फुटकर रचनाएं मिलती हैं। विशेप जानकारी के लिये ग्रंथ की भूमिका दृष्टव्य है।

५६. प्रताप (८/४२, २३५/७६०)

प्रातः स्मरणीय वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह का पुत्र था। वि. सं. १६२८ में गोगुन्दा में गद्दी पर बैठा। अकबर

से आजीवन संघर्ष किया। हल्दीघाटी का युद्ध किया। इसकी मृत्यु वि. सं. १६५३ में चावण्ड में हुई। ग्रंथ में इसके लिये परताप, प्रतापसी, पतौ, पातल आदि नामों से सम्बोधन हुआ है।

५७. प्रतापसिंह (द्वि.) (८/४५, २०/७२)

मेवाड़ का महाराणा। महाराणा जगतसिंह (द्वि.) का ज्येष्ठ पुत्र था। वि. स. १८०८ आषाढ़ वदि ७ को मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा। वि.सं. १८१० माघ वदि २ को देहान्त हुआ। ग्रन्थ में इसके लिये पतौ, प्रतापसिंघ आदि नाम आये हैं।

५८. बाघसिंह (२६/८२, २८/९२)

यह करजाली का स्वामी तथा महाराणा संग्रामसिंह (द्वि.) का तीसरा पुत्र था। 'महाराज' इसकी उपाधि थी। महाराणा अरिसिंह के समय माधवराव सिंधिया की फौज पर तोपों की मार करके उदयपुर नगर की रक्षा की। महाराणा की तरफ से महापुरुषों के साथ युद्ध किया। गोड़वाड़ से रतनसिंह को निकाला। महाराणा हमीरसिंह की बाल्यावस्था में मुसाहिबों की सलाह से महाराज अर्जुनसिंह के साथ मिलकर राज्य की रक्षा तथा प्रबन्ध का भार अपने ऊपर लिया।

५९. बाघेलीजी (२२६/७४८)

महाराणा भीमसिंह की रानी, जिसका पूरा नाम कुसलकुंवर था। यह रामसिंह की पोती तथा चनणसिंह की पुत्री थी। अजबकुंवर इसकी पुत्री थी।

६०. बापा (४/२९, ५/३०, ६/३३, २३५/७६०)

रावल बापा या बापारावल मेवाड़ के शासक कालभोज का उपनाम है। 'रावल' इसकी उपाधि थी। इसका शासनकाल वि. सं. ७९१-८१० तक माना गया है। हारीतराशि के आशीर्वाद से इसे मेवाड़ का राज्य प्राप्त हुआ तथा मानमोरी को पराजित कर चित्तौड़ का किला हस्तगत किया। एकलिंगजी इसके इष्टदेव थे। भीम विलास में इसके लिये बप्प, बप्पा, बापा, बापौ, रावल, बागा आदि नामों का सम्बोधन हुआ हैं।

६१. **भट्टियाणीजी** (५७/१९३)

यह महाराणा अरिसिंह की रानी थी। उक्त महाराणा की मृत्यु का समाचार सुनकर पीहर 'मोही' में ही सती हुई। इसका नाम गुमानकुंवर था। यह मोही के पृथ्वीसिंह की पुत्री तथा सुलतानसिंह की पोती थी।

६२. **भवानीसिंह** (६९/२४९)

यह ईडर के राजा शिवसिंह का पुत्र था। इसकी पुत्री उमाकुंवरी का विवाह महाराणा भीमसिंह के साथ हुआ था।

६३. **भीमसिंह** (१/०, २/६, १०/५०, ४२/१४०, ६७/२३८)

मेवाड़ का महाराणा। इसका जन्म वि. सं. १८२४ चैत्र वदि ७ गुरुवार को हुआ था। इसके पिता का नाम महाराणा अरिसिंह था। वि. सं. १८३४ पौष सुदि ९ को यह राजगद्दी पर बैठा। वि. सं. १८८५ चैत्र सुदि १४ को इसका देहान्त हुआ। भीम विलास ग्रंथ की रचना इसके चरित्र को आधार बनाकर की गई। इसका शासनकाल (वि. सं. १८३४-८५) बहुत लम्बा तथा अनेक घटनाओं से परिपूर्ण रहा। भीम विलास में इसके लिये भीम, भींम, भीमसींघ, भीमा, भीमाजल, भीव, अरसांणी आदि नाम आये हैं।

६४. **भीमसिंह, रावत** (२९/९२, ३३/९८, ४९/१६८, ६९/२४८)

यह चूण्डा के वंशज रावत जोधसिंह का पुत्र तथा पाहड़सिंह का छोटा भाई था। यह सलूम्बर का अधिपति तथा महाराणा भीमसिंह का समकालीन था। 'रावत' इसकी उपाधि थी। महाराणा अरिसिंह से लगाकर महाराणा भीमसिंह के समय तक कई युद्धों में भाग लिया।

६५. **भैरुंसिंह** (१२४/४२६)

यह रावत भीमसिंह का पुत्र तथा सादूलसिंह का भाई था। वि. सं. १८६३ में महाराणा भीमसिंह जब पदमसिंह को लेने सलूम्बर गया उस समय उदयपुर की सुरक्षा का भार इसे तथा हमीरसिंह को सौंपा था।

६६. **मनभावन** (५७/१९२)

महाराणा अरिसिंह की पासवान थी। यह अमरगढ़ में महाराणा अरिसिंह के साथ सती हुई। इसके गोपालदास और भगवानदास नाम के दो पुत्र तथा वाई रूपांवतां और सूरजवतां नाम की दो पुत्रियां थी।

६७. माधवराव सिंधिया (१९/६५, २७/८७, ३२/९६, ९५/३२२)

इसका जन्म सन् १७३० ई. में हुआ। इसके पिता का नाम राणोजी सिंधिया था। बादशाह शाहआलम ने इसकी योग्यता से इसे 'वकील-ए-मुत्तलक' नियुक्त किया। योद्धा के साथ-साथ वह एक सफल राजनीतिज्ञ भी था। राजस्थान की राजनीति में सक्रिय रहा। अप्रेल १७६९ ई. के दूसरे सप्ताह में महाराणा अरिसिंह को पदच्युत करने के अभिप्राय से इसने उदयपुर का घेरा डाला था। अन्त में महाराणा अरिसिंह की इससे संधि हुई। इसकी मृत्यु १२ फरवरी १७९४ ई. को हुई। ग्रंथ में इसके लिये पटेल, महादजी, माध, माधोराव, माधौ, सिंधिया, सेंधीया आदि नाम आये हैं।

६८. मालदास मेहता (९३/३१६, ९४/३२१)

यह महाराणा भीमसिंह के समय में फौजबख्शी था। वि. सं. १८४४ के मार्गशीर्ष मास में हड़क्याखाल में मराठों की सेना से युद्ध करता हुआ मारा गया।

६९. मेटकॉफ़ (२३५/७६१)

इसका पूरा नाम चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकॉफ था। वि. सं. १८७४ पोप सुदि ७ को ब्रिटिश सरकार के साथ महाराणा भीमसिंह की जो ऐतिहासिक संधि हुई उसमें गवर्नर जनरल हेस्टिग्ज के प्रतिनिधि के रूप में यह सम्मिलित हुआ था। ग्रंथ में इसके लिये साहिब काफ तथा काफसाह कपतान नामों से संबोधन हुआ हैं।

७०. मोकल (७/४०, २३५/७६०)

राणा मोकल वि. सं. १४५४ में चित्तौड़ की राजगद्दी पर बैठा था। यह महाराणा कुंभा का पिता और लाखा का पुत्र था।

७१. मोतीराम बोलिया (३१/९६)

महाराणा अरिसिंह के समय में कुछ समय तक प्रधान रहा। ग्रंथ में इसके लिये साह मोतीयराम संबोधन हुआ है।

७२. मोहकमसिंह (१५१/५४९)

यह किशनगढ़ के राजा कल्याणसिंह का पुत्र था। इसने महाराणा भीमसिंह के पुत्र कुंवर अमरसिंह की पुत्री कीकीबाई के साथ विवाह किया था।

७३. मोहकमसिंह (द्वि.) (३९/१२५)

यह भीण्डर के शक्तावत महाराज खुशहालसिंह का उत्तराधिकारी था। महाराणा अरिसिंह के समय फितूरी रतनसिंह का तरफदार था। महाराणा भीमसिंह के काल में प्रभावशाली जागीरदार के रूप में रहा।

७४. मोहब्बतराव (१२४/४२७)

यह वि. सं. १८६३ में सखाराम बापू के साथ सेना लेकर मेवाड़ में आया था। माहोली में इनके साथ रावत हमीरसिंह ने युद्ध किया। इस समय महाराणा भीमसिंह रावत पदमसिंह को लेने सलूम्बर गया हुआ था।

७५. रतनसिंह (१२१/४१६)

यह मराठा हरनाथ का भाई था। ठाकुर गुलाबसिंह के साथ हुए, बांसी के झगड़े में मारा गया। ग्रंथ में इसके लिए 'रतन' नाम आया है।

७६. रतनसिंह फितूरी (१९/६५, २१/७२)

इतिहास में 'फितूरी रतनसिंह' के नाम से प्रसिद्ध है। महाराणा राजसिंह (द्वि.) की झाली राणी के गर्भ से उत्पन्न माना गया। उक्त झालीराणी गुलाबकुंवर गोगूंदा के जसवन्तसिंह की बहिन थी। मेवाड़ के कुछ सरदारों ने इसे महाराणा अरिसिंह (द्वि.) के विरोध में कुंभलगढ़ में कायम कर राणा बनाया। कुंभलगढ़ में रहते हुए रतनसिंह की सात वर्ष की अवस्था में शीतला से मृत्यु हो गयी परन्तु असन्तुष्ठ सामतों ने उसी अवस्था के एक अन्य लड़के को रतनसिंह के नाम से प्रसिद्ध कर वास्तविक महाराणा के प्रति अपने विद्रोह को बनाये रखा। ग्रंथ में इसके लिए फतूर, रतनसिंघ, वासदेव आदि नाम आये हैं।

७७. रतनसिंह राठौड़ (१५१/५४७)

यह बीकानेर का राजा और सूरतसिंह का पुत्र था। महाराणा भीमसिंह की पुत्री अजबकुंवर के साथ इसका विवाह हुआ था।

७८. राजसिंह (प्र.) (८/४५)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १७०९ में मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा। शहंशाह औरंगजेब से युद्ध किया। 'राजसमुद्र' नामक प्रसिद्ध तालाब का निर्माण कराया। जजिया कर का विरोध किया। ग्रन्थ में इसके लिए राज, राजसर, राजेस आदि नाम आये हैं।

७९. राजसिंह (द्वि.) (८/४६, २०/७२)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १८१० माघ वदि २ को गद्दीनशीनी हुई। वि. सं. १८१७ चैत्र वदि १३ को इसका देहान्त हुआ। महाराणा प्रतापसिंह (द्वि.) का पुत्र था। ग्रंथ में राजस्यंघ, राजसिंघ, राजसी आदि नामों का संबोधन हुआ हैं।

८०. राठौड़णीजी (१११/३७५, १४९/५४३)

इसका पूरा नाम पदमकुंवरी था। यह बीकानेर के महाराजा राठौड़ सुरतानसिंह की बेटी थी। वि. सं. १८५६ में महाराणा भीमसिंह ने इससे शादी की थी। यह रानी 'बीकानेरी जी' के नाम से भी प्रसिद्ध थी। 'भीम विलास' तथा 'तेहवार वर्णन' में कवि ने इसकी सुन्दरता एवं मान-सम्मान का विशेषरूप से वर्णन किया है।

८१. रामनाथ पुरोहित (१५८/५६७)

यह दीनानाथ पुरोहित का पौत्र था। ग्रंथ में इसके लिए रामराय तथा रामदास नामों से संबोधन हुआ है।

८२. रूपकुंवर (१५१/५४८)

यह महाराणा भीमसिंह की पुत्री थी। इसकी माता का नाम चावड़ीजी था। इसका विवाह जैसलमेर के रावल गजसिंह के साथ में हुआ।

८३. लखमसी (७/३९)

राणा लक्ष्मणसिंह गढ़लखमसी (भड़लखमसी) के नाम से प्रसिद्ध है। वि. सं. १३६० में चित्तौड़ दुर्ग पर हुई लड़ाई में अल्लाउद्दीन खिलजी के सैन्य-बल से संघर्ष कर अपने समस्त पुत्रों सहित मारा गया।

८४. लाखा (७/४०)

मेवाड़ का महाराणा। महाराणा क्षेत्रसिंह का पुत्र था। वि. सं. १४३९ से १४७१ तक मेवाड़ का महाराणा रहा। इसने कई युद्धों में विजय प्राप्त कर मेवाड़ को समृद्धशाली बनाया। ग्रंथ में इसके लिए 'लाखौ' सम्बोधन हुआ है।

८५. विजयसिंह (११७/४०२)

कोठारिया के चौहान फतहसिंह का पुत्र था। मराठा सेना से युद्ध किया और उनवास गांव से कोठारिया जाते समय मराठा सेना से घिर गया तथा मराठों द्वारा उसके घोड़े मांगने पर उन्हें मराठों को सिपुर्द न कर पहले घोड़ों को मार डाला फिर अपने साथियों सहित मराठों से लड़ता हुआ मारा गया।

८६. विजयसिंह (६४/२२६)

इसका पूरा नाम शाह विजयसिंह नानावटी था। ग्रंथ में इसके लिए 'विजौ' नाम आया है।

८७. वीरमदेव (२०/७२)

यह ठिकाना घाणेराव के ठाकुर मेड़तिया राठौड़ पद्मसिंह के ज्येष्ठ कुंवर किशनसिंह का पुत्र एवं उत्तराधिकारी था। मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (द्वि.) के निःसन्तान दिवंगत हो जाने पर अरिसिंह को महाराणा बनाने में ठाकुर वीरमदेव का पूर्ण सहयोग रहा। फितूरी रतनसिंह के मामले में तथा मराठों के विरुद्ध वीरमदेव ने महाराणा अरिसिंह का साथ दिया। वीरमदेव का वि.सं. १८३५ (१७७९ ई.) में ३६ वर्ष की अल्पायु में ही देहान्त हो गया।

८८. संग्रामसिंह (द्वि.) (८/४५)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १७६७ पौष सुदि १ को राज्याभिषेक हुआ।

८९. सखाराम बापू (१२४/४२७, १३९/४९५, १४५/५२१)

वि. सं. १८६३ में सेना लेकर मेवाड़ में आया था। इसके साथ माहोली में हमीरसिंह ने लड़ाई की और फतह की।

९०. सतीदास गांधी (१३१/४५२)

अपने बड़े भाई सोमचन्द गांधी की मृत्यु के बाद महाराणा भीमसिंह के समय में यह प्रधान बना। वि. सं. १८७२ कार्तिक वदि १२ की रात में नगर के देहलीगेट पर इसकी हत्या रावत जवानसिंह तथा दूलहसिंह ने की।

९१. समरू (५४/१८१)

इसका मूल नाम वाल्टर रैनहार्ट था। वि.सं. १७७७ में इसका जन्म हुआ। फ्रांस देश का निवासी था। भारत में आकर यह विभिन्न नौकरियों में रहा। इसका देहान्त आगरा में वि.सं. १८३५ में हुआ। जुलाई १७७१ ई. में रावत जसवन्तसिंह ने महाराणा अरिसिंह के विरुद्ध जयपुर में नियुक्त इस फ्रांसीसी सेनापति को अपने छोटे पुत्र स्वरूपसिंह के साथ मेवाड़ की ओर भेजा था।

९२. सांगा (७/४१, ६३/२२०)

मेवाड़ का महाराणा। वि. सं. १५६५ में राजगद्दी पर बैठा। यह महाराणा रायमल का पुत्र था। मुगल बादशाह बाबर से बयाना के पास खानवा के मैदान में वि. सं. १५८४ में युद्ध किया था। यह बड़ा वीर और साहसी था। इसके काल में मेवाड़ की सीमाओं का बहुत विस्तार हुआ। इसके शरीर पर अस्सी घाव लगे थे तथा एक आंख, एक हाथ एवं एक पांव युद्ध में नष्ट हुए। ग्रन्थ में 'सांगो नाम से भी सम्बोधन हुआ है।

९३. सिवदास गांधी (३१/९६, १००/३३४, १०७/३५९, १०९/३६९)

महाराणा भीमसिंह के समय में प्रधान। वि. सं. १८५३ में इसे कैद कर अगरचन्द को प्रधान बनाया गया। ग्रन्थ में इसके लिए 'सवदास' नाम आया है।

९४. सिवसिंह (७०/२५६)

ईडर का राजा। इसकी पुत्री गुलाबकुंवर का विवाह महाराणा भीमसिंह के साथ हुआ था।

९५. सुरतांणसिंह (१११/३७५)

बीकानेर का महाराजा। महाराणा भीमसिंह की रानी पदमकुंवर (राठौड़णजी) का पिता था।

९६. सोमचन्द गांधी (८७/३००)

महाराणा भीमसिंह के समय में प्रधान। कुराबड के रावत अर्जुनसिंह ने वि.सं. १८४६ कार्तिक सुदि ६ को इसकी हत्या की। पीछोले की बड़ीपाल पर इसका दाहकर्म किया गया, बाद में इसकी छत्री बनायी गयी।

९७. हम्मीर (६३/२२०, २३५/७६०)

पहले यह मेवाड़ की छोटी सी जागीर सीसोदा का स्वामी था, बाद में मेवाड़ का महाराणा बना। यह गढ़लक्ष्मणसिंह का पौत्र तथा अरिसिंह का पुत्र था। गुहिल वंशियों की राजधानी चित्तौड़ पर अल्लाउद्दीन खिलजी का आधिपत्य हो जाने पर इसने वि.सं. १३८३ में चित्तौड़ को पुनः हस्तगत किया। महाराणा का विरुद धारण किया और सिसोदा का स्वामी होने के कारण मेवाड के शासक सिसोदिया कहलाये।

९८. हम्मीरसिंह (द्वि.) (४८/१६१, ५७/१९३, ६७/२३७)

मेवाड़ का महाराणा। वि.सं. १८२९ चैत्र वदि ३ को राजगद्दी पर बैठा। महाराणा अरिसिंह [द्वि.] का ज्येष्ठ पुत्र था। वि.सं. १८३४ पौष सुदि ८ को देहान्त हुआ। महाराणा भीमसिंह इसी का छोटा भाई तथा उत्तराधिकारी था। इसके लिए ग्रथ में 'हमीर' नाम भी आया है।

९९. हरनाथसिंह (१२०/४१४)

यह जसवन्तराव होल्कर का साथी था। संवत् १८६० में मेवाड़ में फौज लेकर आया और ठाकुर गुलाबसिंह से वांसी में लड़ाई लड़ी।

१००. हारीतराशि (५/३२, ९२/३१३)

हारीतराशि लकुलीश परम्परा में कैलाशपुरी के पाशुपत लकुलीश की खुशिक सम्प्रदाय के ब्रह्मस्वरूप एकलिङ्ग महादेव के पुजारी तथा लकुलीश मठ के महन्त थे। इसके ही आशीर्वाद से बाप्पा रावल ने चित्तौड़ का राज प्राप्त किया। □

शब्दार्थ

अखेद – प्रसन्न
अगजीत – विजय प्राप्ति में अग्रणी, नाम विशेष
अघ – अघासुर, पाप
अघोर – भयानक, शिव का एक रूप, साधना विशेष
अछेह – अनन्त
अजवाळ – उज्ज्वल
अदग – निष्कलंक
अनेरण – नहीं झुकने वाला, अजेय, नाम विशेष
अबलख – काले और सफेद या लाल और सफेद रंग का चितकबरा घोड़ा
अबीह – जबर्दस्त, निडर
अभग – अखंड, बहादुर
अमांन – अप्रमाण, बहुत
अमाई – बहुत
अमी – अमृत
अयारह – शत्रु, सेना
अयुत – दस हजार
अरक – सूर्य, आक का वृक्ष
अरदास – स्तुति, प्रार्थना
अरीस – बड़ा शत्रु
अरेम – निष्कलंक, विजय
अरोहि – आरोह, सवार
अरोगि – भोजन करना
अलेखयं – जिसका कोई लेखा न हो, अपार
अवन – पृथ्वी, अवनि
अवनीस – राजा
अवर – और
अहुट्टि – वापस लौटना, हटना
आंविलीय – आमली (एक गांव)
आछेह – अच्छी
आटांपाटां – पानी का नदी के दोनों तटों से भी ऊपर बहने का भाव
आतप – गर्मी, रवि
आतपत्र – छत्र, चंवर
आद अनाद – आदि अनादि
आरास – शीशा
आरीस – कांच, शीशा
आलंम – स्वामी, संसार
आलोल – चंचल
आसव – मदिरा, वारुणी
आसिका – देवी-देवताओं के सामने रखे धूपदान की राख
इल – इला, पृथ्वी
ईहग – कवि, चारण
ईल – मर्यादा, पृथ्वी
ईसर – महादेव
उकत – उक्ति, वचन
उकील – वकील
उछजि – पूर्ण जोश में
उछज्जिय – पूर्ण जोश में आना
उछाह – उत्साह, हर्ष

उतीम – उत्तम
उदमाद – उन्माद, उन्मत्तता
उद्र – उदर
उमराव – सरदार
उमाह – उमंग
उरग – सर्प
उरवी – इज्जत, भूमि
उलाप – आलाप, पुकारा
उवर – और, हृदय
ऊँचास – उच्चै श्रवा
ऊबर – उम्र, उबरकर
ऊमाह – उत्साह
ऊरध – ऊर्ध्व
ऊवर – हृदय
ओप – शोभा, जिरह
ओल – पंक्ति, रेखा, गिरवी, जमानती व्यक्ति
ओघ – समूह
कंज – कमल
कंपू – सेना
कदन – क्रंदन, दुःख
कबंध – युद्ध में शिर कट जाने पर भी युद्ध करते रहने वाला धड़, सिर कटा धड़
कमंध – राठौड़ वंश का क्षत्रिय
कमठ – कच्छप
कमधज – राठौड़
कमसल – वर्णसंकर, दोगला
कदीम – परम्परा
करतल – सिंह का पंजा, हथेली
करदम – कीचड़
करभ – ऊँट
करसन – किसान
कराल – भयानक
कलमष – पाप
कलस – कुंभ, छोटा घड़ा
कलुष – पाप
कवाद – नियम, युद्धाभ्यास
कवायद – धनुष
कसवट्टी – कसौटी
काजैं – लिए
कायथ – कायस्थ
कायलवारा – केलवाड़ा (एक गांव)
किरमाल – तलवार
कीर – तोता, धीवर
कीरत – कीर्ति
कुठार – परशु, कुल्हाड़ी
कुमख्या – कामाक्षीदेवी
कुरब – इज्जत
कुलंग – पक्षी विशेष
कुलाह – भूरे रंग का घोड़ा जिसके पैर घुटने से खुर तक काले हो, श्वेत व पीत रंग का घोड़ा
कुसुंभ – लाल
कुहकबान – एक प्रकार की तोप
कूंख – कोख, कुक्षि
कूंची – ऊँट का चारजामा; चाबी
केक – कई, कोई

केकी – मोर
केत – ध्वजा
केहरगढ़ – किशनगढ़
कोट – करोड़, गढ़
कोथली – कपड़े की थैली, विशेष
कोल – सूग्रर
कोह – क्रोध
क्रत – कर्त्तव्य, शुभकार्य, कृत्य
क्रपाल – कृपालु
क्रीत – कीर्ति
खखल – ग्राँधी
खंडव – एक प्राचीन वन
खगखेत – रणक्षेत्र
खगेस – गरुड़
खवास – खिदमदगार, नाई
खसम – पति
खांमिद – पति, स्वामी
खाजा – मीठे पापड़ विशेष
खाल़ – नाला
खाल – चमड़ा
खालक – ईश्वर, खलक
खिलत – खिल्ग्रत, शासक द्वारा सम्मान में दिया जाने वाला वस्त्र
खेद – दु:ख
खेत्र – रणक्षेत्र
गज – ढेर
गजक – शराब के साथ खाने की वस्तु, शक्कर ग्रौर तिल से बनी मिठाई
गढ़व – चारणों की एक शाखा
गतांस – बीते अंशों पर
गथ्थ – गाथा, वृत्तांत
गदरेन – गदेलें
गयंद – हाथी
गरक – नष्ट
गरकाव – परिपूर्ण
गवख्ख – गवाक्ष, झरोखा
गह्वर – कन्दरा
गाज – गर्जना
गात – शरीर
गिरंद – पहाड़
गिरद – गर्द
गिरपुर – डूंगरपुर
गैंन – गगन
गोठ – सुग्रवसर पर ग्रायोजित सामूहिक भोज
ग्रहराज – सूर्य
घनसार – कपूर
घात – प्रहार, वध
घाय – घाव, घायल
घूम – चक्कर
घोराक – शोक सूचक भयंकर ध्वनि
चंग – एक वाद्य विशेष
चंड – एक दैत्य
चंडीनयर – दिल्ली का एक नाम
चंद्रहास – तलवार
चंप – प्रहार

चमू – सेना
चर – दूत
चलुक सोलंकी वंश
चंवरी – विवाह मण्डप
चव – चार
चहर – चिकुर, केश
चत्रवाह – चारभुजा
चांमिल – चम्बल
चाचर – मस्तक
चाय – चाव, उत्साह
चावरे – चावड़ा क्षत्रिय
चूक – कपट, षड़यंत्र
चोरिय – चंवरी
चौज – उमंग
छछोह – जोशपूर्ण
छतर – छत्र
छत्तीय – सीना
छयल्ल – छैला, पति
छराल – सिंह का बच्चा, छरालौ
छाग – बकरी
छार – क्षार, भस्म
छिव – छवि
छीजत – कमी होने का भाव
छेतर – पथरीली भूमि, श्मशान भूमि
छेह – अन्त
जंगल – जांगल प्रदेश, बीकानेर
जंगाल – घोड़ा, गहरा लाल रंग
जंगाली – गहरा लाल रंग
जंबुक – सियार, गीदड़
जक्ख – यक्ष
जग्योपवित – यज्ञोपवित, जनेऊ
जटाजूट – बहुत बड़ी जटायें
जनीवास – बारात ठहरने का स्थान
जरकस – जिस पर सोने के तार आदि लगे हुए हो
जरद – पीला रंग
जर्राह – शल्य चिकित्सक
जरराही – शल्य चिकित्सा
जवहार – अभिवादन
जसवास – यश
जसह – यशस्वी
जांनु – जांघ
जांनां – बारातें
जांम – क्षणभर, प्रहर
जाचगू – याचक
जात – यात्रा, जाति
जान – बारात
जाब – जबाव
जाम – प्रहर
जाज – समूह, जिसे
जाहर – जाहिर
जिहांन – संसार
जुकत – उपाय
जुत – सहित
जुहार – अभिवादन
जुहारि – जवारी
जोग – लायक
जौंहर – जवाहिरात

झखर – सूखा वृक्ष
झरकि – सोने चांदी के तारों से बुना कपड़ा
झिगन – झींगुर
टोल – अनगढ़ वड़ा पत्थर
ठमक – गर्व, कुण्ठा
ठाह – स्थान
डगर – पशु
डडत – जुर्माना करना
डंडोत – दण्डवत प्रणाम
डाक – महादेव का डमरू
डार – समूह
डावरी – कन्या, सेविका
डीकरी – पुत्री
ढिग – निकट
ढुंढि – गणेश का एक नाम
तंमोर – ताम्बूल, लाल
तगत – तख्त, राजगद्दी
ततवीर – उपाय
तरडम – कलंगी विशेष, तुर्री
तसकर – चोर, तस्कर
तानैपुर – ताणा (गांव)
तांम – तव
ताजीम – सम्मान
ताप – कष्ट, आतंक, गर्मी
तारक – तारे, घोड़ा, तारने वाला
तावदान – रोशनदान
तास – त्रास, भय, एक प्रकार का जरदोजी कपड़ा
तुंड – हाथी की सूंड
तुंवर – वाद्य यंत्र विशेष
तुखार – अश्व
तुजी – धनुष
तुपक छोटी तोप, बंदूक
तुरेस – श्रेष्ठ घोड़ा
तूल – रुई
तोडर – स्त्रियों के पाँव का एक गहना विशेष
तौंर – तंवर क्षत्रिय
थांन – ठिकाना
थापना – स्थापना, प्रतिष्ठा
थाहर – सिंह की मांद
दध – उदधि, ईर्ष्या
दरव – द्रव्य
दव – दावानल।
दवार – द्वार
दहवट्ट – संहार, तहस-नहस
दाग – दाह संस्कार
दातार – देने वाला, ईश्वर
दाद – धन्यवाद
दायज – दहेज, दापा
दार – स्त्री, दारा
द्वारामति – द्वारिका
दिखनाध – दक्षिण दिशा
दिगेस – दिक्पाल
दीवांन – उदयपुर को महाराणाओं की एक उपाधि
दुरंग – दुर्ग
देलवारापत – देलवाड़ापति
देवगदाधर – सांमलाजी

धौस – दिवस
धनख – धनुष
धनास – धन की आशा
धरक – भय
धवल-मंगल – मांगलिक गीत
धा – पृथ्वी, पार्वती
धावड़ – धायभाई
धिया – पुत्री
धूरजट्टी – शिव
नखतंत – भाग्यशाली, योद्धा
नथ्थ – नाथ
नरवर – नरों में श्रेष्ठ, राजा
नवबत्ति – नोपत
नांणा – धन-दौलत
नाहरगिर – नाहरमगरा(एक गांव)
निकंद – नाश
निग्रोध – वटवृक्ष
निवांण – कुंआ, तालाब
निवाजस – महरबानी, दान
निहचल – अविचल, निश्चल
नीसांन – ध्वजा
नूंतो – बुलावा
नेजं – झण्डा, भाला
पंगत – भोजन की पंक्ति
पख्खर – पाखर
पट्टन – नगर के लिए प्रयुक्त
पटेत – योद्धा
पधराय – विराजमान करना, आदरपूर्वक ले जाना
परखवार – परीक्षा करने वाला
परताव – पराक्रम, प्रताप
परदछ्छ – परिक्रमा, प्रदक्षिणा
परुसार – भोजन परोसना
पल – मांस
पलांन – जीन, चारजामा
पसाव – कपड़ा, कृपा
पांखि – पंखुरी, पक्षी
पांमर – पापी, कायर
पाकेट – ऊँट
पाजं – मर्यादा
पाटरेस – राजा
पाटवी – सबसे बड़ा कुंवर, राजगद्दी का उत्तराधिकारी
पाणां – हाथों में
पात – कवि
पातल – प्रताप, नाम विशेष
पातुर – नर्तकी
पादोदक – चरणामृत
पाधर – शिष्ट, अनुकूल
पायगा – घुड़साल
पिंग – पीलापन, भूरा
पिट्ठ – पीठ
पिनाक – शिवजी का धनुष
पुहमी – पृथ्वी
पैमाल – बरबाद
पौंचन – मणिबंध
फजर – प्रातःकाल
फतूर – उपद्रव, उपद्रवी
फरजिंद – संतान
फरद – सूचीपत्र

फवज्ज – फौज
फी – हाथी, फील
फेट – चपेट, टक्कर
बंक – शूरवीर
बंगर – बंगड़
बंब – रणनाद
बखांन – वर्णन, प्रशंसा
बयस – वैश्य
बांम – स्त्री, नर्तकी
बाजोठ – लकड़ी की चौकोर चौकी
बायन – कन्याओं का
बारिगाह – तम्बू, राजदरबार
बिरदेस – विरुदधारी
बीवाह – विवाह
बहुरे – फिरे
बू – गंध
बोदरी – छोटी चेचक
बोह – बहुत
भंत – भांति
भलाहल – चमचमाहट
भख्खर – पर्वत
भांवरी – परिक्रमा, विवाह के फेरे
भारथ – भयंकर लड़ाई
भुरज – बुर्ज, शिखर
भ्रंग – हाथी
भ्रंगी – शिव
भ्रत – भाई
भ्रतांन – चाकर, सेवक
भ्रमि – चकित
मंगल-धवल – गीत विशेष

मंजार – बिल्ली
मंझ – मध्य
मगतान – याचक, मांगने वाले
मघवांन – इन्द्र का नाम
मचक – आतंक, टक्कर
मजीठ – लाल रंग
मजेज – गर्व
मठठ – स्वाभिमान
मतीर – लताफल तरबूज
मदाल – हाथी
मधु-कीट – मधु-कैटभ राक्षस
मयंद – हाथी
मयमत्त – मदमस्त,
मराल – हंस
मल्लार – मल्लार राग
महमाय – महिमा
महताब – रोशनी, चंद्रमा
महर – अनुग्रह, कृपा
महारतु – महाऋतु ऋतुराज बसंत
महुर – मोहर, सोने का सिक्का
मांकड़ – बन्दर
मांमलत – विवादास्पद बात
मारतुंड – मार्तण्ड, सूर्य
माहीय – माही नदी
माहेरा – मायरा, मौसार
मुरहलै – छोटादुर्ग
मुलक – मुल्क, रियासत
मुसदीयु – मुत्सद्दी
मेर – पर्वत, मेरु, सुमेरु
म्रगया – मृगया, शिकार

म्रदंग, – मृदंग, वाद्य विशेष
यकरिंग – एकलिंगजी
यल – ईल, पृथ्वी
येन – जिस प्रकार
रंजक – बारूद, प्रसंन करने वाला
रज्ज – धूलिकरण
रटं – जप करना
रिख – ऋषि
रिन – रण
रिनजित – नगारा विशेष
रीझ – प्रसन्न
रीठ – शस्त्रों की आवाज़
रूसाय – नाराज होकर
रैत – रय्यत, प्रजा
रोर – कोलाहल
रोस – क्रोध, जोश
लच्छिन – लक्षण
ललांम – लाल रंग का
लाह – लाभ, घोड़े का छलांग लगाना
लीक – मर्यादा
लुंटाक – लुटेरे
लेज़म – धनुष
वंसवार – बांसवाड़ा नगर
वारण – न्यौछावर करना, हाथी
विघ्नाल – विघ्न को नष्ट करना
विज्जु – बिजली
वितुंड – हाथी
विमोहत – मोहित करने वाला
विलाला – रसिक, मस्त

संज – सामान
संजाब – संजाफी घोड़ा
सकबंध – यशस्वी, सुभट योद्धा
सगारथ – रिश्तेदारी
सतपत्र – कमल
सपतास – सप्ताश्व
समाथ – सामर्थ्यवान
सदीव – सदैव
सफरा – क्षिप्रा नदी
सरोस – आवेग, गुस्से से
सांग – भाला विशेष
सांम – सामवेद, राजनीति के चार अंगों में से एक
सांसन – जागीर
साखत – घोड़े का चारजामा
साटमार – हाथी को वश में करने वाला आदमी
साबात – बारूद का भंडार
साराप – सर्राफ
सालाकटारी – नेग विशेष
सिकलात – बनात
सिधराज – शिव
सिय्याह गोस – वन बिलाव
सिरपाव – सिरोपाव, वस्त्र
सिरपेच – पगड़ी पर बांधने का आभूषण विशेष
सिरबंधी – मोर्चाबंधी, सिंधी
सिलह – बख्तर, युद्ध सामग्री
सिहाय – रक्षा, सहायता
सीसफूल – स्वर्णाभूषण विशेष

सुकर – हाथ, वर्छी
सुखपाल – पालकी विशेष
सुगत्त – सुन्दर गति
सुरंग – घोड़ा, उत्तम
सुछेल – छैला, कामुक व्यक्ति
सुज – सिर
सुजाव – पुत्र
सुढाल – सुन्दर
सुतर – ऊँट
सुपात – सुपात्र, कवि
सुरख – लाल, सुर्ख
सुवच्छल – सुवत्सल, स्नेह से
सूंम – कंजूस
सूल – त्रिशूल
सेल – भाला
सेवागर – चाकरी करने वाला
सोव्रन – स्वर्ण, अच्छा कुल
सोलै बत्तीसुं – मेवाड़ के सोलह उमराव तथा बत्तीस सरदार गण
हगाम – विप्लव, हंगामा

हकाल – हुंकार, आवाज़
हजांम – नाई, क्षौरकर्म
हथनार – हाथ की बन्दूक
हथलेव – पाणिग्रहण
हथ्थल – सिंह का अगला पंजा
हयंद – अश्व, हय
हरख – हर्ष, खुशी
हरीफ – शत्रु
हरोल – हरावल
हलि – चले
हवद – होज, हौदो
हाक – आवाज़
हुरम – अन्त पुर, स्त्री, अप्सरा
हुरमत – मांन, धर्म
हूंस – प्रवल इच्छा, जोश
हूर – स्वर्ग की अप्सरा
है – हय
होतव – अनहोनी
होफर – सिंह की दहाड़, गर्जना
हौड – बराबरी

□

कुंवर जवानसिंह : सगाई-नारेल सामग्री की सूची

संवत १८७८ के साल कुंवरजी बापजी श्री जवानसिंहजी के रीमा[1] सु नारेल आया ज्यां में सराजाम ई माफक आया[2] —

९८०००)[3] नकद सिक्के कलदार अठाणु हजार आया

श्रीफल ४ मदे नग २ सोना सु, नग २ रुपा सु मंडया थका

सोपारी नग १० सोना रुपारी

५))[4] ५४००) गेहणा का रोकड़ कलदार

२०००) श्री दरबार के गेहणा रा

२०००) श्री कुंवरजी रे गेहणा रा

१०००) हाथी घोड़ा रे गेहणा रा किमत सु

५)) ४००) नारेल पारचा में मेल झेलाया जदी

१०५००) गेहणो सदरुप किमत रु. १०५००) को

३०००) महाराणा श्री भीमसिंहजी रे

२०००) ठेकड़ो १ हीरा का जडाव को

१०००) आमली १ हीरा का जडाव की

७५००) कुंवरजी बापजी श्री जवानसिंहजी रे

२०००) ठेकडो १ हीरा का जडाव रो

२५००) कंठी १ मोत्यारी

१५००) आमली १ हीरा जडाव री

१५००) पोंहचा जोड़ी १ हीरा जडाव रा

सिरपाव ई परमाणे आया—

महाराणाजी श्री भीमसिंहजी के सिरपाव १ भारी—

१ पाग कसूमल

२ आसावरी थान

१ पारचो थान

१ दुसालो जोड़ी लेरिया

१ कनपेच

---

१. रीवां, बांधुगढ़ (मध्यप्रदेश)

२. स्व. नाथूलाल व्यास संग्रह, साहित्य संस्थान, (रा. वि. उदयपुर) पुस्तकालय रजिस्टर सं. ४ पत्र सं. ४

३. ')' रुपये का संकेत

४. '))' सोने की मोहर का संकेत

सिरपाव १ मझेलो—

१ पाग सारंगपुर

३ अदरस थान (अतलस थान)

१ दुपट्टो कासी रो

१ पारचो थान

सिरपाव १ हलको—

१ पाग दिली री अदरंग

२ मुलमुल थान

१ दुपट्टो कासी रो केसरिया

।। (आधा) पारचो थान

श्री कुंवरजी वापजी रे सिरपाव २

२ पागां

३ अदरस थान

१ कनकवन्दया

१ आसवरी थान

२ दुपट्टा

१ जोडी दुसालो

२ पारचा

सिरपाव ४६

सिरपाव २० भारी

२० पाग रंगीन

२० दुपट्टा सुपेत रंगीन

४० अदरस थान

२० कमजर थान मसरु अदवाड़ा

सिरपाव २६

२६ पाग

५२ सेला

२६ दुपट्टा

हाथी नग ४ होदा काठरा सरिया टाट वाकी री झूला बनाती घोड़ा २५

५ साज मुलमा सुनेरी का

५ साज रूपारा

१५ झूलवाला

□